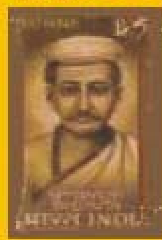
विदेह: मैथिली साहित्य आंदोलन





मानुषीमिह संस्कृताम्

वर्ष 2 मास 13 अंक 25 विदेह : सदेह : 1

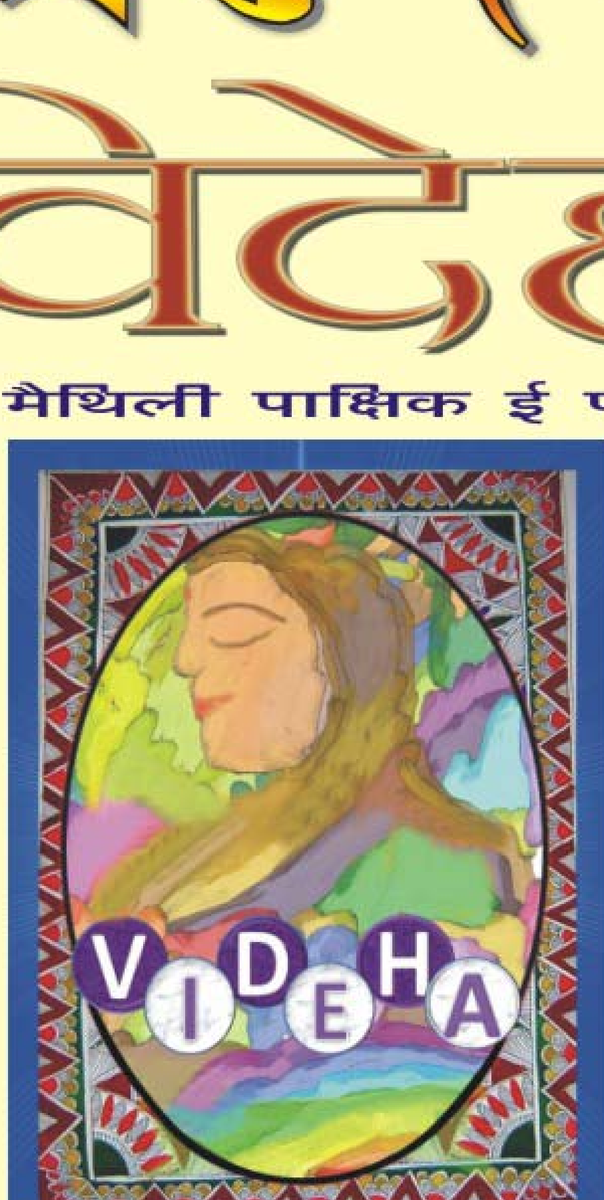
विदेह

प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका

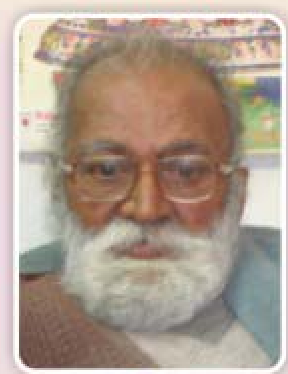
साक्षात्कार



स्व. रामाश्रय झा 'रामरंग'
01 जनवरी 2009 कैं दैहिक अन्त



साक्षात्कार



राजमोहन झा
प्रबोध सम्मान 2009

मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश

खण्ड 1 - 16

(कंप्यूटर / इन्टरनेट / साइंस शब्दावली सहित संगणक / अन्तर्जाल / विज्ञान शब्दावली सहित)



लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

नागेन्द्र कुमार झा

पञ्जीकार विद्यानन्द झा



मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश

(संयुक्त ISBN No. 978-81-907729-2-1)

पञ्जी प्रबंध

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

नागेन्द्र कुमार झा

पञ्जीकार विद्यानन्द झा

शोध सम्पादन, डिजिटल इमेजिंग आ तिरहुतासँ देवनागरी लिप्यांतरण

(Combine ISBN No. 978-81-907729-6-9)

ENGLISH MAITHILI DICTIONARY

Vol. 1 - 16

(Including Computer / Internet / Science Terminology)

Authors

Gajendra Thakur

Nagendra Kumar Jha

Panjikar Vidyanand Jha

English Maithili Dictionary

(Combine ISBN No. 978-81-907729-3-8)

अनुक्रम

संपादकीय

01.01.2009

मान्यवर,

विदेहक नव अंक (वर्ष २ मास १३ अंक २५) ई पब्लिश भऽ गेल अछि। एहि हेतु लॉग ऑन करू http://www.videha.co.in ई अंक प्रिंट फॉर्ममे सेहो अहाँक समक्ष अछि। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रारम्भ हम कएने रही 2000 ई. मे अपन भेल एक्सीडेंट केर बाद, याहू जियोसिटीजपर 2000-2001 मे ढेर रास साइट मैथिलीमे बनेलहुँ मुदा ओ सभ फ्री साइट छल से किछु दिनमे अपने डिलीट भऽ जाइत छल। 5 जुलाई 2004 केँ बनाओल "भालसरिक गाछ" जे www.videha.com पर एखनो उपलब्ध अछि, मैथिलीक इंटरनेटपर प्रथम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। फेर आएल "विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका www.videha.co.in पर। "विदेह" देश-विदेशमे रहनिहार मैथिली भाषीक बीच विभिन्न कारणसँ लोकप्रिय भेल। "विदेह" मैथिलक लेल मैथिली साहित्यक नवीन आन्दोलनक प्रारम्भ कएने अछि। प्रिंट फॉर्ममे, ऑडियो-विजुअल आ सूचनाक सभटा नवीनतम तकनीक द्वारा साहित्यक आदान-प्रदानक लेखकसँ पाठक धरि करबामे हमरा सभ जुटल छी। नीक साहित्यकेँ सेहो सभ फॉरमपर प्रचार चाही, लोकसँ आ माटिसँ स्नेह चाही। "विदेह" एहि कुप्रचारकेँ तोड़ि देलक, जे मैथिलीमे लेखक आ पाठक एके छथि।कथा, महाकाव्य,नाटक, एकाङ्की आ उपन्यासक संग, कला-चित्रकला, संगीत, पाबनि-तिहार, मिथिलाक-तीर्थ,मिथिला-रत्न, मिथिलाक-खोज आ सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक समस्यापर सारगर्भित मनन। "विदेह" मे संस्कृत आ इंग्लिश कॉलम सेहो देल गेल, कारण ई ई-पत्रिका मैथिलक लेल अछि, मैथिली शिक्षाक प्रारम्भ कएल गेल संस्कृत शिक्षाक संग। रचना लेखन आ शोध-प्रबंधक संग पञ्जी आ मैथिली-इंग्लिश कोषक डेटाबेस देखिते-देखिते ठाढ़ भए गेल। इंटरनेट पर ई-प्रकाशित करबाक उद्देश्य छल एकटा एहन फॉरम केर स्थापना जाहिमे लेखक आ पाठकक बीच एकटा एहन माध्यम होअए जे कतहुसँ चौबीसो घंटा आ सातो दिन उपलब्ध होए। जाहिमे प्रकाशनक नियमितता होए आ जाहिसँ वितरण केर समस्या आ भौगोलिक दूरीक अंत भऽ जाय। फेर सूचना-प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे क्रांतिक फलस्वरूप एकटा नव पाठक आ लेखक वर्गक हेतु, पुरान पाठक आ लेखकक संग, फॉरम प्रदान कएनाइ सेहो एकर उद्देश्य छल। एहि हेतु दू टा काज भेल। नव अंकक संग पुरान अंक सेहो देल जा रहल अछि। पुरान अंक pdf स्वरूपमे देवनागरी, तिरहुता वा ब्रेलमे डाउनलोड कएल जा सकैत अछि आ जतए इंटरनेटक स्पीड कम छैक वा इंटरनेट महग छैक ओतहु ग्राहक बड्ड कम समयमे 'विदेह' केर पुरान अंकक फाइल डाउनलोड कए अपन कंप्युटरमे सुरक्षित राखि सकैत छथि आ अपना सुविधानुसारे एकरा पढ़ि सकैत छथि। विदेह भाषापाक रचनालेखन स्तंभ मे MS-SQL सर्वर आधारित मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली सर्चेबल ऑनलाइन डिक्शनरी सेहो अछि।

एहि अंकसँ डॉ शम्भु कुमार सिंहक आलेख प्रतियोगी परेक्षार्थीक लेल शुरु कएल गेल अछि।

रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति: एहि महत्वपूर्ण नाट्यवृत्तिक संचालनक भार मैलोरंग केँ देल गेल। प्रमीला झा मेमोरियल ट्रस्ट,घोंघौर आ ओकर प्रबंध न्यासी श्री श्रीनारायण झा द्वारा।

रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्तिक स्थापना प्रथम महिला बाल नाट्य निर्देशक प्रमीला झाक स्मृतिमे भेल अछि। प्रमीला जी जीवन पर्यंत भंगिमा, पटना संग जूड़ि बाल रंगकर्म के बढ़ावा दैत रहलीह। प्रमीलाजीक स्मृति मे स्थापित प्रमीला झा मेमोरियल ट्रस्ट, घोंघौर हुनकर बाल रंगमंच मे अविस्मरणीय योगदानक लेल एहि नाट्यवृत्तिक स्थापना केलक अछि। एकर मूल मे मैथिली रंगमंच पर महिला रंगकर्मीक प्रोत्साहन संग हुनकर सामाजिक सम्मान अछि। एहि नाट्यवृत्तिक संचालनक भार ट्रस्ट द्वारा लोक कलाक लेल समर्पित संस्था मैलोरंग के प्रदान कयल गेल अछि। वर्ष 2006 सँ नियमित रूप सँ ई नाट्यवृत्ति ज्योति वत्स (दिल्ली), रंजू झा (जनकपुर), स्वाति सिंह (पटना), प्रियंका झा (पटना), वंदना डे (सहरसा) के प्रदान कयल गेल छनि।

वर्ष 2008क लेल समूचा मिथिला (भारत+नेपाल) मे चालीस गणमान्य रंगकर्मी/संस्कृतिकर्मी कें नामक अनुशंसाक लेल पत्र पठाओल गेल छलनि। ओही अनुशंसाक आधार पर प्रथम: मधुमिता श्रीवास्तव (मधुबनी), द्वितीय: वंदना ठाकुर (कोलकाता), तृतीय: नेहा वर्मा (दिल्ली), आ चतूर्थ : विजया लक्ष्मी शिवानी (पटना) अयलीह। किछु पारिवारिक कारण सँ वंदना जी एहि बेर वितरण समारोह मे अयबा सँ असमर्थ भ' गेलीह तैँ ई क्रम बदलि गेल आ वंदना जीक स्थान अगिला बेरक लेल सुरक्षित राखल गेल अछि।

तृतीय: विजया लक्ष्मी शिवानी : पटना

शिवानीक जन्म दरभंगाक रसियाड़ी गाम मे भेलनि। ई पछिला तीन साल सँ लगातार मैथिली रंगमंच सँ जुड़ल छथि। शिवानी अरिपन, भंगिमा सन चिर-परिचित रंग संस्था सँ जुडल छथि। एहि बीच अहाँ नदी गोंगियायल जाय, मिनाक्षी, घुघ्घू, आगि धधकि रहल अछि, से कोना हेतै ?, अलख निरंजन आदि महत्वपूर्ण नाटक मे अभिनय करैत अपन नीक छवि बनओलन्हि अछि। मनोज मनुज, कौशल किशोर दास आ अरविन्द अक्कू जीक निर्देशन मे काज करैत शिवानीक इच्छा छनि जे वरिष्ठ रंग निर्देशक कुणाल जीक निर्देशन मे सेहो

नाटक करी। वरिष्ठ रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र जी सन रंगकर्मी बनबाक हिनक मोन छनि। विजया लक्ष्मी शिवानीजीक कहब छनि जे-समकालीन समस्या मैथिली नाटक मे अएबाक चाही जकर एखन तक कमी अछि। पारिजात हरण हिनकर प्रिय नाटक छनि आ शिवानी नब तुरिया कें कहए चाहैत छथि जे इमानदारी सँ रंगकर्म करबाक चाही।

द्वितीय: नेहा वर्मा: नई दिल्ली

नेहाक जन्म बेगूसरायक न्यू चाणक्य नगर मे भेलनि। ई बच्चे सँ रंगमंच सँ जूड़ल रहलीह अछि। नवतरंग, इप्टा, यात्रीक संग कार्य करैत एखन मैलोरंग दिल्ली सँ रंगकर्म कए रहल छथि। नेहा अनिल पतंग, परवेज़ यूशुफ, संतोष राणा, विजय सिंह पाल, अभिषेक, मनोज मधुकर आ प्रकाश झाक निर्देशन मे नाटक केलीह अछि। हिनका द्वारा कएल गेल प्रमुख नाटक अछि सामा-चकेवा, जट-जटिन, डोम कछ, गोरखधंधा, काठक लोक, कमल मुखी कनिया, एक छल राजा आदि। आगू लगातार मैथिली रंगमंच सँ जुड़ल रहबाक हिनकर इच्छा छनि। हिनकर प्रिय नाटककार आ निर्देशक महेन्द्र मलंगिया छथिन आ रंजू झा (जनकपुर) क अभिनय हिनका प्रभावित करैत छनि। काठक लोक प्रिय नाटक आ प्रगतिशील सोचक संग बेसी युवा कें होएबाक कारण मैलोरंग नेहाक मनपसंद रंग संस्था छनि। अपन आत्मसमर्पण आ संस्कारक संग रंगकर्म सँ जुड़बाक हिनकर आग्रह छनि नबका कलाकारक लेल। नेहा सी. सी. आर. टी. द्वारा जूनियर स्कॉलर्शिप प्राप्त कएने छथि। एखन राष्ट्रीय कथक केन्द्र सँ कथक मे पोस्ट डिप्लोमाक संग खैरागढ़ विश्वविद्यालय सँ एम. ए. क' रहल छथि।

प्रथम: मधुमिता श्रीवास्तव: मधुबनी

मधुमिताक जन्म मधुबनीक सूरत गंज मुहल्लामे भेलनि। बचपने सँ हिनका नृत्य आकर्षित करैत छलनि। विगत दस साल सँ ई मैथिली रंगमंच पर सक्रिय छथि। मधुबनीक इप्टा संग रंगकर्म करैत अहाँ इप्टाक राज्य आ राष्ट्रीय स्तरक महोत्सव मे सेहो शिरकत कएने छी संगहि अहाँ सॉंग आ ड्रामा डिभीजन संग सेहो संबद्ध छी। मुकाभिनयक लेल अहाँ इंटर कॉलेज यूथ फेस्टीवल-03 मे तेसर आ वर्ष 06 मे लोक नृत्यक लेल पहील स्थान प्राप्त कएने छी। अहाँ ओकरा आङनक बारहमासा, ओरिजनल काम, टूटल तागक एकटा ओर, छुतहा घैल, गोनूक गबाह, दुलहा पागल भ' गेलै, बिजलिया भौजी, बिरजू-बिलटू संग कतेको हिन्दीक नाटक कएने छी। मंचीय नाटक संग नुक्कड़ नाटक मे सेहो मधुमिता बढ़ि चढ़ि क' भाग लैत रहलीह अछि। झिझिया, झड़नी, जट जटिन डोम कछ एहन कतेको लोक नृत्य, एकल अभिनय, फिल्म सिरियल आदि मे अभिनय क'चुकल मधुमिता नेहरू युवा केन्द्र, एस.एस.बी संग कतेको संस्था सँ सम्मानित कयल गेल छथि।

(आर्काइव- पछिला अंक सभक संपादकीय केर संक्षिप्त अंश)

01.01.2008

एहि प्रथमांक कें प्रस्तुत करैत हम हर्षित छी। एहि मे मिथिला पेंटिंग आ संस्कृत शिक्षासँ संबंधित समग्री समयाभावक कारणे नहि देल जा सकल। पाठक एहि संबंधित लेख ggajendra@yahoo.co.in कें अटैचमेण्टक रूपमे पठा सकैत छथि।

15.01.2008

एहि दोसर अंकमे 1. मिथिला पेंटिंग, 2. रचना लिखबासँ पहिने छन्द,संस्कृत-मैथिलीक ज्ञान आ' अन्यान्य शिक्षा 3. संस्कृत शिक्षाक आ' 4. 'बालानाम् कृते' नामसँ छोट बच्चा संबंधित सामग्री सम्मिलित कएल जा' रहल अछि। जे मेल सभ प्राप्त भेल ताहि मे oldmani@umainc.com,iipkarna@yahoo.com,jyotiprakash.lal@gmail.comआ'bibhutithakur2000@yahoo.com केर मेल उत्साहवर्द्धक छल आ एहिमे किछु महत्त्वपूर्ण सुझाव सेहो प्राप्त भेल। ओहि आधार पर उपरोक्त लिखित चारि स्तंभक अतिरिक्त 5. पंजी-प्रबंध 6. संस्कृत आ' मिथिला संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासंगिकता आ' 7. Computers, softwares, interfacing of the old & new (restoring old photographs, songs on disks, tapes, etc) पर सामग्रीक प्रारम्भ कए देल गेल अछि।अगला अंकसँ संगीत-शिक्षाक आरंभ कएल जायत।पाठक एहि सभसँ संबंधित आ अन्यान्य रचना सभ ggajendra@yahoo.co.in कें अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .txt किंवा .pdf फॉर्मेटमे पठाए सकैत छथि। पछिला साल तीन महिना मीराम्बिका आ मदर इंटरनेशनलक शिक्षक-शिक्षिकाकें संस्कृत संभाषणक शिक्षा देबाक हेतु श्री अरविन्द आश्रम,नव देहली मे हमरा बजाओल गेल छल। ओहि क्रममे जे नोट बनओलहुँ तकरे संस्कृत शिक्षाक अंतर्गत हम दए रहल छी।

01.02.2008

विदेहक एहि अंककें प्रस्तुत करैत हम हर्षित छी।।एहि अंकसँ संगीत-शिक्षाक आरंभ कएल जा रहल अछि।

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही,आ' सूचित करैत हर्षित छी जे 27.01.2008 कें भाषाकें विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे,विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकें पूर्ण स्वीकृति भेटतैक। नीचाँ लिखल लिंक पर जाय एडिट कए एहि प्रोजेक्टमे अहाँ सभ सहयोग करब, से आशा अछि। पछिला अंकमे देवनागरी कोना लिखू, एहि पर हम लेख लिखने रही। इंगलिश कीबोर्ड पर ओहि तरहेँ लिखने विकीमे सेहो मैथिली लिखि सकैत छी। एम. गेरार्डक माध्यमसँ श्री अंशुमन पाण्डेयक, जिनकर मैथिलीक युनीकोडमे स्थानक आवेदन लंबित अछि, अनुरोध भेटल छल, ओ' सूचना मँगलन्हि

जाहि सँ स्पष्ट रूपसँ बंगला लिपि आ' मैथिली लिपिक मध्य अंतर ज्ञात भए सकए। ई सूचना हम एम. गेरार्डक माध्यमसँ हुनका पठा देलिअन्हि। विकीमे पूर्ण स्वीकृतिक हेतु एहि लिंक सभ पर राखल प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

अपनेक प्रतिक्रिया आ' रचनाक प्रतीक्षा अछि।

15.02.2008

विश्वक कोन-कोनसँ ई-मेल प्राप्त भेल, आ' हम आह्लादित भए गेल छी। ई पत्रिका बिना कोनो विलंबक सालक- साल चलैत रहत, से हम अपने लोकनिकेँ विश्वास दैत छी, आ' ओ' आबए बला काल सिद्ध करत।

चित्रक पौतीकेँ दू भाग कए देल गेल अछि, मिथिलाक खोजमे चित्रकलाक संग पुरातत्त्वक वस्तु सभक आ' दर्शनीय स्थान सभक संकलन अछि। मिथिला रत्नमे ऐतिहासिक आ' वर्त्तमान महापुरुषक चित्रक प्रदर्शनी अछि। एहि संकलनकेँ एहिना सहयोग दए बढ़ाऊ। मैथिलीमे एनीमेशनक घोर अभाव अछि, आ' जौँ कही जे अछिये नहि, तँ झूठ नहि होएत। संगीत आ' संस्कृत शिक्षा सेहो ध्वन्यात्मक सामग्रीक बिना अपूर्ण लगैत अछि। अहू दुनू दिश हमर प्रयास शीघ्रे जायत। हमर इच्छा अछि, जे बालानां कृतेमे देल गेल खिस्साकेँ एनीमेट करी।

श्री गंगेश गुंजनक ईमेल आ' मार्ग निर्देशन प्राप्त भेल, ओ' अपन रचना पठएबाक आश्वासन सेहो देलन्हि अछि। विद्यानंद जी पञ्जीकार जी अपन निबंध पठओने छथि, से आब बुझना जाइत अछि जे रचनाक भरमार लागए बला अछि। सभटा रचना उच्चस्तरीय रहत आ' पत्रिका पाक्षिक आधार पर नियमित चलैथ रहत से आशा करैत छी।

साइटक खोज सर्च इंजन पर आसानीसँ होअए ताहि हेतु किछु विशेष प्रयास कएल गेल अछि। एहि संबंधमे कोनो तकनीकी सुझाव जौँ अपनेक समक्ष होअए, तँ से आमंत्रित अछि।

अपनेक रचनाक आ' प्रतिक्रियाक प्रतीक्षामे।

01.03.08

पछिला पक्षमे हम दरभंगा गेल छलहुँ, अपन भतीजीक विवाहमे। ओतए मिथिला रिसर्च इंस्टीट्युट आ' संस्कृत विश्वविद्यालयक भ्रमण कएलहुँ। सर्वश्री भीमनाथ झा, मैथिलीपुत्र प्रदीप, रघुवीर मोची (अध्यक्ष, मैथिली अकादमी), विश्वनाथ झा(प्रतिकुलपति का. सि. दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय), देवनारायण यादव (अध्यक्ष, मिथिला रिसर्च इंस्टीट्युट) लोकनिक दर्शनक सुअवसर प्राप्त भेल। फेर बिदेश्वरस्थानसँ आँगा गौरीशंकर स्थान (हैंठी बाली) गेलहुँ, आ' ओतय पालवंशक मूर्त्ति आ' ओहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल अभिलेखक चित्र खिंचलहुँ (फोटो मिथिलाक खोज स्तंभमे देखू)। ई मूर्ति भव्य अछि, आ' 1500 वर्ष पूर्व मिथिलाक्षरक प्रभुता देखबैत अछि। एहि पर शोध लेख आँगाक कोनो अंकमे देल जायत। मिथिलाक इतिहासमे एहि स्थलकेँ आइसँ पहिने स्थान नहि देल जा' सकल छल, आ' ईहो तथ्य अछि जे इतिहासक विद्वान श्री डी.एन. झा एही गामक छथि, ओना हैठी बाली हमर मामा गाम सेहो छी।

15.03.2008

विदेह द्वारा किछु पुरान अलभ्य किताबक डिजिटलाइजेशनक कॉर्पोरा सेहो शुरू कएल गेल अछि। पञ्जीक स्कैनिंग आ' सर्च करबा योग्य डिक्शनरी जाहिमे पाठक नव-नव शब्द जोड़ि सकताह केर आधार किछु मनोयोगी विदेह कार्यकर्त्ता सभक द्वार शुरू भेल अछि। ई सभटा सभ केओ नि:शुल्क कए रहल छथि आ' अपन मातृभाषाक आ' मातृभूमिक अनुरागी होयबाक प्रमाण दए रहल छथि।

01.04.08

रचना लिखबासँ पहिने. स्तंभमे मैथिली अकादमी द्वारा निर्धारित भाषाक अंकन कएल गेल अछि,एहिमे विशेष वृद्धि कएल गेल अछि। श्री उदय नारायण सिंह नचिकेता, निदेशक, केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर केर मेल प्राप्त भेल आ' ओ' लिखलन्हि जे ओ' एकरा डॉ. श्री बी मल्लिकार्जुनकेँ अग्रसारित कए देलन्हि, जे केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूरमे भाषा प्रौद्योगिकी विभागक अध्यक्ष छथि। श्री मल्लिकार्जुनजीक ई-मेल सेहो प्राप्त भेल आ' ओ' लिखलन्हि अछि, जे एकरा कमेटीक समक्ष राखल जायत। बी. मल्लिकार्जुन मैथिली स्टाइल मनुअल बनएबाक कार्यकेँ आगाँ बढ़ा रहल छथि।

प्रीति द्वारा कला आ' चित्रकला स्तंभ चित्रित कएल गेल अछि।

मिथिलाक रत्नमे साहित्यकारक अतिरिक्त खेलकूद आ' अन्यान्य विधासँ संबंधित (संगीत, फिल्म, पत्रकारिता, इतिहास, संस्कृत आ' अंग्रेजी, अर्थशास्त्री, डिप्लोमेट, राजनीतिज्ञ आदि) मिथिलाक विभूतिक चित्र प्रदर्शित अछि। वेबसाइट खोलला अनन्तर विद्यापतिक 'बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे'क वाराणसीक गंगातट पर शहनाइ पर भारत रत्न बिस्मिल्लाह खान द्वारा बजाओल, आ' तबला पर किसन महाराज आ' वायलिन पर श्रीमति एन. राजम द्वारा बजाओल संगीत बाजि उठैत अछि। संपर्क_खोज स्तंभ पर मिथिला आ' मैथिलीक साइट सभक संकलन/लिंक देल गेल अछि।विदेहक अपन सर्च इंजिनसँ विदेहक नव-पुरान अंककेँ ताकल जा' सकैत अछि। दोसर सर्च इंजिनसँ मैथिलीक विशेष संदर्भमे वेबकेँ ताकि सकैत छी। पुरान किताब सभक डिजिटल इमेजिंग विदेह कॉर्पोराक अंतर्गत करबाओल जा' रहल अछि। वेब सर्चेबल डिक्शनरी जाहिमे पाठक नव-नव

शब्द जोडि सकताह केर कार्य सेहो आरंभ कएल गेल अछि। मैथिलीमे बालानांकृतेक एनीमेशन सेहो शुरू कए देल गेल अछि। पजीक मिथिलाक्षरक पत्रक सेहो स्कैनिंग शुरू भ' गेल अछि। ई सभ शीघ्र आर्काइवक अंतर्गत देल जायत। विदेहक पुरान अंक सामान्य pdf फॉर्मेटमे आर्काइवक अंतर्गत राखल गेल अछि। पाठक पाक्षिक पत्रिकाक pdf संस्करण डाउनलोड सेहो कए सकैत छथि। प्रथम पृष्ठ पर देवनागरी टाइप करबाक हेतु किछु सहयोगी लिंक देल गेल अछि। एहि तरहक लिंक पर ऑनलाइन टाइप क' कॉपी क' ई-मेल किंवा वर्ड डॉक्युमेंटमे पेस्ट क' सकैत छी।

15.04.2008

एहि अंकमे नचिकेता अपन 25 सालक चुप्पी तोड़ि नो एंट्री: मा प्रविश नाटक मैथिलीक पाठकक समक्ष विदेह ई-पत्रिकाक माध्यमसँ पहुँचा रहल छथि। धारावाहिक रूँपे ई नाटक विदेहमे ई-प्रकाशित भ' रहल अछि।

श्री गंगेश गुंजन जीक वैचारिक मंथन एहि बेर पाठकक समक्ष अछि। अगिला अंकसँ पाठक हुनकर कविताक वैचारिक रस ल' सकताह। बालानां कृतेमे ज्योति पँजियारक लोकगाथा प्रस्तुत कएल गेल अछि।

01.05.2008

13 मई कँ एहि बेर जानकी नवमी अछि। एहि अवसर पर एहिसँ संबंधित निबंध देल जा' रहल अछि। एहि निबंधक लेखिका छथि श्रीमति नूतन झा।

बालानां कृतेमे दानवीर दधीचीक वैदिक स्वरूप प्रस्तुत कएल गेल अछि, अंतमे सूत्रधारसँ ईहो कहबएलहुँ जे कोना बादमे तथाकथित पंडित लोकनि ओहि कथाक बंटाधार कए देलन्हि।

मिथिला रत्नमे बैकग्राउन्ड संगीत सेहो अछि, आ' ई अछि विश्वक प्रथम राष्ट्रभक्ति गीत (शुक्ल यजुर्वेद अध्याय 22, मंत्र 22) जकरा मिथिलामे दूर्वाक्षत आशीश मंत्र सेहो कहल जाइत अछि।

'विदेह' ई पत्रिकाक प्रचार सर्च इंजिन द्वारा, गूगल आ' याहू ग्रुप द्वारा, वर्डप्रेस आ' ब्लॉगस्पॉटमे देलगेल ब्लॉग द्वारा, फेसबुक, आउटलूक, माय स्पेस, ओरकुट आ' चिट्ठाजगतक माध्यमसँ कएल गेल। मुदा जखन डाटा देखलहुँ तँ आधसँ बेशी पाठक सोझे http://www.videha.co.in पता टाइप कए एहि ई-पत्रिकाकेँ पढ़लन्हि।

15.05.2008

३ जूनकेँ एहि बेर वट सावित्री अछि। एहि अवसर पर एहिसँ संबंधित निबंध देल जा' रहल अछि। एहि निबंधक लेखिका छथि श्रीमति नूतन झा।

बालानां कृतेमे बगियाक गाछ शीर्षक लोककथाकेँ ज्योतिजीक चित्रसँ सुसज्जित कएल गेल अछि।

श्री गंगेश गुंजन जीक कविता पाठकक समक्ष अछि।

विश्वक प्रथम राष्ट्रभक्ति गीत (शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२) जकरा मिथिलामे दूर्वाक्षत आशीश मंत्र सेहो कहल जाइत अछि, एकर अर्थ विदेह आर्काइव स्तंभमे अभिनव रूपमे देल गेल अछि, आ' ग्रिफिथक देल अर्थसँ एकर भिन्नता देखाओल गेल अछि। बैकग्राउन्ड संगीत विद्यापतिक बड़ सुख सार तँ अछिये पहिनेसँ।

नचिकेताजीक नाटक नो एंट्री: मा प्रविश दोसर कल्लोलक दोसर खेप ई-प्रकाशित भ' रहल अछि। गंगेश गुंजन जीक कविता आ विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि।

एहिमे कोनो संदेह नहि जे २०म शताब्दीमे जतेक मिथिला विभूति भेलाह ओहिमे श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' सर्वोपरि छथि। विदेह हेतु हुनकर पठाओल संदेशक आधार पर हुनक जीवनी आ कृतिकेँ विदेहक संगीत शिक्षा स्तंभमे पाठकक समक्ष अनबामे हमरा सभ गर्व अनुभव कए रहल छी।

01.06.2008

गंगेश गुंजन जीक कथा आ विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर सेहो हैकू लिखलन्हि, मुदा मैथिलीमे जापानी पद्य विधाक आधार पर "विदेह" प्रस्तुत कए रहल अछि ई विधा।

15.06.2008



२७ जून २००८ केँ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक सभागारमे मैथिली कवि सम्मेलनमे अएबाक नोत विदितजी द्वारा भेटल, से ओतए साँझ छह बजे पहुँचलहुँ। हॉलक सभटा कुर्सी भरल छल, हम आ कैमरामेन दू गोटे छलहुँ।



नजरि घुमेलहुँ तँ एकटा कुर्सी खाली छल, से कैमरामेनकेँ विदा कए स्वयं कैमरा लए ओतए बैसि गेलहुँ।



अमरनाथ माइक पकड़ि घोषणा उद्घोषणा कए रहल छलाह, लागल जेना अशोक चक्रधर हिन्दी छोड़ि मैथिली बाजि रहल छथि। सभसँ पहिने संजीव तमन्ना जीकेँ काव्य-पाठक लेल बजाओल गेल। ओ "पीयर पोस्टकार्ड" शीर्षक कविताक पाठ कएलन्हि। ताहि पर उद्घोषक टीप देलखिन्ह जे एहि मोबाइलक युगमे पोस्टकार्डक एतेक चरचा पर डाक विभाग हुनका धन्यवाद देतन्हि। फेर उद्घोषणा

भेल जे पंकज पराशरजी अपन कविताक पाठ करताह, मुदा ओ तावत धरि पहुँचल नहि छलाह, मुदा वीडियोमे बादमे देखलहुँ जे ओ आयल रहथि, मुदा प्रायः कतहु एम्हर-ओम्हर चलि गेल रहथि।



से रमण कुमार सिंहजी कैं बजाओल गेल। ओल्ड होममे वृद्ध आ एना किएक होइत छैक लोक शीर्षक पद्य सुनओलन्हि रमण जी।

फेर श्रीमति सुनीता झाकैं ब्रजेन्द्र त्रिपाठी जीक विशेष अनुरोध पर बजाओल गेल।



ओ अपन कविता निवेदन मिथिला आ भारत देश महान पर सुनओलन्हि। संगे ईहो कहलीह जे ई प्रथम अवसर छन्हि हुनका लेल मंच पर पद्य पाठ करबाक।



फेर मंजर सुलेमान पढ़लन्हि, मोन पड़ैत अछि गाम, आ अविनाशजी पढ़लन्हि विद्यापति स्मृति



समारोहक उपलक्षमे दू टा कविता- ई हुनकर ब्लॉग पर सेहो बहुत दिनसँ अछि।



कामिनी कामायनीकैं गाम मोन पड़लन्हि आ विस्थापित लोक सेहो।



बिलट पासवान 'विहंगम' जी जौं पुछू तँ सभसँ बेशी प्रभावी रहथि, कारण ओ देखि कए नहि पढ़लन्हि।



तावत पकज पराशर जी आबि गेल छलाह, आ ओ ''समयकैं अकानैत'' जे हुनकर पहिल पद्य संग्रह छन्हि, सँ ''हम परिनाम निरासा' शीर्षक पद्य पढ़लन्हि। हुनका एक बेर फेर आबय पड़लन्हि विहंगमजीक विशेष अनुरोध पर ''महापात्र'' शीर्षक रचना पढ़बाक लेल। 'विदेह' केर एहि अंकसँ 'समय कैं अकानैत' पोथीक समीक्षा/ परिचय देल जा रहल अछि।



धीरेन्द्र कुमार मिश्र महोदय एकटा पद्य पढ़लन्हि, दोसर पद्यक सस्वर पाठ करबाक अनुमति माँगि रहल छलाह, मुदा उद्घोषक जी समयाभावक कारणेँ से अनुमति नहि देलखिन्ह आ प्रभात झा, मध्य प्रदेशसँ राज्यसभा सांसद, मुख्य अतिथिकैं पद्य पाठक लेल आमंत्रण देलन्हि। मुदा ओ तावत धरि पहुँचल नहि छलाह, बादमे जखन पहुँचलाह तँ कहलखिन्ह जे ओ कविता नहि लिखैत छथि, हिन्दी गद्य लिखैत छथि। हुनका एतए अएबाक छलन्हि दू टा किताबक लोकार्पण करबाक हेतु, मैथिलीमे ''इतिहास'' दर्शन- लेखिका वीणा ठाकुर आ हिन्दीमे के.बी. प्रसादक ''दुर्योधन के रहते कहीं महाभारत रुका है'' पद्य संग्रहक।



फेर देवशंकर नवीन जी अएलाह। ओ हिन्दी, मैथिली आ अन्य भाषाक कवि सम्मेलनक चर्च कएलन्हि आ कहलन्हि जे एतेक बेशी मात्रामे श्रोता-दर्शकक उपस्थिति विलक्षण अछि, कारण पहिने जे ओ विभिन्न प्रदेशमे एहि तरहक आयोजन कएने रहथि ओतए संस्था अपन दस टा लोककैं बैसा कए कुरसी भड़ैत छल। प्रभात झा जाधरि पहुँचितथि तावत रमण कुमार सिंह आ अविनाश जीकैं दोसर राउन्डक लेल बजाओल गेल।



फेर विदित जी पद्य पाठक लेल पहुँचलाह, मुदा यावत शुरू करितथि तावत प्रभात झाजी आबि गेलाह से ओ उतरि कए हुनकर स्वागत कएलन्हि। विदित जी मैथिलीमे दैनिक 'मैथिली समाद' केर कोलकातासँ



ताराकान्त झा द्वारा अगस्तसँ शुरू कएल जएबाक शुभ सूचना सेहो देलन्हि आ पद्य पाठ सेहो कएलन्हि।



फेर प्रभात जी अपन संस्मरण सुनओलन्हि आ दुनू पुस्तकक लोपार्पण भेल।







चित्रकार सचिन्द्रनाथ झा द्वारा श्री प्रभात झा आ श्री विदित जीकेँ विद्यापतिक चित्र प्रदान कएल गेल, एहि चित्रमे बैकग्राउन्डमे मिथिला चित्रकलाक योग सेहो देल गेल छल। विदित जी प्रसन्न छलाह एहि सफल आयोजनसँ, जखन हम बधाइ देलियन्हि तँ कहलन्हि जे मैथिली आब रोड पर आयत, कोठलीमे नहि रहत।

01.07.2008

श्री मौन जी, मैथिलीपुत्र प्रदीप, श्री सुभाषचन्द्र यादव, श्री पालन झा आ श्री आद्याचरण झा जीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री मायानन्द जीक इन्टरव्यू लेलन्हि श्री डॉ. शिवप्रसाद यादव। तकर पहिल भाग सेहो प्रस्तुत अछि।

शेष स्थायी स्तंभ यथावत अछि।

15.07.2008

एहि अंकमे नचिकेताजीक नाटक नो एंट्री: मा प्रविश अन्तिम खेप ई-प्रकाशित भ' रहल अछि। गंगेश गुंजन जीक पद्य आ विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री मौन जी, मैथिलीपुत्र प्रदीप, श्री पालन झा श्री पंकज पराशर आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री मायानन्द जीक इन्टरव्यू लेलन्हि श्री डॉ. शिवप्रसाद यादव। तकर दोसर भाग सेहो प्रस्तुत अछि।

नेपाल १ टी.वीक मैथिली कार्यक्रमक विषयमे विवरण दए रहल छथि जितेन्द्रजी आ भक्ति-गीत प्रस्तुत कएने छथि जितमोहनजी।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

01.08.2008

एहि अंकसँ श्री गगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत शुरू भए रहल अछि, "विदेह" मे पहिल खेप पढ़ू। विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री मौन जी, श्री पंकज पराशर, श्री सुशान्त, प्रकाश, ज्योतिप्रकाश लाल, जितमोहन, विनीत उत्पल शैलेन्द्र मोहन झा आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।एहि अंकमे नचिकेताजीक टटका लिखल कविता सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि।

मैथिली रिपोर्ताजक नव विधाक प्रारम्भ कए रहल छथि पुण्यधाम जनकपुरधामक युवा पत्रकार श्री जितेन्द्र झा।

श्री हरिमोहन झाजीक सम्पूर्ण रचना संसारक अवलोकन सेहो शुरू भए रहल अछि।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

15.08.2008

मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ आइ काल्हि जूझि रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ केर बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भए गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। ओतुक्का लोक एहि नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता, चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक एहि बेरक प्रकोप ओहि दुष्प्रचारकेँ खतम कए पाओत आकि नहि से नहि जानि!

पहिने हमरा सभ ई देखी जे कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण ककरा लग अछि। ई नियन्त्रण अछि बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन आएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। किएक?

सामयिक घटनाक्रम- कोशीपर भीमनगर बैरेज, कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल एहि छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल? छहरक बीचमे जे रेत जमा भए जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जाएत, तखन सभ साल बान्धक ऊँचाई बढ़ाबए पड़त। एहि साल ई कार्य समयसँ किएक नहि शुरू भेल? फेर शुरू भेल बरखा, १८ अगस्तकेँ कोशी बान्धमे २ मीटर दरारि आबि गेल। १९८७ ई.क बाढ़ि हम आँखिसँ देखने छी। झंझारपुर बान्ध लग पानि झझा देलक, ओवरफ्लो भए गेल एक ठामसँ, आ आँखिक सोझाँ हम देखलहुँ जे कोना तकर बाद १ मीटरक कटाव किलोमीटरमे बदलि जाइत अछि। २७-२८ अगस्त २००८ धरि भीमनगर बैरेजक ई कटाव २ किलोमीटर भए चुकल अछि। आ ई करण भेल कोशीक अपन मुख्य धारसँ हटि कए एकटा नव धार पकड़बाक आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करबाक। नासाक ८ अगस्त २००८ आ २४ अगस्त २००८ केर चित्र कौशिकीक नव आ पुरान धारक बीच २०० किलोमीटरक दूरी देखा रहल अछि। भीमनगर बैरेज आब एकटा कोशीक सहायक धारक ऊपर बनल बैरेज बनि गेल।

राष्ट्रीय आपदा: जाहि राज्यमे आपदा अबैत अछि, से केन्द्रसँ सहायताक आग्रह करैत अछि। केन्द्रीय मंत्रीक टीम ओहि राज्यक दौरा करैत अछि आ अपन रिपोर्ट दैत अछि जाहिपर केन्द्रीय मंत्रीक एकटा दोसर टीम निर्णय करैत अछि, आ ओ टीम निर्णय करैत अछि जे ई आपदा राष्ट्रीय आपदा अछि वा नहि। बिहारक राजनीतिज्ञ अपन पचास सालक विफलता बिसरि जखन एक दोसराक ऊपर आक्षेपमे लागल छलाह, मनमोहन सिंह मंत्रीक प्रधानक रूपमे दौरा कए एकरा राष्ट्रीय आपदा घोषित कएलन्हि। कारण ई लेवल-३ केर आपदा अछि आ ई सम्बन्धित राज्यक लेल असगरे, नहि तँ वित्तक लिहाजसँ आ नहिए राहतक व्यवस्थाक सक्षमताक हिसाबसँ, एहिसँ पार पाएब संभव अछि। आब राष्ट्रीय आकस्मिक आपदा कोषसँ सहायता देल जाऽ रहल अछि, किसानक ऋण-माफी सेहो सम्भव अछि।

उपाय की हो? कुशेश्वर स्थानक आपदा सभ-साल अबैछ, से सभ ओकरा बिसरिए जेकाँ गेलाह। मुदा आब की हो? दामोदर घाटीक आ मयूराक्षी परियोजना जेकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि। नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब। एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ध बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसँ वार्ता आ त्वरित समाधान। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि, जेना बरखा आबएसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब। आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखब। कोशीकेँ पुरान पथपर अनबाक हेतु कैकटा बान्ह बनाबए पड़त आ ओ सभ एकर समाधान कहिओ नहि बनि सकत।

कमला धार

नहरिसँ लाभ हानि- एक तँ कच्ची नहरि आ ताहूपर मूलभूत डिजाइनक समस्या, एकटा उदाहरण पर्याप्त होएत जेना-तेना बनाओल परियोजना सभक। कमलाक धारसँ निकालल पछबारी कातक मुख्य नहरि जयनगरसँ उमराँव- पूर्वसँ पछबारी दिशामे अछि। मुदा ओतए धरतीक ढ़लान उत्तरसँ दक्षिण दिशामे अछि। बरखाक समयमे एकर परिणाम की होएत आकि की होइत अछि? ई बान्ह बनि जाइत अछि आ एकर उत्तरमे पानि थकमका जाइत अछि। सभ साल एहि नहर रूपी बान्हसँ पटौनी होए वा नहि एकर उतरबरिया कातक फसिल निश्चित रूपेण डुमबे टा करैत अछि। फलना बाबूक जमीन नहरिमे नञि चलि जाए से नहरिक दिशा बदलि देल जाइत अछि!

कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल ताहि कारणेँ एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भए गेल। कमला धार जे बलानमे पिपराघाटमे १९५४ मे मिलि गेलीह, हिमालयसँ बहि कए कोनो पैघ लक्कड़क अवरोधक कारण। आब हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे २ मीटरसँ बेशी तक बढ़ि जाइत अछि। १९६५ ई.सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई माँग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाए!

स्कूल कौलेजमे छुट्टी गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समय देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि?

वरिष्ठ साहित्यकार वैकुण्ठ झाजीक पद्य सेहो अछि। कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री कैलाश कुमार मिश्र जीक "यायावरी", मित्रनाथ झा जीक पद्य, नूतन जीक चौठचन्द्र पूजापर लेख, श्याम सुन्दर शशि आ कुमार मनोज कश्यपक लघु-कथा आ श्री शम्भू कुमार सिहक आ अनलकान्त जीक कथा सेहो अछि। श्री शम्भू कुमार सिह जीक पद्य सेहो ई-प्रकाशित भऽ रहल अछि। बी.के कर्णक मिथिलाक विकासपर लेख, श्री ओमप्रकाश जीक लेख., श्री मौन जी, श्री पंकज पराशर, श्री सुशान्त, प्रकाश, जितमोहन, विनीत उत्पल शैलेन्द्र मोहन झा आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर

सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

मैथिली रिपोर्ताज लिखने छथि पुण्यधाम जनकपुरधामक युवा पत्रकार श्री जितेन्द्र झा संगमे ज्योतिजी सेहो लंदनसँ रिपोर्ताज पठेने छथि।

श्री हरिमोहन झाजीक सम्पूर्ण रचना संसारक अवलोकन सेहो आगाँ बढ़ल अछि।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

पोथी समीक्षा:

बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज- एहि नामसँ १० टा गीतक संग्रह लए श्री बिनीत ठाकुर- शिक्षक, प्रगति आदर्श ई. स्कूल, लगनखेल, ललितपुर प्रस्तुत भेल छथि। ई एहि शताब्दीक पहिल पोथी छी जे देवनागरीक संग मिथिलाक्षरमे सेहो आयल अछि, आ एकरा हम अंशुमन पाण्डेयकेँ पठा देलियन्हि, यूनीकोडक मैपिंगक लेल, कारण विनीतजी हमरा एहि पोथीकेँ ई-मेलसँ पठेबाक अनुमति देने छथि, ताहि लेल हुनका धन्यवाद।

"भरल नोरमे" शीर्षक पद्यमे की सुतलासँ भेटलै अछि ककरो अधिकार आ "गाम नगरमे"- लोकतंत्रमे अपन अधिकार लऽ कऽ रहत मधेसी, ई घोषणा छन्हि कविक तँ "कोरो आ पाढ़ि'मे गरीब छोड़िकऽ के बुझतै गरीबीके मारि- ई कहि कवि अपन आर्थिक चिन्तन सेहो सोझाँ रखैत छथि। चहुँदिश अमङ्गलमे जङ्गलक विनाशपर मुश्किलेसँ सुनी चिड़ियाके चिहुं-चिहुं- कहि कवि अपन पर्यावरण चिन्तन सोझाँ रखैत छथि। "जे करथि घोटाला" मे भ्रष्टाचारपर आ "जाइतक टुकड़ी"मे जाति प्रथापर कवि निर्ममतासँ चोट करैत छथि तँ "बेटीक भाग्यविधान"मे कविक भावना उफानपर अछि। "कम्प्युटरक दुनिया" आ "अङ्गरेजिया" मे कवि सामयिकताकेँ नहि बिसरल छथि तँ अन्तिम पद्य "ताल मिसरी" मे वरक सासुर प्रेम कनेक व्यंग्यात्मक सुरमे कवि कहि अपन एहि क्षेत्रमे सेहो दक्ष होएबाक प्रमाण दैत छथि। ओना तँ कविक ई प्रथम प्रकाशित कृति छन्हि, मुदा कवि जाहि लय सँ कविता कएने छथि ओ अभूतपूर्व रूपेँ प्रशंसनीय अछि।

01.09.2008

कोशी:

कोशीक पानि माउन्ट एवेरेस्ट, कंचनजंघा आ गौरी-शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशी, जाहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी सम्मिलित अछि।

एहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी आ दूध कोसी मिलि कए सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आ ई मोटा-मोटी पच्छिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलाक पानि अनैत अछि।

अरुणकोसी माउन्ट एवेरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि।

तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पच्छिम दिशामे बहैत अछि आ अपन पानि कंचनजंघा पर्वत श्रृंखलासँ पबैत अछि।

आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आ तामरकोसी धनकुट्टा जिलाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतएसँ १० किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैत अछि जतए महाकोसी, सप्तकोसी वा कोसी मैदानी धरातलपर अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिणमे चलैत प्रायः ५० किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर-भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आ कनेक दक्षिण-पच्छिम रुखि केलाक बाद दक्षिण-पूर्व आ पच्छिम-पूर्व दिशा लैत अछि आ भारतमे लगभग १३० किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइत छथि। कोसीमे बागमती आ कमलाक धार सेहो सहरसा- दरभंगा-पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि।

कोसीपर पहिल बान्ह १२म शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे एखनो अछि।

भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संगे पूर्वी कोसी तटबन्ध सेहो बनि गेल आ पूर्वी कोसी नहरि सेहो।

कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ २३ किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आ राजनीतिमे ओझरा गेल। एहि बैराजसँ दू फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैरेजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैरेज काज अबितए, दोसर एहिसँ उत्तर-प्रदेशसँ असम धरि जल परिवहन विकसित भऽ जाइत जाहिसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फायदा होइतए। मुदा एहि बैरेज निर्माण लेल पाइ आवंटन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ के.एल.राव नहि देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जेना तेना मन्थर गति सँ शुरू भेल मुदा एखनो धरि ओहिमे काज भइये रहल अछि।

मुदा कोसी लेल ई नहि भऽ सकल। विचार आएल तँ योजना अस्वीकृत भए गेल। जतेक दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल ततेक दिन विवाद होइत रहल, डगमारा बैराजक योजनाक बदलामे सस्ता योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सेहो पूर्ण हेबाक बाटे ताकि रहल अछि!

विश्वेश्वरैय्या पड़ैत छथि मोन: हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्हक हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेशरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ

अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि कएलन्हि वरन् वालु, कैल्सियम पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।

दिल्ली अछि दूर एखनो! प्रधानमंत्री आपदा कोष आ मुख्यमंत्री आपदा कोषक अतिरिक्त स्वयंसेवी संगठन सभक कोषमे सेहो दिल्लीवासी अपन अनुदान दए सकैत छथि। मुदा दीर्घ सूत्री काज होएत निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब।

१. स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समय छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल। दिल्लीवासी सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई.सँ एहि तरहक कार्यान्वयन कराबी तँ लाजे बिहार बोर्ड ओकरा लागू कए देत।

२. भारतमे डगमारा बैराजक योजनाक प्रारम्भ कएल जाए कारण भीमनगर बैरेज अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कए लेने अछि। एहिमे फन्ड रेलवे आ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाए कारण एहिपर रेल आ सड़क सेहो बनि सकैछ/ आ बनबाक चाही।

३. बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए।

४. कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए।

५. बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होए जेना देखि परि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए युद्ध-स्तरपर काज एहि सभपर कार्य शुरू कएल जाए।

उपरोक्त बिन्दु सभपर दिल्लीमे लॉबी बना कए केन्द्र सरकारपर/ मंत्रालयपर दवाब बनाएब तखने बिहार अपन नव छवि बना सकत। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह तखने पूर्ण होएत आ धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमरजीक कोसी बाढ़िपर निबन्ध आ कोसीक बाढ़िपर स्व. राजकमल द्वारा लिखित कथा अपराजिता देल गेल अछि।

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर दोसर खेप पढ़ू संगमे हुनकर विचार-टिप्पणी सेहो। कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री कैलाश कुमार मिश्र जीक "यायावरी", अंकुर झा जीक पद्य, श्याम सुन्दर शशिक रिपोर्ताज आ कुमार मनोज कश्यपक लघु-कथा आ श्री शम्भू कुमार सिहक कथा-निबन्ध सेहो अछि। बी.के कर्णक मिथिलाक विकासपर लेख, श्री पंकज पराशर, जितमोहन, विनीत उत्पल, नवेन्दु कुमार झा आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि। गुँजन जीक गजल आ' विचार टिप्पणी सेहो अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी। उदाहरण आ नो एण्ट्रीः मा प्रविश पर समीक्षा देल गेल अछि।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

गोपेशजी स्वर्गीय भए गेलाह हुनकर संस्मरण हम लिखने छी पद्य स्तंभमे, संगमे देने छी हुनकर एकटा पद्य सेहो।

15.09.2008

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर दोसर खेप पढ़ू संगमे हुनकर विचार-टिप्पणी सेहो। सुभाष चन्द्र यादव जीक कथा, कुमार मनोज कश्यपक लघु-कथा, महेश मिश्र "विभूति"-श्री पंकज पराशर-विनीत उत्पल- श्यामल जीक पद्य आ प्रेमशंकर सिंह, मौनजी, जितमोहन, ओमप्रकाश, शक्ति-शेखर, नूतन झा जीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

01.10.2008

जीन मेरी गुस्ताव ली क्लाजियो (1940-)केँ एहि सालक साहित्यक ८ लाख १५ हजार पौंडक साहित्यक नोबल पुरस्कारसँ सम्मानित कएल जएबाक घोषणा भेल अछि। मानवतापर राज कए रहल सभ्यतासँ नीचाँ आ आगू जाऽ कए देखबाक प्रवृत्ति छन्हि क्लाजियोक। न्यू-डिपार्चर्स, पोएटिक एडवेंचर आ सेंसुअल एक्सटेसीक लेखक छथि क्लाजियो।

ली क्लाजियो मूलतः फ्रांसीसी भाषाक उपन्यासकार छथि, ओना हिनकर पिता अंग्रेज आ माता फ्रांसीसी छथिन्ह, दुनू गोटे मारीशससँ सम्बन्धित। आ क्लाजियो नाइजीरियाक समुद्री यात्रासँ नेनपनहिमे साहित्यिक जीवनक प्रारम्भ कएलन्हि। १९६३ ई. मे हिनकर पहिल उपन्यास प्रकाशित भेल जे आधुनिक समाजक प्रति एक तरहक विद्रोह छल। फ्रेंच लेखक सभमे क्लाजियो स्वीकृत नहि भऽ सकलाह आ एखन ओ न्यू मेक्सिकोमे रहैत छथि।

थर्ड वर्ल्डक नजरिसँ देखब हिनकर रचनाक एकटा विशिष्टता छन्हि। मारीशसक उपन्यासकार अभिमन्यु उनुथक आ ताहि क्रममे रामायणक चरचा सेहो क्लाजियो करैत छथि।

हिनकर पहिल उपन्यास ले-प्रोसेस-वर्बल- द इनटेरोगेशन (जांचक पूछताछ)

१९६३ ई. मे आयल जे अस्तित्ववादक बादक समयक उपन्यास छल। दिन-प्रतिदिनक भाषणबाजीक बदला सत्यताकेँ देखबय बला शक्ति ओ शब्द सभकेँ देलन्हि। फेर आयल हुनकर दू टा कथा संग्रह ला-फीवर आ ला-देल्यूज, एहि दुनू संग्रहमे पाश्चात्य नगरक समस्या आ ओतुक्का डरक यथार्थ चित्रण भेल अछि। टेरा-अमाटामे हुनकर पारस्थितिकी-तंत्रसँ जुड़ाव स्पष्ट अछि तँ डेजर्टसँ ओ उपन्यासकारक रूपमे स्थापित होइत छथि, एहिमे ओ उत्तर अफ्रीकाक लुप्त होइत संस्कृतिक चित्रण करैत छथि। क्लाजियो दार्शनिक लेख सेहो लिखने छथि आ बच्चा लोकनिक लेल लुलाबी सेहो। अमेरिकी साहित्य जाहि प्रकारेँ अनुवादसँ दूर आ अपनामे मग्न भऽ गेल अछि सएह कारण अछि फिलिप रॉथक एहि रेसमे हाइपक रूपमे शामिल होएबाक बावजूद पाछू छूटि जएबाक। अर्थशास्त्रमे अमेरिकाक मोनोपोलीक विपरीतक ई साहित्यक क्षेत्रक घटनाक्रम अछि।

एहि अंकमे:

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर पाँचम खेप पढ़ू संगमे हुनकर विचार-टिप्पणी सेहो। सुभाष चन्द्र यादव आ विभा रानी जीक कथा, महेश मिश्र "विभूति"-श्री पंकज पराशर- विनीत उत्पल- श्यामल जीक पद्य आ प्रेमशंकर सिंह, मौनजी, जितमोहन, प्रकाश झा, ओमप्रकाश जीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी। सुभाषचन्द्र यादव जी पर श्री महाप्रकाश लिखि रहल छथि। जितेन्द्र झा, नवेन्दु आ प्रीतिक रिपोर्ताज छन्हि तँ युवा प्रतिभा अंशुमालाक विषयमे लिखने छथि जितेन्द्र।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

मधुप जीक "घसल अठन्नी" आ तारानन्द वियोगी जीक "मूलभूत" केर अग्रेजी अनुवाद सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि।

15.10.2008

पहिल कीर्तिनारायण मिश्र सम्मान कवि हरेकृष्ण झाकेँ ११.११.२००८ केँ विद्यापति पर्वक अवसरपर देल जएतन्हि। एहि बेरक यात्री चेतना पुरस्कार श्री मन्त्रेश्वर झाकेँ भेटलन्हि।

कीर्तिनारायण मिश्रक जन्म १७ जुलाई १९३७ ई. केँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त, हम स्तवन नहि लिखब (कविता संग्रह)। आखर पत्रिकाक लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक।

मंत्रेश्वर झा-जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अन्चिनहार गाम, बहसल रातिक इजोत (कविता संग्रह); एक बटे दू (कथा संग्रह), ओझा लेखे गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद ''कुंडली'' नामसँ प्रकाशित। दि फूल्स पैराडाइज (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध), कतेक डारि पर।

हरेकृष्ण झा, जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलखमे। अभियंत्रणक अध्ययण छोड़ि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। एना कतेक दिन (कविता संग्रह)।

बुकर पुरस्कार: आस्ट्रेलियन पिता आ भारतीय माताक सन्तान ३३ वर्षीय बैचेलर श्री अरविन्द अडिग ऑक्सफोर्डसँ शिक्षा प्राप्त कएने छथि आ सम्प्रति मुम्बईमे रहैत छथि। हिनकर पहिल अंग्रेजी उपन्यास छन्हि द ह्वाइट टाइगर जाहि पर ब्रिटेन, आयरलैण्ड आ कॉमनवेल्थ देशक वासी केँ देल जा रहल अंग्रेजी भाषाक उपन्यासक ५०,००० पौन्डक ''मैन बुकर'' पुरस्कार भेटलन्हि अछि आ बेन ओकेरीक बाद ई पुरस्कार प्राप्त केनिहार ई सभसँ कम उम्र केर लेखक छथि।

द ह्वाइट टाइगर- ई उपन्यास हार्पर कॉलिन्स-रैन्डम हाउस द्वारा प्रकाशित भेल आ प्रकाश आ अन्हारक दू तरहक भारतक ई वर्णन करैत अछि। एकटा फर्मक मालिक बलराम जे शुरूमे गयासँ आयल बलराम हलवाई छलाह चीनी प्रधानमंत्री वेन जिआबाओक भारत आगमनपर अपन अनुत्तरित सात पत्र (हरिमोहन झाक पाँच पत्र आ ब्यासजीक दू पत्र जकाँ) केर माध्यमसँ अपन खिस्सा कहैत छथि। ओ एकटा रिक्शा चालकक बेटा छथि जे चाहक दोकानपर किछु दिन काज केलाक बाद दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनैत छथि। फेर ओकरा मारि कए उद्योगपति बनि जाइत छथि।

ड्राइवर सभ गप मालिकक सुनैत रहैत अछि, कलकत्ताक रिक्शाबला सभक खिस्सा सेहो अडिग सुनलन्हि आ दिल्लीक ड्राइवर लोकनिक सेहो आ खिस्साक प्लॉट बना लेलन्हि।

समालोचनाक स्थिति: हिन्दीक अखबार सभ ई पुरस्कार प्राप्त भेलाक बादो एहि पुस्तकक समीक्षा एकटा चीप टी.वी. सीरियलक पटकथाक रूपमे कएलन्हि। मैथिलीक समालोचनाक तँ गपे छोड़ू, अंग्रेजीक अखबार सभ मुदा नीक समीक्षा कएलक।

दिल्लीक चिड़ियाघरमे एकटा ह्वाइट टाइगर छैक गेनेटिक म्युटेशनक परिणाम जे एक पीढ़ीमे एक बेर अबैत छैक नहियो अबैत छैक। बलराम हलवाईक खिस्सा सेहो ह्वाइट टाइगर जकाँ विरल भेटत बेशी तँ कमाइ-खाइमे जिनगी बिता दैत छथि। एकर हार्डबाउन्ड किताब २०,००० कॉपी बिका चुकल अछि। पेन्गुइन इण्डिया जे ई किताब छपबासँ इन्कार कएने छल कहलक जे क्रॉसवर्ड पुरस्कारसँ किताबक बिक्रीमे १००० कॉपीक वृद्धि होइत छैक, बुकर भेटलापर १०,००० कॉपी बेशी बिकाइत छैक आ साहित्य अकादमी

भेटलापर अंग्रेजी किताब १० कॉपी बेशी बिकाइत अछि!

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर छठम खेप पढ़ू। सुभाष चन्द्र यादव आ भ्रमर जीक कथा, महेश मिश्र "विभूति"-श्री पंकज पराशर- विनीत उत्पल- श्यामल जीक पद्य आ प्रेमशंकर सिंह जीक शोध लेख अछि।, जितमोहन, रामलोचन ठाकुर, निमिष झा, राजेन्द्र विमल, रेवतीरमण लाल, दिगम्बर झा "दिनमणि", रूपा धीरू, ज्योति, विद्यानन्द झा, नवीननाथ झा, विनीत उत्पल, वृषेश चन्द्र लाल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विभूति, महेन्द्र मलंगिया, कुमार मनोज कश्यप, कृपानन्द झा. रामभरोस कापड़ि रोशन जनकपुरी, पंकज पराशर, वैकुण्ठ झा, प्रकाश झा आ हिमांशु चौधरी जीक रचनासँ सुशोभित ई अंक अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

शिवशंकर श्रीनिवास केर मैथिली कथाक अग्रेजी अनुवाद सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि।

भारतक विश्वनाथन आनन्द वर्ल्ड चेस प्रतियोगिता जितलन्हि तँ भारत अपन चन्द्रयान-१ यात्रा सेहो शुरु कएलक। मुदा संगमे असमक बम विस्फोट, उड़ीसाक नन बलात्कार आ मालेगाँव विस्फोट मोरक पएर सिद्ध भेल।

01.11.2008

४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह ६ नवम्बर २००८: संसदक लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियममे कश्मीरी कवि श्री रहमान राहीकेँ प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह द्वारा प्रदान कएल जाएबला ४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोहक आमंत्रण पाबि ओतए नियत समयसँ सायं छह बजे हम पहुँचलहुँ। अपन प्रतिष्ठाक अनुरूप प्रधानमंत्री निर्धारित समय ६.३० सायं पदार्पण कएलन्हि। स्टेजपर श्री रवीन्द्र कालिया, निदेशक भारतीय ज्ञानपीठ, रहमान राही, डॉ. मनमोहन सिंह, सीताकान्त महापात्र, पुरस्कार चयन समितिक अध्यक्ष आ अखिलेश जैन, प्रबन्ध ट्रस्टी रहथि। दर्शकमे श्री टी.एन.चतुर्वेदी, अशोक वाजपेयी, आलोक पी. जैन आ ब्रजेन्द्र त्रिपाठी रहथि। ब्रजेन्द्रजी हमरा संग बैसल रहथि। स्व. साहू शान्ति प्रसाद जैन आ स्व. श्रीमति रमाजैन, एहि पुरस्कारक प्रारम्भ कएने रहथि आ हुनकर दुनू गोटेक फोटो पाछाँमे लागल रहन्हि। आइ काल्हि ४०म सालक महत्व एहि कारणसँ बढ़ि गेल अछि कारण ५०म वर्षगाँठक इन्तजारमे बहुत गोटे आयु बेशी भेने जीवित नहि रहैत छथि। सरला माहेश्वरी माइक पकड़ि कार्यक्रमक शुरुआतसँ पहिने अनिता जैनकेँ निराला रचित सरस्वती वन्दना गएबाक लेल अनुरोध कएलन्हि आ ओ मंचक दोसर भागमे महर्षि अगस्त्यक या कुन्देन्दुसँ शुरु कए निरालाक रचना शास्त्रीय पद्धतिमे गओलन्हि। फेर फूलसँ प्रधान मंत्रीक स्वागत प्रबन्ध न्यासी अखिलेश जैन द्वारा भेल, फेर रवीन्द्र कालिया फूलसँ रहमान राहीक स्वागत कएलन्हि। फेर श्री सीताकान्त महापात्र अंग्रेजीमे उद्‌गार व्यक्त करैत कहलन्हि जे राहीकेँ सम्मानित कए भारतीय ज्ञानपीठ अपनाकेँ सम्मानित कएलक अछि। फेर प्रधानमंत्री द्वारा राहीकेँ शॉल ओढ़ा कए आ १०३५ ई.क राजा भोजक सरस्वतीक प्रतिमाक कांस्य अनुकृति जाहिमे ज्ञानपीठ द्वारा प्रभामण्डल जोड़ल गेल (मूल प्रतिमा लंदनक ब्रिटिश म्यूजियममे अछि) आ प्रशस्ति पत्र आ ५ लाख टाकाक ड्राफ्ट दए सम्मानित कएल गेल। राही उद्‌गार व्यक्य कएलन्हि आ महान जवाहरलाल नेहरूक जाहि पदपर छलाह ओहि पदपर आसीन मनमोहन सिंहसँ पुरस्कार प्राप्त कए विशेष प्रसन्नता प्रकट कएलन्हि। फेर रवीन्द्र कालिया धन्यवाद ज्ञापन कएलन्हि। राहीक प्रतिनिधि कविताक ज्ञानपीठ द्वारा कएल हिन्दी अनुवाद राही द्वारा प्रधान मंत्रीकेँ देल गेल।

अब्दुल रहमान राहीक जन्म ६ मई १९२५ ई.कँ भेल। हुनकर पहिल कविता संग्रहकँ साहित्य अकादमी पुरस्कार देल गेल। भारत सरकारक पद्म श्री आ मानव संसाधन विकास मंत्रालयक एमिरेट्स फेलोशिप हिनका भेटल छन्हि। हिनकर कविता संग्रहमे सनवुन्य साज, सुबहुक सोदा, कलाम-ए-राही प्रमुख अछि। हिनकर आलोचना आ निबन्धक पोथी अछि, कहवट आदि।

प्रस्तुत अछि हिनकर कविता ‘‘परछाइयाँ’’ (कश्मीरीसँ अंग्रेजी एस.एल. सन्धु, अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर)

छाह सभ

अपन नियतिसँ वाद आ अमरताक आशा आब छोड़ि दिअ,

यदि जुटा ली किछु क्षण, तँ भेर भऽ जाऊ ताहिमे।

बस्तीक जाहि पथमे चलैत रहलहुँ, ओ धँसि गेल घनगर बोनमे,

जेना हमर आस्थाक कवच भेल भेद्य केलक शंकासभ।

आँखि खुजिते हमर स्वप्नकेँ लागल आँखि

सभटा बासन्ती युवा छाती झरकि कए भऽ गेल सुनसान।

देखू तँ देखायत आस-पड़ोसमे लावण्यमयी मेला,

हाथमे आएत मात्र एकाध विचार, आऽ

असगर एकटा कौआ उजाड़मे।

कखनो हमर इच्छा रहए चान-तरेगन गढ़बाक,

आब माथ भुका रहल छी अपन कोनो नामकरण तँ करी।

सभटा विश्वास घाटीक मौलायल हरियरी सन,

सभटा चैतन्य खिसियायल साँप सन।

सभटा देवता हमर अपन छाह छथि,

सभटा दानव हमर अहं केर कनिया-पुतड़ा सन।

सभा भवन भरल बुझू बानरक खौं-खौं सँ,

सन्तक पहिरनक लेल ताकू बोने-बोन।

केहन अछि नाओक खेबनाई, कतए तँ अछि किनार!

देशांस भोथलेलक नाओकेँ अन्हारमे।

हे रौ नटुआ, नाच निर्वस्त्र चारू कात ओकर,

राही तँ आगि-खाएबला बताह अछि।

समारोह एक घण्टामे खतम भेल आ घुरैत रही तँ एफ.एम.पर समाचार भेटल जे सचिन तेन्दुलकर अपन टेस्ट जीवनक ४०म शतक दिनमे पूर्ण कएलन्हि।

भीमसेन जोशीकेँ भारत रत्न पुरस्कार देल गेल। आ चन्द्रायण-१ चन्द्रमाक १०० किलोमीटरक वृत्ताकार कक्षामे स्थापित भऽ गेल जतए ओ २ वर्ष धरि रहत।

15.11.2008

ई अंकक समर्पण गर्वक-संग ओहि 16 बलिदानीक नाम जे मुम्बईमे देशक सम्मानक रक्षार्थ अपन प्राणक बलिदान देलन्हि।

१. एन.एस.जी. मेजर सन्दीप उन्नीकृष्णन्
२. ए.टी.एस.चीफ हेमंत कड़कड़े
३. अशोक कामटे
४. इंस्पेक्टर विजय सालस्कर
५. एन.एस.जी हवलदार गजेन्द्र सिंह "बिष्ट"
६. इंस्पेक्टर शशांक शिन्दे
७. इंस्पेक्टर ए.आर. चिटले
८. सब इंस्पेक्टर प्रकाश मोरे
९. कांस्टेबल विजय खांडेकर
१०. ए.एस.आइ.वी. अबाले
११. बाउ साब दुर्गुरे
१२. नानासाहब भोसले
१३. कांसटेबल जयवंत पाटिल
१४. कांसटेबल शेघोष पाटिल
१५. अम्बादास रामचन्द्र पवार
१६. एस.सी.चौधरी

01.12.2008

विदेहक नव अंक (अंक २४, दिनांक १५ दिसम्बर २००८) ई पब्लिश भऽ गेल अछि। एहि हेतु लॉग ऑन करू http://www.videha.co.in |

४१म आ ४२म ज्ञानपीठ पुरस्कारक घोषणा- हिन्दीक नवीन कविता आन्दोलनक सशक्त कवि श्री कुँवर नारायणकेँ ४१म ज्ञानपीठ पुरस्कार (२००५) आ कोंकणीक श्री रवीन्द्र केलेकर आ संस्कृतक श्री सत्यव्रत शास्त्रीकेँ संयुक्त रूपसँ ४२म ज्ञापीठ पुरस्कार (२००६) देबाक घोषणा भेल अछि।

श्री कुँवर नारायणक जन्म १९२७ ई. मे भेलन्हि। अज्ञेय द्वारा सम्पादित "तीसरा सप्तक"क सशक्त कवि कुँवर नारायणकेँ एहिसँ पहिने साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटि चुकल छन्हि।

श्री रवीन्द्र केलेकरक जन्म १९२५ ई. मे भेलन्हि, हिनकर कोंकणी भाषा मण्डलक निर्माणमे प्रमुख भूमिका रहल छन्हि।

श्री सत्यव्रत शास्त्री संस्कृतमे तीन गोट महाकाव्यक रचना कएने छथि। रवीन्द्र केलेकर आ सत्यव्रत शास्त्रीकेँ सेहो साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटि चुकल छन्हि।

संगहि "विदेह" केँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ ३० दिसम्बर २००८) ७० देशक ६७३ ठामसँ १,३६,८७४ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।

15.12.2008

अपनेक रचना आ प्रतिक्रियाक प्रतीक्षामे। वरिष्ठ रचनाकार अपन रचना हस्तलिखित रूपमे सेहो नीचाँ लिखल पता पर पठा सकैत छथि।

गजेन्द्र ठाकुर
389, पॉकेट सी, सेक्टर-ए,वसंतकुंज, नई दिल्ली- 110070
फोन- 9811382078
http://www.videha.co.in
ggajendra@videha.com
ggajendra@yahoo.co.in



गजेन्द्र ठाकुर

संदेश

१. श्री प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकेँ पढ़ि रहल छथि।

२. श्री डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशिष्ट फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक सङ्ग, सस्नेह|

३. श्री रामाश्रय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

४. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

५. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकेँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

६. श्री डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

७. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहूति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

८. श्री विजय ठाकुर, मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

९. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका 'विदेह' क विषयमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह' निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारए से कामना अछि।

१०. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका 'विदेह' केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

११. डॉ. श्री भीमनाथ झा- 'विदेह' इन्टरनेट पर अछि तेँ 'विदेह' नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब।

१२. श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमर, जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत से विश्वास करी।

१३. श्री राजनन्दन लालदास- 'विदेह' ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक एहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अंक जखन प्रिट निकालब तँ हमरा पठाएब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दितहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।

१४. डॉ. श्री प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आद्योपांत पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भ' गेल।

'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल जा रहल गजेन्द्र ठाकुरक

उपन्यास, गल्प-कथा संग्रह,पद्य संग्रह, बालानां कृते, एकाङ्की-नाटक, महाकाव्य, शोध लेख आ यात्रा वृत्तांत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे ''कुरुक्षेत्रम्: अन्तर्मनक'' नामसँ श्रुति प्रकाशन, द्वारा छापल जा रहल अछि। विदेह डाटाबेसक आधारपर नचिकेताजीक नाटक, पंकज पराशर आ विनीत उत्पलक पद्य संग्रह, मौन आ प्रेमशंकर सिंह जीक निबन्ध संग्रह आ 'विदेह' द्वारा कएल गेल शोधक आधार पर १. मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश २. अंग्रेजी-मैथिली शब्द कोश आ ३. मिथिलाक्षरसँ देवनागरी पाण्डुलिपि लिप्यान्तरण-पञ्जी-प्रबन्ध डाटाबेश श्रुति पब्लिकेशन द्वारा प्रिन्ट फॉर्ममे छापल जा रहल अछि- शोध, संकलन, डिजिटल इमेजिंग आ लिप्यांतरण- विद्यानन्द झा ''पञ्जीकार'', नागेन्द्र कुमार झा आ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल।

श्रुति प्रकाशनक e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com आ website: http://www.shruti-publication.com अछि। रमानन्द झा ''रमणक'' जीक ''सगर राति दीप जरए'' केर इतिहास जाहिमे एक-एकटा कथाक पाठक वर्णन अछि सेहो विदेहमे ई-प्रकाशित भेल। संगहि 20,000 विभिन्न आइ.एस.पी. सँ पाठक द्वारा डेढ़ लाखसँ बेशीबेर ''विदेहकँ अंतर्जालपर पढ़ल गेल आ आब एकर सदेह अंक तिरहुता आ देवनागरीमे संगहि आबि रहल अछि। एकर ब्रेल वर्सन सेहो डाउनलोड आ प्रिंट लेल उपलब्ध अछि। कवर-पृष्ठक डिजाइन लेल श्रीमति ज्योति झा चौधरी आ प्रूफ देखबाक लेल डॉ. पालन झाक विशेष रूपमे आभारी छी। 25 अंकक 2500 पृष्ठक दस प्रतिशत एहि सदेह संस्करणमे आबि रहल अछि शेष अंतर्जालपर डाउनलोड आ प्रिंट लेल उपलब्ध अछि। --सम्पादक।

Published by
Shruti Publication, 8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: 25889656, 25889658
Fax: 011-25889657

SOLE DISTRIBUTORS: Ajay Arts, 4393/4A, Ist Floor, Darya Ganj, New Delhi-110002

COMBINED ISBN of VIDEHA-SADEHA SERIES : 978-81-907729-5-2 (Price:Devnagari Version INR 100/- Tirhuta Version INR Rs.200/-)

Printed by Ajay Arts, 4393/4A, Ist Floor, Darya Ganj, New Delhi-110002

साक्षात्कार

रामाश्रय झा "रामरंग" प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जीक १ जनवरी २००९ कँ निधन भऽ गेलन्हि। डॉ. गगेश गुंजन मृत्यु पूर्व हुनकासं साक्षात्कार लेने छलाह। प्रस्तुत अछि ओ अमूल्य साक्षात्कार- पहिल बेर विदेहमे।



पं0 रामाश्रय झाक इन्टरव्यू।

प्रश्नः 1. अपनेक दृष्टि सं विद्यापति गीत-संगीत परंपरा कें कोन रूप मे देखल-बूझल जयवाक चाही? विद्यापति-संगीत परिभाषित कोना कएल जयवाक चाही? एतत्संबंधी कोनो स्वर-लिपि उपलब्ध अछि?

उत्तरः हमरा विचार सँ विद्यापतिक अधिकांश गीत पद; भजनबद्धगायन शैली एवं किछु गीत ग्रामीण गीत शैलीक अंतर्गत् बूझल जयवाक चाही। उदाहरण स्वरूप पद-गायन शैली मे-

1. नन्दक नन्दन कदम्बक तरुतर धिरे धिरे मुरली बजाव।
2. जय जय भैरवि असुर भयाउनि।

एवं अन्य श्रृंगार रस सँ सम्बन्धित पद। जेना-

क. कामिनी करय असनाने
ख. सुतलि छलौं हम घरवा रे
ग. अम्बर बदन झपाबह गोरी
घ. ससन परस खसु अम्बर रे,इत्यादि।

टइ तरहक पद व गीत मिथिला प्रदेश मे लगभग 60 व 70 वर्ष सं जे गाओल जाइत अछि एकर धुन अर्धांशस्त्रीय संगीतक अंतर्गत् एवाक चाही। परन्तु अइ पदक जे मिथिला मे गायन शैली छैक ओकर एक अलग स्वरूप छैक। जेकरा प्रादेशिक संगीत कहवाक चाही। जहांतक लोक संगीत तथा ग्रामीण संगीत सं संबंधित विद्यापतिक गीत अछि, जेना-

क. आगे माइ हम नहि आजु रहब एहि आंगन जो। बुढ़ होयता जमाय,
ख. हे भोलानाथ कखन हरब दुख मोर,
ग. उगना रे मोर कतय गेलाह,
घ. आज नाथ एक व्रत मोहि सुख लागत हे, इत्यादि।

ई गीत सब लोक संगीतक धुनक अंतर्गत गाओल जाइत अछि। यद्यपि अहू लोकधुन मे रागक दर्शन छैक मगर राग शास्त्र केर अभाव छैक। तें हेतु ई सब गीत लोक संगीत शैली मे अयवाक चाही।

उत्तर-1-ए. विद्यापति संगीतक कोनो भिन्न स्वरूप नहि अछि, केवल विद्यापति गीत मिथिला प्रादेशिक संगीत शैलीक अंतर्गत गाओल जाइत अछि। राग आओर ई

अर्धांशस्त्रीय एवं धुन प्रधान लोक संगीत राग गारा,राग पीलू, राग काफी, राग देस, राग तिलक कामोद इत्यादि राग सं सम्बन्धित अछि। अभिप्राय ई जे जेना सूर, तुलसी, कबीर इत्यादि संत कविक पद भिन्न-भिन्न तरह सं गाओल जाइत अछि अइसंत कवि सबहक कोनो खास अपन संगीत नहि छैन्हि जे कहल जाय जे ई सूर व तुलसी तथा कबीरक संगीत थीक, एही रूप सं विद्यापति संगीतक रूप मे बुझवाक चाही।

प्रश्नन-2. विद्यापति संगीत-परंपराक विषय मे आइध्रिक स्थिति पर अपनेक की विचार-विश्लेषण अछि ?

उत्तर-2. विद्यापति पदक सम्बन्ध मे हमर ई विचार अछि जे विद्यापतिक पद मैथिली भाषा मे अछि तें हेतु केवल मिथिला प्रदेश मे अइ पदक गायन प्रादेशिक संगीतक माध्यम सं होइत अछि। हँ, यदा कदा बंगाल प्रदेश मे बंगला कीर्तन मे अवश्य प्रयोग हाइत अछि। कहवाक अभिप्राय ई जे कोनो प्रादेशिक भाषा मे लिखल काव्य केर गुणवत्ताक आकलन ओइ काव्यक श्रृंब्द व साहित्य तथा भाव पर निर्भर करैत छैक। संगीत आकइ काव्य के रसमय एवं सौंदर्यवर्धन करइक हेतु परम आवश्यक तत्व अवश्य थिक परन्तु प्राथमिकता पदक थिकइ। मैथिली भाषा अत्यन्त सुकोमल भाषा अछि एवं अइ मे लालित्य अछि।आर संगीत सुकोमल भाषा मे अधिक आनन्द दायक होइत छैक।अही हेतु विद्यापति पद संगीतक माध्यम सं मिथिलाक संस्कृति मे विद्वान जन सं ल' क' जनसाधारण तकक मानस के प्रभावित क' क' अपन एक सुदृढ़ परम्परा बनौने अछि एवं मिथिलावासीक हेतु परिचय पत्र समान अछि। तें हेतु समस्त मैथिल समाजक ई परम कर्तव्य थीक जे अइ अमूल्य धन कें धरोहर जकां जोगा क' राखी।

प्रश्न-3. विद्यापति-संगीत आओर विद्यापति-गीत कें एकहि संग बूझल जयवाक चाही बा फराक क'? यदि हं तं किएक आ कोना ?

उत्तर : एहि प्रश्नक उत्तर उपरोक्त पहिल तथा दोसर क्रमांक मे लिखल गेल अछि। कृपया देखल जाय।

प्रश्नन-4. विद्यापति-संगीतक प्रतिनिधि गायक रूप मे अपने कें कोन-कोन कलाकार स्मरण छथि आ किएक ?

उत्तर : विद्यापति पदक गायक आइ सं किछु वर्ष पूर्व बहुत नीक नीक छलाह, जेना पंचोभक पं0 रामचन्द्र झा,पंचगछियाक श्री मांगन, तीरथनाथ झा, बलियाक पं0 गणेश झा, लगमाक पं0 अवध पाठक, श्री दरबारी ; नटुआ द्ध श्री अनुठिया; नटुआद्ध पं0 गंगा झा बलवा, श्री बटुक जी, आर पं0 चन्द्रशेखर खाँ, अमताक पं0 रामचतुर मलिक, पं0 विदुर मलिक, लहटाक पं0 रामस्वरूप झा, खजुराक पं0 मधुसूदन झा एवं नागेश्वर चैधरी, बड़ा गांवक पं0 बालगोविन्द झा, लखनौरक पं0बैद्यनाथ झा इत्यादि। वर्तमान मे जे गायक छथि हुनका सबहक नाम अइ प्रकार छनि-पं0 दिनेश झा पंचोभ, श्री उपेन्द्र यादव, अमताक पं0 अभयनारायण मलिक, पं0 प्रेमकुमार मलिक इत्यादि। उपरोक्त जतेक गायकक हम नाम लिखल अछि ई सब गायक अधिकारपूर्वक विद्यापतिक पद कें गबै वला छलाह एवं वर्तमान मे छथि। कियेक तं ई सब मिथिलावासी छथि। विद्यापति पदक अर्थ भाव पूर्ण रूप सं बूझि क' तहन प्रश्नकरैत छलाह व वर्तमान मे करैत छथि। तें हेतु ई सब गायक स्मरण करवा योग छथि।

प्रश्नन-5. पं0 रामचतुर मल्लिक, प्रो0 आनन्द मिश्र प्रभृत्ति तं इतिहास उल्लेखनीय छथिहे। किछु अन्यो गायकक नाम अपने कह' चाहब ?ओना मल्लिकजी तथा आनन्द बाबूक विद्यापति-गीत गायकी मे की किछु विशेष लगैत अछि जे अन्य गायक मे नहि ?

उत्तर : हम जतेक गायक क नाम लिखल अछि सब अपना-अपना स्तर सं नीक छलाह एवं नीक छथि। विद्यापतिक पद गायन मे राग गायकीक जेना बड़का बड़का आलाप व तान तें गाओल नहि जाइत छैक। विद्यापति पद गायन मे पदक अर्थ भाव ध्यान मे राखि सरसतापूर्वक गाओल जाइत छैक। अइ समइन्ध मे एक सं दोसर गायकक तुलना करइक आवश्यकता नहि। तथापि पं0 रामचन्द्र झा व श्री मांगनजी तथा पं0 रामचतुर मलिकजी,श्री बटुक जी,पं0 रामस्वरूप् झा,श्री दरबारी इत्यादि गायक बहुत प्रसिद्ध छलाह।

चूंकि प्रोफेसर आनन्द मिश्रजीकें हम कहियो गायन नहि सुनल तथा मिथिलाक गायक पंक्ति मे हुनक नाम हम नहि सुनल तें हेतु हुनका संबंध मे किछु लिखइ सं असमर्थ छी।

प्रश्न-6. विद्यापति-गीत मैथिली लोकगीत ध्रि कोना पहुंचल हेतैक ?एहि विषय मे अपनेक विश्लेषण की अछि?

उत्तर : विद्यापति गीत मैथिलीक दू तरहक भाषा मे रचल गेल अछि। एकटा मैथिलीक परिष्कृत भाषा मे रचल गेल अछि जेना-

1. नन्दक नन्दन कदम्बक तरुतर
2. अम्बर बदन झंपावह गोरी
3. उधसल केस कुसुम छिड़िआयल खण्डित अधरे। इत्यादि।

अइ तरहक मैथिलीक परिष्कृत भाषा मे जे गीत छैक से लोकगीत; ग्रामीण अंचलद्धधरि बहुत कम पहुँचलै।

जे गीत ग्रामीण भाषाक माध्यम सं रचल गेल छैक।जेना-

1. आ गे माइ हम नहि आजु रहब एहि आंगन जं बुढ़ होयता जमाय....
2. हे भोलानाथ कखन हरब दुख मोर
3. जोगिया भंगिया खाइत भेल रंगिया हो भोला बउड़हवा.
4. उगना रे मोर मोरा कतय गेलाह. इत्यादि।

अइ तरहक जे गीत छैक से लोकगीत; ग्रामीण अंचलद्धधरि अधिक सं अधिक पहुँचलए। एक बात आर ई जे लोकभाषाक अधिक समकक्ष छैक तकरा जनाना सब अधिक गबैत छथि। हमरा बुझने विद्यापति गीत कें लोकगीत; ग्रामीण अंचलद्धधरि पहुँचइके यैह कारण थीक। दोसर बात ई जे अपन मातृभाषा

स्वभावतः बहुत प्रिय होइत छैक आर अपना मातृभाषाक माध्यम सं जे काव्य रचल जाइत छैक आर ओइ मे लालित्य आ आकर्षण छैक तं ओ अपनहि आप विद्वान जन सं ल' क'जनसाधारण तक प्रचारित भ' जाइत छैक। आर विद्यापति पद तं लौकिक व पारलौकिक दुनू दृष्टिसं अत्यन्त उच्च कोटिक रचल गेल अछि, तथा सब तरहक गीत रचल गेल अछि जेना-भक्ति, भक्ति श्रृंगार, लौकिक श्रृंगार, श्री राधाकृष्णकें विलासक अत्यन्त मधुर गीत, भगवान श्रृंकरक विवाह सं सम्बंधित जनसाधारण भाषाकके गीत एवं नचारी, समदाउनि, बटगवनी, तिरहुत इत्यादि तरहक गीतक रचना केने छथि जे लोकरंजनके हेतु उच्चकोटिक एवं गायन के वास्ते बनल छैक। ई तें बिना प्रयासहिं लोक मानस एवं लोकगीत धरि पहुँचि गेल गेल हेतैक।

प्रश्न-7. विद्यापति पदक मैथिली व्यवहार-गीत मे विलय होयवाक प्रक्रिया अपनेक दृष्टियें कोना आ की रहल हेतैक ?

उत्तर : हमरा बुझने इहो प्रश्न 6ठमे प्रश्न सं संबंधित अछि। तें ओही पर विचार कएल जाय।

प्रश्न-8. विद्यापतिक पद यदि मिथिलाक सर्वजातीय माने-सभ वर्ग आ समाजक लोक मे स्वीकृत छैक ? तं तकर कारण विद्यापति-पदक साहित्यिक गुण बा ओकर सांगीतिकता छैक आकि एकरा मे निहित कोनो आन तत्व आ विशेषता छैक ?

उत्तर : विद्यापति पद जे मिथिला समाजक सब वर्ग मे स्वीकृत छैक तकर मुख्य कारण विद्यापति पदक साहित्यिक गुण एवं सांगीतिक गुण दुनू छैक। मिथिला मे कवि विद्यापतिक पहिनहुं तथा बादहु मे बहुत कवि भेलाह मगर जनसाधारण मे तं हुनकर क्यो नाम तक नहि जनैत अछि। परंतु विद्यापति एवं विद्यापति गीत के तं एहेन क्यो अभागल मिथिलावासी हेताह जे नहि जनइत हेताह। विद्यापति पदक प्रचार-प्रसार मे साहित्यिक व संगीतक गुण के अतिरिक्त आन कोनो तत्व व कारणक जे अपने चर्चा कएल अछि, अइ सम्बन्ध मे हम ई कहब जे कवि विद्यापति भगवान के परम भक्त छलाहं हुनका भक्ति सं प्रभावित भ' क' भगवान शंकर जिनका घर मे नौकर के काज करैत रहथिन एहेन भक्त कविक कावय मे तं प्रचार-प्रसार हेबाक सब सं महत्वपुर्ण तत्व एवं कारण हुनका आराध्यदेवक कृपा बुझवाक चाही। भगवानक भक्ति सं हुनकर हृदय ओतप्रोत छलन्हि तें ओ अपन काव्य मे लिखैत छथि-

क. बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे,

ख. हे भोलानाथ; बाबाद्धकखन हरब दुख मोर, इत्यादि।

ग. खास क' भगवान राधाकृष्णक भक्ति व भक्ति-शाृंगार रस जे ओ अपना काव्य मे दरसओ-लन्हि अछि ओ अत्यन्त हृदयस्पशर्ाी तथा संगीतमय अछि।

प्रश्न-9. लोकगीत एवं व्यवहार-गीत मे तत्वतः की-की भेद मानल जयवाक चाही?

उत्तरः लोकभाषा एवं लोकधुन मे जे गीत गाओल जाइत छैक तकरा लोकगीत कहल जाइत छैक। आर व्यवहार गीत क जे अपने चर्चा कएल अछि इउ सम्बन्ध मे हमर कहब ई जे एकरा अंतर्गत संगीतक सब शैली आबि जाइत छैक। परंतु हमरा बुझना जाइत अछि जे व्यवहा गीत सं अपनेक अभिप्राय संस्कार गीत सं अछि। हमरा विचार सं लोकगीत एवं व्यवहार गीत दुनू के लोकसंगीत कहल जाइत छैक, अइ मे कोनो विशेष अंतर नइ छैक।

प्रश्न- 10. विद्यापति-संगीतक वर्तमान जे निश्चिते निराश कयनिहार अतः खेदजनक अछि। अपने कें तकर कारण की सब लगैत अछि ?

जखन कि बंगालक रवीन्द्र-संगीत-कला मे विद्यापति संगीत जकां कोनो प्रकारक पतनोन्मु-खता आइ पर्यन्त देखवा मे नहि अबैत अछि। तकरो कारण की आजुक उपभोक्तावाद, ब्जारवाद भू-मण्डलीकरण मात्रकें मानल जयवाक चाही बा आनो आन ऐतिहासिक, समाजा-आर्थिक परिस्थिति आ सामाजिक कारण आ परिवर्तन कें?

उत्तर : अइ सम्बन्ध मे हम ई कहब जे संपूर्ण भारत मे अपना संस्कृति के छोड़ै मे जतेक मैथिल अगुआयल छथि तेना अन्य कोनो प्रदेश नहि। जे मैथिल मिथिला सं बाहर अन्य प्रदेश मे आबि गेलाहय सब सं पहिने ओ अपन मातृभाषाक प्रति उदासीन भ' जाइत छथि आ अत्यंत हर्षपूर्वक ई कहैत छथि जे हमरा बच्चा के तं मैथिली बाजहि नहि अबैत छैक। अपना घर मे मैथिली नहि बजैत छथि। जखन अपना मातृभाषाक प्रति एहेन उदासीन छथि तहन अपना संस्कृति सं अपनहि आप दूर भ' जेताह। अपना माँ-बा पके डैडी व मम्मी अन्य के अन्टी व अंकल कहैक रेवाज भ' गेलै अछि तं हिनका सब सं की आश कयल जाय जे ई अपना संस्कृतिक रक्षा करताह। बंगाली, मद्रासी, पंजाबी, मराठी इत्यादि प्रदेशक लोक सब अपना संस्कृति के एखनहुं धरि संजोय क' रखने अछि। मगर पश्चिमी सभ्यताक प्रभाव सब सं अधिक मैथिल पर छन्हि ते हेतु मिथिला संस्कृति मे एहेन हानिकारक परिवर्तन देखाय पड़ैत अछि।

प्रश्न-11. अपनेक स्मृति मे कोनो गायकक गायन बा अन्य कोनो संदर्भ हो जेकर वर्णन अपने कर' चाही? हुनक विषय मे किछु सुनयवाक इच्छा हो।वर्तमान समेत आगां पीढ़ीक लाभ हेतैक। संगहि अपनेक किछु विशेष अभिमत जे देब'-कह' चाही।

उत्तर : हम शास्त्रीय संगीतक उपासक छी आर अत्यंत उदासीन भ' कहि रहल छी जे अपन मिथिला वर्तमान समय मे शास्त्रीय संगीत सं शून्य भ' रहल अछि। वर्तमान समय सं पहिने पं0 रामचतुर मलिक, पं0 बिदुर मलिक, पं0 सियाराम तिवारी, चूंकि पं0 सियाराम तिवारीक शिक्षा अमता गाम मे भेलन्हि तें हेतु हुनका मैथिल मानइ छियनि। पं0

चन्द्र शेखर खां,पं0 रघू झा, ई सब बहुत उच्च स्तरक गायक छलाह। खास क'क' पं0 रामचतुर मलिक, व पं0 सियाराम तिवारी तं इतिहासिक गायक छलाह ध्रुवपद शैलीक गायन मे। भावी पीढ़ीक शिक्षार्थी एवं जिज्ञासु के अइ गायक सबके जानइ के प्रयास व हिनका गायन व कार्यक सम्बंघ मे श्रोध करवाक चाही ताकि भावी पीढ़ी लाभान्वित एव धुरुवपद शैली गायनक विशेषता सं परिचित होथि।

जय मिथिला जय मैथिली, जय जय जानकी अम्ब।

जेहि रज मे मन्डन भेला, हरलन्हि शिव के दम्भ।

राजमोहन झा (प्रबोध सम्मान २००९) सँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार

खुलल दृष्टिसँ नहि भऽ रहल अछि समीक्षा : राजमोहन झा

साहित्यकार भाइ-साहेब राजमोहन झाक कैक टा कथा संग्रह आ चारि टा समालोचनात्मक पोथी लिखल छन्हि। मैथिली भाषामे हुनकर एहि योगदानकेँ देखैत २००९ सालक प्रबोध सम्मान हुनका देल जाऽ रहल छन्हि। हुनकासँ मैथिलीक भूत, वर्तमान, भविष्य आ समीक्षाक गप, संग-संग पारिवारिक आ सामाजिक जिनगीक ताना-बानाक गप वरिष्ठ पत्रकार विनीत उत्पल बातचीत मे बुनलन्हि।



विनीत उत्पल : अहांक जन्म कतय भेल, दिन-वर्ष की छल?

राजमोहन झा : हमर जन्म गाम मे भेल, कुमार बाजितपुर (वैशाली)। साल छल १९३४, अगस्त माहक २७ तारीख।

विनीत उत्पल : आ प्रारंभिक लालन-पोषण ?

राजमोहन झा : प्रारंभिक लालन-पोषण गाम मे भेल। किछु दिनक बाद पटना आबि गेलहुं, आगू पटनेमे भेल।

विनीत उत्पल : शिक्षा-दीक्षा कतय भेल?

राजमोहन झा : प्रारंभिक शिक्षा तँ गाममे भेल। पटना अएलाक बाद टी.के. घोष एकेडमी मे आठवां मे नाम लिखेने रहि, जतय सऽ मैट्रिक पास केलहुं। एकर बादक पढाई पटना कालेज, पटनासँ भेल। हमर विषय मनोविज्ञानक संग-संग लाजिक, हिन्दी आ अर्थशास्त्र छल।

विनीत उत्पल : पितामह कतेक मोन छथि ?

राजमोहन झा : हमर पितामह जनार्दन झा संस्कृतक विद्वान छलाह। हुनकर मृत्यु १९५१ मे भेलनि। गाम मे हमर पढाई हुनकर संरक्षण मे भेल छल। मिडिल स्कूल तकक पढाई तँ हम गाम मे केने रहि। ओ मैथिली मे सेहो लिखैत रहथि। ताहि लेल हमहूँ मैथिलीमे लिखबाक लेल प्रेरित भेलहुँ। मैथिली साहित्य मे रूचि जागल। ओ कतेक ठाम घुमि-घुमि कऽ रचना केलथि। महावीर प्रसाद द्विवेदीक सरस्वतीक संपादन करैक संग ओ मिथिला मिहिरक संपादक सेहो रहथि। करीब एक सौ टा बंगला उपन्यासक हिन्दी मे अनुवाद केलथि, जाहि मे विषवृक्ष, देवी चौधराइन उपन्यास प्रमुख अछि।

विनीत उत्पल : साहित्यक प्रारंभिक प्रेरणा केकरा सँ भेटल ?

राजमोहन झा : प्रारंभिक प्रेरणा तँ पितामह सँ भेटल। पितामहे शिक्षाक आरम्भ करोलथि। गाममे मिडिल तक पढाई काल तक पितामहे गार्जियन रहथि। पटना एलहुं तऽ बाबूजीक (हरमोहन झा) संग रहलहुं।

विनीत उत्पल : घर मे किनका सँ अहां बेसी नजदीक रही ?

राजमोहन झा : पितामह संग पितामहीक सबसँ नजदीक रहि।

विनीत उत्पल : संस्कृत परंपरा सँ अंगरेजी परंपरा दिस कोना प्रवृत भेलहुँ?

राजमोहन झा : समय बदलैत गेल, पहिने लोक संस्कृत पढैत रहथि। संस्कृत धीरे-धीरे लुप्त होइत गेल। अंगरेजी शिक्षा स्थान लेलक आओर प्रभाव बढ़ैत गेल। तखन अंगरेजी आ हिन्दी दिस लोक झुकए लागल। हमहुं ओही दिस प्रवृत भेलहुँ।

विनीत उत्पल : साहित्य कए अतिरिक्तेक की पेशा छल ?

राजमोहन झा : इम्प्लायमेंट आफिसर रही। आब रिटायर्ड छी।

विनीत उत्पल : कोन-कोन शहर मे रहल छी ?

राजमोहन झा : जमशेदपुर, मुजफ्फरपुर, रांची, बोकारो, पटना, दिल्ली मे नौकरी काल रहलहुं। पाँच साल दिल्ली मे जनशक्ति भवन मे डिप्युटेशन पर रही।

विनीत उत्पल : कनि भाई-बहिनक संबंध मे बताऊ ?

राजमोहन झा : चार भाई आ एक बहिन छलहुं। दू भाईक मृत्यु भए गेल आ दू भाई छी एखन। सबसे पैघ हम छी। हमारा सऽ छोट कृष्ण मोहन झा रांची विश्वविद्यालय मे मनोविज्ञानक शिक्षक रहथि। तेसर भाई विश्वमोहन झा गाम मे रहथि। सबसे छोट मनमोहन झा सी.एम. कालेज, दरभंगा मे मनोविज्ञानक शिक्षक छथि। सबसँ जेठ बहिन ऊषा झा छलीह, जे दरभंगा मे छथि। बहनोई शैलेन्द्र मोहन झा १९९४ मे दिवंगत भए गेलाह। ओ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक अध्यक्ष छलाह।

विनीत उत्पल : बाल-बच्चा कए टा आ की करैत अछि ?

राजमोहन झा : तीन टा बेटी अछि। ब्याह केकरो नहि भेल अछि। सबसे

छोट मिनी झा टीचर छथि। जेठ बेटी ग्रेजुएशन क संग ब्यूटी-आर्ट एंड क्राफ्टक- ट्रेनिंग लेने छथि।

विनीत उत्पल : अहांक मनपसंद रचनाकार के छथि ?

राजमोहन झा : एकर निर्णय करब मुश्किल अछि। ललित, मायानंद, राजकमल चौधरीक लिखब लोक पसिन कए रहल अछि। आधुनिक मैथिली कए प्रारम्भ ओतहिसँ मानल जाइत छैक ।

विनीत उत्पल : अहांक अपन नीक रचना कोन ?

राजमोहन झा : सँ तँ आने लोक कहत। एकर निर्णय करब मुश्किल अछि। रचनाकार कोनो रचना करैये तँ अपन तरहे बेस्ट करैत अछि। जेकरा दिलसँ करब कहबै, ओ करैत छैक। सबसँ नीक देबाक कोशिश करैत छैक। कोनो रचना सुपरसीड करैत छैक, कोनो नहि करैत छैक। ई सब बहुत रास फेक्टर पर निर्भर करैत छैक।

विनीत उत्पल : अहांक पहिल रचना कोन छल ?

राजमोहन झा : रचनाक शुरुआत हम कविता सँ कएने रही। तखन हम बी.ए. मे रही, १९५४ क ई गप छी। ओकर बाद कविता लिखब एक तरहेँ बंद भए गेल। कविता लिखब छुटि गेल। हमर लेखकीय जीवनक दोसर फेज १९६५सँ शुरू भेल। एखन कथा हमर मुख्य विधा भए गेल अछि।

विनीत उत्पल : कोनो कविता सुनेबई ?

राजमोहन झा : कविता कए मन पारब नहि चाहब। ओहि ट्रेडिशन मे हम लिखैत रही जे ओहि समय मे लिखल जाइत रहय। हमर लेखनक शुरुआती दौर छल, ओहि समयक जे साहित्य प्रभाव सँ लिखल गेल, से रहए। अपने हमरा बुझाएल जे ई कोनो कर्मक नहि छैक, तकरा बाद हम ई लिखब बंद कए देलहुं।

विनीत उत्पल : कविता कोनो पत्रिका मे छपल ?

राजमोहन झा : कविता 'वैदेही' मे छपल। 'मिथिला मिहिर' आ 'मिथिला दर्शन' मे सेहो छपल.

विनीत उत्पल : आ कहानी ?

राजमोहन झा : मिथिला मिहिर मे मुख्यतः कहानी छपल। मिथिला दर्शन मे सेहो।

विनीत उत्पल : अपनेक रचना लिखब आ छपल मे बाबूजी (हरिमोहन झा) कए कतेक सहयोग रहल?

राजमोहन झा : बाबूजीक सहयोग किछु नहि रहल, प्रभाव रहल। बाबूजीक संग रचनाक गप करबाक प्रश्न नहि उठैत छल। हमर लेखन हुनकर प्रभावक अंतर्गत नहि छनि। हुनकर लेखन सँ इतर हमर लिखब शुरू भेल। एकरा मे दूनू गप अछि। हुनकर प्रभाव रहल आ नहियो रहल। हुनकर क्षेत्र सँ हम अपना कए अलग कए लेलहुं। ओना प्रभाव सँ अलग कोना कए सकैत छी।

विनीत उत्पल : 'आई-काल्हि-परसू' पर अकादमीक पुरस्कार ठीक समय पर भेटल वा नहि?

राजमोहन झा : ठीके समय पर भेटल। ई महत्वपूर्ण नहि छल की पहिने भेटबाक चाही छल या बाद मे भेटबाक चाही छल। मन मे एहन कोनो गप नहि छल।

विनीत उत्पल : साहित्यक अभियान मे पत्नीक कतेक सहयोग रहल ?

राजमोहन झा : साहित्य सँ ओतेक संप्रक्ति नहि छन्हि। सहयोग-असहयोग कए ताहि द्वारे प्रश्न नहि छैक।

विनीत उत्पल : हुनकर नहियर कतए भेलन्हि ?

राजमोहन झा : हमर सासुर तँ दिल्ली भेल। ससुरक पिता अलवर महाराजक चीफ जस्टिस रहथि। विवाह हमर दिल्ली मे भेल।

विनीत उत्पल : अहां कोन-कोन भाषा मे रचना केलहुं आ कतेक पोथी लिखलहुं?

राजमोहन झा : हिन्दी आ मैथिली मे हमर लेखन भेल। दस टा पोथी कथा संग्रह आ चारि टा समालोचनात्मक पोथी छैक.

विनीत उत्पल : भविष्यक की योजना अछि ?

राजमोहन झा : संस्मरण लिखबाक अछि। सुमनजी आ किरणजी पर लिखबाक बाकी अछि।

विनीत उत्पल : साहित्यक दावं-पेंच कए कतय तक बुझलियइ ?

राजमोहन झा : दांव-पेंच मैथिली मे नहि सभ भाषा मे चलैत रहैत छैक। ई कोनो नब गप नहि छी। एहि अर्थ मे प्रभावित भेलहुँ। ई तँ स्वाभाविक प्रक्रियाक रूप अछि। ओहिनो ई गप बेसी मेटर नहि करैत छैक।

विनीत उत्पल : कोन रचना एहन अछि जेकरा मे अहां कें अपन आत्मकथ्य हुअए ?

राजमोहन झा : सभ रचना मे जीवनक अंश आबिए जाइत छैक। किया कि अनुभवक आधार पर लोक लिखय यै। अनुभवक अंश तँ रहबे करत। आत्मकथात्मकता तँ आबिये जाइत छैक।

विनीत उत्पल : 'निष्कासन' कथा तँ नहि छी आत्मकथात्मक ?

राजमोहन झा : स्पेशिफिक नहि करए चाहब। सभटा कथा मे कोनो-ने-कोनो रूपेण आत्मकथा भेटत।

विनीत उत्पल : समीक्षा लेल की कहब अछि ?

राजमोहन झा : समीक्षा खुलल दृष्टि सँ नहि भऽ रहल अछि। लोक अपन ईर्ष्या-द्वेष सँ रचना कए समीक्षा कए रहल अछि। निष्पक्ष व निर्भय भए कए समीक्षा नहि भए रहल अछि। आई-काल्हि जे समीक्षा भए रहल अछि ओहि मे धैर्यक अभाव अछि। ऑब्जेक्टिव नहि रहैत छैक लोक। जकरासँ रूष्ट रहए छथि तकर ठीक सँ समीक्षा नहि करैत छथि आ जकरा सँ नीक संबंध छैक ओकर

प्रसंग खूब उठाबैत छथि। समीक्षा लेल दृष्टि काज करैत छैक।

विनीत उत्पल : की समीक्षा करबा मे व्यक्तिगत आक्षेप आवश्यक अछि ?
राजमोहन झा : समीक्षक बुझैत छथि, जे हम समीक्षा कए रहल छी, तँ लेखक पर उपकार कए रहल छी, हुनका हम उपकृत कए रहल छी। एकांगी दृष्टिकोण बड़का फेक्टर अछि। समीक्षा मे रचनाक समीक्षा होएबाक चाही नहि कि व्यक्तिगत आक्षेप।

विनीत उत्पल : ई गप कहिया सँ छैक?
राजमोहन झा : पहिनो रहए, आबो छैक। संकीर्णता बेसी भए गेल अछि। हमर विचारे पहिने एतेक नहि छल जे एखन भए रहल छैक। अपन लोक कए घुसाबैक लेल मारामारी भए रहल छैक। हालत जेहन भए रहल छैक तकर विरोध होएबाक चाहि।

विनीत उत्पल : नवतुरुआक लेखनकेँ कोन दृष्टि सँ देखैत छी ?
राजमोहन झा : नबका लोक भाषाक दिस उदासीन छथि। बेसी लोककेँ भाषाक प्रति मोह नहि छनि, अपनत्व नहि छनि। जहिना-जहिना जेनरेशन आगू भेल, भाषाक उदासीनता बढ़ल गेल। बेसी लोक मैथिली बाजब छोडि देने छथि।

विनीत उत्पल : मैथिली मे दलित साहित्य लेल अहांक मंतव्य की छि ?
राजमोहन झा : साहित्य मे वर्गीकरण प्रवृति जे भए रहल अछि, ओ विखण्डित कए रहल अछि। साहित्य सृजनात्मकता सँ ध्यान हटा कए विशेष वर्ग पर ध्यान देबासँ साहित्य विखण्डित होएत। दलित कए लेखन मे अएबाक चाही।

विनीत उत्पल : स्त्री लेखक लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : स्त्रीगण कए साहित्य लेखन मे जरूर अएबाक चाही। कोनो वर्गक लेल समग्र साहित्य कए विखण्डित नहि करबाक चाहि। खंडित दृष्टि नहि हेबाक चाहि। एकरा लेल चाही समग्र दृष्टि।

विनीत उत्पल : मैथिली भाषा मे स्त्री लेखकक संख्या किएक कम अछि ?
राजमोहन झा : सबहक मूल मे शिक्षा अछि। मिथिला मे स्त्री शिक्षाक प्रचार-प्रसार नहि भेल। सहभागिता आ सहृदयताक कमी रहल।

विनीत उत्पल : मैथिली केँ संविधानक आठम अनुसूचीमे शामिल हेबासँ विकासक लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : जतय तक भाषाक प्रश्न छैक, संविधान संगे यूपीएससी परीक्षा मे शामिल होयबाक गप छैक, एकरा सँ किछु खास बल भेटहि बला नहि छैक। भाषाक समृद्धिक लेल समर्पण चाही। तकर ह्रास भए रहल अछि।

विनीत उत्पल : तखन की कएल जाए?
राजमोहन झा : मूल गप भाषामे प्रवृत बच्चा सभ हुअए। स्कूल सँ पहिने परिवार छैक। परिवार मे भाषाक समुचित स्थान देल जाए, तखने बच्चा सबहक विकासक संग भाषाक विकास होएत। ई गप धीरे-धीरे कम भए रहल अछि।

विनीत उत्पल : नवलोकक लेल कि कहब अछि ?
राजमोहन झा : हुनका सभ कए साहित्य सँ ओ लगाव नहि छनि जे पहिलुका लोक कए छल। जखन धरि नवलोक कए साहित्य सँ लगाव नहि होएत तखन धरि किछु नहि होइत। एकर बादे मैथिली कए उज्ज्वल भविष्य छैक।

विनीत उत्पल : एखुनका समीक्षा लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : मूल वस्तु लोक छैक। समीक्षाक लेल यैह छैक। जाऽ तक लोक नहि बदलत, दृष्टिकोण नहि बदलत, ऑब्जेक्टिव नहि होएत, तखन धरि किछु नहि होएत। समीक्षाक लेल तटस्थता चाही, निरपेक्षता चाही।

विनीत उत्पल : मैथिली भाषाक प्रचार-प्रसार लेल की करबाक चाही ?
राजमोहन झा : ई निर्भर करत सरकार पर, ई काज बेसी नीक जकाँ कए सकैत अछि। सामूहिक प्रयास लोकक होएत, संस्था आगू आएत, तखन होएत। मैथिलीक नाम पर जे तमाशा होइत अछि, ओकरा बंद कई पड़त। लोक रुचि जगाबक लेल काज करए पड़त।
विनीत उत्पल : प्रचार-प्रसार लेल नवलोककेँ कोन दृष्टि सँ देखैत छी ?
राजमोहन झा : समय-समय पर सभ किछु बदलल। नव जनरेशन आयल। समय मे परिवर्तन भेल। अपन संस्कृति लेल, भाषाक लेल पहिलुक लोक मे समर्पण बेसी छल। जेना-जेना जनरेशन बदलल, समर्पण कम भए गेल। एक तरहे कहि सकैत छी जे वैश्विक सम्पूर्णता दिस बेसी बढ़ल गेल अछि, स्थानीयक विशिष्टता पाछु छुटि रहल अछि। ग्लोबल बेसी हुअए लागल लोक, लोकल गौण भए गेल। एकरा मे सामंजस्य रखबाक चाही। एकरा बूझए पड़त। विशिष्टता आ सारभौमता स्थानीयता मे छैक। सभ संग हेबाक चाही। अपन जे विशिष्टता छैक तकरा बिसरि जाइ सेहो उचित नहि छैक। सबहक संग-संग चलैत अपन विशिष्टता नहि छोड़बाक चाही।
विनीत उत्पल : लेखन में जीवनानुभवक की स्थान छैक ?
राजमोहन झा : जीवनानुभव लेखनक समस्त आधार छैक। अनुभव पक्ष शून्य रहत तँ अहां की लिखब। अहांक लिखब साहित्य नहि रहत।
विनीत उत्पल : आजुक युगक बाजारवादी दुनिया आ साहित्यक लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : जावत अहां बेसिक नीड्स मे अपना कए सीमित राखब तखन की होएत। साहित्य आगूक चीज छैक। भौतिक साधना मे अपनाकेँ सीमित राखब तँ साहित्य दिस विमुखता उत्पन्न हेबे करत। ई मूल जरूरत छैक,

ई आवश्यक छैक, तकरा संग-संग नैतिक मूल्य साहित्यक लेल आवश्यक छैक। नैतिक मूल्यों उपेक्षित नहि रहए, ई पक्ष सबल हुअए। मूल जरूरत दिस लोकक बेसी ध्यान छैक, ई ट्रेंड चलि रहल छैक आ आगुओ ई रहत। जहिना-जहिना भौतिक सुख-सुविधा बढ़ल उच्च मूल्य मे ह्रास होइत गेल। ओहि दिस सँ देखब तँ राजनीति प्रमुख होइत गेल। दोसर पक्ष ई जे अध्यात्म पक्षक ह्रास होइत गेल, जखन विकास बढ़ल। भाषा मे तकनीकक विकास तँ भेल, मुदा जे मूल्य बेसी रहनि ओहिमे ह्रास भए रहल अछि। बाहरी विकास बढ़ला सँ जे विशिष्टता, जे स्मिता छैक ओ कम भेल। बहुत लोक कहि रहल छथि जे भाषा मरि रहल अछि, से ठीक कहैत छथि। घर सँ निष्कासित भए रहल छैक ई भाषा। पारिवारिक भाषा नहि रहल ई, मरबाक लक्षण छैक।

विनीत उत्पल : एकर उपाय की ?

राजमोहन झा : समयक धार कए कोनो प्रयास सँ बंद नहि कए सकैत छी। शिक्षाक विकास भेल अछि। पढ़ए बलाक संख्या बढ़ल। स्कूलक संख्या बढ़ल। जाहि अनुपात मे ई बढ़ल ओहि अनुपात मे आंतरिक मूल्य घटल। जानकारी तँ बेसी बढ़ि गेल अछि, सूचनात्मक ज्ञान बच्चामे जतेक बेसी छैक, ओहि उम्र मे ओहि जमाना मे नहि रहै। मुदा, ज्ञान धरले रहि गेल। शिक्षा मे जे विकास भेल अछि, ई वृद्धि संख्यात्मक अछि, गुणात्मक विकास नहि भेल अछि। ई बात सही छैक, जतेक स्कूलक संख्या बढ़ल, ज्ञान ओतबेक कम भए गेल।

विनीत उत्पल : तखन विकास ख़राब गप अछि ?

राजमोहन झा : स्त्री शिक्षा पहिने नहि रहए, काफी वृद्धि भेलए। मुदा, बहुत रास साइड इफेक्ट भेल। दवाई बढ़ल, साइड इफेक्ट मे वृद्धि भेल। ओकरा रोकबाक कोनो उपाय नहि भेल अछि।

विनीत उत्पल : अहां श्रेष्ट रचना ककरा कहब ?

राजमोहन झा : सर्वश्रेष्ट रचना ओ होयत अछि, जे ओहि युग बीत गेलाक बादो श्रेष्ट रहत अछि। कालजयी छैक। कायम रहैक छैक पोथी आ रचनाकार। सुमनजी, किरणजी, आरसी बाबू श्रेष्ट रचनाकार रहथि। हुनकर रचना एखनो श्रेष्ट मानल जाइत अछि।

विनीत उत्पल : एहन कोन रचना छैक जकरा फ़ुर्सत भेटला पर अहां बारंबार पढैत छी ? जखन मानसिक परेशानी रहैत अछि तखनो ?

राजमोहन झा : एहन कोनो पोथी नहि अछि। जखन जे भेट जाइत छैक, तकरे पढैत छी। मानसिक सुधाक शांति लेल जे पोथी उपलब्ध रहैत अछि सैह भऽ जाइत अछि।

विनीत उत्पल : मानसिक शांति लेल की करैत छी ?

राजमोहन झा : एहन कोनो काज नहि छैक। उपलब्धता पर हम कोनो काज करैत छी। लिखबाक मन होइत अछि तँ लिखियो लैत छी। मनक अनुरूप काज ताकि लैत छी।

विनीत उत्पल : साहित्यक रचनाक लेल की योजना अछि ?

राजमोहन झा : बाबूजीक रचनावली निकालबाक लेल सोचने छी। तीन खंड निकालि चुकल छी आ तीन खंड बाकी अछि। अपन तीन टा पोथी दिमाग मे अछि। पहिल-संस्मरण संग्रह आ दोसर आलोचनात्मक/समीक्षात्मक लेख संग्रहित करबाक अछि। तेसर ई जे कथा सभ छूटल छैक, लेख सभ सेहो छूटल छैक, ओकरा निकलबाक अछि।

विनीत उत्पल : जीवनक लेल की योजना अछि ?

राजमोहन झा : प्लानिंग क हिसाब सँ जीवन नहि चलैत छैक। पानि जहिना बाट ताकि लैत छैक, तहिना जीवन चलैत छैक। प्लानिंग सँ बहुत काजो नहि होइत अछि। एकर आवश्यकता सेहो नहि होइत अछि। प्लानिंगक अनुसार सभ काज भए जाइत, एहनो नहि होइत अछि। Men proposes God disposes. हम तँ सोचैत छी जे propose नहि कएल जाएत। एहिना जीवन छैक।

विनीत उत्पल : जीवन आ सहित्यक दृष्टि सँ अपनेक कोन समय सभसँ बेसी नीक छल?

राजमोहन झा : 1965 सँ 1975 धरि समय सबसँ नीक रहल, साहित्य दृष्टि सँ सेहो आ सामान्य दृष्टि सँ सेहो। ओकरा बाद खराबे कहि सकैत छी. कहिया धरि चलत नहि जनैत छी।

विनीत उत्पल : रचना करैत काल की ध्यान रखबाक चाही ?

राजमोहन झा : कालजयी रचना लेल कोनो सिद्धांत वा प्रशिक्षण नहि होइत अछि। साहित्य रचनाक लेल कोनो पाठ नहि होइत अछि। एकर कोनो उपयोगिता नहि होइत अछि। आन कलाक लेल स्कूल छैक। साहित्य लेल नहि छैक। कोनो एहन ट्रेनिंग स्कूल नहि छैक जे साहित्यकार बनायत। कोनो विज्ञापन नहि छैक जे छह मास मे ई चीज सिखा देत।

विनीत उत्पल : मैथिली सहित्य मे नव लेखक कँ की सुझाव देब ?

राजमोहन झा : मार्गदर्शन आ सुझावक पक्ष मे हम नहि छी। जिनका मे ओ प्रतिभा/योग्यता होएत, ओ अपन बाट ताकि लेताह। सिखओने सँ कियो सीखबो नहि करत। मूल वस्तु अनुभव छैक. अनुभव संपन्न छी, अनुभवक संवेदनाक पकड़बाक हुनर अछि। से लेखक मे अंतर्निहित रहैत छैक । रचनाक लेल अनुभव करबाक तागति जरूरी छैक। तकरा बिना लेखन नहि होएत। अभिव्यक्तिक देबाक लेल कौशल आ भाषा हेबाक चाही। जतय ई विकास होएत, सफ़ल होएत। प्रशिक्षण वा मार्गदर्शनक जरूरत नहि छैक।

***विनीत उत्पल : प्रबोध सम्मान 2009 प्राप्त करबाक लेल बधाई।**

आभाष लाभ

अन्तर्वाता

(२०२८ सालमें डा.राजेन्द्र विमल आ श्रीमति विणा विमलक सन्तानक रुपमें जनकपुरक देवीचौकक निवासमें जन्म लऽ २२ वर्ष पहिने सँ निरन्तर मैथिली गीत सँगितक आकाशमें ध्रुवतारा जकाँ चमकैत रहऽबला एकटा मिथिलाक बेटा छथि, गायक आभाष लाभ। बाल्येवस्था सँ विभिन्न मँच सबपर अपन आवाज सँ दर्शक श्रोता सबके हृदयमें वास कयनिहार आभाष लाभ, मैथिली आ मिथिला सँ सम्बन्ध रखनिहारकलेल चीरपरिचीत नाम अछि। प्रस्तुत अछि, गायक आभाष लाभ सँगक भेल बातचीतक प्रमुख आश)

१. आभाष जी गीत सँगीतमें कहिया सँ लगलहुँ?

कहिया सँ लगलहुँ से त नईं बुझल अछि, मूदा बच्चे सँ जनकपुर आ लऽग परोसक गाँव सबहक एकौटा मञ्च हमरासँ नई छुटैत छल।

२. पहिलबेर आहाँक रेकर्डेड गीत कोन अछि

पहिलबेर हम नेपाल सँ बहराएल अशोक चौधरीक मैथिली कैसेट पानस में गीत गएने छलहुँ।

३. मैथिली गीत सँगीतक अवस्था केहन बुझा रहल अछि?

जतेक होयबाक चाही ओतेक सँतोष जनक नहि अछि। नव नव प्रतिभा जाहि तरहें एबाक चाही, नई आबि रहल छैक। दोसर बात अखन प्रविधि एतेक परफेक्ट भऽगेल छैक जे पाइ सेहो वड खर्च होइत छैक ।

४. की बुझाइया, मैथिली गीत सँगीतमें लागिकऽ अखनुक युगमें बाँचल जा सकैत अछि

एकदम नीक जकाँ बाँचल जा सकैया एही क्षेत्रमें लागिकऽ। मैथिलीक क्षेत्र बहुत पैघ छियै। जौं मेहनतिसँ नीक काज कएल जाए त मैथिलीयो सँगीतक क्षेत्रमें बहुत पाई छै। उदाहरण लऽ सकैत छी, हमरे सबहक कैसेट ''रे छौंडा तोरा बज्जर खसतौ''के जे १५ लाख प्रति बिकाएल छल। तहिना ''गीत घरघर के'' जे जहिया सँ बहरायल तहिया सँ आइयोधरि बिकाइते अछि। हँ, काज नीक होयबाक चाही।

५. प्यारोडीके प्रभाव केहन पडि रहल छैक मैथिली गीत सँगीत पर?

प्यारोडी मौलिकके साफ साफ खतम कऽ दैत छैक। गीत सँगीतक क्षेत्रमें लागल श्रष्टा सबके मनोवलके तोडिकऽ राखिदेने छैक प्यारोडी गीतसब।

६. प्यारोडी गीत सँगीत सँ पिण्ड छुटबाक उपाय की

देखियौ, जखन अपन सँगीत या गीत नई हुए तखन प्यारोडीके किछु हद धरि पचाओल जाऽ सकैया, मूदा मैथिलीमे अपन मौलिक सँगीतक आभाव त कहियो नई रहलै। जहाँतक प्यारोडी गीत सँगीत सँ पिण्ड छुटेवाक बात छई त अइमे आम जे श्रोता सब छथि, जे वास्तविक रुपमें चाहैत छथि की अप्पन मौलिक सँगीतक विकास होइ, हूनका सबके प्यारोडी गीतके निरुत्साहित करबाकलेल ताहि प्रकारक क्यासेट किनऽसँ परहेज करऽ पडतन्हि आ सँचार माध्यम सबके सेहो ओहन गीत बजेवा सँ बचऽ पडतन्हि, तखने ई सँभव अछि।

७. नेपालीय आ भारतीय मिथिलाञ्चलमें मैथिलीक बहुत रास काज भऽ रहल छैक, की अन्तर बुझाऽ रहल अछि दूनु देशक मैथिलीक काजमे

हम त मात्र एतबा बुझैत छियै जे एकटा हमर सहोदरा विदेशमे कमाऽरहल अछि आ हम नेपालमे। दूनु ठाम अपना अपना तरहें काज भऽरहल अछि एतबे बुझु।

८. अखन सऽभ भाषाक गीतमे रिमिक्सके बाढि आएल बुझाति छई, एकरा कोन रुप सँ आहाँ देखैत छियै?

बहुत नीकबात छई रिमिक्स गीत औनाई। समय अनुसार आधुनिकीकरण होयबाके चाही। समाजकलेल आ बजारकलेल गीत गौनाई दूनु दूटा बात छियै, ताहिमें गीत सँगीतक व्यावसायीकरणमे रिमिक्स बहुत नीक सँकेत छई। रिमिक्स गीत बहरेवाक चाही बशर्ते अपन सँस्कार नई लुप्त भऽ जाई ताइके ध्यानमें रखैत।

९. अखनधरि कतेक गीत गएलहुँ जे रेकर्डेड अछि?

अखनधरि लगभग साढे तीनसय गीत हम गाबि चुकल छी जे रेकर्डेड अछि।

१०. क्यासेटके अलावा कोन फिल्ममें अपन स्वर देने छी आहाँ ?

मैथिलीमे दहेज,ममता,प्रितम,आशिर्वाद फिल्ममे, तहिना भोजपुरी फिल्मसब सजना के आगना, ममता, तहार गलिया आदिमे ।

११. स्टेज शो के सीलसीलामे कतऽ कतऽ गेलहुँ?

अपन देश नेपालक लगभग सबठामके अलावा, कतार (४बेर), दूवई (२बेर), मलेशिया, पाकिस्तान, बंगलादेश, भारतक विभिन्न शहरमें अखन धरि जाऽचुकल छी।

१२. नव की आबि रहल अछि मैथिल श्रोता सबहक लेल?

बहुत जल्दिए निखिल राजेन्द्रक सँगीतमे भेनस क्यासेट सँ रिलिज भऽ रहल अछि....

(सौजन्य: मनोज मुक्ति)



डा. राम दयाल राकेश

अन्तर्वार्ता

सरकारके ध्यान छठि पावनिपर देवाक चाही.....डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)

छठि पावनि मधेसक संस्कृति किएक मानल जाईत अछि ?

छठि पावनिक अपने मौलिक विशेषता छइ,, ई पावनि शुरु होबऽ सँ एकमहिना पहिने सँ पावनि कयनिहार सब तैयारी मे लाईग जाईत छथि । एकर तैयारी आ पूजाके जौं देखल जाय त अईमे विशुद्ध मधेसी संस्कृति पाओल जाईत अछि। पावनि केनिहार सँ लएकए ओहि तैयारीमे लागल हरेक व्यक्ति ओ संस्कृतिमे भीजल रहल पाओल जाइत अछि। ओकर प्रसाद सँ लऽक हरेक सामगी्रमे मधेसक संस्कृति देखल जाईत छक, ओ पावनिके अवसरमे गावै वाला विभिन्न धुन तथा गीत सब मैथिल संस्कृतिमे गाओल जाईत अछि।

ई पावनि कियाक मनाओल जाईत अछि ?

एकर अपने पहिचान आ विशेषता छैक। सब पावनि सँ अई पावनिके अपने इतिहास छैक किया त कोनो पावनि एसगरे अपना घर परिवार मे रहिकऽ मनाओल जाइत अछि मुदा ई एकटा एहन पावनि अछि जे खुला जगहमे सामूहिक रुप सँ मनाओल जाइत अछि। अई पावन के मात्रे लोकतान्त्रीक पावनि कहल जा सकैय कियाक त अई पावनि मे कोनो भेदभाव उच्च नीच, जात भात नई देखल जाइत अछि। अई पावनिमे सूर्यके पुजा भेलाके कारण आओर एकर गरीमा के उच्च देखल जा सकैय। सूर्य जहिना ककरो पर भेदभाव नई क कऽ सम्पूर्ण जगतके रोशनी प्रदान करैत अछि, तहिना छठि पावनि सब के एक समान रुप सँ देखैत आईव रहल छैक।

ई पावनि अपना परीवार के सुख समृद्धिके लेल तथा कोनो रोग व्यधा नई लागै से मनोकामना सँ मनाओल जाइत अछि। भोर आ साँझक सूर्यके किरणमे एक प्रकारके गरीमा होईत अछि जकरा रोशनी सँ शरीरमे रहल विभिन्न विमारी फैलाब वाला किटाणु सबके नष्ट सेहो करैत चर्मरोग सँ बचाबैत अछि। चर्म रोगके अचुक दवाई मानल जाईत अछि छठि पावनि।

छठि पर्व मे महिला सब अपना आचरा पर नटुवा कियाक नचवैत छैथ?

एकरा एकटा श्रद्धाके रुपमे लेल जा सकैय, छठि माताके ध्यानमे राखि क कोनो किसीमके मनोकमना केला सँ जौं ओ पुरा भ जाईछै त ओई देवता पर आरो श्रद्धा बैढ जाईछै आ ओहि किसीमके कौबुला क क अपना आँचर पर नटुवा नचवैत छैथ।

छठिक घाट पर चमार जाईत सब ढोल(डुगडुगीया) बजावैत छथि, ओकर कि विशेषता अछि ?

ओकरो जातिय तथा संस्कृति परिचयके रुपमे लेल जा सकैय, ओ जाईत सब अपन संस्कृति आ संस्कारके बचएबाक लेल ओ काज क रहल अछि। ओ ढोल बजला सँ घाट पर कतेक मधुरता आ रौनक महशुस होईत रहैत अछि, ओना त कते लोक सब अग्रेजी वाजा बाजा क पावैन मानावैत छैथ मुदा जतेक ढोल पीपही के आवाजमे संस्कृति के झलक भेटैत अछि ओते कोनो बाजामे नई।

अई पावनि मे सूर्यके पुजा होईतो पर छठि माता या छईठ परमेश्वरीके नाम सँ कियाक जानल जाईत अछि ?

सूर्यके अर्थ उषा होईत अछि, उषा भगवतिके रुपमे पुजलाके कारण एकरा छठी माताके रुपमे सम्बोधन कायल जाइत छैक। ओना त स्पष्ट रुपमे कतौ ने अई विषयमे चर्चा भेल अछि लेकीन किछ शास्त्रमे महाभारत के कुन्ति शुरुमे छठि पावनि केने रहैथ ओही दिन सँ छठि पावनि शुरु भेल अछि से कतौ कतौ उल्लेख पाएल जाईत अछि।

दिनकर के आ जलके कि सम्बन्ध अछि ? जल के आ दिनानाथके बहुत गहिर सम्बन्ध अछि, बिना जलके दिनकरके पुजे नई भऽ सकैय हुनका खुश करबाक लेल जल चाहबेटा करी। छठिएके उदाहरणके रुपमे लऽ लिय, ओ पावनि बिना जल के नई भऽ सकैय कोनो जलासय नई भेला पर अपना घरमे खधिया खनि क ओइमे जल राईख क पावनि सम्पन्न करैत अछि, कियाक त दिनानाथे सूर्य छथि। एकटा एहो कहि सकै छि कि सूर्य मे बहूत गर्मी भेला के कारण जल के अर्घ देला सँ ओ किछ ठन्ढा होइत छैथ।

लोकतान्त्रिक गणतन्त्रमे छठि पावनिके संस्कृतिके बारे मे अपने कि कहब अछि ?

हम गणतन्त्र नई कहिक लोकतन्त्रके चर्चा करैत ई कहव कि छठि एकटा विशुद्ध लोकतान्त्रिक पावन अछि, समानुपातिक ढगं सँ एकरा मनाओल जाइत अछि। सामूहिक रुपमे मनबाक सँगहि अई मे कोनो भेद भाव नई होइत अछि। गरीब सँ लक धनीक तक सब एकरा समान ढगं मनावैत अछि।जनता गणतन्त्रके रस्ता चलनाई शूरु कदेलक मुदा सरकार अखुनो पाछा परल अछि। अखनो मधेसी पहाडी बीच दलित गैर दलित बीच, गरीब धनीकके बीच भेदभाव अछि, कि एकरे गणतन्त्र कहबै ? नवका नेपाल बनाबऽ लागल नेतागण सबके छठि पावनि सँ किछ सिखवाक चाहि।

(सौजन्य: मनोज मुक्ति)



शिव प्रसाद यादव

साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ



साक्षात्कार

शिव प्रसाद यादव द्वारा। डॉ. श्री शिवप्रसाद यादव, मारवाड़ी महाविद्यालय भागलपुरमे मैथिली विभागाध्यक्ष छथि।

भागलपुरक नामी-गामी विशाल सरोवर 'भैरवा तालाब'। जे परोपट्टामे रोहु माछक लेल प्रसिद्ध अछि। कारण एहि पोखरिक माँछ बड़ स्वादिष्ट। किएक ने! चौगामाक गाय-महींसक एक मात्र चारागाह आर स्नानागार भैरबा पोखड़िक महाड़। दक्षिणबड़िया महाड़ पर मारवाड़ी महाविद्यालय छात्रावास। छात्रावासक प्रांगणमे हमर (अधीक्षक) निवास। आवासक प्रवेश द्वार पर लुक-खुक करैत साँझमे बुलारोक धाप। हॉर्नक ध्वनि सुनि दौड़ि कए घरसँ बहार भेलहुँ। दर्शन देलनि मिथिलाक त्रिपूर्ति, महान विभूति- दिव्य रूप। सौम्य ललाट। ताहि पर चाननक ठोप, भव्य परिधान। ताहि पर मिथिलाक पाग देखितहि मोन भेल बाग-बाग। नहुँ-नहुँ उतरलनि- साहित्य मनीषी मायानन्द, महेन्द्र ओऽ धीरेन्द्र। गुरुवर लोकनिक शुभागमनसँ घर-आँगन सोहावन भए गेल। हृदय उमंग आ उल्लाससँ भरि गेल। मोन प्रसन्न ओऽ प्रमुदित भए उठल। गुरुवर आसन ग्रहण कएलनि, यथा साध्य स्वागत भेलनि। तदुपरान्त भेंटवार्ताक क्रम आरम्भ भए गेल। प्रस्तुत अछि हुनक समस्त साहित्य-संसारमे समाहित भेंटवार्ताक ई अंश:-

प्र. 'मिथि-मालिनी' कें अपने आद्योपान्त पढ़ल। एकर समृद्धिक लेल किछु सुझाव?

उ. 'मिथि मालिनी' स्वयं सुविचारित रूपें चलि रहल अछि। स्थानीय पत्रिका-प्रसंग हमर सभ दिनसँ विचार रहल अछि जे एहिमे स्थापित लेखकक संगहि स्थानीय लेखक-मंडलकें सेहो अधिकाधिक प्रोत्साहन भेटक चाही। एहिमे स्थानीय उपभाषाक रचनाक सेहो प्रकाशन होमक चाही। एहिसँ पारस्परिक संगठनात्मक भावनाक विकास होयत।

प्र. 'मिथिला परिषद' द्वारा आयोजित विद्यापति स्मृति पर्व समारोहमे अपनेकें सम्मानित कएल गेल। प्रतिक्रिया?

उ. हम तँ सभ दिनसँ मैथिलीक सिपाही रहलहुँ अछि। सम्मान तँ सेनापतिक होइत छैक, तथापि हमरा सन सामान्यक प्रति अपने लोकनिक स्नेह-भाव हमरा लेल गौरवक वस्तु भेल आ मिथिला परिषदक महानताक सूचक। हमरा प्रसन्न्ता अछि।

प्र. अपने साहित्य सृजन दिशि कहियासँ उन्मुख भेलहुँ?

उ. तत्कालीन भागलपुर जिलाक सुपौलमे सन् ४४-४५ मे अक्षर पुरुष पं रामकृष्ण झा 'किसुन' द्वारा मिथिला पुस्तकालयक स्थापना भेल छल तकर हम सातम-आठम वर्गसँ मैट्रिक धरि अर्थात् ४६-४७ ई सँ ४९-५० ई.धरि नियमित पाठक रही। एहि अध्ययनसँ लेखनक प्रेरणा भेटल तथा सन् ४९ ई. सँ मैथिलीमे लेख लिखऽ लगलहुँ जे कालान्तरमे भाङक लोटाक नामे प्रकाशितो भेल सन् ५१ ई. मे। हम तकर बादे मंच सभपर कविता पढ़ऽ लगलहुँ।

प्र. अपने हिन्दी एवं मैथिली दुनू विषयसँ एम.ए. कएल। पहिल एम.ए. कोन विषयमे भेल?

उ. मैट्रिकमे मैथिली छल किन्तु सन् ५० ई. मे सी.एम. कॉलेज दरभंगामे नाम लिखेबा काल कहल गेल जे मैथिलीक प्रावधान नहि अछि। तँ हिन्दी रखलहुँ। तँ रेडियो, पटनामे काज करैत, सन् ६० ई. मे पहिने हिन्दीमे, तखन सन् ६१ ई. मे मैथिलीमे एम. ए. कएलहुँ।

प्र. हिन्दी साहित्यमे प्रथम रचना की थीक आ कहिया प्रकाशित भेल।

उ. हिन्दीक हमर पहिल रचना थिक, 'माटी के लोक: सोने की नया' जे कोसीक विभीषिका पर आधारित उपन्यास थिक आ जे सन् ६७ ई. मे राजकमल प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल।

प्र.अपनेक हिन्दी साहित्यमे १. प्रथम शैल पुत्री च २. मंत्रपुत्र ३. पुरोहित ४. स्त्रीधन ५. माटी के लोक सोने की नैया, पाँच गोट उपन्यास प्रकाशित अछि। एहिमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यास कोन अछि आओर किएक?

उ. अपन रचनाक प्रसंग स्वयं लेखक की मंतव्य दऽ सकैत अछि? ई काज तँ थिक पाठक आ समीक्षक लोकनिक। एना, हिन्दी जगतमे हमर सभ ऐतिहासिक उपन्यास चर्चित रहल अछि। अधिक हिन्दी समीक्षक प्रशंसे कएने छथि। गत वर्षसँ हिन्दीक सम्राट प्रो. नामवर सिंह जी हिन्दीक श्रेष्ठ उपन्यास पर एकटा विशिष्ट कार्य कऽ रहल छथि, जाहिमे हमर प्रथम शैल-पुत्री नामक प्रगैतिहासिक कालीन उपन्यास सेहो संकलित भऽ रहल अछि। एहि उपन्यास पर विस्तृत समीक्षा लिखने छथि जयपुर युनिवर्सिटीक डॉ शंभु गुप्त तथा हम स्वयं लिखने छी एहि उपन्यासक प्रसंग अपन मंतव्य। ई पुस्तक राजकमल प्रकाशनसँ छपि रहल अछि। असलमे प्रथम शैलपुत्री' मे अछि भारतीय आदिम मानव सभ्यताक विकासक कथाक्रम- जे कालान्तरमे हड़प्पा अथवा सैंधव सभ्यताक निर्माण करैत अछि जकर क्रमशः अंत होइत अछि। हम स्वयं एकरा अपन सफल रचना मानैत छी, समीक्षको मानि रहलाह अछि। एना, पुरोहित अपना नीक लगैत अछि। 'स्त्रीधन' मिथिलाक इतिहास पर अछि।

अबू सुथार

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

गृहमोह

गंध पहिल बुन्नीक
आ हम
बैसि आ
पसारी एक-दोसराक दिस

भेदित पड़पड़ाइत बुन्नीक बुन्द
बलुआही माटि भेल
यथार्थ छननी

आएल प्रखर रौदक फोका
पाथरक चामपर

अविलम्ब
झझायत
छातक खपराक भूर
धारक संग उगडुम करत
नवतुरिआ बरद कछेरपर नाचत।
सभटा गलीमे
बरद सभ आनत पानि
सोलह टा पालो बान्हि गरदनिमे
सभ घरमे
धरनि सभ नहाएत जी भरि
देबालपर
गाछक छातीपर
स्मृतिक शिलालेखपर
हदसैत पानि
खोलत
हस्ताक्षर भगवानक पूर्वजक।

बरखाक संगे
चमकैत आकाश
माएक कोमल तरहत्थी।
सूर्य करत आच्छादित
वृक्षक
शाखाक
पातक
पँखुडिक।
टाँगल पक्षिक आवास
सभ गृहक बाहर
मयूर सभ करत नृत्य।
जेना प्रिय नव वधु
मयूरीक माथपरक जलक घट
गामक दोगहीसँ निकलत
अनबा लए पानि
छिटैत नहक आकारक झील
वैतरणी डुमाएत
रीढ़युक्त नागफनीक पात।

संग
जीव आ शिव
करत अष्टमी आ एकादशी
चन्द्रमा उगत
चुट्टीक कटगर पीठपर
आ
चाली सभ बहराएत
आडम्बरसँ राजसी मुकुट धेने

सत्ये
किछु अकठ अछि हमरा सभक भाग्यमे
आइ

आइ
गंध पहिल अछारक
आ हम
बैसि आ
पसरैत एक दोसरामे।



श्री आद्याचरण झा (१९२०-)।

मंगरौनी। संस्कृतक महान विद्वान। मैथिलीमे मिहिर, बटुक, वैदेहीमे रचना प्रकाशित। दरभंगा संस्कृत वि.वि. केर प्रतिकुलपति। राष्ट्रपतिसँ सम्मान प्राप्त।

भगवत्याः सीतायाः संरक्षकोजनकः- "विदेह"- एकं महनीयं विवरणम्

१. मिथिला राजधान्यां जनकपुरे एकदा महर्षिः अष्टावक्रः समायातः। तेषां वक्रू शरीरं दृष्ट्वा तत्र समुपस्थिताः जनाः हसितवन्तः। तं दृष्ट्वा महर्षिः उक्तवान्- अत्रत्याः जनाः केवलं व्आह्य रूपं शरीरं पश्यन्ति।आत्मानं न जानन्ति। एतेषां नागारिकाणां भवान् कथं "विदेहः" इति ज्ञातुं न शक्नोति।

२. महाराजः जनकः उक्तवान्- यथार्थता इयं नास्ति। केवलं वक्र शरीरम् अवलोक्य विद्वांसः हसितवन्तः, किन्तु सर्वे महान्तः ज्ञानिनः सन्ति।

३. ''विदेह'' उक्तवान्- भवन्तां मस्तके जटायां एकस्मिन् पात्रे जलं प्रपूर्य स्थापयामि। भवता सह एकः मनीषी गच्छति। भवन्तः सम्पूर्णं राजभवनं भ्रमन्तु (पश्यन्तु)। किन्तु पात्रस्थं जलं यदि एकं विन्दुं यत्र पतिष्यति ततः एव परावर्तयिष्यति स विद्वान्।

४. महर्षिः अष्टावक्रः समग्रं राजप्रासादं पश्यन्-भ्रमन् परावर्तितः। महाराजेन जनकेन पृष्टम्। किं राजभवनं दृष्टवन्तः भवन्तः? महर्षिणा कथितम्- 'राजभवनं न भ्रमितं, किन्तु मम ध्यानं जलविन्दु पतने आसीत्, न किमपि दृष्टम्।

५. विदेहः जनकः कथितवान्- 'भवन्तः जिज्ञासायाः समाधानं तु जातम्। भवन्तः समग्रं राजभवनं भ्रमन्तः न किमपि दृष्टवन्तः। तर्थैवाहं सर्वाणि कार्याणि कुर्वन् न तत्र मनसा- आत्मना च संलग्नः अस्मि।

महर्षिः समायाचनां कृत्वा परावर्तितवान्। उपर्युक्त घटनाचक्रं प्रमाणयति यत् मनः एव सर्वं करोमि। 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः''- श्रीमदभगवद्गीता..''

अजय सरवैया

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

अहाँक तामस हमर स्वागतपथ

''अहाँ आवेष्टित छी प्रतिध्वनि आ मोहक स्वरसँ''. पाब्लो नेरुदा
चक्रधर आ पीयुषक लेल

''कहाँ धरि हम खिचैत रहब एना''? ओ पूछत
आद्र मुखसँ
हेराएल आँखिसँ
हम राखब सोझाँ शब्दकेँ, ओ रखतीह नियमावली
हम करब सोझाँ अपन इच्छा,
ओ भ्रमकेँ
हम देबन्हि मेघ, ओ चक्र
हम आनब प्रश्न, ओ पलायन
हम प्रतिभाक प्रेमी, ओ बन्धनक
हम स्वप्नक आकांक्षी, ओ
निर्जनताक
कहिया धरि? हम बुझलहुँ नीक जकाँ
हमर भाग्य रहए फराक
हमरा सभक दिन राति सेहो
ऋतु आ पाबनि तिहार जकाँ
समय काल हमरा सभक अन्तर
हमरा सभक विभिन्नता रहए
विभिन्न

हमरा सभ प्रेम करैत रही
कतेक दिन धरि?



अजीत कुमार झा

गोवराही, दुहबी-6, धनुषा, कनकपुर नेपाल। सम्प्रति, हानवेल, यूके.मे अध्ययन

काका काकी दहेज लेलथि

कक्का भोरे बिदा भेलाह
जीट-जाट आ कान्हि छटा
पुछलहुँ कक्का एना कतए
कहल जे जाइ काल टोक नञि ने
अबए छी कने बजार भेने
मीठ पकवान आ मिठाई नेने
एम्हर काकी घरकेँ नीपल
सर सफाई कका चमका रहल
कोन अवसर जे एना भ' की रहल
पुछलहुँ जे काकीसँ कहलनि
बौआ आइ घटक आबि रहल
अच्छा तँ दोकानक सजावट छी ई
ग्राहकक स्वागतक तैयारी छी ई
सभ किछु आइ नव तँ लागि रहल
भाइजीयोक मुँह चमकि रहल
कान्हि छटाक' केश रँगा क'
पान चबाबैत कुर्तामे बान्हल
जतेक बढ़िया समान ततबे बढ़िया दाम
बनीमाक राज कक्काक' खूब नीकसँ बुझल
घटक जी अएला निहारि क' देखला
ठोकि बजा क' सभ किछु परखला
भाइजीपर ओ' फेर बोली लगेलथि
मोल तोल कँ ल' क' खूब भेल घमर्थन
सवा चारि लाखमे भेल बात पक्का
देखू आजु हम्मर भैप्या बिकेलथि
लागनिक सूद-मूर सभ उप्पर भेलन्हि
जमा-पूँजीकेँ खूब नीकसँ भजओलथि
कक्का काकी आइ हमर दहेज लेलथि
निमुख बरद जेकाँ भैय्या बिकेलथि
कक्का काकी आइ हमर दहेज लेलथि



अमित कुमार झा,

चैनपुर, सहरसा

बुढ़ी माता

अपन परिवार- माँ, बाबूजी, भाइ, बहिन) संग पटनाक शेखपुरामे रहैत रही, बाबूजी पी.डब्लू. डी. मे एस.डी.ओ. एकटा प्रसिद्ध ईमानदार अधिकारी रहथि, सभसँ पैघ भैया पी.एच.ई.डी.दुमकामे पोस्टेड रहथि। हम सेंट जेवियर्स स्कूल, गाँधी मैदानसँ बारहमा करैत रही, पढ़ाइ-लिखाइमे बहुत नीक रही, पढ़ाइ-लिखाइक अलावा कोनो काज नहि रहए, ओइ पढ़ाइ-लिखाइक कारण हम बहुत कम उम्रमे नीक पद- मैनेजर बिरला ग्रुप- पर छी, हमर किछु दोस्त रहए जे ओहि समयक पैघ राजनीतिक परिवारसँ संबंधित छलाह- एहि विषयमे बादमे कहब-आइक तिथिमे सेहो बहुत पैध स्थानपर छथि। बारहमाक संगहि राम मनोहर राय, एस.पी.वर्मा रोड, पटनासँ मेडिकल एन्ट्रेंसक तैयारी सेहो करैत रही।

मुख्य घटना मोन पड़ैत अछि जनवरी १९९५ क कोचिंग क्लास ५.३० बजे भोरे सँ होइत रहए, हम घरसँ अन्हारे- ४.३०-४.४५ निकलैत रही। पटनामे जनवरी मासमे बहुत ठण्डी पड़ैत छैक, ओहि समयमे आर बेशी ठंडी पड़ैत रहए। ठंडा, ऊपरसँ अन्हार सुनसान रस्ता, बहुत डर सेहो लगैत रहए, लेकिन एक नया जोशमे सभ किछु बिसरि जाइत रही। ११ जनवरी १९९५ कें कोचिंगमे 'मोड्युल टेस्ट' रहए, ई कारण हम ४ बजे घरसँ कोचिंग निकलि पड़लहुँ- कारण ठंढाक कारण लेट नहि होए। हम जहिना पुनाइचक-हड़ताली मोड़क बीच मेन रेलवे लाइन लग पहुँचलहुँ, अचानक एक टा घोघ तनने, करिया कम्बल ओढ़ने बुढ़ी माता सामना आबि गेलि, हम तँ डरसँ साइकिलसँ खसि पड़लहुँ, देखलहुँ तँ ओ बहुत बुढ़ आरो डॉर लगसँ झुकल लागल। हम उठि कऽ ठाढ़ भेलहुँ, गरदा सभ झाड़ि कऽ जहिना चलय लऽ चाहलहुँ तँ ओऽ आवाज देलक,..सुन..अ..बौवा...

डरसँ हालत खराब भऽ गेल..चारू दिससँ सनसन जेकाँ आवाज महसूस हुअ लागल। डरल-डरल ओकरा लग गेलहुँ..।

पुछलक...कतए जा रहल छी!!! ताऽ तक ओ अपन घोघ नहि हटेने रहए।

डरसँ अबाज तँ जल्दी नहि निकलल...;लेकिन हिम्मत कऽ कए जवाब देलहुँ, कोचिंग जाइ छी।

फेर पुछलक..कथी के पढ़ाइ करैत छी..!! बातसँ अपनापन लागल।

हम कहलहुँ-डॉक्टरीक तैयारी करैत छी..

अच्छा बैस..दोसर पढ़ाइमे मोन नहि लगैत छौ- निर्देश दैत-..कनी देर रुकि जो तखन जहिऍं

ताऽ तक समय लगभग ४.४५ भऽ गेल रहए..एक दू टा आदमी सभ सड़कपर सेहो नजरि आबए लागल। लेट होइत रहए एहि कारण हिम्मत कए कऽ कहलहुँ...हमरा लेट भऽ रहल य..हमर आइ परीक्षा अधि अछि।

कोनो बात नहि..जवाब भेटल

बड़ असमंजसमे पड़ि गेलहुँ..की करी..नञि .करी..एक मोन होइत रहए, चलैत लोककेँ अवाज दी, मुदा सड़क फेर सुनसान भ गेल।

तखने ओऽ अपन घोघ हटेलक..हुनकर...चेहराकेँ देखिते लगभग आवाज बेहोश भऽ गेलहुँ..बुढ़–झुर्रीदार चेहरा...ओहिपर मर्द जेकाँ...दाढ़ी...मोँछ...हे भगवान आइ-धरि एहन नञि देखने रही...हमर हाव-भावकेँ देखि ओऽ बजली...हमरा देखि कए डर लागए छौ..नञि डर। हम दोसर किओ नञि छियौ...पता नञि किए ओऽ किछु अपन जेकाँ लागए लागल...ताऽ तक लगभग ५ से ऊपर टाइम भऽ गेल...रोडपर दूध/ न्यूजपेपर बला हॉकर सभ नजरि आबए लागल...

किछु कालक बाद अवाज भेटल- आब तू जो..घुरैत काल अबिहें...हम हवाक भाँति/ तीर सँ बेशी तेजीसँ निकललहुँ...बहुत लेट भऽ गेल रही...साइकिलकेँ अपन क्षमतासँ बेशी तेजीसँ चलबए शुरू कए देलहुँ, जहिना गाँधी मैदान/ सब्जी बागक मुँहपर पहुँचलहुँ...देखलहुँ जे जबरदस्त एक्सीडेन्ट भेल रहए, पूरा रस्ता पुलिस ब्लॉक क देने रहए- एक्सीडेंट लगभग २० मिनट पहिने भेल रहए, जाहिमे चारि टा लोक आ

एकटा चाहक दोकानदार मारल गेल...ओऽ चारू टा हमरे इंस्टीट्यूटक छात्र रहए जे नीक चाह पीबए खातिर रुकल रहए लेकिन...!!

हमहुँ ओहि चाहबलाक दोकानपर रोज रुकैत रही- अगर बूढ़ीमाता नञि भेटितए तँ हमहुँ ओहि समयमे चाहक दोकानेपर रहितहुँ ...फेर पता नञि...)- चाह पिबैक तँ आदति नहि रहए मुदा ठंढ़ाक चलते पीबि लैत रही।

कहुना इंस्टीट्यूट पहुँचलहुँ..ओहिठाम घटनाक सूचना पहुँचि गेल रहए...इंस्टीट्यूट दू दिनुका लेल बन्द कऽ देल गेल। छात्रक घरबलाकँ सेहो सूचित कए देल गेल, हमहुँ बुझल मोनसँ घर घुरए लगलहुँ, घर घुरैत काल ओएह बुढ़िया ओहीठाम भेटल...ओहिना घोघ तनने...लग जाऽ कए सभ घटना सुनेलाक बादो ओ कोनो जवाब नहि देलक...किछु कालक बाद कहलक...

बौआ हमरा भूख लागल यऽ!!

की खाएब !!! हम पूछलियनि

चूरा आ शक्कर..जवाब भेटल।

संयोग एहन रहए जे ताऽ तक हम सभ तरहक समान किनबाक वास्ते कोनो दोकानपर नहि गेल रही, कारण घरमे काज करए लेल बहुत आदमी रहए दोसर घरक सभसँ छोट रही। तैयो दोकानपर गेलहुँ आरो बुढ़ी-माता लऽ चूरा-गुड़ कीनि कए अनलहुँ।

किछु देरक बाद हम पुछलहुँ..कतए जेबही, हम पहुँचा देबौ।

"कतहु नञि", जवाब भेटल।

"रहबीहीं कतए", हम पुछलहुँ।

इएह जगह" सीधा जवाब भेटल।

"खाना कतए खेबही"...पुछलापर जवाब भेटल- " तूँ खुआ, बेशी बक-बक नञि कर, खाइ लेल दे फेर तू पुछिहँ जे पूछए के छौ"- बिल्कुल रुखल जवाब सेहो भेटल। संगहि स्नेहसँ कहलक- "तूँहो खो"।

हम तँ अजीब मुश्किलमे पड़ि गेलहुँ..ओकरा अकेले छोड़ि कए जाइ के मोन सेहो नञि करैत रहए...आखिर की करी...बहुत सोचलाक बाद निर्णय लेलहुँ..जे हुअए एकरा अपना संग लऽ जाइ...रिक्शापर बुढ़िया आरो साइकिलपर हम, घर पहुँचि ओकरा गेटपर ठाढ़ कऽ बाहर ठाढ़ कऽ हम घर गेलहुँ, सभ कहानी अपन माताजीकँ बतेलहुँ, बुढ़िया बाहरमे ठाढ़ छै, सेहो कहि देलहुँ। सभसँ पैघ समस्या जे बुढ़ियाकँ आखिर कतए राखी...माताजी कहलखिन- नीचाँमे एकटा रूम खाली छै- ओहिमे जगह देल जाए, सभ बेबस्था-बिछोना, कम्बल, साफ साड़ी- कऽ कए ओकरा घरमे बैसेलहुँ। साँझमे बाबूजी ऑफिससँ अएलाह तँ हुनका सभ कहानी बतेलहुँ।

बाबूजी कहलन्हि-"बुढ़िया कहिया तक रहतहु"।

"नञि पता"- हम कहलहुँ।

फेर माताजी सभ सम्हारि लेलन्हि ..आरो बाबूजीकँ समझा देलखिन। बुढ़ी-माताक सेवा करब हमर रोजक ड्यूटी भऽ गेल। कोचिंग जाइसँ पहिने आधा घण्टा, आबए के बाद १ सँ डेढ़ घण्टा हमर समय बुढ़ी माता लग बीतए लागल। भोजनक अलग-अलग फरमाइश होइत, सभ किछु पूरा करैत एक सप्ताह बीतल, एक दिन अपना लग बैसा हमर बारेमे पूछए लागल- जेना अपन दादी-दादा-अग्रज- बुढ़ी माता दिससँ कहल गेल- तूँ दोसर पढ़ाइ- मेडिकल छोड़ि कऽ कर। बहुत नाम हेतौ, खूब पैसा कमेबे, माँ-बाप तोरापर नाज करतौ, दसम दिन रातिमे बिना किछु बतेने पता नञि कतए चलि गेलय- आइ तक नहि भेटलीह...एखन तक हम इन्तजार करए छी जे बुढ़ी माता एकदिन जरूर भेटतीह।

बुढ़ी माताक बात बिल्कुल सही भेल जखन १४-१५ घण्टा पढ़ाइ करबाक बावजूद सी.बी.एस.ई. मेडिकलमे वेटिंग आबि गेल। बी.सी.ई.ई.मे डेयरी ब्रान्च भेटल, एम.डी.ए.टी.मे १००% चान्स रहए- ९०% एक्यूरेट प्रश्न सही कएने रही- मुदा परीक्षा-केन्द्र मिल्लत कॉलेज, दरभंगा केन्सिल भऽ गेल..एहि कारणसँ हम फ्रस्ट्रेशनमे रहए लगलहुँ। पढाइ-लिखाइ बन्द कए देलहुँ...जे एतेक पढ़ाइ करए के बाद जखन सफलता नहि भेटल तँ आब कहियो नहि हएत।

फेर हमरा बुढ़ी-माताक बात याद भेल, संगहि बाबूजी सेहो कहलन्हि- अपन ट्रैक चेन्ज करू, लगभग ओही समय यू.जी.सी.सँ ३ टा नया कोर्स पटना आ मगध विश्वविद्यालयकँ भेटल- बायो-टेक्नोलोजी, जल आ पर्यावरण प्रबंधन आ बी.सी.ए.। एन्ट्रेन्स परीक्षापर नामांकन प्रक्रिया शुरू भ गेल। बी.सी.ए. हमरा किछु ढंगक कोर्स बुझाएल, एन्ट्रेन्स देलहुँ आ पास क गेलहुँ। यू.जी.सी. बी.सी.ए.क प्रथम बैचक पहिल छात्र हम रही जे अन्तिम परीक्षा ८९% सँ पास केलहुँ। बाबूजी कहलन्हि- आब यू.पी.एस.सी.क तैयारी करू, ढंगक सरकारी नोकरी लिअ, लेकिन हमर सोच किछु आरे रहए। "अगर अपन प्रतिभा/ क्षमताक उपयोग करबाक अछितें सरकारी नोकरी नञि करू"। फेर एम.सी.ए. केलहुँ, मोन भेल जे एम.बी.ए. कएल जाय- बहुत कठिन रहए आइ.टी.सँ एम.बी.ए. करब। मुदा बुढ़ी माताक कृपासँ एम.बी.ए. सेहो कऽ लेलहुँ। केम्पस सेलेक्शनमे रिलायन्सक ऑफर भेटल। जोइन केलहुँ, फेर एच.डी.एफ.सी. बैंकसँ ऑफर भेटल तँ बैंक जोइन कऽ लेलहुँ। हृदयमे इच्छा रहए जे टाटा-बिड़लामे नोकरी करबाक चाही। बुढ़ी माताक कृपासँ इच्छा पूरा भऽ गेल आ बिड़ला ग्रुपसँ नीक स्थानक ऑफर आबि गेल। जोइन सेहो कऽ लेलहुँ आ एखन तक एतहि छी..आब इच्छा अधि दिल्ली/ मुम्बइक बहुत सेवा केलहुँ...आब अपन बिहार/ मिथिलाक सेवा कएल जाय..बुढ़ी माताक कृपासँ ओहो भऽ जदूतए मुदा सभसँ पैघ इच्छा अछि बुढ़ी-माताक दर्शनक..पता नञि होएत कि नञि...

अमरेन्द्र यादव

(दिधवा, सप्तरी)

हमर मैथिली

डाक्टर चन्देश्वरजी,
अहाँक बाबूजी पियौने हेथिन्ह
उठौना दूध
अहाँकेँ पोसने हेथिन्ह भाड़ापरक माए
लेकिन हमरा नओ महिनाधरि गर्भमे
मैथिलीए केलखिन्ह सम्हार
सोइरी घरमे सेहो मैथिलीए केलखिन्ह दुलार
हम कनियाँक स्पर्श विना जीबि सकैत छी
हस्थमैथुनक उत्कर्ष विना जीबि सकैत छी
लेकिन मैथिलीक आकाश विना नहि
मैथिलीक श्वासप्रश्वास विना नहि
डाक्टर चन्देश्वरजी,
हमर खाँडो, खुट्टी आ बलानमे बहैत अछि मैथिली ।
हमर दिनाभदरी आ सलहेशक दलानमे रहैत अछि मैथिली।

कल्पना आ यथार्थ

जिनगीक हड़हड़ खटखटसँ दूर
मृत्युक तगेदासँ अन्जान बनल
जिनगीक अति व्यस्त समयसँ
किछ पलखति चोराकऽ
अहाँक यादक उडनखटोलामे
उडि जाइ छी हम
प्रेमक अन्तरिक्षमे।
नदीक ओहि पार
दू गछिया तऽर
हमर कोरामे औङ्गठल
हमरासँग हँसैत बजैत
खाइत छी अहाँ सप्पत
खाइत छी हमहूँ सप्पत
अहाँक तरहत्थीकेँ चुमिकऽ
खोसि दैत छी हम
एकटा गेनाक फूल
अहाँक खोपामे।
तखने हमर नाकमे अचानक
ढकैत अछि जरल तरकारीक गन्ध
आ अकचकाइत उठैत छी हम
मिझबय लेल स्टोभ
तखने हमर नजरि पडैत अछि
टेबुलपर राखल चिट्ठीपर
जे काल्हिए एलै हमर गामसँ
आ हमर आगा नाचय लगैत अछि
भरना लागल खेत
बाबूक फाटल बेमाय
बहिनक कुमारि सींथ
भायक पढाइ खर्च
आ मायक दम्मा बेमारी।



अनलकांत

मैथिली त्रैमासिक पत्रिका अंतिकाक सम्पादक। हिन्दीमे गौरीनाथ नामसँ लेखन दू टा हिन्दी कथा-संग्रह प्रकाशित।

तर्पण

गामक छिच्छा आब एकोरत्ती नीक नइँ लागि रहल छै डॉक्टर कामना यादव कँ।

लोके अधक्की होइ छै, वंशउजाड़ौन होइ छै! अपने हाथ-पयर भकोसि कृतमुख बनि जाइ छै!...मुदा एना तँ नइँ जे गामक कोनो चीन्हे-पहिचान नइँ रहय? कत' गेल ओ गाम जे उजड़ि-उपटि गेल अपन भूतपूर्व गौआँ लोकनिक स्वप्ने टा मे अबै अछि?...

तखन ओ अपना आँगनक क'ल लग बाथकीट आ कपड़ा राखि पछुआड़ि धरि आयल छलि। ई पछुआड़ि ओकरा पोखरिक पूबारि महार पर छलै। जत' एक टा कागजी नेबोक गाछ छलै आ ओहि मे मारतेरास नेबो लुधकल छलै। किछु पीयर-पीयर नेबो खसि क' सड़ि गेल छलै। कने हटि पतियानी सँ पाँच टा अड़रनेबा गाछ रहै। ओहू मे कैक टा अड़रनेबा तेहन पीयर सँ ललौन जकाँ भ' रहल छलै जे खसेला पर भक्काक-भक्का भ' जयतै। किछु मे तँ चिड़ै-चुनमुनी भूर सेहो तेना पैघ-पैघ क' देने छलै जे भितरका लाली लखा दै छलै। ओ भूर सब कँ ध्यान सँ देखि रहलि छलि। कि एक टा अड़रनेबाक भूर देखि ओ चिड़ैक कलाकारी पर मुग्ध भ' गेलि। ओहि अड़रनेबा मे ऊपर-नीचाँ पातर आ बीच मे कने चाकर भूर तेहन ढंग सँ बनायल छलै जेना अंग्रेजीक एक टा 'वी' अक्षर पर दोसर 'वी' उनटि क' राखल हो!...ओहि पर एक गो बगिया राखि देने पूरा भूर मुना जयतै!

ओहि भूर देखि बगिया मोन पड़ला सँ ओकर अरुआयल-अरुआयल सन मोन ओस नहायलि दूबि जकाँ लहलहा गेलै। एहि बेर गाम अयलाक बाद पछिला तीन दिन मे ई एहन पहिल क्षण छलै जखन ओकर ठोर पर मुस्कीक पातर-सन रेह जगजियार भ' अयलै।

पछिला तीन दिन सँ ओ एक टा ढंगक रखबार आकि चौकीदार लेल परेशान छलि। कैक टा एजेंसीक दलाल सँ गप्प क' चुकलि छलि। सब कैक टा ने रखबार ल' क' आयलो छलै, मुदा कामना यादव कँ जेहन ग्रामीण टाइपक काजुल आ अनुभवी रखबार चाही छल, से नइँ भेटि पाबि रहल छलै।

ओकर दादा कारी यादवक अमल सँ रहि रहल बुढ़बा रामजी मंडल आब अपन बेटा-पोता लग रहय चाहै छल। ओकर पैरुख सेहो थाकि गेल छलै। जेना-तेना कारी यादव सँ मंगनी यादव धरिक जीवन तँ पार लगा देलकै, मुदा तकरा बाद कामना लग हाथ जोडि देलकै, ''नइँ बुच्ची, आब पैरुख नइँ छौ। किछु दिन हमरो बेटा-पोता संग रहैक सख पुरब' दे।''

एहि पर की कहैत कामना?...तँ ओ ससम्मान बुढ़वाक विदाइ कर' चाहै छलि, मुदा कोनो दोसर रखबार भेटतै तखने ने?...

पछिला दू मास मे ई ओकर तेसर यात्रा छलै। लगले लागल ई यात्रा ओकरा परेशान कयने छलै, मुदा ओकर समस्याक निदान नइँ भ' रहल छलै। ओम्हर पूना मे ओकर क्लीनिक एक-एक दिन बन्न भेला सँ जे परेशानी आबि रहल छलै, से अलगे।

बापक जीबैत कामना गामक बाट बिसरिए जकाँ गेलि छलि। कैक बेर तीन वा चारि साल सँ बेसी पर आयलि छलि। तहिना दू मास पहिने मंगनीलाल यादवक मुइलाक बाद जे ओ गाम आयलि छलि सेहो प्रायः दू साल सँ बेसीए पर। ई रच्छ रहलै जे ओकर बाप ओकरा क्लीनिकमे मुइलै आ तत्काल गाम अयबाक झंझटि सँ बचि गेलि। नइँ तँ एसगरि जान की-की करितय? एहने ठाम भाय-भातीज, कक्का-पीसा, बहिन-गोतनी आकि जाउत-जयधी बला पुरना परिवार मोन पडि जाइ छै लोक कँ। जे-से, ओ एसगरुआ छलि तँ कहियो ओकरा पर कोनो दबावो नइँ देलकै ओकर बाप। तीन सँ चारि मास नइँ बीतै कि बुढ़वा अपने पहुँचि जाइ पूना। फोन पर तँ गप्प होइते रहै छलै।...

बापक मादे सोचैत-सोचैत कामनाक ठोर ओकर नजरि चारूभर सँ भटकि क' पोखरिक अँगनी दिस झुकल लताम गाछ पर चलि गेल छलै। एहि गाछक रतबा लताम तेहन ने लाली लेने रहैत रहै जेना सुग्गाक लोल कि ओकर अपने तहियाक ठोर बुझाइत रहै।

लताम गाछक पात कोकड़िया गेल छलै। फूल-फर एखन नइँ छलै। मुदा

किछुए मास मे, कने गरमी धबिते, एकर पात फेर नव तरहेँ लहलहा जयतै आ फूल-फर सँ लदि जयतै एकर डारि। फेर-फेर एहि पर लुधकि जयतै डम्हा आ पाकल लताम। तखन फेर बहरेतै एहि रतबा लतामक भीतर सँ वैह लाली। मुदा ओकर ठोर? नइँ, आब तँ बाजारक महँग-सँ-महँग लिपिस्टिको नइँ सोहाइ छै ओकरा। गाछक आत्मा डिब्बा मे के भरि सकैए?

पछुआड़िक मारतेरास अड़हर-बड़हर, अत्ता-शरीफा, अनार-बेल, केरा-मुनिगा सन गाछ पर सँ नजरि हटा कामना यादव पोखरिक पानि मे खेलाइत माछ दिस ताक' लागलि। चारि-पाँच टा रोहुक एक टा झुंड पैघ-पैघ सुंग डोलबैत झिहरि खेला रहल छलै। पानिक सतह पर दूर धरि खूब-खूब हलचल पसरि रहल छलै। एहि हलचल मे हेरायलि कामना दू डेग आगू बढि दूबिक निर्मल ओछाओन पर टाँग पसारि बैसि गेलि। ओहि दूबि पर कचनारक किछु फूल खसल छलै। एक फूल उठा हाथ मे तँ ल' लेलक, मुदा ओकर नजरि पानिक हलचले पर रहलै। ई हलचल ओकरा भीतर एक टा नव हलचल अनलकै। ओहि हलचल संग बहैत-भसिआइत कामनाक भीतर कतेक ने अतीतक पन्ना फडफ़ड़ाब' लगलै।...

...ई पोखरि ओकर दादाक खुनायल छलै। अपन पूरा जीवन गाय-महीसक बीच गुजार' बला ओकर दादा एहि परोपट्टाक अंतिम अँगुठाछाप छलै। ओना रोज-रोज गाय-महीस दूहैत ओकर अँगुठाक निशान मेटा जकाँ गेल छलै। ताहि पर, गोबर-गोंत गिजलाक बाद, सदिखन ओ तीन किलोक हरौती आकि गेन्हवाँ लाठी जे पकड़ने रहैत छल, से ओकर हाथक रेखा खाय गेलै। मुदा ओकर कपारक रेखा जगजियारे होइत गेलै। खदबद करैत पंडित-पजियार आकि बाबू-बबुआन सभ सँ भरल गामक एक मात्र 'अहूठ गुआर' कहाब'बला कारी यादव ओहिना 'मड़र' नइँ कहाब' लागल छल! दूध-घीक पैसा आकि गाछ-बाँस आ उपजा-बारी सँ कै गोटे सुभ्यस्त भेल अछि? ओहि सँ पैत-पानह बचि जाय, तँ बड़का बात!...से जेना-तेना पैत-पानह बचबैत कारी यादव स्वयं अँगुठाछाप होइतो अपन एकमात्र मँगनिया बेटा मंगनी यादव कैँ शहर-नगरक कॉलेज-यूनिवर्सिटी धरि पढ़ै मे कोनो कमी नइँ होअय देलक।

कारी यादव सुधंग लोक छल। ओकरा नजरि मे दरोगा आ बीडीओ सँ बढि दुनिया मे कोनो हाकीम नइँ छलै आ सैह ओ अपन बेटो कैँ बनब' चाहै छल। मुदा मंगनी यादव से नइँ बनि सकल। ओ काशीक नामी विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर बनल तँ की? बापक लेल मास्टरे छल!...ओ रंगमंचक मशहूर कलाकार भेल तँ की? बापक लेल नचनिञे छल!...बियाहो ओम्हरे कयलक। मुदा कारी यादव लेल धनसन।

मायक चेहरा मोन नइँ छलै मंगनी कैँ। बापेक रान्हल खाइत अपना हाथेँ बनायब सीखलक। तँ बापक दुःख ओकरा बेसी छटपटाबै, मुदा बाप लेल ओ किछु क' नइँ पाबय। ई फराक जे हरसाइत मंगनी बाप कैँ खुश करैक खूब प्रयास क' रहल छल। ओ जखन-जखन गाम आबय, बाप लेल मारतेरास कपड़ा-लत्ता आ अनेक सामान आनय। मुदा ओकर बाप कैँ तकर दरकारे ने रहै छलै! खरपा पहिरय बला कारी यादव कैँ चप्पल-जूता सँ गोड़ मे गुदगुदी लागै। गोलगला छोडि कुर्ता पहिरब ओकरा कोनादन ने बुझाइ। मंगनीक आग्रह पर बाबा विश्वनाथक दर्शन करबाक लोभ ओकरा बनारस जयबा लेल उसकाबै तँ जरूर, मुदा माल-जाल आ गाछ-बिरिछक चिन्ता पयर रोकै। तँ ओ बेटा लग बनारस कहियो ने जा सकल।

गाछ-बिरिछ सँ बुढ़वाक बेसी लगावक एक टा खास कारण ईहो छलै जे बेसी गाछ बुढियाक लगायल छलै। फेर बुढियाक सारा सेहो सरौली आम आ बुढ़वा धात्री गाछक बीच मे छलै जे गोहाल सँ ओकरा सुत' बला मचानक ठीक सोझाँ पड़ैत छलै तहिया। ओइ सारा पर एक टा ने एक टा तुलसी गाछ सब दिन रहै छलै। गाय-महीस दुहलाक बाद बुढवा ओही तुलसी गाछ दिस घुरिक' धार दैत छल। फेर नहेलाक बाद ओहि तुलसी आ धात्रीक जड़ि मे पानि ढारब सेहो नइँ बिसरै छल।

मंगनी जहिया ठेकनगर भेल छल तहिया सँ बाप कैँ अपने हाथेँ भानस करैत देखने छल। ओकर कनियाँक गौनाक बाद ई सब किछु दिन लेल छुटबो कयलै, मुदा कामनाक जन्मक किछुए मास बाद ओ अपन परिवार बनारस आनि लेलक। फेर बुढ़वाक वैह हाल भ' गेल रहै। मंगनी एक टा चाकर रखबाब' चाहलक, तँ बुढ़वा डाँटि-धोपि थथमारि देलकै, ''धुर बुडि! हमरा देह मे कोन घुन लागल जे हम दोसरा सँ चाकरी खटायब?... एहने ठाम कहै छै, माय करय कुटौन-पिसौन बेटाक नाम दुर्गादत्त!...''

किछु दिनुका बाद मंगनी तातिल मे गाम आयल तँ बुढ़वा कैँ कने बीमार देखलक। बुढ़वा डाँड़ कने टेढ़ क'क' चलै छल आ सूतल मे कुहरैत रहै छल। दिन मे कैक ने बेर लोटा ल' बहराइत छल आ ढंग सँ किछु खाइतो ने छल। मंगनी कतबो पूछै, ''हौ, की होइ छअ?'', मुदा बुढ़वा सही-सही किछु बतबैते ने छलै। बुढ़वा कैँ शहरक डॉक्टर लग चलै लेल मंगनी कतबो जिद्द करै, बुढ़वा तैयारे ने होइ। अंत मे मंगनी खायब-पीबि छोडि रुसि रहल।

तखन बुढ़वा मंगनी कैँ मनबैत कहलकै, ''रौ मंगनी, चल खाय ले। तों किऐ जान दै छही! हम मरिये जेबै तँ की बिगड़तै? आब जीविक' कोनो बान्ह-पोखरि देबाक छै हमरा?''

''किऐ हौ बाबू, मरिक' तों हमरा कपूत कहबेबहक? कह' तँ जीविक' बान्ह-पोखरि किऐ ने दए सकै छहक तों?'' मंगनीक स्वर भखरि गेलै।

''रौ मंगनी, ओइ लेल एक बोरा टाका चाही। से ने हमरा दूध-घी सँ हैत, आ ने गाछ-बाँस आकि उपजा-बारी सँ। तोहर मास्टरियो सँ नहिऐं हेतौ। कोनो दरोगा-बीडीओ भेल रहितय तखन ने!...'' कारी यादव गंभीर स्वर मे बाजल।

''हौ बाबू, तों नइँ बुझै छहक! हम

दरोगा-बीडीओ सँ पैघे छिऐ है। तों बाज' ने जे कोन बान्ह देबहक आकि पोखरि खुनेबहक!..."

"ठीके कहै छही रे?"

"हँ हौ!...हम तोरा फूसि कहबह?"

"बान्हक तँ एहि जमाना मे कोनो खगते नइँ छै। एक टा पोखरिए खुना तँ बड़की टा, अपना घरक पश्चिम दू बिगहा मे। मरियो जायब तँ, जुग-जुग धरि नाम तँ रहतै जे कारी जादब पोखरि खुनेलक।..." बुढ़वा भावना मे बह' लागल छल।

"चलह, पहिने तोहर दवाइ करा दै छियह। ठीक होइते तों मटिकट्टा मजूर सब सँ बात करह। जहियाक दिन तों ठीकबहक तहिए सँ काज शुरू भ' जेतै।"

आ से ठीके भ' गेलै। आ ओही संग एक टा चौकीदार, टेहलुक, भनसिया आकि मैनेजर जे बूझी, ताहि रूप मे रामजी मंडल कँ ओ रखबौने छल। ई फराक जे तकरा बादो बूढ़वा जावत जीयलै माल-जाल रोमब, दुहब-गारब आकि गोबर-करसी; किछु ने छोड़लक। रामजी मंडल ओकरा घर-परिवारक अपन समाँग जकाँ भ' गेल छलै।...आ कारी यादवक मान-मर्यादा ततेक बढ़ि गेलै जे ओ पूरा परोपट्टा मे 'मड़र' कहाबय लागल छल।

कामना कँ ई सब बेसी सुनले छै। ओहि पोखरिक जाग जे भेल छलै तकर भोज कने-मने मोन छै ओकरा। मुदा दादाक हाथक तीन किलोक लाठीक ओ लाली एखनो खूब मोन छै ओकरा। ओहि लाठी मे चुरु भरि तेल पचाबैत कालक दादाक मालिश सेहो ओकरा मोन छै। ओ लाठी एखनो ओकरा घरक कोनो कोन मे राखल छै ठीक सँ, जुगताक'।

ओकर दादा कारी यादवक मुइलाक बादे एत' फूसिघरक जगह पक्का मकान बनल छलै। मुदा ओहि मे रह'बला रामजी मंडल टा छलै। ओकरा सँ मारते बबुआनक बीच एक गुआरक घरक ठीक सँ देखभाल नइँ भ' पबै। ताहि पर किछु मालोजाल छलै। सभ छुट्टी मे मंगनी अबै तँ किछु ने किछु नव बिदैत भ' गेल रहै। हारिक' ओ आँगन-दलान संगे पोखरि-गाछ-माने पूरा सात बिगहाक रकबाक चारू कात खूब ऊँच देबाल द'क' तकरा ऊपर खूब ऊँच धरि काँटबला तारक बेढ़ सँ बेढ़बा देलक। एक जोड़ा करिया गाय छोड़ि बाकी मालजाल हटा देलक। तकरा संग रामजी मंडल कँ सख्त आदेश भेटलै जे गाछक कोनो फल आकि तीमन तरकारी ओ जते चाहय खाय सकैत अछि, मुदा एक्कोपाइक किछु बेचि नइँ सकै अछि। तकर पालन करैत रामजी मंडल ओकर बाग-बगीचा, बाड़ी-झाड़ी सँ पोखरि धरि कँ सब दिन खिलखिल हँसैत जेना बनौने रहल। अपने मंगनी दू-तीन मास पर आबि तकतान क' जाय। ओना ओकरा सभक सब छुट्टी गामे मे बीतै छलै आ ओहि छुट्टी मे माय-बापक संग कामना सेहो अबै छलि।

जे-से, समय-साल बीतैत गेलै। आ एक दिन मंगनी यादव विश्वविद्यालय सँ सेवामुक्त भ' सपत्नीक गाम आबि गेल। तखन कामना अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली मे एमबीबीएस फाइनल क' रहलि छलि आ दुनियाँ साधारण सँ साधारण आदमीक मुट्ठी मे अँट' लागल छलै।

ओहि समय धरि दुनियाँक सब शहर मे एक तरहक बसात बह' लागल छलै आ अपना ठाँक गाम-घर खाली भ' रहल छलै। ककरो बेटा शहर बसलै, तँ बापक मरिते डीह पर नढ़िया भुक' लगलै। किओ चारो दिसक कर्ज आ उकबा मे घेराय आकि दबंगक प्रताड़ना सँ डराय राता-राती गाम छोड़ि देलक, तँ किओ भूखक आवेग मे जत'-तत' पड़ा गेल। बाबू-भैया लोकनि कोनो ने कोनो कंपनीक स्थानीय मैनेजर भ' अपना कँ शहरी बनाब' लगलाह, तँ किछु गोटे वातानुकूलित लाक्षागृह मे सेन्ह लगेबाक प्रयास मे धोती-कुर्ता उज्जर कर' लगलाह। गाम-गामक खेत-पथार बड़का-बडक़ा कंपनीक फॉर्म हाउस मे बदल' लागल छल। सस्ता कार सनक कारखाना आ केमिकल्स हौज लेल पैघ-पैघ रकबा हथियाओल जा लागल छल। किसान नामक प्राणी मे सँ किछु अपने अपन लीला खत्म क' लेलक, किछु शहर-नगरक मशीन चलब' चलि गेल आ जे बचल छल तकरा मे सँ किछु मारल गेल, किछु केर जीन बदलि एहन मजूर बना देल गेल जे ने शहरी रहल आ ने देहाती आ जकर ने कोनो भाषा रहल आ ने कोनो आने चीन्ह-पहिचान। सगरे नव-नव कन्वेंट, नव-नव ढाबा, नव-नव चकलाघर मिल्क-बुथ आ टेलीफोन-बुथ जकाँ खुज' लागल छलै। आ साधारण लोक 'मैन-पावर' कहाब' लागल छलै। एहने सन आफत-बसात मंगनी यादवक गाम मे सेहो आयल छलै। एही आफत मे रामजी मंडलक बेटा-पोता ओकर काजुल घरवाली धरि कँ ल'क' दिल्लीक झुग्गीवास कर' चलि गेल।

मंगनी यादव जहिया सेवामुक्त भ' बनारस सँ गाम घूरल छल, ओकरा अपन स्टेशन कातक दोकान मे बेसी अपरिचिते लोक भेटल छलै। साँझक झलअन्हारी मे घर पहुँच' धरि कतौ किओ एहन नइँ भेटलै जकरा सँ दूटप्पियो कुशल-क्षेम भ' सकैत। रामजी मंडल कँ छोड़ि ओकर आगमन ककरो लेल कोनो खबरि नइँ छलै।

अगिला भोर गामक सड़क धयने टोलक एहि कात सँ ओहि कात गुजरि गेल मंगनी, केओ हाल-चाल नइँ पुछलकै। ओत' कतहु ओकरा अपन ओ गाम नइँ भेटलै जकरा ओ चिन्है छल। जत' पहिने पंडित दीनबंधु झाक घर छलै, ओहि ठाम शून्य-सपाट एक टा मैदान बनि गेल छलै आ तकरा चारूकात खूब ऊँच देबाल रहै जकरा गेट पर एक टा पैघ सन बोर्ड टाँगल छलै, 'भटिंडा फार्म हाउस'। पंडितजीक बेटा आब जामनगर मे बैसि गेल छनि। बेटी अमेरिकी नागरिकता ल' लेने छनि।

मंगनी कने आरो आगू बढ़ल, तँ देखलक जेम्हर पहिने धनुकटोली छलै, ओत' पैघ सन कोनो फैक्टरी खुजि गेल छलै जकरा छतक ऊपर तीन टा मोट-मोट चीमनीनुमा पाइप मारतेरास धुआँ छोड़ैत आसमान कारी करबाक अभियान मे लागल छलै। आ टोलाक कात सँ

कलकल हँसैत बह'बला स्वच्छ-निर्मल जलधारा बला मिरचैया मे जमुना सन गन्हाइत कारी पानि तेना जमकल छलै जेना कोनो नाला।

मंगनी कें थकान भेलै आ घर घुरय लागल। घर घुरैत ओ जगह ध्यान मे अयलै जत' पहिने विशाल-विशाल बर आ पाकड़िक गाछ छलै। ओहि ठाँ लगे-लग कोनो दू गोट मोबाइल कंपनीक विशाल-विशाल टावर ठाढ़ छलै। ओ रुकिक' चारूभर ताक' लागल। दूर-दूर धरि देखलाक बादो ओकरा नजरि पर अपना घर लगक गाछ छोडि कतहु एक्कोटा तेहेन पैघ गाछ नइँ अयलै। जेम्हरे देखलक सब किछु एकदम उजड़ल-उजड़ल सन बुझेलै। बीच टोल मे आबि एक ठाम ठमकल। बगलक दासजीक डीह पर कोनो टैंट हाउसक बोर्ड लागल छलै। कने हटि एक टा ट्रैवेल एजेंटक साइन बोर्ड टँगल छलै जकरा नीचाँ शीशाक गेटक भीतर एक टा पगड़ीवला सरदार जी कुर्सी पर बैसल छलै। तकरा दस डेग आगुक ग्राम देवता स्थान पर बजरंगबलीक एक टा पैघ सन मंदिर ठाढ़ छलै जकर दछिनबरिया देबाल पर कामोत्तेजना जगब'बला कोनो टिकियाक विज्ञापन छलै। तकरा बाद मंगनी किछु ने देखलक आ सोझे अपना घर आबि गेल। घर मे ओकर पत्नी मुनिगाक तरकारी रान्हि रहल छलि। ओ ओकरा लग जाय अकबका गेल।

रसे-रस मंगनी अपन घर आ सात बिगहाक रकबा मे घेरायल पोखरि-गाछ, पछुआडि-महार धरि अपना कें समेटि लेलक। बेटी कामना आ बाकी हित-मित सँ संपर्क लेल ओकरा घर मे फोन आ मोबाइल छलै, रंगीन स्क्रीनबला कंप्युटर छलै जकर तार संपूर्ण दुनियाँ सँ जुड़ल छलै। घरक पाछाँ पैघ सन आयताकार आँगन छलै। आँगनक पश्चिम-उत्तर कोन मे चापाकल छलै। तकर पछुआडि मे पोखरिक महार पर मारते गाछ-बिरिछ छलै। ओहि पर सँ कखनो कोयली, तँ कखनो पड़ौकी केर सुपरिचित स्वर आबै।...माने ओकर गाम ओकरा सात बिगहाक रकबा मे बन्हायल छलै।

जेना-तेना समय कटि रहल छलै। कामना दिल्ली छोडि पूना मे प्रैक्टिस शुरू क' देने छलि। मुदा मंगनीक घर पर एक टा एहन कार कौआ बैसि गेल छलै जे जखने ओ दुनू प्राणी शांति सँ आराम कर' चाहय कि ओ जोर-जोर सँ टाँहि मार' लागै। भोर होइ कि साँझ, दिन होइ कि राति-कार कौआक टाँहि मारब बन्न नइँ भेलै। आ एक राति कामनाक मायक छाती मे तेहेन ने दर्द उठलै जे डॉक्टरक अबैत-अबैत बेचारी चलि गेलि। आ तकरा बाद एसगर मंगनी कारी यादव जकाँ बाड़ी-झाड़ी मे लागल रहय आ बीच-बीच मे कामना लग पूना चलि जाय।...मुदा रामजी मंडल तँ एहन शापित यक्ष छल जकरा लग ने किओ अबै छलै आ ने ओ कतौ जाय छल।...

अनचोके कामनाक भक टूटलै। पोखरिक उतरबरिया महार परक कोनो गाछ पर नुकायल कोयली बाजि रहल छलै। कामनाक भीतर किछु उमड़ि अयलै। मुदा ओ तत्काल उठि गेलि। स्नान कें अबेर भ' रहल छलै।

भोजनक बाद ओ आराम क' रहलि छलि कि ओकर मोबाइल बजलै। एक टा नव एजेंटक कॉल छलै, "मैडम, ऐसा कीजिए कि चौकीदार और माली के रूप में दो अलग-अलग आदमी को रख लीजिए। यहाँ ऐसा कोई चौकीदार नहीं मिल रहा जो आपकी प्रॉपर्टी के साथ पेड़-पौधों की भी देखरेख कर सके। यूँ पोखर की मछली की देखरेख के लिए मछुआरे की जरूरत फिर भी रह जाएगी।"

"नहीं, तीन-तीन आदमी रखना मुश्किल है हमारे लिए।", कामना बाजलि।

"चौकीदार तो नेपाली ही है मगर माली जो मिल रहा है, वह एक उड़िया भाई है। ये दोनों हमारे पटना सेंटर के मार्फत आ रहे हैं और उनकी शर्त है कि वेतन के अलावा हाउसिंग फैसिलिटी भी चाहिए।"

बिना कोनो जवाब देने कामना कॉल डिस्कनेक्ट क' देलक। मुदा भीतर सँ ओकर परेशानी आरो बढि गेल छलै। आब एहि गाम मे गाम भने नहि रहि गेल हो मुदा ओकर बाप-दादा, माय-दादी सभक स्मृतिक गाम सात बिगहाक एहि रकबा मे बेड़हल घर-आँगन, गाछ-बिरिछ, पोखरि-कल सभक बीच छै। कारी यादव सँ मंगनी यादव धरिक नाल एतहि गड़ल छै। कारी यादवक माल-जालक गोबर-गोंत एत'क माटिक कोनो ने कोनो कण मे एखनो खादक रूप मे बचल हेतै। प्रोफेसर मंगनी यादवक कलाकार मोन एहि रकबा मे जाहि गामक लघु संस्करण कें समेटने छल, से जरूर एही ठाम कतहु ने कतहु नुकायल हेतै।... की एकरा सब कें ओ लुटा देत?...की ओ अपन जिनगी भरिक कमाइ सँ एकर रक्षा नइँ क' पाओत?

कामना कें मोन पड़ै छै जे एक बेर ओकर पिता मंगनी यादव बड़ व्यथित मोन सँ कहने छलै, "गाम मे जेहो गाम देखाइ छलै, से तोरा मायक मुइलाक बाद नइँ बुझाइ छै। कखनो-कखनो तँ मोन करैए जे हमहूँ सब किछु बेचि-बिकीनि ली। मात्र घर-आँगन आ गाछ-पोखरि सँ गाम नइँ होइ छै, बौआ। जखन पहिने जकाँ केओ गौएँ नइँ रहल तँ कोन गाम आ की गाम?..."

कामना किछु जवाब नइँ द' सकलि छलि तखन। मुदा एखनो मोन छै ओकरा जे ओ अपन बापक ओहि हेरायल-बेचैन आकृति कें बड़ी काल धरि देखैत परेशान भ' रहलि छलि। एक्को शब्द एहन नइँ भेटल छलै तखन ओकरा जाहि सँ अपन कलाकारमना बापक मोन कें राहत द' सकैत छलि। तखन ओकरा अपन डॉक्टरीक ज्ञान अकाजक बुझायल छलै।

सहसा एक कोन मे राखल अपन दादा कारी यादवक कारी खटखट लाठी देखा पड़लै ओकरा। ओ उठलि ओहि लाठी कें छुबिक' देखबाक लेल, मुदा तखने कॉलबेल जोर सँ बजलै। ओ गेट दिस पलटलि। गेट पर सी सी मिश्रा नामक एक टा मैथिली भाषी सेक्युरिटी एजेंटक दलाल छलै जे पछिला दू दिन सँ नव-नव रखबार ओकरा लेल ताकि रहल छलै।

ओहि दलाल कें ड्राइंग रूम मे बैसा ओ दू मिनट बाद दू गिलास पानि ल' घुरलि। कि विनम्र सन बनैत ओ दलाल बाजल, ''डॉक्टर यादव, सुनियौ! अहाँ बड़ सौभाग्यशालिनी छी जे एखनो अपन बाप-दादाक डीह पर अबै छी। हम तँ नोकरीयेक क्रम मे एम्हर आबि गेलहुँ। कोशीक पूबे सही, मुदा ईहो कहाइ तँ छै आइयो मिथिले ने। हम डीही छी कमला कातक। हमर जनम भेल हिमाचल मे व्यास नदी कातक एक टा अस्पताल मे। बचपन बीतल दिल्लीक यमुनापार मे आ नोकरी भेल कोलकाता मे। मैथिली तँ हम कोलकाता आबि सिखलहुँ सेहो एहि लेल जे हमर दादा मैथिलीक प्रसिद्ध लेखक छलाह आ हुनकर किताब सभक अंग्रेजी अनुवाद एखनो खूब लाभ दै अछि।...एखन कोलकतेक एजेंसीक काजें तीन मास लेल एहि क्षेत्र मे अयबाक अवसर भेटल। एहि क्षेत्र मे कैक टा कंपनी अपन कल-कारखाना शुरू क' रहल छै, से बहुत जल्दी एत'क प्रॉपर्टीक कीमत उछल'बला छै।...''

कामनाक धैर्य चुकि रहल छलै। ओ बाजलि, ''अहाँ कह' की चाहै छी?... साफ-साफ बाजू!''

''अहाँ अन्यथा तँ नइँ लेबै?''

''बाजू ने!...''

''अहाँ यैह ने चाहै छी जे अहाँक ई गाछ-पोखरि बचल रहय, सुरक्षित रहय आ अहाँक बाप-दादाक नाम...''

''तँ?...'', कामनाक माथ पर बल पड़लै।

''देखू, ओहेन रखबार बड़ महँग पड़त जे अहाँक इच्छा अनुकूल हो। एहि लेल रखबार, माली, मल्लाह आ मारतेरास मजदूर पर खर्च कयलाक बादो भेटत तँ किछु ने, उनटे चिन्ता आ परेशानी बेचैन कयने रहत।''

''तँ की करी?... हम बड़ परेशान छी। ओझराउ जुनि।''

''सैह ने कहै छी!...आ लाभक बात कहै छी।...'' क्षण भरि बिलमि ओ बाजल, ''एहि ठाम एक टा भव्य रिजार्ट खोलै केर अनुमति जँ दी तँ अहाँ कें एक खोखा पूरा भेटि जायत। संगे पोखरि-गाछक सुरक्षाक गारंटी सेहो। मात्र एहि घर-आँगन कें तोड़ि नव बहुमंजिला बनब'क अनुमति देब' पड़त। गाछ सब लग मुक्ताकाश मे टेबुल-कुर्सी लगा देल जयतै आ डारि सब पर जगमग लाइट टँगा जयतै। पोखरि मे दू-चारि टा छोटका नाह खसा देल जयतै जाहि पर लोक सब अन्हरियो मे इजोरिया रातिक मजा लैत नौका-विहार करत। पोखरिक बीच मे जाठिक जगह एक टा छोट सनक सुइट बनि जायत, जकर डिमांड पर्यटन स्थल सभ पर सब सँ बेसी होइत छै। से एतहु हेबे टा करतै। किएक तँ एतहु रसे-रस बड़का-बड़का कंपनीक डायरेक्टर, सीईओ, एनआरआई आ विदेशी मेहमानक आगमन शुरू होबए बला छै।...''

''हम अहाँक गप्प खूब नीक जकाँ बुझि गेलहुँ।... अहाँ तँ बड़ बुधियार लोक छी यौ!...तत्काल अहाँ जा सकै छी, दान-पत्र हम शीघ्रे पठा देब!...'' कामना अपन आवाज सप्रयास संयत रखलक।

कनेक सकपका जकाँ गेल मृदुभाषी मैथिल दलाल सी सी मिश्रा चालीस सँ बेसीक नइँ छल। गेट पार क' ओ एकबेर ठमकल, ''कने इत्मीनान सँ विचार करबै मैडम। डॉक्टर छी अहाँ, ओल्ड थिंक आ भावुकता सँ किछुओ फायदा नइँ हैत। हानिए-हानि!...''आ हीं-हीं क' ठिठिआब' लागल।

चालीस पार क' चुकलि डॉक्टर कामना यादव मे प्रौढ़ता आ धैर्य आबि गेल छलै, मुदा तैयो ओ अपना जगह पर बैसलि नइँ रहि सकलि। ओ उठिक' दुआरि दिस आयलि। तेज-तर्रार दलाल सी सी मिश्रा लपकिक' अपन विदेशी मॉडलक गाड़ी मे बैसि गेल छल। कदमक गाछ तर थोड़ेक गरदा उड़ियाबैत ओकर गाड़ी तुरंते फुर्र भ' गेलै।

कामना बाहरक ओसारा पर नहुँ-नहुँ बुल' लागलि छलि। कदम गाछक बाद देबालक काते-कात लागल जिम्हड़, अमड़ा आ अशोक पर बेरियाक रौद खसि रहल छलै। ओहि रौद मे गाछ सभक पात-पात पर जमल गरदाक मोटका परत नीक आर की हेतह?''

रामजी मंडलक बूढ़ चेहरा पर लाजक संग हँसीक फाहा छिड़िया गेलै। ओ खिलखिलाइत उठिक' आँगन चलि गेल।

तखने घर मे राखल कामनाक मोबाइल बजलै। पूना सँ ओकर क्लीनिकक फोन छलै। ओ उठबैते बाजलि, ''डोंट वर्री! सुबह की फ्लाइट से आ रही हूँ। एक-डेढ़ बजे तक क्लीनिक में रहूँगी।'' आ एतबा कहैत ओकर नजरि एकबेर फेर अपन दादा कारी यादवक तीन किलोक हरौती लाठी पर चलि गेलै। ओ लपकिक' लाठी उठौलक।

लाठी मे पहिनेक लाली आ चमकि नइँ छलै। कारी खटखट ओहि लाठी पर झोल-गरदा जमि गेल छलै। भावावेश मे कामना ओहि लाठी कें चूम' चाहलक। मुदा रुकि गेलि।...

कामनाक हाथ चीन्ह' जोग नइँ छलै। पूरा हाथ कारी भ' गेल छलै। तखने ध्यान अयलै जे ओकर ओजनो आब तीन किलो तँ नहिये टा हेतै। कि एक ठाम लाठी पर कनेक दबाव पड़िते ओकर आँगूर धँसि जेना गेलै! कि ओकरा बुझेलै जे ई लाठी कोकनि क' फोंक भ' गेल छलै आ जोर सँ पटकि देने टुकड़ी-टुकड़ी भ' जयतै!... अचांचके डरा गेलि ओ। डराइते-डराइत ओ ओहि लाठी कें पूर्ववत घरक कोन मे राखि हाथ धोअ' कल पर चलि गेलि।

बड़ी काल धरि बेर-बेर हाथ धोयलाक बादो ठीक सँ हाथ साफ नइँ भेलै। साबिकक तेल पीयल लाठी सँ आओल एक टा अजीब तरहक गंध हाथ मे समा गेल छलै। हारिक' तोलिया सँ हाथ पोछैत क्षण भरिक लेल पछुआडि दिस गेलि कामना। ओत' ओकरा लगलै, सब गाछ पर जोर-जोर सँ केओ कुड़हरि चला रहल छलै। पोखरि दिस तकबाक साहस नइँ भेलै ओकरा। ओ सोझे पड़ायलि घर आ जल्दी-जल्दी अपन ब्रीफकेस सैंत' लागलि।



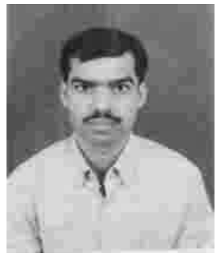
अंकुर काशी नाथ झा

गाम-कोइलख, जिला-मधुबनी, मिथिलांचल

सरकारी योजना

माथ पर लेने जारैनक पथिया,
घुमि रहल छै, कलमें गाछीये
एकटा बुढ़िया ।

सब कहै छै ओ हरजिन छै,
सरकार ओकरा देने संरक्षण
छै,
महिला वला सेहो ओकरा
आरक्षण छै,
तइयो अभगली के गंजन छै।
सरकार के ओकर जाति पर
बहुत छै ध्यान,
ओकरा लेल घर बनेबाक सेहो
छै प्रावधान,
अन्न आ कपड़ा में वैह सब छै
प्रधान,
तइयो ओ खाइ लेल छै
पेरशान।
इंदिरा आवास आ अन्नपूर्णा के
योजना एलै,
बुढ़िया के ई सब भेटब सपना
भेलै,
नेता सब के अन्न भेटलै, घर
बनलै,
सरकार बुझलकै गरीबक
कल्याण भेलै।
एक बेर फेर ओ योजना सऽ
वंचित रहि गेलै,
पूछलीयै जे ओकरा कियैक
नहि भेटलै,
मुखिया जी कहलैन,
जगह कम आ बेसी भीड़ छै,
मुदा सत्त बात तऽ काका
कहला,
बेचारी बुढ़िया शरिफ छै॥



आशीष अनचिन्हार

मनुख

मनुख काज करैत जान अरोपि कए
आफिसमे, रोडपर
वा कतौ
भरि लैए टका जेबीमे
निकलि जाइए मार्केटिंग करबाक लेल
कीनि लबैए
रेडीमेड खुशी वस्तु-जातक रूपमे
की मनुख
रेडीमेड भेल जा रहल अछि?

गजल

जीवनमे दर्दक सनेश शेष कुशल अछि
नहि कहब विशेष शेष कुशल अछि

अन्हरा सरकार चला रहल राजकाज
छैक बौकक ई देश शेष कुशल अछि

देह बदलैए आत्मा नहि सूनि लिअ
एहने छैक सरकारक भेष शेष कुशल अछि

मुक्का आ थापड़क उपयोग के करत
खाली आँखिए लाल टरेस शेष कुशल अछि

गजल कहब असान नहि एतेक आशीष
आब चलैत छी बेश शेष कुशल अछि

अशोक दत्त

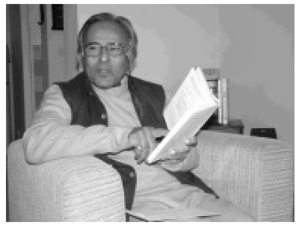
जनकपुर, नेपाल

दू टप्पी

पतुरियासन मुस्की मगरसन नोर नेने
भोरसं सांझधरि फुसिएटा परसैए
गिरगिट त दुनियांमे ब्यर्थे बदनाम अछि
गिरगिटसं बेशी मनुक्ख रंग बदलैए

लुत्ती

करेजपर चोट लगै छै त लुत्ती जनमै छै
केओ जं घात करै छै त लुत्ती जनमै छै
फ़ाटल चाहे जत्ते हो देहके वस्त्र मुदा
चीर पर हाथ बढै छै त लुत्ती जन्मै छै
रहओ केहनो अपन मडैया बडा नीक लगैछ
बास उपट' लगै छै त लुत्ती जनमै छै
ल कर्मक रङकुच्ची बनबैया अपन फ़ोटो
ओ फ़ोटो डहै छै त' लुत्ती जनमै छै
सोनित या पानि धरती होइछै समान सभके
भेदके रङ चढ़ैछै त लुत्ती जनमै छै
बुझि छाउर सर्द चाहे जत्ते खेल करए
बात जं हकके अबैछै त लुत्ती जनम छै



डॉ. गंगेश गुंजन (१९४२-)।

जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी। एम.ए. (हिन्दी), रेडियो नाटक पर पी.एच.डी.। कवि, कथाकार, नाटककार आ' उपन्यासकार।१९६४-६५ मे पाँच गोटे कवि-लेखक ''काल पुरुष''(कालपुरुष अर्थात् प्रभास कुमार चौधरी, श्री गंगेश गुन्जन, श्री साकेतानन्द, श्री बालेश्वर तथा गौरीकान्त चौधरीकान्त) नामसँ सम्पादित करैत मैथिलीक प्रथम नवलेखनक अनियमितकालीन पत्रिका **''अनामा''**-जकर ई नाम साकेतानन्दजी द्वारा देल गेल छल आ बाकी चारू गोटे द्वारा अभिहित भेल छल- छपल छल। ओहि समयमे ई प्रयास ताहि समयक यथास्थितिवादी मैथिलीमे पैघ दुस्साहस मानल गेलैक। फणीश्वरनाथ ''रेणु'' जी अनामाक लोकार्पण करैत काल कहलन्हि, '' किछु छिनार छौरा सभक ई साहित्यिक प्रयास *अनामा* भावी मैथिली लेखनमे युगचेतनाक जरूरी अनुभवक बाट खोलत आ आधुनिक बनाओत''। ''किछु छिनार छौरा सभक'' रेणुजीक अपन अन्दाज छलन्हि बजबाक, जे हुनकर सन्सर्गमे रहल अछि आ सुनने अछि, तकरा एकर व्यञ्जना आ रस बूझल हेतैक। ओना ''अनामा''क कालपुरुष लोकनि कोनो रूपमे साहित्यिक मान्य मर्यादाक प्रति अवहेलना वा तिरस्कार नहि कएने रहथि। एकाध टिप्पणीमे मैथिलीक पुरानपंथी काव्यरुचिक प्रति कतिपय मुखर आविष्कारक स्वर अवश्य रहैक, जे सभ युगमे नव-पीढ़ीक स्वाभाविक व्यवहार होइछ, आओर जे पुरान पीढ़ीक लेखककेँ प्रिय नहि लगैत छनि आ सेहो स्वभाविके। मुदा अनामा केर तीन अंक मात्र निकलि सकलैक। सैह अनामा बादमे ''कथादिशा''क नामसँ स्व.श्री प्रभास कुमार चौधरी आ श्री गंगेश गुंजन दू गोटेक सम्पादनमे -तकनीकी-व्यवहारिक कारणसँ-छपैत रहल। कथा-दिशाक ऐतिहासिक कथा विशेषांक लोकक मानसमे एखनो ओहिना छन्हि। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)।

प्रस्तुत अछि गुञ्जनजीक *मैगनम ओपस* "राधा" जे मैथिली साहित्यकेँ आबए बला दिनमे प्रेरणा तँ देबे करत सँगहि ई गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित *सभ दुःख सहए बाली-* राधा शंकरदेवक परम्परामे एकटा नव-परम्पराक प्रारम्भ करत, से आशा अछि। पढ़ू पहिल बेर "विदेह"मे **–सम्पादक**

गुंजनजीक राधा

विचार आ संवेदनाक एहि विदाइ युग भू- मंडलीकरणक बिहाड़िमे राधा-भावपर किछु-किछु मनोद्वेग, बड़ बेचैन कएने रहल।

अनवरत किछु कहबा लेल बाध्य करैत रहल। करहि पड़ल। आब तँ तकरो कतेक दिन भऽ गेलैक। बंद अछि। माने से मन एखन छोड़ि देने अछि। जे ओकर मर्जी। मुदा स्वतंत्र नहि कए देने अछि। मनुखदेवा सवारे अछि। करीब सए-सवा सए पात कहि चुकल छियैक। माने लिखाएल छैक।

आइ-काल्हि मैथिलीक महांगन (महा+आंगन) घटना-दुर्घटना सभसँ डगमगाएल-

जगमगाएल अछि। सुस्वागतम!

लोक मानसकें अभिजन-बुद्धि फेर बेदखल कऽ रहल अछि। मजा केर बात ई जे से सब भऽ रहल अछि- मैथिलीयेक नाम पर शहीद बनवाक उपक्रम प्रदर्शन-विन्याससँ। मिथिला राज्यक मान्यताक आंदोलनसँ लऽ कतोक अन्यान्य लक्ष्याभासक एन.जी.ओ.यी उद्योग मार्गे सेहो। एखन हमरा एतवे कहवाक छल। से एहन कालमे हम ई विहन्नास लिखवा लेल विवश छी आ अहाँकेँ लोक धरि पठयवा लेल राधा कहि रहल छी। विचारी।



राधा

ऑगी हेराएब कोनो तेहन दुर्घट बात नहि। राधा तें उदासो नहि भेलीह। उदास तें ओ आनो आन कए कारणें छलीह। जेना,शरीरे दुखित पड़लि छलीह। कोनो टा सखि, क्यो बहिना कए दिन सं देख' पर्यंत नहि अयलनि। हुलकियो देब' नहि। दुखित कें होइत छैक आशा आग्रह। बल्कि स्पृहा। स्पृहा ई जे क्यो आबए, आबि क' दू क्षण लग मे बैसय, दु:ख पूछय। गप करय। किछु कहय, किछु सुनय। मन कें बहटारय।

सैह तकरे अभाव आ संबन्धक जोर।जे अप्पन नहि तकरा पर अधिकारे कोन? जे अपनो अछि आ अधिकारो बुझाइत अछि, वास्तव मे से कतेक अपन?

ई अधिकार आ प्रयोजनक प्राथमिकताक अपन-अपन वृत्त होइत छैक। मनुक्ख-मनक ई लाचारी छैक। ओकरा अपन एहि सीमाक ध्यान राख' पड़ैत छैक आ तहिना संपर्कित-संबंधित समस्त समाजक ध्यान राख' पड़ैत छैक। से जकरा बुतें एकर, एहि बुद्धिक संतुलन नहि रहल,तकर जीवन कनीक आर मोशकिल।अर्थात् जीवनक मोशकिली धरि अपरिहार्य।

राधाक ई सोचब आ दुखी हएब स्वाभाविके जे जीवन मोशकिलीक सवारी थिक। चिक्कन चुनमुन बाट पर पहिया सब गुड़कैत आगां बढ़ैत रहल तं बड़ दिब। सबटा मन विरुद्धो अनुभव पाछां छुटैत गेल आ मनलग्गू अनुभव अपना संग आगां बढ़ैत रहल। कतहु कोनो ठाम पहुंचि गेलाक बाद कए तरहें संतुष्ट कयलक आ कए तरहें अतृप्त राखि देलक।

आब फेर एत' सं अनुभवक अतृप्त प्रसंग जे एकहि क्षण पहिने मात्र नगण्य बुझाइत छल, से भ' जाइत अछि खोंचाड़ल मधुमाछी... खोंचाड़ल मधुमाछीमक खोंता। बिना बिन्हनहुं अनेरे ठेहुन सं मूड़ी धरि घनघनौने रहत बड़ी-बड़ी काल। हरदम डेरायल मन-काटत,आब काटत...। कोनो क्षण लुधकत आ काटि लेत। यद्यपि कि काटियो लेत तं कोन ओ अहांक गर्दनि छोपि लेत? दंश देत। से मुदा भने मधु जकां नहि, विष विशाइत दंश। कोनो गर्दनिकट्ट नहि होइत अछि- मधुमाछी !

-बरु गर्दनियें काटब सुभीतगर, ओ सोचलनि। भने मनुक्ख कें छुटकारा तं भेटि जाइ छैक। आ दिन दिनक विस विसाइत भोग-अनुभूतिक अनवरत क्रम जे संपूर्ण अस्तित्वे के बेचैन कयने रहत। देह-प्राणक किछु टा आन वातावरण नहि बनब' देत। घिसियौर कटबैत रहत। ओही अपन स्वभावक परिधि आ तकर प्रयोजन मे बन्हने रहत। मात्र बन्हनहुं टा रहि जाय, तैयो सुकुर, मुदा ओ तं अहांक बुद्धि सं आर सब किछु कें काटि-बारि क' फराक क' देत। अहीं कें अपन तेहल्ला बना क' छोड़त। लैत रहू।

आब एहि मन मे किछुओ क्षण रहि गेलौं कि ओ अहां सं अहींक परिचय तलब करत। यावत-यावत तैयार भ' क' अहां उपयुक्त सोचब आ बाजब, तावत-तावत ई बात, अहांक मनक ई मामूली घटना एकटा समाचार बनि जायत। ई समाचार बिना कोनो माध्यम कें रौद आ बसात पर सवार भ' क' पहुंचि जायत ओत' धरि जत' अहां सोचियो ने सकैत छी। आब बैसि क' कपार पीटैत रहू। ककरा-ककरा आ की-की बुझयबैक? आ से जकरा बुझयबैक से कतेक दूर धरि,की मानत? जतवा मानियो लेत तकरा सं अहांक जीवन कें की सुभीता आ कोन सुख?

हँ, सुख? की थिक? केहन होइत छैक? कोना होइत छैक? कतवा होइत छैक? ककरा होइत छैक?

मुदा... मुदा, किछु छैक तं अवश्ये ई सुख! सुखक अनुभव अवश्ये छैक एहि पृथ्वी पर-मनुक्ख सं ल' क' सब जीवधारी मे।तें रहैए एकरा पाछां व्याकुल-बेहाल! परंतु से केहन छैक-लाल,पीयर, हरियर,उज्जर, कारी - केहन? अर्थात् सुखक कोनो रंगो होइत छैक? कोनो खास रंग?

-की स्वाद छैक? केहन स्वाद? कोनो फलक स्वाद? चाउर-दालि-गहूमक स्वाद? तीमन-तरकारीक?इनारक टटका जलक स्वाद? एक संगे दू गोटेक इजोरियाक चन्द्रमा बा एकान्त अन्हरिया मे तारा गनवाक स्वाद? कोनो अनचिन्हार चिड़ैक अपरिचित बोल अकानि चीन्हवाक कोसिसक स्वाद? बा भोरे भोरे जन्मौटी बच्चाक मिलमिलाइत आंखि जकां बाड़ीक कोनो नान्हि टा गाछ मे नव पनगल दिव्य ललाओन दुपत्ती कें देखि अह्लाद होयवाक स्वाद?....घन अन्हार मे ककरो कंठ सं अपन नामक सम्बोधन सुनवाक?

कोनो गंध होइत छैक? अत्तर-गुलाब सन, बेली-चमेली सन, तेजपात सं छौंकल दालि, कढ़ी पातक बा औंटवा काल लोहिया लागि गेल दूध सन, सोन्हायल डाबा सन,-कथी सन? जन्मौटी बच्चा सन, तुरंत बियाहलि स्त्री सन आ कि बाध सं घुरल हरवाह-गृहस्थ सन, यमुना जल मे खीचल नूआ-वस्त्र सन बा पाकल कदंब सन बा श्रीकृष्णक सांस सन?

सांस मे केहन निसां छैक ! कृष्णक सांस मे केहन निस्सां छनि? कृष्ण मे अपने केहन निसां छनि ! कृष्ण निस्सें छथि। कृष्ण माने निसां...।

बेचैनी राधाक,बेबस मनक प्रवाह मे,
बहैत रहल, यमुना धार सन,
राति, रातुक अन्हार काल मे। सब सूतल अपन-अपन ठाम।
धेने सब रातुक विश्रामक स्थान।
चिड़ै चुनमुन्नी अपन-अपन खोंता।
माल जान अपन थैर-बथान।
आ मनुक्ख अपन-अपन चौकी-खाट-मचान !
निसभेर निन्न मे डूमल जीयैत।
मात्र ई एकटा एकसर मनक विकल नियति, चुपचाप
सूतल रातिक अन्हार मे अपन निस्बद्द चलैत रहल-बहैत गेल!
राधाक मनक प्रवाह यमुना भ' गेल।
एतवो पर रच्छ छल, मुदा
कहां बांचल समयक इहो एहनो सुभीता,
सेहो तं आंजुरक जल भेल।

कतबो यत्ने बचा क' रखवा मे कहां भेलहुं सकारथ?
सबटा बहि गेल। कनीक काल रहल भने
भीजल तरहत्थी-माने स्निग्ध,
सेहो अगिले पल ऋतुक उष्ण प्रभावक वेग मे निठ्ठाहे सुखा गेल।

जानि नहि ओ आंजुर आ आंजुरक जल कोन क्षण अलोप भेल
कोना बिला गेल,
कत' गेल?
सूर्य लग गेल? चन्द्रमा लग गेल कि तारा लग? वा माटि मे,
पोखरि-इनार-धार, कोनो मे फेर सं घुरि गेल, जा क' मीलि गेल जल-
अपन उद्‌गम सं, उत्स सं वा भाफ बनि क' बन' गेल मेघ? कर' गेल बरखा,?
जल कत'गेल? आंजुर भरि जल कत' गेल?

ई किछु विलाप जकां
राधाक मनक परिताप अपनहि अभ्यंतर मे
मुखर चलि रहल-
अपनहि कहैत-अपने कें सुनैत। अपने सं सभटा पूछैत।
ई केहन विचित्र आत्म सम्बोधन?
अपनहि मन सोर पाड़य अपने मन !
सौंसे गाम-टोल अछैत,
टोलक लोक, संबंधी, सखि-बहिनपाक एहि
पसरल समाज आ संसार मे कोनो एकटा मन,
एहन असकर
एतेक एकान्त
काटि रहल व्याकुल पल-पल जीवन।
अपनहि विडंबना कें स्वयं करैत
आत्म सम्बोधन....
-"राधा'' ....!!
एं ई की भेल कत' सं कोन आकाशवाणी
-"आब केहन मन अछि अहांक राधा !''
के पूछल? बाजल के? के आयल पूछ'-कुशलक्षेम,
ककर थिक ई प्राणबेधी वाणी?
दुर्लभ स्वर्गिक संगीत स्वर थिक ककर?
रातिक एहि निस्बद्द एकान्त अन्हार मे के बाजल,
ककरा भेलैक हमर चिन्ता?
के आयल पूछय-हालचाल,...

अच्छा, तं... ई थिक
हुनके ताल?

राधा कें कानमे स्पष्टे क्यो पुछलकनिहें। किछुओ संदेह नहि,

सत्य छैकः
'केहन मन अछि अहांक राधा...'
ई थिक सद्य : अनुभव, कोनो टा भ्रम नहि।
मुदा तखन राधा कें कियेक लगलनिहें ई जिज्ञासा,
पुरुष-कंठक नारी-स्वर मे प्रतिध्वनि?
यदि पुछलनिहें कृष्ण तं पछाति
सैह प्रश्न करैत स्त्री के छल ई जकर स्वर छल?
ई अछि कोना संभव?
मुदा थिक तं ई सत्य,संदेह कथमपि नहि।
सत्य तं होइत अछि सत्ये।
ज्वरे परजरित एहि देहक ताप पर
जमुना जल भीजल पीतांबरी जकां के
एना पसरि रहल-ए,

आलसे निनियाइल बसात...
जमुना मे झिलहरि खेलाइत,

निस्बद्द राति।
गंगेश गुंजन/राधा- सातम खेप/ प्रेषित २३ अक्तूबर-२००८.

बाढ़िक त्रासदी-पर डॉ. गंगेश गुंजन जीक मैथिली गजल

दु:खे टा चारू कात छै आ जी रहल-ए लोक
ताकैत आसरा कोनो दुःख पी रहल-ए लोक !
घर-द्वारि दहि गेलैक सब बच्चा टा छै बांचल
रेलवेक कात, बाट-घाट जी रहल-ए लोक !
सांझो भरिक खोराक ने छैक अगिला फसिल धरि
जीबा लए ई लाचार कोना जी रहल-ए लोक !
सबटा गमा क' जान बचा आबि त' गेलय
आब फेकल छुतहर जकां हद जी रहल-ए लोक !
जले पहिरना, बिछाओन जले छैक ओढना
जबकल गन्हाइत पानि-ए खा पी रहल-ए लोक !
सब वर्ष जकां एहू बाढ़ि मे कारप्रदार
रिलीफ नामें अपन झोरी सी रहल किछु लोक !
चलि तं पड़ल-ए जीप-ट्रक-नावक से तामझाम
आब ताही आसरा मे बस जी रहल-ए लोक !
कहि तं गेलाह-ए परसू-ए दस टन बंटत अन्न
एखबार-रेडियो भरोसे जी रहल-ए लोक !
घोखै तं छथि जे देच्च मे पर्याप्त अछि अनाज
सड़ओ गोदाम मे, उपास जी रहल-ए लोक !
उमेद मे जे आब आओत एन जी ओ कतोक
द' जायत बासि रोटी, वस्त्र, जी रहल-ए लोक !
अछि कठिन केहन समय ई राक्षस जकां अन्हार
किछु भ' रहल अछि तय, तें तं जी रहल-ए लोक !

॥ किछु एहनो बात विषय॥

यद्यपि एहि बात 'सगर राति दीप जरय' पर हम सिद्धांततः प्रभासजीसँ सहमत नहि रहलौँ, परन्तु एम्हर पछिला दशकमे ई तिमाही-कथा गोष्ठी- 'सगर राति दीप जरय'- आजुक मैथिली कथा-विधामे की योगदान कएलक अछि, से तथ्य आब इतिहासमे दर्ज अछि। ई बात सही छैक जे एहन कोनो कार्य कोनो एक गोटेक नहि होइछ। मुदा सभ वर्त्तमानकेँ ओहि एक संस्थापना-कल्पक व्यक्ति-लेखककेँ अवसरोचित रूपेँ कृतज्ञतासँ स्मरण अवश्य कयल जयबाक चाही। से लेखकीय नैतिकता थिक। आ' हमरा जनतबे, से रहथि- स्व. प्रभास कुमार चौधरी।

हमरा तखन दुखद निराशा भेल जखन एहि बेरक मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कार पओनिहार प्रदीप बिहारीजी साहित्य अकादेमी-सभागारमे लेखक-सम्मिलन-अवसर पर अपना वक्तव्यमे सगर राति दीप्प जरयक उपलब्धिक चर्चा तँ कएलन्हि, मुदा स्व. प्रभास जीक नामोल्लेखो नहि कयलखिन। एकरा हम साधारण घटना नहि मानि सकैत छी। गंभीर बात बुझैत छी। कारण हमरा लोकनि रचनाकार छी। औसत कोटिक कोनो राजनीतिक नहि। संभव हो नाम अनावधानतामे छूटि गेल होनि। मुदा हमरा सभ लेखक छी तँ एहन असावधानी करबा लेल स्वाधीन नहि छी। यद्यपि अपन खेद हम हुनका प्रकट कयलियनि।

हमरा लगैये जे अपन-अपन सकारात्मक इतिहासक प्रति सभ पीढ़ीक मनमे कृतज्ञताक भाव अंततः लेखकक ऊर्जा आ' प्रेरणे बनैत रहैत छैक। बतौर कवि हम मैथिलीमे जाहि काल-बिन्दु पर ठाढ छी, तकर जड़ि विद्यापतिसँ ल' सुमन-किरण-मधुप- आ यात्रीएमे। ई सोचि क' मन कृतज्ञ होइत अछि! बल्कि गौरांवित। ओना, एकटा लेखक रूपमे हम एहिमे सँ क्यो नहि छी। जेना सभ, सभक कारयित्री प्रस्थान छथि, तहिना हमहुँ नागार्जुन-यात्रीक कारयात्री प्रस्थान छी। आ' ई भाव हमरा रचनाकर्ममे अग्रसर करबाक उत्तरदायित्व द' गेलय।

तर्पण तिल-कुश अंजलि बला कर्मकाण्डकेँ तँ हम नहि मानैत छी, मुदा पुरखाक तर्पण हमरा प्रिय अछि। अपना शैलीमे। अपन जीवन-मूल्यक एकटा अभिन्न तत्त्व बुझाइत अछि।

तकर बाट की हो? अवसर पर कृतज्ञ स्मृति! अवसर पर- तिथि पर नहि।

भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खाढ़िक युवा नवतुरिआसँ

''भोज परक आँटी'' अवश्य सुनल हएत बन्धु! हमरा लोकनि ते आब आयु-अवरोहणक प्रक्रियामे छी। मुदा पराभव अछि अपन एहि मैथिल मानक ओ स्वप्न जे मिथिलांचलक समग्र सामाजिक परिवर्तनक अर्थात्- जनपथक निर्माण (राजपथ नहि) आकांक्षामे सौँसे बातपर उत्कट डेगे चलिते रहबा लेल विवश छी। हमर गाम पिलखबारो ताहि से जुटल अछि, जाहिसँ हितेन्द्रजी अहाँक गाम केओटी।

हमरा पीढ़ीकेँ तँ इतिहास ''भोज परक आँटी'' बना लेबाक बेर-बेर उपाय कएलक, जेना-तेना बँचबामे सफल रहलियैक, मुदा भऽ कहाँ कोनो खास सकलैक। तेकरे टा अफसोच। एक बोझक रूपमे फसिलकेँ खरिहानधरि कहाँ पहुँचा सकलियैक। तेकरे टा दुःख! मुदा टिकल रहलियैक अपन जीवन-मूल्य आ समाज दर्शनक भूमिपर। एक टा कवि-लेखक जे संघर्ष असकरो कऽ सकैत छी। से रस्ता चलबाक यत्न। जे से।

पूरा बिहार- आन्दोलनक परिणति एहन आ एतए धरि भऽ जेतैक से क्यो सोचियोसकैत छलैक? अवश्ये बुझल हएत जे ताहि आन्दोलनक उपज- आमद भरि देश कैक टा महापद आसीन सी.एम. समेत कतोक एम.पी., एम.एल.ए. महोदय छथि। अहाँक पीढ़ीमे यदि सत्येक (सन्देह नहि सत्तरिक कारवाँक भव से कहि रहल छी जे) सत्ये मिथिलाक दर्द अछि तँ राजनीतिकेँ चिन्हैत जाइ जाऊ। पोलीटिक्स कऽ एहि नव अवतारकेँ। से भाषाक। ताहूमे मैथिलीक नव-नव ब्रांडक नेता आ एहन राजनीतिकेँ चीन्हि जाऊ। कारण जे राजनीतिक ई एकदम नव अवतार ठीक विश्व-बाजारी अवतार! कोनो औसत सुख लेल ककरो ''भोज परक आँटी'' नहि बनब। एहि वाष्पीकरणक प्रवाहमे एहन लोक नीक समय अर्थात् कोनो प्रतिगामी व्यवस्था रोकि नहि सकैत अछि। स्वयं राजनीतिक विचारधारा-अवधारणामे सेहो युगक अनुसार सकारात्मक पुनर्विचार चलि रहल छैक। जाति, धर्म, सम्प्रदय, क्षेत्रीयता सभसँ ऊपर सोचैत। समग्रतासँ एक होऊ। अपन मिथिलाँचलो तँ देशेमे ने अछि।

अपम माँ मैथिली तँ अवश्ये महान। मुदा अन्य लोकक मातृभाषा सेहो तुच्छ नहि। अपना देशक सभ भाषा श्रेष्ठ अछि। मुदा दुर्भाग्यसँ किछु मूढ़ मैथिल मानसिकताक लोक आर तँ आर हिन्दी तककेँ अपमान जेकाँ कऽ देबाकेँ अपन मैथिल प्रेम बुझि लैत छथि, ई नकारात्मक प्रवृत्ति उचित नहि। हम तँ तेहन समयकेँ सहन कएने छी, जे किछु परम् विद्वान् अत्यन्त आदरणीय लोक लिखैत तँ मैथिली नहि तँ इंग्लिश। हिन्दी नहि। ई बहुत विचित्र लागए। आखिर हिन्दी अपन बहुत गौरवशाली लोकतन्त्र राष्ट्र-भाषा थिक। बन्धु! से मानसिकता बदलि जरूर रहल अछि मुदा अहाँ खाढ़िक (पीढ़ीक) युवा नवतुरिआमे आओर तेजीसँ परिवर्तन चाही। बात नहि रुचए तँ बिसरि जाएब, आग्रह!



हिमांशु चौधरी

पिता : स्वर्गीय कामेश्र्वर चौधरी,माताः श्रीमती चन्द्रावती चौधरी,जन्मः वि स २०२०/६/५ लहान, सिरहा,शिक्षाः स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशाः पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की भार सांठू ? (मैथिली कविता संग्रह), विगत दू दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध।–**सम्पादक**

की भार साँठू ?.........

लाते लातसँ घायल
लाशे लाशसँ गन्हाएल
सङक्रान्तिक पीडामे
की भार सांठू ?.........
थुराएल चानी
फ़ुफ़डिआएल अहिबक फ़ड
शोकाएल चाउर, पीपाएल आँजुर
दन्त्यकथाक पात्र जकाँ
कचोट द' रहल अछि
गत्र गत्रमे बेधल भाला-गडाँस
टीसे-टीसे द' रहल अछि
फ़ाटल चिटल कपडा-लत्ता
मूँह कतहु, हाथ कतहु स्ट्रेमे राखल सिगरेटक ठुट्टीसन
लावारिस भ' गेल इतिहासमे बहल नोर
फ़ेर एहिबेर सेहो बहि गेल
गन्हाएल लाशक भार कोनाक' साठू ?.........
अनिष्टकारी अमरौती पीने अछि
ओकरा लेल सत्यम,शिवम आ सुन्दरमक सर्जक बाधकतत्व
बाधकतत्व मरि जाए/माहुरे माहुर भ' जाए
अन्यायक अमरलत्ती/द्रोपदीक चिरसन नमरैत चलि जाए
एहन सनकमे सनकैत ओकर अमरौती
कखनो बारुद फ़ेकैए/कखनो धराप रखैए
बारुद आ धरापमे पोस्तादाना कत' ताकू
जे अनरसा बनाएब आ भार सांठब
क्यानभासमे फ़ाटल गाछ देखि
अन्हडि-बिहाडि अएबे करत
विश्र्वासक जयन्ती अङकुरित भेल अछि
परन्च बहुतो धोएल सींथक सेनुरक
कारुणिकताक भार कोनाक' साठू ?
....

नियति

बिछानरुपी मशानमे अर्थहीन भ'
अपन लाशक कठियारी स्वयमसन भ' गेल छी
इच्छासभमे पूर्णविराम लागि गेल अछि
तें
एकटा नियति भ' गेल छी
हॅसलासँ मात्र नंहि
कनएटा पडैत अछि
कनैत कनैत थाकि जाइत छी
तखनो
शान्ति नहि
किछु मनोविनोद करएटा पडैत अछि
बनाबटी मुस्की छोडएटा पडैत अछि
धन्य कथा !
धन्य यथार्थ !!
तें
जीवन मृत्युमे लीन होइत जा रहल अछि
जीवन आ मृत्यु मन्जिल होइत जारहल अछि



हृदय नारायण झा

आकाशवाणीक बी हाइग्रेड कलाकार। परम्परागत योगक शिक्षा प्राप्त।

लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

प्राती, गोसाउनिक गीत भगवतीगीत झूमरा, सोहर, खेलउना, कुमार, परिछन, चुमान, डहकन, बिषहारा गीत, झूमरि, बटगमनी, मलार चैमासा, लगनी, समदाउन आ एकर अतिरिक्त नदी संस्कृति मे कोशी गीत आदि कतेको मैथिली लोकगीत लुप्तप्राय अछि। जतए कतहु एखनहु लोककण्ठ मे ई गीत सभ बाचल अछि तकरा संग्रहित कऽ ओहि गीतक प्रकाशन आ ओहि धुन कें सुरक्षित रखबाक लेल ओकर ऑडियो वीडियो रूप मे दस्तावेजीकरण करबाक आवश्यकता विचारणीय अछि। संवैधानिक मान्यता प्राप्त भारतीय भाषा बनलाक बाद मैथिलीक संस्कार, रीति रिवाज, पर्व त्योहार ओ) तु पर आधारित गीतक समृ (परंपरा वर्तमान आ भविष्यक पीढ़ी लेल कोना सुरक्षित कएल जाय ई संपूर्ण मैथिली जगतक लेल चिन्ताक विषय बनल अछि। मिथिला महान रहल अछि अपन विशेषताक कारणें। मिथिलाक प्रशंसा में वृहद्विष्णुपुराणक उक्ति अछि

धन्यास्ते ये प्रयत्नेन निवसन्ति महात्मुने।
विचरेन्मिथिला मध्ये ग्रामे ग्रामे
विचक्षणः।।

सदाम्रवन सम्पन्ना नदीतीरेषु संस्थिता।
तीरेषुभुक्तियोगेन तैरभुक्ति रितिस्मृता।।

अर्थात् हे मुनीश्वर! ओ धन्य छथि जे मिथिला में यत्नपूर्वक निवास करइ छथि आ मिथिलाक गामे गाम

घूमइ छथि। ई मिथिला सदैव आमक वन सँ सम्पन्न नदीक तट पर स्थित अछि आ तीर में भोगक लेल प्रसिद्ध अछि। तैँ तीरभुक्ति अर्थात् तिरहुत नाम सँ सेहो जानल जाइत अछि मिथिलांचल।

पुराणोक्त कपिलेश्वर, हरिलाखी, पिप्पलीवन, फुलहर, गिरिजास्थान, विलावती, हरित्वेकी, कूपेश्वर; कुशेश्वरस्थान द्ध, सिंहेश्वर, जनकपुर, वनग्राम, सिन्दूरेश्वर, त्रपनायनवन, विषहर, मंगला, मंगलवती विरजा, पापहारिणी, सुखेलीवन आदि तीर्थ सँ पावन मिथिलाक महिमा वृहद्विष्णुपुराणक मिथिला माहात्म्य में वर्णन कएल गेल अछि।

मिथिलाक लोकगीत में धर्म आ लोक बेवहारक प्रधानता अछि। ब्राह्मवेलाक, पराती, श्रमगीत; लगनीद्ध, गोदना, भगवतीक आवाहन गीत; गहबर मे प्रचलित गीत झूमराद्ध, कोशी संस्कृति में विकसित गीत सहित परंपरागत संस्कार गीतक कतेको प्रकार मिथिलाक नव पीढ़ीक बीच लुप्तप्राय अछि।
ओहि लुप्तप्राय गीत सभक शब्द रचना, धुन, स्वर, लय आ भाव एखनहुँ सबकें आकर्षित करइत अछि। सब तरहैं ज्ञान कैं बढ़ाब बला, संस्कारक संग रीति नीतिक बोध कराब बला आ सुनबा मे मनोरंजक अछि ओ गीत सभ। एखनहुँ जतए कतहु परातीक स्वर कान में पड़ैछ मन भाव विभोर भ जाइत अछि। प्रस्तुत अछि साहेबदासक लिखल पराती मौलिक पारंपरिक भास में -

अजहुँ भजन चित चेत मुगुध मन अजहु भजन चित चेत।।

बालापन तरूणापन बीतल, केस भये सभ सेत मुगुध मन। अजहुँ।।

जा मुख राम नाम ने आबत, मानहु सो जन प्रेत मुगुध मन। अजहुँ।।

हरि विमुखी सुख लहत न कबहुँ, परए नरक के रेत मुगुध मन। अजहुँ।।

साहेबदास तोहि क्या लागत, राम नाम मुख लेत मुगुध मन अजहुँ भजन चित चेत।।

परातीक संबंध में श्रेष्ठ जन कहइ छथि - जखन पराती गाओल जाइ छल त एक कोस धरि ओर ध्वनि पहुँचइत छल। परातीक भास आ भाव लोकसभ के जगा क मंगल विहानक आनन्द दैत छल। ओहि भासक पराती केहन होइत अछि, देखल जाय -

प्राण रहत नहि मोर श्याम बिनु प्राण रहत नहि मोर।।

काहि पुछओ कोई मोहि ने बताबए, कहाँ गेल नन्द किशोर। श्याम बिनु।।

छल कए गेल छलिक नन्दनन्दन , नैन झझाइछ नोर। श्याम बिनु।।

साध्यौ मौन कानन पशु पंछी, कतहु ने कुहुकए मोर। श्याम बिनु।।

हमहुँ मरब हुनि बहुरि न आएब, साहेब जीवन दि न थोर। श्याम बिनु प्राण रहत नहि मोर।।

मधुबनी में श्री दुर्गास्थान,कोइलख में भद्रकाली, श्री दुर्गाशक्तिपीठ, मंगरौनी में बूढ़ी माई, डोकहर मे

राजराजेश्वरी, जितवारपुर मे सि(काली पीठ, ठाढ़ी मे परमेश्वरी स्थान, खोजपुर में तारामंदिर, सहरसा के वनगॉव मे उग्रतारा, विराटपुर मे चण्डिका, बदलाघाट मे कात्यायनी, पचगछिया मे श्री कंकाली, पटोरी आ गढ़बरूआरी मे दशमहाविद्या, देवनाडीह मे वनदुर्गा, दरभंगा मे श्यामामंदिर, म्लेच्छमर्दिनी, गलमा मे तारास्थान, पचही मे चामुण्डा, अहल्यास्थान, ककरौल मे शीतला स्थान, पूर्णियां मे पूरनदेवी, अररिया मे दक्षिण कालिका मंदिर, मुजफ्फरपुर मे त्रिपुरसुन्दरी, सखरा मे सखलेश्वरी, उच्चैठ मे छिन्नमस्तिका, चम्पारन मे वैराटी देवी, चण्डी स्थान, सहोदरा स्थान सन कतेको देवी तीर्थ सँ सम्पन्न मिथिलाक जन जन मे देवी शक्तिक उपासनाक परंपरा समृ(अछि।

मिथिलाक घर घर मे कुलदेवी रूप मे पूजित हेबाक कारणेँ विविध भावक देवीगीतक परंपरा विकसित भेल। संपूर्ण भारत वर्ष मे मिथिला एकमात्र क्षेत्र अछि जतए भगवती गीतक सर्वाधिक धुन पाओल जाइछ। कोनो मंगल कार्यक आरंभ में गोसाउनिक गीत गेबाक जे परंपरा अछि ओहि मे प्रचलित अधिकांश गीत आ धुन लुप्तप्राय अछि। लोककंठ में एखनहुँ कतहुँ कतहुँ सूनल जा सकैछ एहन किछु गीत। यथा

1. पारंपरिक

जय वर जय वर दिअ हे गोसाउनि हे मा तारिणी त्रिभुवन देवी।

सिंह चढल मैया फिरथि गोसाउनि हे मा अतिबल भगवती चण्डी।।

कट कट कट मैया दन्त शबद कएलि हे मा गट गट गिरलनि काँचे।
घट घट घट मैया शोणित पिबलनि हे मा मातलि योगिन संगे।।

2. म0म0मदन उपाध्याय

जय जय तारिणी भव भय हारिणी दुरित निवारिणी वर माले।

परम स्वरूपिणी उग्र विभूषिणी दनुज विदूषिणी अहिमाले।।

पितृवन वासिनि खल खल हासिनि भूत निवासिनि सुविशाले।

त्रिभुवन तारिणि त्रिपुर विदारिणि वदन करालिनि अहिमाले।।

शतभख फल दे दिविशत शुभ दे अरिकुल भय दे धननिले।

अति धन धन दे हरि हर जय दे अनुपम वर दे वर शिले।।

मदन विलासिनी विदित विकासिनि कर कृतपाशिनि जगदीशे।

हरिकर चक्रिणि हरिकर वज्रिणि हरिकर शूलिनि परिमिशे।।

रवि शशि लोचिनि कलुष विलोचिनि वर सुख कारिणि शिव संगे।

श्रुति पथ चारिणि महिष विदारिनि क्षितिज विपोथिनि रण संगे।।

अतिशय हासिनि कमल विलासिनि तिमिर विनासिनि वर सारे।

हर हृदि हर्षिणि रिपुकुल घर्षिणि धन रव वरसिनि हे तारे।।

जय जय तारिणि भव भव हारिणि दुरित निवारिनि वर माले।।

3. पारंपरिक

करू भव सागर पार हे जननी करू भवसागर पार।

के मोरा नैया के मोर खेबैया के मोरा उतारत पार हे जननी।।

अहीं मोर नैया अहीं मोर खेबइया अहीं उतारब पार हे जननी।।

के मोरा माता के मोर पिला छथि के मोर सहोदर भाई हे जननी।।

अहीं मोर माता अहीं मोर पिता छी अहीं सहोदर भाई हे जननी।।

4. कालिकान्त

अखिल विश्व के नैन तारा अहीं छी हे जगदम्ब हम्मर सहारा अहीं छी।।

अनल वायु शशि सूर्य सभ मे अहीं मा, नदी के विमल मंजुधारा अहीं छी।।

रज सत्व तम केर उदभव अहीं मा, प्रगट मे तदपि शंभुधारा अहीं छी।।

विपत धार मे सुत जौं डुबि रहल हो तकर हेतु निकटक किनारा अहीं छी।।

विनय कालिकान्तक सुनत आन के मा दया के सकल सृष्टि सारा अहीं छी।।

5. पारंपरिक

सुर नर मुनि जन जगतक जननी हमरो पर होइयौ ने सहाय हे मा।।

जनम जनम सँओ मुरूख बनल छी, आबहु देहु किछु ज्ञान हे मा।।

केओ ने जगत बीच अपन लखित भेल, हमहुँ अहींक सन्तान हे मा।।

दुखिया के जिनगी माता देखलो ने जाइए, सुखमय जग करू दान हे मा।।

काम क्रोध लोभ मोह माया जाल बाझलहुँ, मुक्तिक देहु वरदान हे मा।।

6. पारंपरिक

हे जगदम्ब जगत माता काली प्रथम प्रणाम करै छी हे।।

प्रथम प्रणाम करै छी हे जननी हम त किछु ने जनै छी हे।।

नहि जानी हम पूजा जप तप अटपट गीत गबइ छी हे।

अटपट गीत गबई छी हे जननी हम त किछु ने जनै छी हे।।

विपतिक हाल कहू की अहॉ के सबटा अहॉ जनै छी हे।

सबटा अहॉ जनै छी हे माता,हम त किछु ने जनै छी हे।।

मात पिता हित मित कुल परिजन माया जाल बझल छी हे।

जगतारिणी जगदम्ब अहीं कें गहि गहि चरन कहै छी हे।।

7. पारंपरिक

हे अम्बे माता हमरो पर होइयौ सहाय।। हमार जगजननी हमरो पर होइयौ सहाय।।

युग युग सॅ भटकल छी जीवन भॅवर मे आबहुॅ उबारू हे माय।।

दुःखहि जनम बाल यौवन मे पाओल सुख के ने भेटल उपाय।।

अज्ञानी शक्तिहीन लोभी बनल छी,एहन ने जिनगी सोहाय।।

8. महाकवि विद्यापति

आदि भवानी विनय तुअ पाय,तुअ सुमिरइत दुरत दूर जाय।।

सिंह चढ़ल देवि देल परवेश बघछाल पहिरन जोगिन भेष।।

बाम लेल खपर दहिन लेल काति, असुर के बधए चललि निशि राति।।

आदि भवानी विनय तुअ पाय,तुअ सुमिरइत दुरत दूर जाय।।

तुअ भल छाज देवि मुण्डहार, नूपूर शबद करए छनकार।।

भनई विद्यापति कालीकेलि सदा ए रहू मैया दहिन भेलि।। आदि भवानी

9. कवीश्वर चन्दा झा

तुअ बिनु आज भवन भेल रे घन विपिन समान।।

जनु रिधि सिधिक गरूअ गेल रे मन होइछ भान।।

परमेश्वरी महिमा तुअ रे जग के नहि जान। मोर अपराध छेमब सब रे नहि याचब आन।।

जगत जननी कॉ जग कह रे जन जानकि नाम। नहर नेह नियत नित रे रह मिथिला धाम।।

शुभमयी शुभ शुभ सब दिन रे थिर पति अनुराग। तुअ सेवि पूरल मनोरथ रे हम सुलित सभाग।।

इ नवो गीत नौ धुन मे अछि। एकर अतिरिक्त कतोक गीत अछि मुदा आबक नब पीढ़ीक बीच एकर परंपरागत शिक्षाक व्यवहार नहि देखल जाइछ। परिणामतः फिल्मी गीतक धुन मे भगवती गीत सभक चलन

मैथिली परंपरागत गोसाउनिक गीत भगवती गीतक परंपराक समक्ष अस्तित्वक संकट अछि।

एकर अतिरिक्त गाम गाम मे गहबर बीच भगतक मंडली मे झूमरा गाबक समृद्ध परंपरा रहल अछि। मुदा कालक्रमे इहो परंपरा अस्तित्वक संकट झेलि रहल अछि। नौ सदस्यक समवेत स्वर मे झालि आ मॉडर के संगति मे प्रस्तुत झूमरा गायन सॅ भगवतीक आवाहन होइत अछि आ भगतक शरीर मे देवी

प्रगट होइत छथि। बीज रूप में एखनहुॅ बचल अछि ई परंपरा मुदा लुप्तप्राय अछि। बतहू यादव सन भगत चिन्तित छथि जे हुनक बाद इ परंपरा कोना बाँचत ? हुनकहि सॅ सूनल अछि इ झूमरा गीत

अरही जे वन से मइया खरही कटओलियइ हे मइया खरही कटओलियइ हे।

मइया जी हे बिजुबन कटओलियइ बिट बाँस जगदम्बा रचि रचि महल बनओलियई हे।।

गोड़लागूॅ पैयॉ पड़ूॅ मइया जगदम्बा आइ मइया गहबर अबियउ हे।

मइया जी हे राखि लिअउ भगत केर लाज जगदम्बा कलजोरि पैयाँ पड़इ छी हे।।

जहिना बलकबा खेलइ माता के गोदिया हे, भवानी माता के गोदिया हे।

मइया जी हे तहिना खेलाबहु जग बीच जगदम्बा आब मइया गहबर अबियउ हे।।

नामो ने जनइ छी मइया पदो ने बूझै छी हे मइया पदो ने बूझै छी हे।

मइया जी हे सेवक बीच कण्ठ लियउ बास जगदम्बा आब मइया लाज रखियौ हे।।

गोड़ लागूॅ पइयॉ परूॅ आद्या जलामुखी हे मइया अद्या जलामुखी हे।

मइयाजी हे राखि लिअउ अरज केर लाज जगदम्बा सेवक कलजोड़इए हे।।



जितेन्द्र झा

पताः जनकपुरधाम, नेपाल एखन; नई दिल्ली

स्वरक माला गँथती अंशु-



हम सभ अपने भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छी तें हमर भाषासाहित्य, गीतसंगीत आ संस्कृति पछुआ रहल अछि। ई कहब छन्हि अंशुमालाक। अंशु दिल्ली विश्वविद्यालयमे संगीतमे एम फ़िल कऽ रहल छथि। मैथिली गीत संगीतकेँ गुणस्तरीय बनएबाक लक्ष्य रखनिहारि अंशु मैथिलकेँ अपन भाषा-संगीत प्रतिक दृष्टिकोण बदलबापर जोड दैत छथि।

अंशुमाला संगीतक विद्यार्थी छथि। दिल्ली विश्वविद्यालयमे एम. फ़िल.मे अध्ययनरत अंशुक माय हिनक पहिल गुरु छथिन्ह। ई माय शशि किरण झासँ मैथिली लोक संगीतक शिक्षा लेने छथि। तहिना एखन किछु बर्षसं ई रेडियो कलाकार हृदय नारायण झासँ संगीत शिक्षा ल' रहल छथि। बाल कलाकारक रुपमे सीतायण एलबममे गाबि चुकल अंशु बिभिन्न रेडियो कार्यक्रम आ स्टेज प्रोग्राममे सहभागी भ' क' मैथिली गीत गाबि अपन स्वरसं प्रशंसा बटोरने छथि।

एखन दिल्लीमे रहिकऽ संगीत साधनामे जुटल अंशु दिल्लीमे आयोजित विभिन्न कार्यक्रममे मैथिली गीत संगीत परसल करैत छथि।

मैथिली भाषीमे अन्य भाषाक गीत संगीतक प्रति बढैत रुचि मैथिली गीतसंगीत लेल हितकर नञि रहल हिनक कहब छन्हि। दिल्लीमे आयोजित एकटा कार्यक्रमकेँ याद करैत ई कहैत छथि जे जाहि कार्यक्रममे लगभग ८ हजार मैथिल रहथि ताहि कार्यक्रममे चाहियोकऽ मैथिली गीत नहि गाबि सकलहुं। ओहि कार्यक्रममे भोजपुरीक डिमाण्ड पुरा करैत अंशुके मैथिली डहकन गेबाक लेल मोन मसोसिक' रह' पडलनि। मुदा अंशु स्वीकारैत छथि जे गायक स्त्रोताक रुचिक आगु विवश होइत अछि, 'जनता जे सुनऽ' चाहत हमरा सएह गाबऽ पडत अंशु कहलनि। पटनामे मैथिली गीत गाबिक स्त्रोताक तालिक गडगडाटिसं खुश हएबाक आदति पडि चुकल अंशुकेँ दिल्लीमे आबिकऽ मैथिल भाषीक बदलल सांगीतिक स्वादसं अकच्छ लागि गेल रहनि।

मैथिलीमे लोकप्रिय धुनक अभाव रहबाक बात अंशु किन्नहु मान' लेल तैयार नहि छथि। धुन वा लयक अभाव नहि, स्त्रोता एहिसं अनभिज्ञ रहल हिनक दाबी छन्हि। मैथिली संगीतकर्मी एखनो आर्थिक समस्याসँ लडि रहल छथि, अंशु कहैत छथि। एहिक अभावक कारण प्यारोडी गीतक सहारा लेबालेल संगीतकर्मी बाध्य बनल अछि। मौलिक गीत,संगीतमे लगानीकर्ताक अभाव रहलासँ सेहो प्यारोडी संगीत लोकप्रिय भऽ रहल अछि, हिनक कहब छनि। 'सभसँ पैघ कमजोरी श्रोत छै कलाकार तँ सभ ठाम हारल रहैया' प्यारोडी प्रेमीपर रोष प्रकट करैत अंशु कहैत छथि। मुदा मैथिलीमे स्तरीय गीत संगीत स्त्रोताकेँ भेटक चाही से अंशुक विचार छन्हि। मैथिली लोकरंग मन्चद्वारा दिल्लीमे आयोजित कार्यक्रममे श्रोता भेटल वाहवाहीक उदाहरण दैत अंशु कहैत छथि जे स्त्रोताक मनोरन्जनक लेल स्तरीय कार्यक्रम सेहो हएबाक चाही।

मैथिली रंगकर्ममे लगनिहारकेँ उचित सम्मान तक नञि भेटि सकल, अंशुमालाक अनुभव छन्हि। मैथिली कलाकारकेँ आब' बला दिनमे बहुत मान सम्मान भेटक चाहि, हम इएह चाहैत छी अंशु कहैत छथि। मैथिली संगीतकेँ एकटा ऊँचाई पर पंहुचएबाक लक्ष्य रखनिहारि अंशु मैथिली रंगकर्ममे एखनो लडकी लेल बहुतो कठिनाई रहल बतबैत छथि।

अंशु आगु कहलनि-मैथिल समाजसँ जाधरि कलाकारकेँ सम्मान नञि भेटतै ताऽ धरि एहि क्षेत्रमे लडकी अपन प्रतिभा देखाब' लेल आगु नञि आओत।

नेपाल वन आ मधेश स्पेशल

टेलिभिजनमे जँ मैथिलीक मादे बात करी त नेपाल वन टेलिभिजनके एकटा

अलग स्थान बनि चुकल अछि। नेपाल वन टेलिभिजन राति पौने ८ बजे प्रसारित होब' बला मधेश स्पेशलक माध्यमसं मैथिली बहुतो मैथिल धरि पंहुच रहल अछि। नेपालमे सभसं बेशी बाजल जाए बला दोसर भाषा मैथिली रहितंहु ओत्त ताहि अनुपातमे संचारमाध्यममे मैथिलीके स्थान नई भेट सकल छइ। एहन अवस्थामे पडोसी देश भारतसं सन्चालित नेपाल वन टेलिभिजन मैथिलीमे कार्यक्रम प्रसारण क मैथिलीभाषा भाषी मध्य अपन अलग स्थान बनालेने अछि। नेपालमे सरकारी स्तरपर संचालित नेपाल टेलिभिजन सहित निजी टेलिभिजन च्यानलमे मैथिली एखनो उपेक्षिते अछि। यद्यपि बेर बेरके मधेश आन्दोलन आ संचारमाध्यमपर लाग बला साम्प्रदायिकताक आरोपक कारणे काठमाण्डुकेन्द्रित टेलिभिजनसबमे आब मैथिलीके स्थान भेट लागल छइ। काठमाण्डुसं प्रसारित सगरमाथा टेलिभिजन सेहो सभदिन मैथिलीमे समाचार देल करैत अछि।

नेपाल वन टेलिभिजनक मधेश स्पेशल नामक 1 घण्टाक कार्यक्रममे समाचार, नेपालक समसामयिक राजनीति, नेपालक प्रमुख मुद्दापर बातचित आ गीत संगीत समेटल गेल अछि। समसामयिक वस्तुस्थिति पर लोक अपन धारणा द क परिचर्चाके महत्वपूर्ण बना देल करैत अछि। ई कार्यक्रम राति पौने आठ बजेसं पौने नओ बजेधरि प्रसारित होइत अछि। नेपाल केन्द्रित समाचार रहितो नेपाल सं बाहर इ कार्यक्रम देखिनिहार मैथिल कमी नई अछि। नेपालक सीमावर्ती मधुवनी, दरभंगा, सीतामढी, सुपौल, सहरसासहितके जिल्लासभमे सेहो एकर दर्शकके कमी नहि अछि। नेपालक मैथिल जत्त मैथिलीमे समाचार, गीत, आ परिचर्चा सुनि क सुसूचित होइत छैथ ततई भारत आ आन ठामक दर्शक मैथिली गीत आ संचारमाध्यममे मैथिलीक बोली सुनि हर्षित भेल करैत अछि।

मधेश स्पेशल नेपालक मधेशीके एकटा अन्तर्राष्ट्रिय संचारमाध्यममे मुंह खोलि क बजबाक अवसर देलकै, सेहो अपने भाषामे। नेपालक संचारमाध्यमसं सेहो कटल कट्ल रहबला मधेशके छोट छिन घटना सेहो प्रमुख समाचार बन लागल। मधेशीक मुद्दापर खुलिक बहस शुरु भ गेल। मधेशक नेता सेहो धोती कुर्ता पहिरिक काठमाण्डुएमे बैसि क कोनो टेलिभिजन पर प्रत्यक्ष रुपँ जनतासँ बातचित कर लगला। टेलिभिजनमे जत्त मैथिली शुन्यप्राय छल ताहि अबस्थामे एक्कहिबेर एक घण्टा मैथिलीक कार्यक्रमके लोकप्रिय होब मे बेशी समय नइ लगलै। एखन इ कार्यक्रम दू बर्ष पुरा कर लागल अइ।

नेपाल 1 टेलिभिजन डिस टिभी आ टाटा स्काइपर उपलब्ध हएबाक कारणे इ देश विदेशमे रह बला मैथिललग सहजहिं पंहुच बनालेने अछि। एहिद्वारे लगभग ७० टा देशमे रहबला मैथिल भाषी मधेश स्पेशलके माध्यमसं मैथिलीमे सुचना आ मनोरन्जन ल रहल छैथ। मधेश स्पेशल मैथिली आ भोजपुरीक मिश्रित कार्यक्रम अछि। एहिमे मैथिली भाषाक गीत नादक अतिरिक्त भोजपुरीक चौकी तोड आ आधुनिक गीत सेहो प्रसारण होइ छै। ई कार्यक्रम तीन भागमे बाटल अछि। पहिलमे नेपाल आ अन्तर्राष्ट्रिय समाचार रहैछै त दोसरमे समसामयिक चर्चा(टक शो) आ तेसरमे मैथिली/भोजपुरी गीत।

दृश्य संचारमे मधेश स्पेशल मैथिलीके जगजियार करमे बड पैघ भूमिका निर्वाह क रहल अछि आ क सकैत अछि से कहनाई अतिशयोक्ति नई हएत। डोम कछ आ जट जटिनक नाचसं जं माटिक सुगन्ध लेब चाहैत हुवए त हुनका सभहक लेल मधेश स्पेशल सहायक भ सकैत छै।

मेधेश केन्द्रित कार्यक्रम होइतो इ मिथिलान्चलके सर्वाङिण विकासमे कत्तेक सहायक हएत से त आव बला दिने बताओत मुदा एतवा निश्चित जे टेलिभिजनमे मैथिलीक नियमित प्रसारणसं मैथिलके अपन बोली अपन भाषा याद दियबैत रहैतै।

नेपालक (किछु भारतक) मिथिला मैथिल मैथिलीक सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक समाचार

भाषा हित कि भोट्क लोभ

नयी दिल्लीक मैथिली भोजपुरी एकेडमीक अध्यक्ष एवं दिल्लीक मुख्यमन्त्री शीला दीक्षित मैथिली भोजपुरी एकेडमीकेँ आन एकेडमीसँ आगू बढल देखऽ चाहैत छी, से कहलनि अछि। मैथिली भोजपुरी एकेडमी द्वारा आयोजित भिखारी ठाकुरक विदेशिया नाटक मन्चन कार्यक्रममे दीक्षित ई बात कहलनि। मैथिलीक लेल अलग एकेडमीक माँगक प्रति दीक्षित कहलनि जे हमरा सभकेँ जोड़क बात करक चाही तोडक नञि। एकताक दोहाइ दैत मुख्यमन्त्री भने अलग एकेडमीक् बातसँ कन्नी कटने होथि मुदा मैथिली भाषा साहित्यमे लागल प्रबुद्धबर्ग मानैत छथि जे अलग एकेडमीसँ मात्र मैथिलीक वास्तविक विकास भऽ सकत। ओना एकेडमी भोट बटोरबाक साधन मात्र नञि बनए ताहि दिश सेहो ध्यान देब जरुरी अछि। एकेडमीक आयोजनमे ६ अगस्त मंगलक राति विदेशिया आऽ ७ अगस्त **बुधक राति महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक मन्चित** कएल गेल छल। मैथिली भोजपुरी एकेडमी आन एकेडमीसँ आगू बढय से दीक्षितके कहब रहनि। सरकारी ढिलासुस्तीकेँ स्वीकारैत ओऽ एक दिन सबहक आवाज सुनल जायत, कहलनि। नव दिल्लीमे एकेडमी द्वारा आयोजित कार्यक्रममे भोजपुरी नाटक विदेशिया देखलाक बाद दीक्षित नाटक खेलनिहार रंगकर्मीकेँ प्रशंसा केने रहथि। नाटयशालामे भोजपुरी आऽ मैथिली भाषीक भीड़ लागल छल। तहिना मैथिली भोजपुरी एकेडमीक उपाध्यक्ष अनिल मिश्र, एकेडमी, विहारक समृद्ध

संस्कृतिकेँ बखानैत एहन प्रस्तुति निरन्तर होइत रहत, से जनतब देलनि।









"हमर सिंहासन अटल अछि" मलंगिया

'जाधरि हमर कलम चलैत रहत ताधरि मैथिली नाटककारक रुपमे हमर ऊँचाइ धरि कियो नञि पहुँचि सकैत अछिए। ई सिंहनाद छनि मैथिलीक प्रख्यात नाटककार महेन्द्र मलंगियाक। समकालीन मैथिली साहित्यकारकेँ चुनौती दैत, ओ नाटककार अपन **सिंहासन** किनको बुते डोलाएल पार नञि लगतए से दाबी करैत छथि। मैथिली नाटककार महेन्द्र मलंगिया एखन मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय आऽ ख्यातिप्राप्त नाटककारमे चिन्हल जाइत छथि। चुनौतीपुर्ण शैलीमे मलंगिया कहैत छथि, हमर हाथमे जाधरि कलम अछि, हम अपन स्थानपर टिकले रहब, हमर सिंहासन अटल अछि। मैथिली नाटकक भीष्मपितामह कहल जाए तँ केहन लगैए, ताहि जिज्ञासामे मलंगिया मुस्कियाइत कहलनि जे हमर नाटक लोककेँ पसिन छञि हमरा ताहि पर गर्व अछि, हम जाहि स्तरक नाटक लिखैत छी, तेहन रचना एखन नञि भऽ रहल छञि। ओऽ जनकपुरक रंगकर्मीक खुलिकऽ प्रशंसा करैत छथि। मैथिली रंगकर्ममे लागल जनकपुरक कलाकारक मलंगिया प्रसंशा करैत कहलनि, जनकपुरक कलाकारसँ बहुत आशा कएल जाऽ सकैत अछि। मैथिली नाटकमे शेक्सपियर कहल जाएबला मलंगिया ४ दशकसँ बेशी समय नेपालमे बिता देने छथि। ओऽ नेपालमे मैथिली साहित्यक संरक्षण लेल सन्तोषप्रद काज नञि भऽ सकल, बतौलनि। नेपालमे दोसर सभसँ बेशी बाजल जाएबला भाषा मैथिलीमे रंगकर्मक समयसापेक्ष बिकास नञि भऽ सकल मलंगियाक कहब छनि। लोकतन्त्र बहालीक बाद सेहो नेपाल सरकार मैथिलीक लेल किछु नञि कऽ सकल हुनक आरोप छन्हि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा मैथिली भाषा, साहित्यक लेल भेल काजके ओऽ कौराके संज्ञा देलनि। प्रतिष्ठानद्वारा मैथिलीलेल भऽ रहल काज प्रति मलंगिया असन्तुष्टि ब्यक्त कएलनि। मैथिली रंगकर्ममे निरन्तर कार्यरत संस्थाकेँ सरकार दिशसँ कोनो तरहक सहयोग नञि भेट रहल बतबैत, ताहि प्रति खेद ब्यक्त कएलनि। सरकारी उपेक्षाक कारण सेहो मैथिली रंगकर्म ओझराहटिमे पडल, मलंगिया मानैत छैथ।

मैथिली साहित्यमे नाटककार आऽ निर्देशकक रुपमे ख्यातिप्राप्त मलंगिया रंगकर्मकेँ रोजीरोटीसँ जोडल जाए, से कहैत छथि। जाऽ धरि रोजीरोटीसँ रंगकर्म नञि जुटत ताऽ धरि बिकास सम्भव नञि, मलंगिया स्पष्ट कहैत छथि। जनकपुरमे मिथिला नाट्य कला परिषदसँ आबद्ध भऽ मैथिली नाटककेँ जन-जन धरि पंहुचएबाक अभियानमे लागल मलंगिया राजतन्त्रमे मैथिली भाषा संस्कृतिक संरक्षणक लेल कोनो काज नञि भेलाक कारणे सेहो मैथिली पछुआएल अछि, से कहलनि।

मैथिली भाषामे आम दर्शकक मोनमे गडि जाएबला नाटक लिखिकऽ मैथिली साहित्यक श्री बृद्धिमे योगदान देनिहार मलंगिया नाटककार नाटक लिखैत काल दर्शकक मानसिकता, उमेर , शिक्षा आऽ पेशाकेँ ध्यानमे राखए से सलाह दैत छथि। 'हम दर्शककेँ लक्षित कऽ नाटक लिखैत छी, तँ हमर लिखल नाटक लोककेँ नीक लगैत छञि, मलंगिया अपन सफ़लताक रहस्य बतबैत कहलनि।

बिदेशिया नाटक:*बिदेशिया घुरि जो*

विदेश जएवाक बाध्यता समाजक एकटा कटु सत्य अछि। अपन गामघर छोडिकऽ कियो विदेश जाय नञि चाहै-ए, मुदा परिस्थितिक आगू ककरो किछु नञि चलए छञि। किछु एहने परिवेशकेँ पर्दापर देखेबाक प्रयास कएल गेल विदेशिया नाटकमे। मैथिली भोजपुरी एकेडमीद्वारा दिल्लीमे आयोजित विदेशिया नाटकमे किछु एहने देखल गेल। वियाह भेलाक किछुए दिनक बाद विदेशिया गाम छोडि दैत छञि, विदेश जाऽ कऽ पैसा कमाय लेल। गाम संगहि विदेशियाकेँ छुटि जाइत छञि, अपन नवकी कनियाँ, गामक संगी-साथी आऽ याद सेहो। ओ पाईक लोभसँ घर छोडने रहैया, मुदा ओऽ पाई तँ नईहे कमासकल शहरमे अपन जीवनके एकटा आओर साथी बनालैयऽ। एम्हर ओकर पहिल कनियां विदेशियाके बाट जोहैत रहैयऽ। विदेशियाक यादमे ओऽ कखनो बटुवाके पुछैयऽ तँ कखनो बारहमासा गबैयऽ। नाटकक निर्देशक संजय उपाध्याय विदेश जएबाक ग्रामीण प्रबृतिकेँ सुखान्त बनेलहुँ से कहलनि। गामक सोझ आऽ सुशील कनियाकेँ छोडि विदेशिया विदेशमे रइम जाइयऽ। ओकरा आब शहरिया संगी निक लगै छइ, जे दुगोट बच्चाक माय सेहो अइ। विदेशिया अपना आपके बिसरि जाइयऽ। गामक कनिया नइ शहरक छम्मकछल्लो आब ओकर प्राण भऽ गेल छञि। एहिबीच भिखारी

विदेशियाकेँ निन्नसँ जगबैत अछि। नाटकमे भिखारी बनल रंगकर्मी अभिषेक शर्मा नाटकक माध्यमसँ लोक अपन गाम घरके याद करलेल विवश भऽ जाइयऽ, से कहलनि। विहारक सुपौल जिलाक रंगकर्मी शारदा सिंह नाटकमे देखाएल गेल विषय बस्तु समाजक सत्य रुप रहल बतौलनि। विदेशिया गाम तँ घुरैयऽ मुदा असगरे नई चारि गोटेक संगे , दूटा बालगोपाल आऽ तकर माय। किछु झोंटाझोंटी आऽ कलहक बाद दुनू सौतिन आऽ विदेशिया गामेमे रहऽ लगैयऽ। नाटक अन्ततः सुखान्त भऽ कऽ समाप्त होइत अछि। ई कथा गामसँ बाहर रहनिहार एकटा निम्न मध्यमबर्गीय युवककेँ जिनगीक मात्रे नञि अछि। बहुतो युवक गाम देहात छोडिते अपन माटि पानिकेँ बिसरि जाइत अछि। शरीरसँ मात्र नञि मोनसँ सेहो विदेशिया भेनिहारकेँ ई नाटक अपन गाम अपन वास्तविक पहिचानक याद दियबैत रहत।

आब चलू नेपाल दिस







सशस्त्रक सनसनी

मधेश एखन दू दर्जनसँ बेशीक संख्यामे रहल सशस्त्र समूहसँ आक्रान्त अछि। कहियो सशस्त्रक विरोधमे जनकपुरक जानकी मन्दिरमे पत्रकार रैली निकालैत अछि तँ कहियो सिरहाक कर्मचारी कार्यालयमे ताला लगाकऽ सशस्त्रक विरोध प्रदर्शन करैत अछि। तहिना सर्लाहीमे बस चालकक हत्या भेलासँ शुरु भेल यातायात बन्दसँ जनजीवन कष्टकर भऽ रहल अछि। मधेशक माँगकेँ अपन नारा बनाकऽ खुलल दू दर्जनसँ बेशी संगठनकेँ एखन मधेशमे तीब्र बिरोधक सामना करऽ पड़ि रहल छन्हि।

चालकक हत्या

सर्लाही। राजमार्गमे एखनो शान्ति सुरक्षाक अबस्था बेहाळे अछि। सर्लाही जिलामे हथियारधारी लुटेरा समुह ७ तारिखक रातिमे एकटा बस चालकक गोली मारि हत्या कऽ देलक। राजधानी काठमाण्डू जाऽ रहल बसक चालक कृष्ण खवासक गोली लागि मृत्यु भेल छल। पूर्व पश्चिम राजमार्ग अन्तर्गत सर्लाहीक जंगलमे राति ९ बजे ओऽ समूह बसमे लूटपाटक प्रयास कएने रहए। बस नञि रोकि भागऽ लगलाक बाद लुटेरा समूह गोली चलौने छल। गोली लागि घायल भेनिहार चालक खवासकेँ उपचारक बास्ते लालबन्दी अस्पताल लऽ जाइत अबस्थामे बाटेमे मृत्यु भेल, से स्थानीय प्रहरी जनौलक अछि। चालकक गोली लगलाक बाद खलासी बसकेँ नियन्त्रणमे लऽ कए दुर्घटना होबऽ सँ बचौने छल। प्रहरी घटनामे संलग्न होएबाक आशंकामे सात गोटेकेँ पकडलक अछि। दोसर यातायात व्यवसायी आऽ मजदुर चालक हत्याक बिरोधमे चक्काजाम जारी रखने अछि। सरकार समस्या समाधान लेल आगू नञि आएल, कहैत यातायात मजदूर देशव्यापि आन्दोलनक चेतावनी देलक अछि। मजदूर आऽ व्यवसायी पुर्वान्चलक तीन अन्चल आऽ जनकपुर अन्चलमे चक्काजाम कएलाक बाद जनजीवन प्रभावित भेल अछि। बन्दक कारण उपभोग्य वस्तुक अभाव होबऽ लागल अछि।

नेपालक (किछु भारतक) मिथिला मैथिल मैथिलीक सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक समाचार

"रे नोर एना तोँ नञि टपक"





कोशी नेपाल आऽ भारतक जनता लेल एकटा अभिशापसँ कम नञि। १८ अगस्तक कोशी नदी पुर्वी तटबन्धकेँ पश्चिम कुशहा लग तीन सय मीटर भत्थन करैत बाट बदलने छल। तञि

के बाद नेपालक लगभग १ लाख जनता विस्थापित भेल। वएह पानि जहन बिहारमे आएल तँ आओर विकराल रुप ल लेलक। बिहारमे पानिसं ३० लाखसं बेशी जनता प्रभावित अछि, जाहिमे २० लाख कोशी इलाकाके अछि। मृतकक संख्या हजारोमे हेबाक आशंका कएल जाऽ रहल अछि। बिहार सरकारक तथ्यक अनुसार कोशी बाढिसँ ७ सय ७५ गामक २२ लाख ७५ हजार जनता प्रभावित अछि।**कोशीक कोप**



चीनक तिब्बत उदगमस्थल रहल कोशी नेपाल होइत बिहार कुर्सेला धरि सात सय २० किलमीटर दुरी पार करैत गंगानदीमे मिलैत अछि। कोशी नदी वार्षिक ५० अरब घन लिटर पानि गंगानदीमे पंहुचाबै-ए। कोशी नदीक वर्तमान जलाधर क्षेत्र ९२ हजार ५ सय ३८ वर्ग फ़िट मिटर अछि, जाहिमेसँ ४१ हजार ३ सय ३३ वर्ग किलोमीटर नेपालक भीतर पड़ैत अछि। कोशी योजना संचालनक ४५ वर्ष होइतो कोशी पीडितक समस्या जहिनाक तहिना अछि।

नेपाल आऽ भारत दुनु देशकँ एहि प्रश्नक उत्तर देव आवश्यक अछि- किए टुटल बान्ह ? बाढिसँ गरीब किसान भूमिहीन भऽ गेल अछि, ने लत्ता कपडा ने पेटमे अन्न आऽ ने पीबालेल पानि। किसान टकटक्की लगौने अछि कोशीक पानि पर, जे कखन घटत? जमिनदार पानिदार भऽ गेल, गाय महिष सबटा दहाऽ गेल छैक, आव बाँकी छजि मात्र जीवाक आश,,,,,। **दोष ककर**

नेपाल आऽ भारत दुनु पक्ष एक दोसराके दोषारोपण कऽ रहल अछि। 'भारतीय प्राविधिक तटबन्ध मरम्मतिक लेल गेल छल मुदा, ओत्त काज करबाक वातावरण नजि बनलाक बाद तटबन्ध निर्माण नजि भऽ सकल, भारतीय पक्ष कहैत अछि। कोशी नदीक समझौता अनुसार नेपाल किछु नजि कऽ सकैत अछि, तँ हमसभ मुक दर्शक छी, दोष भारतक अछि नेपाली पक्षके दाबी। भारतीय प्रधानमन्त्री डा मनमोहन सिंह बाढ़िक बिभीषिका देखिते राष्ट्रीय विपत्तिक घोषणा कऽ देलनि। बहुत रास पाई आऽ खाद्यान्न सहयोग करबाक आश्‍वासन सेहो। मुदा कोशी तटबन्ध टुटल किए, एकर सरकारी स्तरपर कोनो तरहक जाँच-बुझक आदेश नजि देल गेल अछि। हँ नेपालसँ एहि बिषयमे बातचीत करबालेल एकटा उच्चस्तरीय कमिटीक गठन कएल गेल अछि। ओऽ समिति की बातचीत करत आऽ की निष्कर्ष निकालत भविष्यक गर्भमे अछि।**क्षतिपुर्ति**

कोशी समझौताक अनुसार कोशी तटबन्धक सभ तरहक काज भारतक जिम्मामे अछि। तटबन्धक मरम्मति मात्रे नजि तटबन्ध टूटलासँ होबऽ बला क्षतिपुर्ति सेहो भारते देत, से सन्धिमे उल्लेख अछि। नेपालक परराष्ट्रमन्त्री उपेन्द्र यादव कोशी समझौता अनुसार भारत सरकारकँ सभ तरहक क्षतिपुर्ति देबऽ पडतै, से कहैत छथि। सन्धिक अनुसार इलाज, पुनर्वास आऽ खाद्यान्न जेहन सहयोग भारत सरकारकँ करक चाही। भारतीय प्रधानमन्त्री आऽ विदेशमन्त्रीसँ सहयोगक आग्रह कएल गेल आऽ ओऽ सभ एहि प्रति सकारात्मक रहल, मन्त्री यादव कहलनि। आब देखऽ के बाँकी अछि, कोशी पीडित धरि कहिआ पडोसी देशसँ सहयोग पहुँचैत छजि।**नजि रुकल कटान**

कोशी कटान नियन्त्रणलेल एखन धरि कएल गेल सभ प्रयास असफ़ल भेल अछि। कोशीक सभसँ महत्वपुर्ण मानल जाएबला स्पर बहऽ लागल अछि। नेपाल आऽ भारतीय प्राविधिक टोलीद्वारा कटान नियन्त्रणलेल कएल गेल प्रयास निरर्थक भऽ गेल अछि। संयुक्त प्राविधिक टोलीक निगरानीमे बीस हजार बोरा बालु, गिटी राखि कऽ नदिकँ पश्चिम दिश घुमएबाक प्रयास निरर्थक भऽ गेल अछि। बर्षाक कारण सेहो बाढि नियन्त्रण दुरुह बनल अछि। नेपाल सरकार कोशी कटानसँ बिस्थापित भेनिहारक प्रति परिवार १५ हजार टका सहयोग देत। ई १५ हजार ब्यथित कोशीपीडितके कत्तेक सहयोग भऽ सकत ओऽ सहजहि अनुमान लगाओल जा सकै-ए।**किछु मरल बहुतो निपत्ता**

सप्तकोशी नदी गामेक बाटसँ बह लगलाक बाद विस्थापित भेनिहारसभ एखनो अपन परिजनक खोजिमे अछि। हरिपुर, श्रीपुर आऽ पश्चिम कुशाहासँ विस्थापित सभ अपन घर परिवारक सदस्यके ढुंढि रहल अछि। सुनसरी प्रशासन एखनधरि ५ गोटेक मृत्युक पुष्टि कएलक अछि। मुदा एखनो चारि सय गोट सम्पर्कविहीन अछि।

दोसर दिश कोशी बाढ़िसँ विस्थापित आब पेटझरीक चपेटमे आबि गेल अछि। पानि गन्दा भऽ गेलाक बाद विस्थापित शिविरमे पेटझरी आऽ मुँहपेट जाएव विकराल रुप लऽ लेने अछि। विस्थापित एक बालक सहित दु गोटक पेटझरीसँ मृत्यु भेल अछि। मृत्यु भेनिहारमे श्रीपुर-३ के ५६ वर्षीयय तेजन सदा आऽ ६ वर्षिय रम्बा सदा अछि। सुनसरीक विभिन्न २९ शिविरमे एक हजार ५ सय गोट एखन बिमार अछि। अधिकांशमे पेटझरी, निमोनिया, बोखार आऽ छातीमे इन्फ़ेक्सन देखल गेल अछि। रोगीमेसँ १२ गोटक अवस्था चिन्ताजनक रहल, उपचारमे संलग्न चिकित्सक जनौलक अछि।

कत्तेक बिपत्ति !

बाढ़िसंगहि सप्तरी जिलामे सर्पदंश बढि गेल अछि। सर्पदंशसँ शुक्रक राति

आओर एक गोटेक मृत्यु भेल अछि। भादव महिनामे सांप कटलासँ मरनिहारक संख्या ६ भऽ गेल स्थानीय जनस्वास्थ्य कार्यालय जनौलक। खेतमे काज कऽ रहल स्थानीय रामकृष्ण यादवकँ सांप कटने रहन्हि। इलाजक लेल सगरमाथा अंचल अस्पताल लऽ जाइत काल हुनक मृत्यु भेल। एहिसँ पहिने फ़किरा ३ क ४५ बर्षीय रामअशिष यादव, पत्थरगाडा ७ क १४ बर्षिय बमभोला यादव आऽ महादेव ८क १२ बर्षीय घनश्याम इसरक मृत्यु भऽ चुकल अछि। **बिहारक बाध्यता**

कोशीक जलस्तर बढ़लाक बाद बिहारक स्थिति आओर असहज भऽ गेल अछि। बिहार सरकार वायु सेनाक ४ हेलिकप्टर, ८ सय ४० नाव आऽ सेनाक मदतिसँ युद्ध स्तरमे राहत कार्य भऽ रहल बतौलक अछि। मुदा बाढिपीडित लाखो जनता एखनो बाढिमे फ़ंसल अछि। सरकारी सहयोग समेत अपर्याप्त रहल, बाढिपीडितक कहब छन्हि। बिहार सरकार एखन धरि कोशी क्षेत्रमे २८ आऽ समुचा राज्यमे ७६ गोटेक मृत्यु भेल जनौलक अछि। मुदा प्रभावित इलाकामे स्थानीयवासी बहुतो शव दहाइत देखल गेल कहैत अछि। बिहार सरकारक तथ्यांकमे कोशी बाढ़िसँ ७ सय ७५ गामक २३ लाख जनता प्रभावित भेल कहल गेल अछि। **बिछियाक आर्तनाद**

पेटमे अन्न नईं, राहतलेल आकाशमे टकटकी लगौने आंखि, आङमे लत्ताकपडाक अभाव आ भोक्कासी …। सभ अपन अपन पीडा सुना रहल अछि। पेटके राक्षस शान्त नई भेलाक बाद ओ त सौंसे आदमीएके खा लेलक। नवजात शिशु कत्तेक काल भुक्खे रहैत, ओकरा कोशीक कोरमे छोडिदेल गेल।

कोशी सन बेदर्दी जगमे कोइ नइ लघुनाटकमे किछु एहने देखल गेल। मैलोरंगक आयोजनमे दिल्लीमे सेप्टेम्बर १२ क' मन्चित लघुनाटकमे कोशीक बिभीषिका देखएबाक प्रयास कएल गेल। नाटकमे राहतलेल मारामारी कएनिहार जनता भुखसं मृत्युवरण करबाक बाध्यताके जीवन्त रुपमे प्रस्तुत कएल गेल। पीडितके रोदनसं दर्शक भावविह्वल बनल छल। मैलोरंग सेप्टेम्बर १२ सं १४ तारिखधरि मैथिली लोकरंग महोत्सव स्थगित कएलक अछि। कोशी क्षेत्रमे घुरैत मुस्कानकसंग महोत्सव आयोजन हएत मैलोरंग जनौलक अछि। **संघर्षक कठिन बाट**

मैथिली साहित्यकार व्रजकिशोर बर्मा मणिपद्मक स्मृतिमे नयां दिल्लीमे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन कएल गेल। एहि कार्यक्रममे मैथिली नाटक मन्चन हएबाक संगहि मिथिलांगन संस्थाक स्मारिका सेहो विमोचन कएल गेल। मिथिलांगन साहित्यकार मणिपद्मक स्मृतिमे 'उगना हल्ट' नामक मैथिली नाट्क मन्चन कएने छल।



ब्रज किशोर बर्मा मणिपद्म मैथिली साहित्यक चर्चित नाम अछि। लोक साहित्यक संरक्षणमे हुनक योगदान उल्लेखनीय मानल जाईत अछि। इएह योगदानक सम्मान करैत हुनका मैथिलीक वाल्टर स्काट सेहो कहल जाईत छन्हि। लोरिक, राजा सल्हेश, नैका बन्जारा जेहन लोकगाथाक संरक्षण करबामे हुनक योगदान सराहनीय रहल कार्यक्रममे कहल गेल। मिथिलांगन एहिसँ पहिने सेहो मणिपद्मक स्मृतिमे विभिन्न कार्यक्रम आयोजन करैत आएल अछि। तहिना त्रैमासिक मिथिलांगन पत्रिका सेहो प्रकाशनके निरन्तरता देल गेल संस्था जनौलक अछि। उगना हॉ/ल्टक लेखक कुमार शैलेन्द्र आ निर्देशक संजय चौधरी छैथ। नाटकमे दिल्लीमे संघर्षरत मैथिली रंगकर्मीक जीवनक कटु सत्य देखएबाक प्रयास कएल गेल अछि। उगना हल्ट बिहारक मधुवनी जिलाक एक रेल्वे स्टेशनक नाम अछि , यद्यपि नाटकके परिवेश नयां दिल्लीक रंगकर्मीक अडडा मण्डी हाउसपर केन्द्रित अछि। स्थानीय पण्डौल आ सकरी बीचक स्टंशन अछि उगना हॉल्ट। नाटकमे मैथिली भाषा संस्कृतिक संरक्षणलेल अपस्यांत नवतुरियाक कथा ब्यथा समेटल गेल अछि। ओएह युवाक संघर्षक इतिबृत मे नाटक घुमैत अछि।। कियो संगीतकार बन' चाहैत अछि त कियो गीतकार, ककरो फ़िल्ममे हिरो बनबाक धुन सबार छइ त ककरो हिरोइन। अन्ततः कठिन संघर्षक बाद सभ अपन लक्ष्य प्राप्त करबामे सफ़ल होइत अछि। नाटकमे संगठने शक्ति अछि आ एहिंस सफ़लता पाबि सकैत छी से पाठ सिखएबाक प्रयास कएने छैथ नाटककार। छिरिआएल आ दिग्भ्रमित जँका बुझाईत पात्रक अभियान अन्तमे सफ़ल होइत अछि। अन्ततः नाटक सुखान्त अछि।



जितमोहन झा घरक नाम "जितू"

जन्मतिथि ०२/०३/१९८५ , श्री बैद्यनाथ झा आ श्रीमति शांति देवीक सभ सँ छोट (द्वितीय) सुपूत्र। स्व.रामेश्वर झा पितामह आ स्व.शोभाकांत झा मातृमह। गाम-बनगाँव, सहरसा जिला। एखन मुम्बईमे एक लिमिटेड कंपनी मे पद्स्थापित। रुचि : अध्ययन आ लेखन खास कS मैथिली ।**–सम्पादक**

कन्या भूण हत्या प्रकृतिक संग खिलवार

पिछला छुट्टीमे एक सालपर हम गाम गेल छलहुँ। जहिया गाम पहुँचलहुँ ओकर दोसरे दिन पता चलल की हमर बचपनक दोस्तक बहुत जोर मोन ख़राब छनि! आर ओ अस्पतालमे भरती छथि! खबर जहिना हम सुनलहुँ अस्पतालक लेल चलि देलहुँ! हमरा संग हमर पत्नी सेहो चलि देलीह, अस्पताल पहुंचला पर पता चलल जे कुनू चिंताक बात नै सब ठीक ठाक अछि! एक घंटाक बाद हुनका (हमर दोस्तकेँ) छुट्टी मिल जेतनि, बहुत दिनक बाद अस्पताल आयल छलहुँ, इच्छा भेल कनी चारू दिस घुमि - फिरि ली। मनमे अस्पतालक लेल बहुत जिज्ञासा छलए! हम आर हमर पत्नी जहिना दोस्तक वार्डसँ बाहर निकललहुँ, हमर नज़रि अपन चचेरा भैया - भाभी पर पड़ल, अचानक हुनका सभकेँ अस्पतालमे देखिकेँ हम चौक गेलहुँ! हमर नज़र एकाएक भाभीक उदास, कनमुँह चेहरा पर परल .....पुछलियनि की बात ... मुदा ओ किछु जबाब नञि देलीह। हमर पत्नी कातमे बजा कए हुनकर पीड़ा सुनलन्हि! दुबारा पुछलासँ भाभी अपन पीड़ा नञि रोकि सकलीह, हुनकर पीड़ा हुनकर आँखिसँ छलकि उठलनि, पता चलल जे दू गोट कन्याक जन्मक बाद आब तेसर बेर फेरसँ कन्याकेँ नञि बर्दाश्त करैक चेतावनी भैया हुनका पहिने दए चुकलखिन-ए ....पता चलल गर्भ परीक्षण लेल भैया भाभीकेँ अस्पताल अनने छथि! गर्भमे पोसा रहल बच्चाक प्रति पिताक खौफनाक इरादासँ उपजल भयक भाव भाभीक चेहरा पर साफ - साफ देख्अलहुँ! बादमे हमरा आर हमर पत्नी कँ कतेक बुझेलापर भैया भाभीकेँ वापस घर लए गेलखिन! संयोगवश अगला संतानक रूपमे हुनका बालकक प्राप्ति भेलनि ....

ओना भ्रूण परीक्षण प्रतिबंधित अछि आर सरकार एकरा लेल बाकायदा कानूनो बनेने छथि! मुदा ई की ? लागैत अछि पछिला दरवाजाक संस्कृति अस्पतालों के नञि छोड़ने अछि, तखने तँ भैया बहुत आसानीसँ भाभीकेँ गर्भ परीक्षण करबाबए लेल चलि देने छलथि। हम तँ कहए छी चाहे सरकार लाखो कानून बनबथि, लाखो कड़ासँ कड़ा सजा तय करथि लेकिन जा तक हम सब स्वयं अपना तरफसँ कोनो कदम नञि उठायब ई कानूनक हेब नाहे हाएबाक समान अछि! आइ तक भ्रष्ट्राचार, बालश्रम, शोषणक विरुधो सरकार बहुत कानून लागू केलथि मुदा कि समाजमे एकर रोकथाम भS सकल ? नञि! आर यदि अपने ई नञि हेबाक कारणक पता करब तँ पायब कि शायद हम खुद कतहु ने कतहु कोनो ने बगंनो प्रकारे एकर दोषी छी! हम सब परिस्थितिक संग कोनो तरहक समझौता करबाक

वजाय ओकरा सदिखन बदलबाके फेरमे नहि रहैत छलहुँ चाहे ओकरा लेल हमरा सभ के कोनो तरहक हथकंडा कियेक नञि अपनाबए परए .... हम सब चुकय नञि छी! हम तँ पूछैत छी जे की कारण अछि जे लड़कीक जन्म भेला पर आइयो मूह सिकोरल जाइत अछि ? शायद हुनकर परवरिश, शिक्षा, विवाह आदिमे आबै वाला तमाम मुश्किलक कारण एहि तरहक व्यवहार कएल जाइत अछि! मुदा कि लड़काक जन्म भेनेसँ ई तमाम समस्या समाप्त भऽ जाइत अछि ? लड़कोकेँ तँ परवरिश करैये पड़ैत अछि।? हुनकरो शिक्षा,नौकरीक लेल दर-दर भटकए पड़ैत अछि! आर विवाह ....!

यदि एहि गतिसँ कन्या भ्रूण हत्या होइत रहत तँ बूझि लिअ जे सब लड़काकेँ कुंआरे रहए पड़त! उदाहरण स्वरूप अपने हरियाणामे लड़कीक संख्यामे लगातार दर्ज कएल गेल कमी देख सकैत छी, हरियाणामे विवाह लेल लड़की नञि भेटैन छनि। ओहि ठामक लोकिनकेँ दोसर राज्यमे लड़कीक तलाश करए पड़ैत छनि .....

कनी सोचू अगर पूरा देशमे
ईएह स्थिति भऽ जाएत तँ की
होएत ?

हम नीक जेकाँ जनैत छी जे अपने एहि बातकेँ ध्यानमे नञि राखब आर यदि राखबो करब तँ दोसर केँ उदाहरण देबाक लेल! लेकिन कि अपने स्वयं कन्या भ्रूण हत्या रोकएमे दोसरकेँ जागरूक करब ? अपनेकेँ नञि लागैत अछि जे प्रकृति द्वारा निर्धारित जीवनकेँ सुचारू रूपसँ चलबै लेल एहि गाड़ीक दुनु पहियाक समान रूपसँ आवश्यक अछि! आर कन्या भ्रूण हत्या यानी कि प्रकृतिक संग खिलवाड़ अछि! एहि खिलवाड़केँ रोकए लेल हमरा सभकेँ एकजुट होबए पहत आर एतबे नञि एहि मानसिकतोकेँ बदलए पड़त कि वंशबेल खाली आर खाली लड़के चलेता, तखने हम सही खपमे आधुनिक कहाएब ....

भक्तिगीत

मात पिता गुरु प्रभु चरणमे प्रणवत बारम्बार

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

माताजी जे कष्ट उठेलखिन्ह ओऽ
ऋण कहियो नञि चुकलऔं,
आंगुर पकड़ि कऽ चलब सिखेल्खिन्ह
ममताक देलखिन शीतल छाया,
जिनकर कोरामे पलिकए हम कहेलहुँ
होशिया॥

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

पिताजी हमरा योग्य बनेलथि कमा-
कमा कऽ अन्न खुएलथि,
पढा लिखा गुणवान बनेलथि, जीवन
पथ पर चलब सिखेलथि,
जोड़ि-जोड़ि अपन सम्पति केँ बनाऽ
देलथि हक़दार।

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

सत्य ज्ञान गुरूजी बतेलथि, अंधकार
सभ दूर हटेलथि,
ह्रदयमे भक्तिक दीप जरेलथि,हरी
दर्शनक मार्ग बतेलथि,
बिना स्वार्थक कृपा केला ओऽ कतेक
पैघ उदार।

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

प्रभु कृपासँ नर तन पेलहुँ संत
मिलनक साज सजेलहुँ,
बल बुद्धि आर विद्या दऽ कऽ सभ
जीवमे श्रेष्ठ बनेलहुँ,
जे कियो हिनकर शरणमे
एलिखन,भेलन्हि हुनकर उद्धार।

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।



ज्योति

www.poetry.comसँ संपादकक चॉयस अवार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) ज्योतिकँ भेटल छन्हि। हुनकर अंग्रेजी पद्य किछु दिन धरि www.poetrysoup.com केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आऽ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि।

मिथिला पेंटिंगक शिक्षा सुश्री श्वेता झासँ बसेरा इंस्टीट्यूट, जमशेदपुर आऽ ललितकला तूलिका, साकची, जमशेदपुरसँ। नेशनल एशोसिएशन फॉर ब्लाइन्ड, जमशेदपुरमे अवैतनिक रूपेँ पूर्वमे अध्यापन।

ज्योति झा चौधरी, जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी ; शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूलटिस्को साकची गर्ल्स हाई स्कूल, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेज़, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी डबल्यू ए आइ (कॉस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान- लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर झा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा झा, शिवीपट्टी।--**सम्पादक**

बर्फ ओढ़ने वातावरण !
मानू आकाश टूटि क बिखरि गेल ,
अपने आप के छिरियाकऽ
सबके एक रंग में रंगि गेल ॥

थरथराबैत सरदी स भयभीत
सब जीव अपन जगह धेलक;
प्रकृति के इहो अवरोध मुदा,
मनुष्य के नहि बाँधि सकल ॥

भाँति प्रकारक साधन जोगारलक
विकट परिस्थिति पर विजय लेल;
अपन सर्वश्रेष्ठ बुद्धिबल स
मनुष्य अंतत: सफल भेल॥

गामक सूर्यास्त

गामक_सूर्यास्त
एक अद्भुत दृष्य यादि पाड़ि चकित भेलहुँ,
पोखरिक भीड़ पर हम ठाढ़ छलहुँ
आसमानक नीलवर्ण भेल रंगमय
दिया बातीक मुहुर्तमे सूर्य सबस ँ विदा लय
क्षितिजमे विलीन हुअ लागल
संग ओकर प्रकाशपुंज सेहो भागल
सबहक खरिहानमे लालटेन टिमटिमाय छल
पक्षी सब समदाओन गाबि रहल छल
सेहो ध्वनि मन्द पड़ि गेल
साँझ रातिमे बदलि गेल
फेरि स अगिला भोर मे पक्षिगण
गायत प्राती सब मिलि एक संग।

विशाल समुद्र

समुद्रक लहरिक तरंग
अनगिनत बेर दोहरा रहल अछि ।
उद्देश्यहीन अपने मुदा ओकर गान
कहिया कत' सँ चलि रहल अछि ।
बेर बेर रेत पर बनल पदचिह्न
मेटा क' तटस ँ घुरि जाइत अछि ।
जलक सभस ँ शक्तिशाली संगठन
सागरक रूपमे उपस्थित अछि ।
रातिक अन्हारोमे ओकर गर्जन
ओकर विशालताक आभास कराबैत अछि ।

आधुनिक जीवनदर्शन

अतिशयोक्ति सँ विरक्ति अछि
जाबे ओ' दोसरक प्रशंसा में होय
परञ्च निंदामे किएक कंजूसी
जखन अनकर करबाक होय ।

असभ्य तऽ ओकरा बुझब
जे हमर प्रशंसकके रोकयए,
ने हम्मर कियो प्रशंसक अछि
ने समाजमे कियो असभ्य बुझाइए ।
परोपकार करनिहारके आशिष
जे हमर काज बना गेल
अन्यथा ओ सब बेरोजगार
जे आनक काजमे लागि गेल ।
.मनुष्य आ' ओकर भावना
कठोर हृदयमे भावुकता नुकायल भेटल,
पुछलियै, " तोहर आब कोन स्थान ?"
बड़ निर्मलतास ँ उत्तर देलक,
"हमरा स ँ नहिं तोरा सबके त्राण।

क्रोध, प्रेम, दु:ख, दया आदि जीवनक अंश
अहिस ँ पूर्णत: विमुक्त भेनाई कठिन;
परन्तु गलतकेँ बिसरा कऽ नीक विचारकेँ
आश्रय देनाय अछि अपन आधीन ।

दया परोपकारक अधिष्ठात्री अछि ,
दु:ख खुशीक महत्त्व बुझाबए छै।
क्रोध स ँ हठ, प्रेमसँ त्याग जनमैत अछि,

बस उचित दिशा निर्देशन आवश्यक छै।

मानवक बुद्धि भावनासँ प्रभावित होइत अछि;
भने ओ स्वयम्कँ विधाता बनओने फिरैए।
आधुनिकताक होड़मे निष्ठुरता ओढ़ने अछि,
भावनाहीन भऽ कऽ जीवित नहि रहि सकैए।

हम्मर गाम

गरमी में सूर्योदय के समय कतेक शान्त आ' शीतल,
लू आ उमस सँ ओत प्रोत दुपहरिया तेहने बिगड़ल;
साँझ हुअ सऽ पहिने धूल धक्कड़ आ' बिहारि,
राति होइत होति देरी अन्हार, ताहि पर मच्छड़क मारि।

अहि सबहक बीच बसल बस एक मात्र मिठास
अप्पन भाषाक ज देने अछि गाम जायक प्यास
जतऽ सभ्यता के लाज में अपनापन नहिं नुकाइत छल
लोक हाक दऽ कऽ हाल पूछऽ में नहिं सकुचाइत छल

अनार, शरीफा, खजूर, लताम, पपीता,
जलेबी, केरा सहित लीचीक बगान
केसौर, कटहर, बेल, धात्री, जामुन,
बेरक संग अप्पन पोखरिक मखान
फेर आमक गाछी सेहो अछि जतऽ गर्मी बितौनाई नहिं अखड़ल
हवा बिहारि में खसल आम बीछऽ लेल भगनाई नहिं बिसरल

विकास

विकासशीलताक उच्चतम् शिखर
कतऽ आऽ कतेक दूर पर भेटत।
ई एकमात्र मृगमरीचिका तऽ नहि
जे लग गेला पर बिला जायत ।
प्यासलकँ लोभ दऽ बजाबए लेल
फेर कनिक दूर पर देखायत।
मनुष विज्ञान आर तकनीकक नशामे
आर कते दिन ओकरा खिहारइत रहत।
यात्रा मात्रसँ प्रकृति दूषित भेल
भेटऽ मे की जानि कतेक हानि हएत।
परन्तु अपन ज्ञानक सीमा संकुचित कऽ
बुद्धिकँ स्थूल तऽ नहि कएल जायत।
गति निर्धारण आ' सामनजस्य चाही
जतऽ विकासक मार्ग नहि रोकल जायत।
संगहि प्रगति आऽ प्रकृति दुनुक भैयारी
विज्ञानक नाम पर नहि तोड़ल जायत।

बालश्रम

बालपनक किलकारी भूखक ताप सऽ भेल मूक,
पोथी बारि कोदारि पाडैत हाथक मारि अचूक।
कादो रौद बसातमे श्रम केनाइ भेल मजबूरी;
गरीबीक पराकाष्ठा ! पेट आ पीठक घटैत दूरी,
किछु धनहीनता आ' किछु माता पिताक मूर्खता,
मुदा, सभसँ बेसी स्वार्थी समाजक संवेदनहीनता,
जे बालक कँ माताक आश्रय सँ वञ्चित केलक,
लेखनि के छीन कोमल हाथमे करची धरेलक,
माल जालक सेवा करैत बाल्य जीवन कुदरूप,
अपने भविष्यकँ दरिद्र करैत अज्ञान आ' अबूझ,
विद्योपार्जनक ककरा फुर्सति ? स्थिति तऽ तेहन भेल,
चोर बनक आतुर अछि बालपन दू दाना अन्न लेल।

(१)

तारा दूरसँ
बुझाइत कतेक शीतल
वास्तवमे जड़ैत

(२)

शाखासँ लागल
पुष्प आऽ पत्रसँ आच्छादित
अछि झूलैत लता

(३)

पक्षी विश्राम कएल
बड़का यात्राक उपरान्त
एखनो जे अपूर्ण

(४)

अद्रभुत अपवाद छैक
नागफनीक काँटक बीच
कुसुम खिलायल

(५)

नीलांबरमे मेघ
विचरैत अछि कोना जेना
सागरमे होए शार्क

(६)

भावी संकट केर
पशु पक्षीमे पूर्वाभास
प्रभुक दिव्य आशिष

(७)

कोमल पंखुड़ी
सुगन्धक संग सजाओल
एक पुष्पक रूपमे

(८)

नदीक तरंग
ओहिना लागैत अछि जेना
ओकर घुरमल केश

(९)

दू टा पसरल पाँखि
बाज उड़ऽ लेल तैयार अछि
पूर्ण रूपसँ जागरूक

(१०)

पहाड़ीक ढलान
ताहि पर एकमात्र गाछक छाह
भेल यात्रीक विश्राम

(११)

संध्याक बेला
सुनसान आऽ शान्त पोखरिक कात
एक एकान्त स्थान

(१२)

मेघ रूपी बर्फमे
अछि हवाई जहाज पिछड़ैत
आकाशमे विचरैत

(१३)

कठोरतम भूमि
समुद्रक छोर पर बसल
अछि पाथरक किनार

(१४)

विलक्षण अपवाद

आकाश जरैत संध्याकाल
समुद्रक उपरि

(१५)
पहाड़सँ उदित
सूर्यसँ आकाश भेल जागृत
ज्वालामुखी सन

(१६)
उगैत सूर्य संगे
आयल अंधकारक उपरान्त
अंतहीन दिनक आस

(१७)
दिवस आब थकल
रातिक स्वागतमे लीन साँझ
मिझाइत सूर्य दीप

(१८)
गाछ भने हरियर
ग्रीष्मोमे देखु पतझड़
भोरक आकाशमे

(१९)
पक्षीक चहक
आऽ आकाशक लाली संग
प्रकृति जागल

(२०)
अतिसुन्दर जाड़
मेघक घिस घिस छिड़यौलक
हिमपातक रूपमे

(२१)
तैयार उड़ऽलेल
पक्षी विश्रामसँ जागल
वा अछि शुरूआत

(२२)
पक्षीक निरीक्षण
छूटल अन्नक फेरमे
कटनी भेलाक बाद

(२३)
फूलक हुँजक बोझ
शाखा कँ झुका रहल
बसंत आयल अछि

(२४)
तितलीक पंख
अंकित रंग बिरंग आकार
प्रभुक चित्रकला

(२५)
मनुष लेल कठिन
किन्तु जीवन ओतहु अछि
शीतलतम स्थान

(२६)
उच्चतम शिखरसँ
धुन्ध भरल हरियर घाटी
निहारक इच्छा

(२७)
विभिन्न प्रकारक
घास पात जमीन पर उगल
आइरसँ दूर बँचल।

(२८)
ओसक बूँद पाबि अछि
घासक फुनगी आह्लादित
हीरा सन चमकैत

(२९)
बाहर घूमऽ निकलल
बतख अपन बच्चा संग
गर्मीक दिनमे

(३०)
बतख हेल रहल अछि
पानिक ऊपरी सतह पर
लक्ष्यक दिस निरंतर

(३१)
स्प्रेसो
आस्ते पिब लेल
गर्म देल गेल

(३२)
ईश्वर कँ तकनाइ
नहि कठिन पाबू ओकरा
पवित्र हृदयमे

(३३)
दृष्टि भ्रमणमे
घाटी पर दूर दूर धरि
भटकि सकैत अछि

(३४)
घोड़ा भटकि रहल
उद्देश्यहीन बिन घुड़सवार
भेल अनुशासनहीन

(३५)
स्थिर पानिमे
प्रकृतिक प्रतिबिम्ब
साफ लेकिन उलटा

(३६)
प्राकृतिक दृष्य
पानिक प्रतिरूप बिना
अपूर्ण बुझाइत अछि।

(३७)
पतझड़क पात
पसारलक अप्पन सतरंजी
हरियर घास बदला।

(३८)
समुद्रक तहमे
विभिन्न आकार प्रकारक
रंग बिरंग जीवन।

(३९)
नटखट समुद्र
तटक आरामसँ वंचित
कएने बेर बेर तंग।

(४०)
पहाड़क चोटी
आर बेसी ऊँच लागैत अछि
गहींर घाटीक बीच

(४१)
पोखरिमे देखु
प्रकृतिक प्रतिबिम्ब
उलटल बुझाइत अछि

(४२)
तितलीगण उतरल
पंखरूपी पैराशूट लऽ
फुलक झुण्ड पर।

(४३)
उच्चतम शिखर पर
गुफासँ दृष्टिगोचर
होइत रमणीय दृष्य

(४४)
बच्चाक संग खेलमे
एकेटा खुशीक आभास
ओकर किलकारी

(४५)
टेढ़ मेढ़ रेखा अछि
बरसातक बहैत पानिसँ
खिड़कीक काँच पर बनल

(४६)
बादलसँ छनल
समुद्रक लहरिक तरंग
उपर चमकैत किरण

(४७)
पानिक तरंग कँ
पक्षी बदलि रहल अछि
कलरवक लयमे

(४८)
मरुस्थलमे रेत
अछि हवासँ बहारल
सतह भेल समतल

(४९)
कतेक बेसी ध्यान
पातक प्रारूप देबऽमे
ईश्वर देने छथि

(५०)
बरसात खतम भेल
पानि तइयो झरि रहल अछि
गाछक पात सब सऽ

(५१)
समुद्रक लहरि
लगातार टकरा रहल
पाथर तइयो स्थिर

(५२)
मनोरम दृष्य
जेना चिन्नीक चाशनीमे लिप्त
अछि गाछ जाड़मे

(५३)
अपने रंगहीन अछि
गाछ कैँ रंगीन बनौलक
नीचा गड़ल जड़ि

(५४)
शीतल प्रकाश युक्त
सुर्योदयक पहिनेक समय
सर्वोत्तम काल

(५५)
पाँखिक शाल ओढ़ने
प्रकृतिक भ्रमण हेतु
पक्षी निकलल जाड़मे

(५६)
चिडैय़ाक बच्चा
माए बाप संगे अछि ताबञ
जाबञ पंख नहिक छैक।

(५७)
प्रवासी पक्षी
मीलक मील उड़िक आयल
गर्मीक आनन्द लय।

(५८)
उछलैत पानि
नदीसँ भैंट लेल
खसल झरनाक रूपमे ।

(५९)
नागफणीक गाछ सभ
मरुस्थल्मे सेहो अछि
मजबूतीसँ ठाढ़।

(६०)
कठोर पातसँ लिप्त
नागफनीक चोटी पर अछि
कोमल फूलक ताज

(६१)
आर सजायल गेल
कैक रंगक फूल आऽ लाइटसँ
क्रिसमसक साँझमे

(६२)
एक नारिकेरक फल
कठोर केशयुक्त कवचमे
मीठ उज्जर फल अछि

(६३)
भुखाएल बगुला
नदीक कातमे ठाढ़ अछि
माछक ताकिमे

(६४)
अतिथिक आगमन
कौआक कर्कश काँव काँवसँ
पूर्वसूचित भेल अछि

(६५)
सागरमे डॉलफिन
खतरनाक जीवक बीचमे
मनुषक साथी

(६६)
जिग ज़ैग ध्वनि कैँ
गाड़ी दोहरा रहल अछि
भीजल सड़क पर

(६७)
भूकम्पक श्राप अछि
अज्ञात अपराधक सजा
मनुषकैँ भेटल

(६८)
छोट किन्तु तेज अछि
अपन लक्ष्य चिनहऽमे
भड़ल भीड़क बीच

(६९)
समुद्रक नीचाँ
कतओ जायकाल रहैअ
छोट माछ सब झुण्डमे

(७०)
अंगूरक फल अछि
मीठ जेल जमाकऽ रखने
छोट छोट आकारमे

(७१)
स्वर्ग सदृश दृश्य
हरियर प्राकृतिक संग
चिड़ैआक कलरव

(७२)
राति हुअक पहिने
आकाश दहकि रहल
सूर्यास्तक पहिने

(७३)
खिलखिलाइत झरना
मधुर ध्वनि घोरि रहल
चारू दिशामे

(७४)
सूर्यक अएलापर
रातिक अन्हार भागि गेल आऽ
भोर शुरु भऽ गेल

(७५)
छाया उपर्युक्त अछि
गोबरछत्ता कैँ उगऽ
आऽ पसरऽ लेल

(७६)
एकटा पओलाक बाद
खरहा फेर भागि रहल अछि
आर भोजन लेल

(७७)
गाछक स्वर्णिम रंग
पतझड़क आगमनक
घोषणा अछि करैत ।

(७८)
गरमीक ऋतु
कहाँ ओतेक दुखद अछि
शुरुक दिनमे

(७९)
स्वयम् सिद्ध मकरा
अपन सुरक्षा हेतु
जाल अछि बुनैत

(८०)
कोनो आकारमे
ढलि जाएत पानि मुदा गहराई
एकर अपन गुण

(८१)
आकाश अखनो ऊँच
बादल पहुँचमे बुझाएल
ई धुन्धक रूपमे

(८२)

रातिमे इजोत दैत
बर्फसँ परावर्तित होइत
प्रकाशपुँज जाड़मे

(८३)

लुक्खी सब निकलल
अपन घड़सँ आलस त्यागि
वसन्त ऋतुमे

(८४)

सोन सन सूरज भेल
उज्जर चमकैत हीरा सन
दिनकँ अएला पर

(८५)

गाछ सब अछि होड़मे
सबसँ पहिने पाबऽ लेल
सूरजक रोशनी

(८६)

एकटा मन्दिर अछि
खजूरक गाछ भीड़मे
एक पोखरि कातमे

(८७)

सुखाएल छोट पातसभ
गाछसँ नीचाँ खसैत अछि
नबकँ अवसर दैत

(८८)

गाछक शाखासभ
अतेक ऊँचाई पर पसरल
जड़ि ततब्बे गहिँर

(८९)

भोरक अयला पर
गाछ पर लादल ओस भेल अछि
चमकैत हँसी सन

(९०)

सोन सन कम्बल अछि
ओढ़ने गहुमक खेत सभ
कटाइक पहिने

(९१)

चक्रवातीय पवन
जीवनसंहारक बनि गेल
जीवनरक्षक छल।

(९२)

प्रदान करैत अछि
पक्षी आऽ हिरण सभकँ
गाछ आऽ वृक्ष आश्रय

(९३)

फूलसँ भरल अछि
एकटा घाटी एहन अछि
जेना खुशी मुस्काइत।

(९४)

पानि बढ़ि रहल
रस्ताक गाछ आऽ पाथर सभ
विदा करैत ठाढ़

(९५)

जाड़क गाछ अछि ठाढ़
वसन्तक प्रतीक्षामे
पात सभसँ भिन्न भऽ

(९६)

Illusion of eye
Colourful appearance of
Rainbow in the sky
आँखिक भ्रम,
आभास वर्णमय
पनिसोखा द्यौ

(९७)

Rainbow declares
Beginning of bright days and
End of rainy ones
पनिसोखाक,
शुभ्र दिन आबह
खिचाहनि जाऽ

(९८)

Filled with smoky fog
The wood seems to be
burning
Thou' it is winter
धुँआ कुहेस
जेना जड़ैत काठ,
अछि ई जाड़

(९९)

The words sound so sweet
imitated by parrots
Like baby babbles
गुञ्ज मधुर
सुग्गाक अभिनय,
तोतराइत स्वर

(१००)

The sky is bright
The wind has cleared the
clouds
Some still needs force
अकाश श्वेत
वायु टारैत मेघ,
कनेक बल

(९६ सँ १०० धरि इंग्लिशसँ मैथिली अनुवाद संपादक द्वारा कएल गेल)

मेघक उत्पात

कनिक काल दऽ पानिक फुहार
फेर लेलक अपन आँजुर सम्हारि
देखू मेघक उत्पात
लोकक आशाक उपहास करैत
कखनो दर्शन दऽ बेर-बेर नुकाइत
मौलाऽगेल गाछ आऽ पात
कखनो गरजि भरि कऽ रहि गेल
कखनो बरसि-बरसि कऽ भरि गेल
डूबल पोखरिक कात
कोसीक प्रवाह सब बाँन्ह तोड़लक
गामक गाम जलमग्न कएलक
ततेक भेल बरसात
किसानक भविष्य मेघपर आश्रित
मेघक इच्छा पूर्णतः अप्रत्याशित
सभसालक अनिश्चित अनुपात

बरखा तू आब कहिया जेबैं

1

बरखा तू आब कहिया जेबै
अकच्छ भेलौ सब तोरा सँ
बुझलियौ तू छै बड जरूरी
लेकिन अतीव सर्वत्र वर्जित छै
आर कतेक तंग तू करबैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं

२

बेंग सब फुदकि फुदकि कऽ
घुसि रहल घर - आँगन में
ओकरा खिहारैत साँपो आयत
तरह - तरह के बिमारीक जड़ि
मच्छड़ सभके खुशहाल केलैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं

३

कतौ बाढ़ि सँ घर दहाइत अछि
कतौ गाछ उखड़ि खसि पड़ल

कतेक खतरा तोरा संग आयल
आन-जान दुर्लभ तोरा कारण
आढ़ि सभ कादो सऽ भरलैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं

४

टूटल फूटल खपरी सऽ छाड़ल
गरीबक कुटिया कोनाक सहत
तोहर निरन्तर प्रावाहक मारि
पशु-पक्षी सेहो आश्रयहीन भेल
नञहर के तू सासुर बुझलैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं

५

तोहर जाइत देरी शीतलहरी
अप्पन प्रकोप देखाबऽचाहत
मुदा पहिने आयत शरद ऋतु
कनिके दिनक आनन्दी लऽ कऽ
पनिसोखा देखेनाई नञ बिसरिहैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं।

मिथिलाक विस्तार

हम सब ओहि समूहक लोक
इतिहास छानब जकर भाग
संस्कृति बड़ धनी
मुदा संरक्षणक अभाव
जहिया सभक नींद खुजत
तहिया करब पश्चाताप
ओहि सभ्यताकैं ताकब
जे अखन लगैअ श्राप
उन्नतिक पथ पर चलऽ लेल
पहिरलहुँ आधुनिकताक पाग
जिनकासँ ई सुरक्षित अछि
से गाबैत बेरोजगारीक राग
जे गरीबीक सीमा पार कएलाह
से व्यस्त प्रतियोगितामे दिन राति
एक संजीवनी बुटीक अभिलाषा
जे सभ्यताकैं दिअए सुरक्षित आधार
विश्वस्तरीय संस्थाक निर्माण होए
एकर विशेषताक जे करए विस्तार

ईशक अराधना

1

हे ईश एहन हाथ दिअ
जे कर्मठ आ कुशल होई
अहाँ लग मात्र जोड़िक
कर्म के तिलांजली नहि दई
पूजाक संग काजक संगम
जकरा लेल ग्राह्य होई

२

हे ईश एहन पैर दिय
जे अपन भार सहि सकय
आनक जहन प्रयोजन होई
तऽ सभसँ आगाँ बढ़ि सकै
औचित्य सँ विचलित जकरा
कोनो बाधा नञ कऽ सकै

३

हे ईश एहेन वाणि दिअ
जाहि में निवास करैथ शारदा
मिठास होए आ' शीतल होय
नहिं होए भय आ' लोलुपता
अहाँक अराधना भक्तिभावसऽ
देववाणिमे करक दिअ क्षमता

४

हे ईश एहेन दृष्टि दिअ
अहाँक रूपके कराबै चिन्हार
अहाँक बास जखन घट-घट मे
फेर किये जाउ हिमालय पहाड़
सत्कर्मके हम पूजा मानी
नहिं रहै अज्ञानताक अन्हार

५

हे ईश एहन बुद्धि दिअ
अहाँ पर सदैव रहै विश्वास
संतोष आ' शान्ति पाबि
बेसी के नहिं हुए आस
प्रााणिमात्रक कल्याण लेल
कऽ सकी आमरण प्रयास

खरहाक भोज

खरहा सब भामि-भामि
बाड़ीमे अछि भोज करैत
जतेक छल रोपल साग-पात
कुचरि-कुचरि कऽ चरैत
एहन असहति दृष्य देख
गृहस्थक तामसे मोन जरैत
प्रतिदिनक निरंतर प्रयास
बाड़ी छल फूलैत-फलैत
अतेक दिनका कएल धैल
पर ई सभ पानि फेरैत
भीड़ल सब ओकरापर
चारू दिससँ खिहारैत
किये ओ ककरो हाथ आयत
नहि देरी भेल ओकरा पड़ाइत।
बिन मेहनति आ' बिन धैर्य
मनुषकैं अछि किछु नहि भेटैत
पशु - पक्षी सब लुझिकऽ
अपन जीवन अहिना बिता लेत।

कल्पनालोक

कल्पनालोकमें विचरण करै छलहुँ उन्मुक्त
सबतरहक विषाद जतऽ भऽ गेल छल लुप्त
आह्लादित हृदय सेहो रहय विस्मयसँ युक्त
प्रशंसा में स्वर्ग शब्द लागल सबसऽ उपयुक्त

कोनो भूमि नहि भेटल जे छल कलह सँ लिप्त
थम्हलहुँ जत कतौ छल स्नेहक जलसँ सिक्त
आरोग्यक कचोर रंग सर्वत्र छल पल्लवित
ताहि पर खुशी कोमलतापूर्वक रहय पुष्पित

शान्ति तेहेन जे देलक अपूर्व आत्मसंतोष
दूर-दूर तक नहिं कतौ देखायल आक्रोश
एहनो दुनिया हैत कतौ से नहिं छल भरोस
जाहि सँ दुखी छलहुँ से मेटायल सब रोष

वास्तविकता अछि अलग से तऽ स्वयंसिद्ध
समस्या सँ जूझैत सब, की बच्चा की वृद्ध
कल्पनाक साकार भेनाई अछि अहिमें निमित्त

घर-घर जहन लोक हैत शिक्षित आ समृद्ध।

कोसीक प्रकोप

प्राकृतिक प्रकोप मिथिलामे
देखि के नहि हैत अधीर
देहाइत डूबैत जन जीवन
सरकार बनल अछि बहिर
कहिया सऽ अछि बनल
कोसी नदी बिहारक शोक
पर्यावरणके सतत हनन
कियेक नहि लागल रोक
घमैत हिमनद बढ़ैत जलस्तर
सृष्टिके दिनोदिन बढ़ैत तापमान
पर्यावरण पर गम्भीर चिन्तन आवश्यक
पहिने वर्त्तमान संकट स पाबि निदान
अतेक सालक समय देलाक बाद
फेर रस्ता बदलि लेलक कोसी नदी
अहि महाप्रलय सऽ बचनाइ छल संभव
समय पर सरकारी कोष खुजितै यदि
मज़बूत बान्ह आ प्रवाहक मार्गदर्शन लेल
भूगोलवेत्ता आ अभियंता आगू आबैथ
जलसंचयसऽ सिंचाइक समस्या भगा
जलशक्ति सऽ विद्युत निर्माण करैथ।

असल राज

लन्दन शहरमे भोरक भीड़सऽ
भागैत दिनचर्याके आढ़िसऽ
ठाढ़ भेलहुं कात भऽ॥१॥
लागल सबके प्रेत रेवारने छल
आकि कोनो लॉटरी फुजल
सबके तेना पड़ाहि लागल छल॥२॥
समय सँ छलै सब पैबन्ध
विदा काज दिस एक बैगक संग
ओवरकोटमे बन्द॥३॥
मिथ्या अभिमान भेल विलीन
सब काजक सुरमे तल्लीन
स्वावलम्बी आऽ आत्माधीन ॥४॥
कानूनन ठीक अछि जे कोनो काज
तकरा करैमे जे नहि केलक लाज
सैह कऽ रहल अछि असल राज॥ ५॥

पतझड़क आगमन

पतझड़क आगमन
दहैक रहल वातावरण
संतरा, पीयर, लाल, भूरा
रंग सऽ भरल पूरा
प्रकृति जेना भेल जीर्ण
मौलाएत झड़ैत तृण-तृण
विविध रंगके त्यागिकऽ
गेरूवा वस्त्र धारिकऽ
विदा भेल लेबऽ सन्यास
ताहि पर सुर्योदयक आकाश
धरतीपर जे आगि छल
ताहिमे ओहो लिपटल
आकि अछि दर्पण जकाँ
पृथ्वीक रूप देखाबैत जेना
अकरा शीतल करैलेल
साधु तपस्यामे लीन भेल
जहिया हिमक बरखा हैत
अस्वच्छता जखन दूर हैत
तहिया सऽनवजीवनक प्यास
लायत सुखद वसंतक अभिलाष।

वृद्धक अभिलाषा

एक वृद्ध रोपि रहल छल गाछ आमके
कियो पुछलकै जे की लाभ हैत अहाँके
अपने छी जीवनक अंतिम छोर पर
फरनाइ तऽ हैत अहाँक मरलापर
ओ वृद्ध जवाब देलैथ विनम्रता सऽ
अपन काज सऽ बिना अडिग भऽ
बाप दादाक रोपल कलम जे भोग केलहुं
बस सैह ऋणके लौटाबक प्रयास केलहुं
आगामी पीढ़ीके अपन हाथे खुआयब की नहिं
कम सऽ कम ई गाछ फरैत रहत जा धरि
अपन बाल बच्चामे मिठास घोरैत रहब
भने ताबे अपने जीवैत रहब नहिं रहब

टेम्स नदीमे नौकाविहार

टेम्स नदीमे कर चललौं नौकाविहार
स्टीमरमे उपरिक मंजिल पर सवार
मन्द - मन्द चलैत शीतल बयार॥
वस्तुकलाक कते उत्कृष्ट उदाहरण
तकनीकी विकासक प्रत्यक्ष दर्शन
तटमे ठाढ़ ऊंच - ऊंच भव्य भवन॥
कलकलाइत जल स डोलैत नाव
मानव प्रयाससऽ अनुशासित बहाव
जगा देलक अपन बिसरल घाव॥
कतेक पाँछा अछि अपन प्रान्त
नैसर्गिक आपदा स आक्रान्त
कहिया हैत बाढ़िक समस्या शान्त॥
रातिक बात तऽ आरो अद्भुत
बस मंत्रक उद्घोष छल विलुप्त
स्थानो नहिं छल ओहेन भक्तियुक्त॥
अन्यथा कहितौं अकरा हरिद्वार
बत्तीक प्रतिबिम्ब स चमकैत धार
जेना होय छठिक अर्घ्यदीपक भरमार॥



ज्योति प्रकाश लाल

ग्राम-जगतपुर, सुपौल, (भारत)।ज्योतिप्रकाश लाल विप्रो टेक्नोलोजी, हैदराबादमे सॉफ्टवेअर अभियन्ता छथि, स्पेन आ यू.एस.ए.मे पहिने काज कए चुकल छथि। एप्लिकेशन आ वेब आधारित सॉफ्टवेअरक निर्माणमे संलग्न। माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन, वाशिंगटनमे विन्डोज ऑपेरेटिंग सिस्टमपर शोध आ विकासमे योगदान। स्कूल, कम्प्युटर इंस्टीट्यूट आ सरकारी पोलीटेकनिकमे शिक्षणक पूर्व अनुभव। वर्तमानमे साक्षातकार आ व्यक्तित्व विकासपर पोथी लिखबामे व्यस्त।

श्री लालमे संगठनात्मक शक्ति छन्हि आ ओऽ विभिन्न ग्रुप आ फोरमसँ जुड़ल छथि। किछु आर अनुभवी सहयोगीक संग ओऽ www.jyoticonsultant.com द्वारा मुफ्त कैरिअर सुझाव दए रहल छथि। सम्पादक

आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

कम्प्युटर: कि आ किएक?

आजुक दिन मेड कम्प्युटर शब्द किनको सँ बाँचल नहि अछि। ओना तँ हिन्दी वा मैथिली मे कम्प्युटरक नाम अछि "*संगणक*" मुदा ऍहि नाम सँ बहुतो लोकनि अनभिज्ञ होयब आओर ई शब्द किछु अनगराईल बुझायल जायति। खैर.... अपन मातृभाषा मैथिली मे एहेन ढेर अंग्रेजी शब्दक प्रयोग करैत छी जे विशुद्ध मैथिली मे विचित्र बुझाएल जायति छैक। आइ कँ दिन मे सभ कँ 'कम्प्युटर साक्षर' (Computer Literate) होवाक चाही। 'कम्प्युटर साक्षरता' (Computer Literacy) सँ मतलब जँ कोनो भी आदमी 'कम्प्युटर अनुप्रयोग' (Computer Applications) कँ प्रयोग मे लाबि सकैथि। दोसर तरहँ यदि एहि बात कँ कही तँ एकटा ऐहेन आदमी जँ कम्प्युटर कँ प्रयोग कड कँ कोनो काम कड सकैथि।

कम्प्युटर सँ लगभग सभ काम भड सकैति अछि। जाहि कारणे वर्तमान समय मे कम्प्युटर एकटा महत्वपुर्ण अंग बैनि गेइल छैक। आजुक छोट मोट व्यापारीयो एकटा कम्प्युटर खरीदबाक आ कम्प्युटर ऑपरेटर रखवाक हिम्मत करैत छैथि। एकर लोकप्रियता आ माँगक पाँछा ढेर कारण अछि। उदाहरणक तौर पर देखि तड: जेना कोनो दरख्वास्त वा चिट्ठी कोनो ओफिस मे देबाक जरुरत होयत अछि तड दरख्वास्त कँ टाइपराइटर (Typewriter) पर टाइप करा कँ देति छी, मुदा इ टाइप करायल दरख्वास्त मे बहुतो कमी आ अपुर्णताक संभावना रहैति छैक, जेना Spelling Mistakes के संभावना, पाराग्राफक Alignment मे समस्या, पृष्टक Margins मे समस्या, इत्यादि।

इ सभटा समस्याक समाधान अपने कम्प्युटर सँ बिना बहुत कठिनाई सँ कँ सकैत छी। कम्प्युटर मे Spelling Checking कँ सुबिधा अछि जँ अपने आप बता दैत जे कोन कोन शब्दक हिज्जै (Spelling) गलत अछि। एकर अलावा कम्प्युटर Grammatical Errors सेहो पकैर सकैति अछि। इ सब सुविधा पकरि (Facilities) सँ लिखल दरख्वास्त वा चिट्ठी मे कोनो Spelling Mistakes आ Grammatical Errors कँ संवाभना कम अछि। पाराग्राफक Alignment आ Margins कँ तरीका बहुत सुविधाजनक अछि। एकर अलावे एकटा दरख्वास्त वा चिट्ठी लिखवाक आ ओकर छायाप्रति (Printouts) निकलवाक तक जे जे सुविधा (Facilities) होएबाक चाही वो सभटा कम्प्युटरक सोफ़्टवेयर पैकेज (Software Package) मे छैक।

वर्तमान समय मे कम्प्युटर बहुत आगाँ बढि गेल अछि। Banking Sector मे जहिना धुम धडाका सँ प्रयोग मे अछि तहिना Medical क्षैत्र मे। जहिना रेलक सवारी आरक्षण मे कम्प्युटरक Whistle बाजि रहल अछि तहिना हवाई जहाज कँ सेहो उड़ा रहल अछि। मोटा मोटी यदि एक लाईन मे कही तँ नवयुग मे कम्प्युटर ओहिना सब क्षैत्रमें मे जरुरी अछि जहिना तरकारी मे नोन।

वर्तमान समय मे कम्प्युटरक आवश्यकता कँ आधार पर इ कहल जा सकैति अछि जे यदि अहाँ कम्प्युटर नहि जानैत छी तँ अहाँ निरभर छी। अंग्रेजी मे सेहो मुहावरा (Proverb) बनि गेल अछि

"*If you are not a computer literate it means you are illiterate.*"

आइ केर समय मे जिनका संगमे Internet के सुविधा उपलब्ध अछि तँ हुनका लेल बहुतो चीज बदैलि गेल छैकि। यदि आइ कँ समय सँ दस बारह साल पाँछा कँ समय मे जाई आ पत्राचारक माध्यम कँ बारे मे सोची तँ पहिले स्मृति-पट्ल पर थोक मे पोस्टकार्ड, अन्तरदेशी आ लिफाफाक खरीदवाक बात आबि जायति। एकर पाँछा एकटा कारण अछि जे ओहि समय मे पत्राचारक माध्यम लेल जे पोस्ट कँ ऑफिश छलेक प्रखर भुमिका छलैक। आओर सबहक लेल डाकक माध्यमे सुगम आ सरल छलि। पत्र कें अलावे गाम गाम मे मनीओडर पहुँचेबाक मे सेहो डाक अग्रणी छल। एवम प्रकारे डाक पत्राचारक आ मनीओडर वास्ते एक मात्र साधन बुझला जायति छलि। मुदा नहुँए नहुँए समय आ दुनिया मे परिवर्तनक लीला जारी रहैत अछि। ई पत्राचारक परिवर्तनक लीला मे कूरियर (Courier) आ ई-मेल (E-mail / Electronic - Mail) आयलि आ धुम धड़ाका सँ पत्राचारक माध्यम पर कब्जा कँ लेलक। आजुक दिन मे जिनका कुरियर वा ई मेलक सुविधा अछि वो सब पोस्ट ऑफिश केर रास्ता पेरा बिसरि गेल छैथि। सब लोकनि जँ प्रत्येक दिन डाकिया केर इंतजार मे दरवाजा पर एकटक लगा कँ बैठल रहैति छलाह वो सब आई डाकिया कँ चिन्हेतो नहि छैथि। कारण बहुतो पत्राचार ई मेल सँ ही सम्भव भड जायति अछि, खास कड कँ शहरी परिवेश मे। क्रमश:



डॉ कैलाश कुमार मिश्र

(८ फरबरी १९६७-) दिल्ली विश्वविद्यालयसँ एम.एस.सी., एम.फिल., ''मैथिली फॉकलोर स्ट्रक्चर एण्ड कॉग्निशन ऑफ द फॉकसांग्स ऑफ मिथिला: एन एनेलिटिकल स्टडी ऑफ एन्थ्रोपोलोजी ऑफ म्युजिक'' पर पी.एच.डी.। मानव अधिकार मे स्नातकोत्तर, ४०० सँ बेशी प्रबन्ध -अंग्रेजी-हिन्दी आ मैथिली भाषामे- फॉकलोर, एन्थ्रोपोलोजी, कला-इतिहास, यात्रावृत्तांत आ साहित्य विषयपर जर्नल, पत्रिका, समाचारपत्र आ सम्पादित-ग्रन्थ सभमे प्रकाशित। भारतक लगभग सभ सांस्कृतिक क्षेत्रमे भ्रमण, एखन उत्तर-पूर्वमे मौखिक आ लोक संस्कृतिक सर्वांगीन पक्षपर गहन रूपसँ कार्यरत। यूनिवर्सिटी ऑफ नेब्रास्का, यू.एस.ए. केर ''फॉकलोर ऑफ इण्डिया'' विषयक रेफ़ेरी। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालयक पुरस्कारक रेफरी सेहो। सय सँ ऊपर सेमीनार आ वर्कशॉपक संचालन, बहु-विषयक राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता। एम.फिल. आ पी. एच.डी. छात्रकेँ दिशा-निर्देशक संग कैलाशजी विजिटिंग फैकल्टीक रूपमे विश्वविद्यालय आ उच्च-प्रशस्ति प्राप्त संस्थानमे अध्यापन सेहो करैत छथि। मैथिलीक लोक गीत, मैथिलीक डहकन, विद्यापति-गीत, मधुपजीक गीत सभक अंग्रेजीमे अनुवाद।

''रचना'' मैथिली साहित्यिक पत्रिकामे ''यायावरी'' स्तंभक प्रशस्त स्तंभकार श्री कैलास जीक ''विदेह'' लेल प्रारम्भ कएल गेल ई यायावरी स्तंभ दीर्घ काल तक स्थायी रहत ताहि कामनाक संग प्रस्तुत अछि । सम्पादक

यायावरी



नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग डॉ कैलाश कुमार मिश्र

-हमर अंग्रेजीमे लिखल लेख पढ़ि लोक सभ हमरासँ मैथिलीमे लिखबाक हेतु अनुरोध करैत छथि। स्पष्ट कए दी जे अंग्रेजी हमर व्यवसाय केर भाषा थिक। कहियो मिथिलामे नहि रहलहुँ, संस्कृत आ सोतियामी मैथिली नहि तँ पढ़लहुँ आ ने लिखलहुँ। तञि मैथिलीमे लिखक कल्पना जखने करैत छी तँ हाथ काँपय लगैत अछि। तीन वर्ष पूर्व डॉ विश्वनाथ झा अपन त्रैमासिक पत्रिका **रचना** हेतु लिखबाक लेल भावनात्मक रूपेँ हमरा बाध्य कऽ देलन्हि। डराइत-डराइत हम **रचना**मे **''यायावरी''** नामसँ अपन यात्रा-वृत्तान्त लिखनाइ प्रारम्भ केलहुँ। पाँच अंकमे लगातार लिखलाक बाद कार्यक अत्यधिक व्यस्तताक कारणेँ यायावरी लिखनाइ बन्द कऽ देलहुँ। घुमब आ अंग्रेजीमे लिखबसँ समय कहाँ बचैत अछि।

एम्हर नौ-दस माससँ गजेन्द्र बाबू अपन पत्रिकाक हेतु पुनः मैथिलीमे लिखबाक हेतु कहि रहलाह अछि। अतेक चेरियेलन्हि जे अन्ततः यात्रा-वृत्तान्तक ''यायावरी'' प्रारम्भ कऽ रहल छी। पाठक लोकनिसँ नम्र निवेदन जे हमर लेखक विषय आ वर्णनकेँ पढ़थि आ भाषा-विन्यासक गलतीपर बेशी ध्यान नहि देथि।

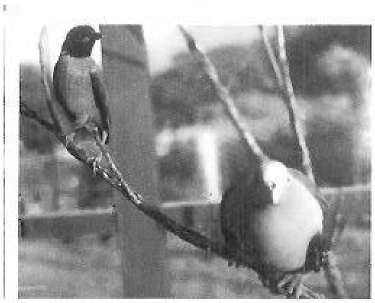


यायावरीक प्रारम्भ हम असम केर एक छोट भव्य, रम्य, आकर्षक, कठिन परन्तु अनेक रंग आ उल्लाससँ भरल भूखण्ड, नार्थ कछार हिल्ससँ कऽ रहल छी।

अपन संस्था इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्रक सदस्य सचिव डॉ कल्याण कुमार चक्रवर्ती महोदय केर निर्देश एवं कार्यशैलीसँ प्रभावित भऽ हम समस्त उत्तर-पूर्व भारत एवं सिक्किममे विभिन्न क्रियाकलाप प्रारम्भ केलहुँ, जाहिसँ स्थानीय संस्कृति आ विरासत केर रक्षा कएल जा सकय। असममे कार्यक श्रीगणेश हमरा लोकनि ''श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र'' गुआहाटी केर सचिव श्री गौतम शर्माक संग कएल।







लगभग ६४ बीघा पहाड़ी धरतीमे बनल श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र बड़ड रमनगर जगह बुझना गेल। जे कियो गुआहाटी घुमए जाथि आ हुनका कलासँ थोरेकबो प्रेम होइन तँ श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र अवश्य जाथि, ई हमर निवेदन। कलाक्षेत्रमे पानिक फब्बारा, फुलबारी, विशाल आ कलात्मक अनेको भवन, दू टा अतिथि गृह, आर्टिस्ट विलेज; कलाकार सभकेँ रहबाक हेतु डॉरमेटरी; संग्रहालय, कला दीर्घा, बच्चा सभक लेल टॉय रेल एवं अन्य व्यवस्था; असम केर इतिहासक सम्बन्धमे ''लाइट एण्ड साउंड'' कार्यक्रम; पुस्तकालय, शिवसागर जिलाक ऐतिहासिक रंगघर केर रिप्रोडक्शन इत्यादि बरवश कुनो घुमए बलाकेँ मोन मोहि लैत छैक।



असम केर अधिकांश ऑफिस आ घरसभमे लोक अपन जुत्ता-चप्पल आदि घरक बाहरे खोलि प्रवेश करैत छथि। हमहूँ एहि परम्पराक पालन जखन-जखन असम जाइत छे, तखन-तखन करैत छी।



स्पष्ट कऽ दी जे श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र सोलहम शताब्दीक महान वैष्णव सन्त शंकरदेव केर नामपर असम राज्य सरकार, भारत सरकारक आर्थिक सहायतासँ समस्त उत्तर-पूर्व भारत, विशेषरूपेण असम केर संस्कृति, विरासत तथा गौरवक संरक्षण एवं सम्वर्धन करबाक दृष्टिसँ बनल छैक।



शंकरदेव जातिसँ कायस्थ छलाह। श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह जे असम काडर केर आइ.ए.एस.पदाधिकारी छलाह; बादमे भारत सरकारक गृह सचिव भेलाह आ अन्ततः विश्वबैंक केर कार्यकारी निदेशक पदसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि, हमरा कहलाह जे शंकरदेव मैथिल छलाह। हुनकर पितामह मिथिलासँ असम प्रवास कऽ गेलथिन्ह। पञ्जीसँ ईहो पता चलैत छैक, जे शंकरदेव तँ नहि परन्तु हुनकर पिता तीन-चारि बेर मिथिला आयल छलाह। एहि बातक एतय उल्लेख करब केर पर्याय ई जे एहि विषयपर गहन शोध करबाक आवश्यकता थिक। यदि ई बात प्रमाणित भऽ गेल जे शंकरदेव मैथिल छलाह तँ आइ हमरा लोकनि विद्यापतिक मैथिल होएबापर गर्व करैत छी, तहिना शंकरदेवोपर गर्व करब। हमरा हिसाबे तँ प्रबुद्ध मैथिल सभ बिहार सरकारसँ शंकरदेवपर एक गहन शोध करबाक परियोजना प्रारम्भ करबाक हेतु निवेदन करथि। गजेन्द्रजी एहि दिशामे आगाँ बढ़थि तँ नीक बात। संयोगसँ वाल्मीकि बाबू आइ-काल्हि सिक्किम प्रदेशक राज्यपाल थिकाह। हुनकर मदतिसँ परियोजनाक प्रारम्भ कएल जा सकैत अछि। ओऽ हमरा कतेको बेर एहिपर कार्य करक हेतु कहि चुकल छथि। एक समय एहनो छलैक जखन बंगाली सभ विद्यापतिकेँ बंगाली बुझैत छलाह। परन्तु आब प्रमाणित भऽ गेल जे विद्यापति मैथिल छलाह। यदि एहने किछु सबरा परम्परा केर जनक श्रीमंत शंकरदेवक उतेढ़पोथीसँ चलि जाय तँ बुझू जे हमरा लोकनि धन्य भऽ जाएब।



श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्रक सचिव गौतम शर्मा आ सुलझल व्यक्ति छथि। लगभग पचास वर्षक गौर वर्ण आ मध्यम कद-काठीक आकर्षक व्यक्तित्व। स्थिर चित्त। प्रथम दृष्टिमे लागत जे ओहिना कियो छथि। परन्तु मुदा डायनेमिक लोक। कलाक्षेत्रक १२५ आदमी हुनकर इशारापर नचैत रहैत अछि। सदिखान ओऽ अपन सहयोगी सभकेँ परिवारक सदस्य जेकाँ स्नेह करैत छथि।

गौतम शर्माक सहयोगक कारणेँ हमरा लोकनि गुआहाटी आ तेजपुरमे बहुत सफलतापूर्वक अनेक कार्यक्रम कऽ चुकल रही। हमरा लोकनि असम केर किछु एहन क्षेत्रमे ओहि क्षेत्रक संस्कृति आ विरासतपर कार्य करए चाहैत रही, जाहिपर विशेष कार्य नहि भेल हो।

शर्माजीसँ पता चलल जे सांस्कृतिक दृष्टिएँ असम प्रदेशकेँ मोटा-मोटी चारि क्षेत्रमे बाँटल जा सकैत अछि:

१.अपर असम
२.लोअर असम
३.बराक घाटी
४.नॉर्थ कछार घाटी

शर्माजीसँ इहो पता चलल जे नॉर्थ कछार हिल्स सांस्कृतिक वैविध्यतासँ भरल अनुपम स्थान थिक, जाहिपर कोनो विशेष कार्य नहि भेलैक अछि। परन्तु ई घाटी उपद्रव, विभिन्न घटना, बन्द आदिक कारणेँ बेशी जानल जाइत अछि। लोक सभ सामान्यतया एतय जाएसँ बचए चाहैत छथि। मुदा सौन्दर्य आ सांस्कृतिक विभिन्नताक कारणे ई थिक असम केर शृंगार-नकमुन्नी।





शर्माजीक बात सुनि हमरा मोनमे ई भावना प्रबल भऽ गेल जे नॉर्थ कछार घाटीमे अवश्य कार्य करब।

गौतम शर्मा हमर मनोदशाकेँ बुझैत कहलाह: "कैलाशजी, अगर अहाँ एतए कार्य करए चाहैत छी तँ हम व्यवस्था कए देब। एतए केर जिला अधिकारी आ नॉर्थ कछार घाटी ऑटोनोमस काउन्सिल केर प्रिंसिपल सचिव अनिल कुमार बरुआ हमर मित्र छथि। एस.पी.केँ हम सेहो जनैत छियन्हि। ऑटोनोमस काउन्सिल केर संस्कृति विभागक अधिकारीगण हमरा लग बराबर अबैत रहैत छथि। सभ कियो मदति करताह।





गौतम शर्माक बातसँ हमर मोन प्रसन्न भऽ गेल। तुरतहि डॉ कल्याण कुमार चक्रवर्तीसँ अनुमति लए २३ नवम्बर २००७ ई. सँ ८ दिनक संस्कृति एवं विरासत केर प्रलेखन केर कार्यक्रम नॉर्थ कछार धारी केर मुख्यालय हाफलौंगमे करबाक प्लान बना लेलहुँ। ई कार्यक्रम गौतम शर्माक सहयोगसँ करक छल। तदनुसार पूर्व निर्धारित् योजनाक अनुसार हम २१ नवम्बरकेँ साँझे दिल्लीसँ सँझुका हवाई-जहाजसँ गोवाहाटी पहुँचि गेलहुँ। गुआहाटीसँ हाफलोंग केर दूरी सड़कमार्गसँ २६१ किलोमीटर छैक। हमरा लोकनि (हम आ शर्माजीक ३ सहयोगी) टाटा सूमो (जीपसँ) २२ नवम्बरक साढ़े चारि बजे प्रातः गुआहाटीसँ हाफलौंगक लेल प्रस्थान कऽ देलहुँ। शर्माजी बड्ड पारिवारिक व्यक्ति छथि। ओऽ पूरा टीमक लोक सभक लेल भोजन, टेन्ट, जलखै, जेनरेटर आदिक व्यवस्था गुआहाटीसँ कए ट्रकमे लादि हॉफलोंग लऽ गेलाह।





समय दुर्गापूजाक छलैक। रास्तामे अनेक ठाम स्थानीय युवक सभ हमरा लोकनिकेँ चन्दा लेल रोकैत रहल। एक ठाम हमरा लोकनि केर राशन-पानि आ करीब २५ आदमीसँ भरल बड़का बसक चक्का सड़कक कात माँटिमे धसि गेल।

चारि घन्टाक इन्तजारक बाद सेनाक सहायता लए चक्काकेँ दलदलसँ बाहर निकालल गेल। अन्ततः साढ़े एगारह बजे रातिमे हाफलौंग पहुँचलहुँ। मोनमे डर छल। हेबो किएक नहि करैत! हमरा सभकेँ अएबासँ दू दिन पहिने पाँच आदमीक बीच हाफलौंग शहरमे गोलीसँ मारि देल गेल रहैक।





खैर! शर्माजीक प्रयास आ डॉ के.के.चक्रवर्ती जीक असम केर मुख्य सचिव केर नाम लिखल चिट्ठीक कारण हमरा हाफलौंग सर्किट हाउसमे रहबाक व्यवस्था भऽ गेल। सर्किट हाउस शहरक सभसँ ऊँच स्थानपर बनल अंग्रेजी हुकुमतक समयक भव्य मकान छैक। एतएसँ प्रकृति केर अवलोकन तथा समस्त हाफलौंग शहर एवं अगल-बगलक इलाकाकेँ देखल जा सकैत अछि।





हमर कोठरी काफी पैघ आ साफ सुथरा छल। हँ, पानिक कनिक दिक्कत अवश्य छलैक। कपड़ा बदलिते सुति रहलहुँ। भेल जे रातिमे भोजन नहि करब। परन्तु गौतम शर्मा कतऽ मानऽ बला छलाह! कनिकबे कालक बाद एक स्थानीय कलाकारकेँ लए आबि गेलाह। हम शिष्टतावश नहिओ चाहैत बैसि रहलहुँ। शर्माजी कहलन्हि, "जल्दी चलू। भोजन तैयार अछि"। नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउन्सिल केर कला एवं संस्कृति विभागक निदेशक श्री लंगथासा सेहो शर्माजीक संग छलथिन्ह। हुनके प्रयाससँ संस्कृति भवन केर प्रांगणमे हमरा लोकनिकेँ कार्यक्रम करबाक अनुमति भेटल छल। लंगथासा उदार आ संस्कृति प्रेमी छथि। स्वयं दिमासा जनजातिक छथि। कहलन्हि "हमरा सभ लेल ई गौरव केर बात थीक जे अहाँ लोकनि दिल्लीसँ आबि एहि इलाकामे जतए कियोक नहि आबए चहैत अछि, अयलहुँ अछि आ हमरा लोकनिक संस्कृति एवं धरोहरक रक्षाक प्रति कृतसंकल्पित छी। एतए तँ ओना असम राइफल्स, सैनिक, पुलिस आदिक जमघट लागल रहैत अछि, परन्तु संस्कृति आ विरासतक चिन्ता ककरा छैक? अहाँ सभकेँ केना धन्यवाद दी"।





हम लंगथासा महोदय दिस तकैत बजलहुँ: "अहाँ सभ यदि चाही तँ हमरा लोकनि एहि क्षेत्रक सांस्कृतिक धरोहरकेँ संरक्षण एवं संवर्धनक हेतु बेर-बेर आएब"।

हमरा बातपर उत्साहित भऽ लंगथासाजी बजलाह: हमरा लोकनि सभ तरहक सहयोग करबाक हेतु तैयार छी। एतय केर तमाम अलगाववादी, सरकार विरोधी जत्था समूह संस्कृति रक्षणक विरोधी नहि थिक। तमाम लोसभ अहाँक निर्णयसँ प्रसन्न अछि। जावत धरि अहाँ सभ एतए रहब तावत धरि अतए कुनो मार-काट नहि हैत। अहाँ जे जाहि तरहक स्थानीय सहयोग चाही, हमरा लोकनि करबाक हेतु तत्पर छी"।



एकर बाद हमरा लोकनि रात्रिक भोजन हेतु विदा भेलहुँ। चटगर भोजन- भात, माछ, दालि, सजमनि केर तरकारी, सलाद, मिठाई, चटनी- केलाक बाद पुनः सर्किट हाउस आबि सुतबाक तैयारीमे लागि गेलहुँ। सुतएसँ पहिने अपन पत्नीकेँ दूरभाषसँ आश्वस्त कए देलियन्हि। जे चिन्ताक कोनो बात नञि। हम एतए ठीक छी"। एकर तुरत बाद सुति रहलहुँ।

अगिला दिन प्रातः पाँच बजे उठि बाहर अएलहुँ तँ मनोरम दृश्य देखि मोन मस्त भऽ गेल। सर्किट हाऊससँ एना बुझना गेल जेना सुरुज अपन लालिमा लए लाल गेन जकाँ उगैत छथि। हरियर जंगल, कलकल करैत छोट परन्तु घुमावदार नदीक प्रभाव, दूरमे बनल जंगलक मध्य आदिवासी सबहक छोट-छोट घर, सभ किछु मनमोहक लगैत छल।





किछु कालक बाद गौतम शर्मा सम्वाद पठओलन्हि जे हमरा लोकनिक कार्यक्रम साँझ ६ बजे प्रारम्भ हैत। किछु कालक बाद सत्यकाम आ कुशा महन्त किछु स्थानीय लोक संग हमरा लग आबि कहलन्हि जे खाली समयमे हॉफलौंग आ अगल-बगलक क्षेत्रकेँ देखबाक चाही। हमरा ई विचार नीक लागल। तुरत तैयार भऽ गेलहुँ।





स्थानीय लोकसभसँ पता चलल जे हाफलोंग मूलतः "हंगक्लौंग" सँ बनल छैक जकर अर्थ थीक सम्पन्न आ रत्नगर्भा धरती। बादमे किछु दोसर विद्वान लोकनि कहलन्हि जे "हॉफलौंग" शब्द दिमासा जनजातिक शब्द "हाफलाऊ" (HAFLAU)क विकृत रूप थीक। "हाफलाऊ" शब्दक अर्थ भेल वाल्मीक पहाड़ी (Ante hill)। हाफलौँग शहरक निर्माण अँग्रेज प्रशासन द्वारा १८९५ ई. मे बोराइल रेंजपर एकटा छोट छिन हिल स्टेशनक रूपमे कएल गेलैक। प्रारम्भमे चीर, देवदारक पाँतिसँ लागल गाछ, नौ छेदक गोल्फ कोर्स, छोट परन्तु आकर्षक आ कलात्मक बंगला, हाफलौंग लेक, रेलवेक कर्मचारी सभ लेल स्टाफ क्वार्टर, छोट बजार, रेलवे स्टेशन आदि सुविधाक संग एहि शहरक विकास प्रारम्भ कएल गेलैक।





अंग्रेज सबहक हिम्मतिक प्रशंसा करए पड़त। ३६ खोह (tunnels) कऽ बना रेल लाइन लऽ गेनाइ ओहि जमानामे अर्थात् १८९५-९८ मे की छोट बात छैक? रेलवेक निर्माण कार्यक हेतु ठीकेदार, मजदूर, कर्मचारी, व्यापारी आदि सभ उत्तर-प्रदेश, बिहार, बंगाल आ असम केर अन्य स्थानसँ आनल गेल। पुनः आपसमे वार्तालापक हेतु एक नव तरहक बजारु हिन्दी विकसित कएल गेलैक। एहि हिन्दीकेँ *हॉफलौंग-हिन्दी* कहल जाइत छैक। ई हिन्दी व्याकरणक निअमक पालन स्वतंत्र भऽ करक अधिकार दैत छैक। हाफलौंग हिन्दी रोमन लिपिमे लिखल जाइत छैक। स्थानीय बुद्धिजीवी लोकनिक कठिन संघर्षक फलस्वरूप आइ-काल्हि हॉफलौंग हिन्दीक मान्यता साहित्य अकादमीसँ भऽ गेल छैक।

नार्थ कछार हिल्स असम केर बहुरंगी चुनरी थीक। एतए निम्नलिखित एगारह जनजातिक लोक रहैत छथि:

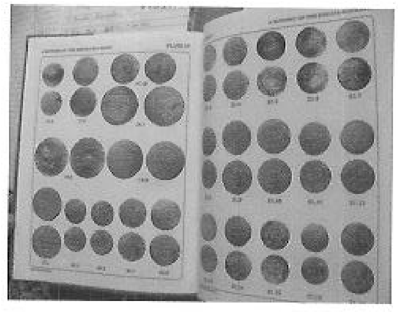




१. दीमासा (Dimasa or Cachari)
२. ह्मार (Hmar)
३. जेमि नागा (Zeme Naga)
४. कुकी (Kuki)
५. बंइते (Baite)
६. कार्बी (Karbi)
७. खासी अथवा प्नार (Khasi or Pnar)
८. ह्रांगखल (Hrangkhals)
९. वइफी (Vaiphies)
१०. खेलमा (Khelma)
११. रोंगमई (Rongmei)







एकर अतिरिक्त अन्य समुदाय जेना कि बंगाली, असमी, नेपाली, मणिपुरी, मुसलमान, देसवाली आदि सेहो एतए रहैत छथि। सभ समुदायक बीच हमरा भावनात्मक एकताक कड़ी बुझना गेल। भारतक अनेकतामे एकताक स्वरूप बुझाएल जेना अपन मनिएचर धारण कए एहि छोट धरामे मोडेल बनि "संगे-संगे चली", "संगे-संगे खाई", "संगे-संगे रही" केँ चरितार्थ करैत छल।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद भारतक अन्य शहर जकाँ हॉफलौंग सेहो शनैः-शनैः विकसित भऽ रहल अछि। १९७० ई. मे एकरा जिलाक मुख्यालय बना देल गेलैक। आब नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउन्सिल केर मुख्यालय, विभिन्न सरकारी विभागक दफ्तर आ मकान, आवासीय परिसर, पार्क, जेहल, खेल परिसर आ मैदान, दू टा रेलवे स्टेशन, सिविल अस्पताल, प्राइमरीसँ हाइयर सेकेण्डरी स्तर केर विभिन्न विद्यालय, सभ सुविधासँ परिपूर्ण सरकारी महाविद्यालय जाहिमे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय केर अधिकांश विषयक पढ़ाई केर सुविधा सहजतासँ उपलब्ध छैक; पानिक सुविधा, डाक, टेलीग्राम, टेलीफोन आदिक सुविधा, बैंक, चर्च, मन्दिर, मस्जिद, पुस्तकालय अनेक तरहक सामाजिक-सांस्कृतिक क्रिया-कलापमे संलग्न संस्था; सिनेमा हॉल, बस स्टेण्ड आदि सुविधासँ भरल अछि।

अगर रेलसँ हाफलौंग आबय चाही तँ गुआहाटीसँ नॉर्थ प्रन्टीयर हिल सेक्शन केर मीटरगेज द्वारा लम्डींगक रस्ते लोअर हाफलौंग स्टेशन आबि सकैत छी। एकर दूरी गुआहाटीसँ २८५ किलोमीटर छैक। सिलचरसँ बदरपुर होइत हिल हाफलौंग स्टेशन केर दूरी ९२ किलोमीटर छैक।

रेलक डिब्बामे बैसि नॉर्थ कछार हिल्स केर नील पहाड़ीक अवलोकन केनाई स्वर्ग केर अवलोकनसँ कम नञि छैक। जीग-जैग (टेढ़-मेढ़) रस्ता नगाँवसँ प्रारम्भ भय समस्त नॉर्थ कछार हिल्सक उत्तरसँ दक्षिण दिशामे जिलाक तीन प्रमुख नदी- माहुर, दीयूंग आ जटिंगा- कऽ संग-संग चलैत रहैत छैक। बुझाएत जेना पानि, रेलक पटरी आ मनुक्खक मोन तीनू आपसमे तालसँ ताल मिला गतिमान भेल होए।

उपरोक्त तीन नदीक अतिरिक्त एहि धरामे चारि छोट-मोट नदी आरो थीक। एहि नदी सबहक नाम छैक: जीनाम, लंगटींग, कोपिली, डिलेयमा। सभसँ पैघ नदी दीयूंग छैक जकर लम्बाई २४० किलोमीटर छैक।

१८६६ मीटर केर ऊँचाई पर अवस्थित थुंगजांग पहाड़ी सभसँ ऊँच स्थान छैक।

नॉर्थ कछार हिल्स पूबसँ असम केर पड़ोसी प्रदेश नागालैण्ड आ मणिपुर; पश्चिममे मेघालय आर कार्बी अंगलौंग जिला; उत्तरमे नगांव आ कार्बी अंगलौंग जिला तथा दक्षिणमे बराक घाटीक कछार जिलासँ घेरल अछि। ४८९० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रमे पसरल नॉर्थ कछार हिल्स केर सामान्य ऊँचाई समुद्र तलसँ ३११७ फीट छैक।

नॉर्थ कछार हिल्स जिलामे ६१९ गाम; पाँच प्रखण्ड, दू सब डिवीजन (हाफलौंग आ मइबांग)मे विभक्त अछि।

अतए केर आदिवासी मूल रूपसँ झूम खेती करैत छथि। झूममे एक भागक जंगल-झाड़केँ काटि ओहिमे आगि लगा पुनः खेती कएल जाइत छैक। तीन-चारि वर्षक बादओहि भूमिमे पुनः जंगल झाड़केँ बढ़ए देल जाइत छैक आ जंगल-झाड़सँ भरल जमीनकेँ आगि लगा साफ कय ओहिमे खेती कएल जाइत छैक। एतए १७,२९३ हेक्टेअर जमीन झूम खेतीक रूपमे, टोटल फसल हेतु उपयुक्त जमीन ३६७५८ हेक्टेअर आर

बीया रोपए बला समस्त जमीन २९२०५ हेक्टेअर छैक। एहि जनपद केर करीब ४५२९वर्ग किलोमीटर धरती जंगलसँ भरल छैक। ६१०.५१ वर्ग किलोमीटर सुरक्षित आ बाकी हिस्सा राज्य सरकार द्वाराघोषित। तीन सुरक्षित जंगल क्षेत्रक नाम क्रमशः

(क) लांगटींग-मूपा सुरक्षित जंगल (४९७.५५ वर्ग कि.मी.)

(ख) कूरुंग सुरक्षित जंगल (१२४.४२ वर्ग किलोमीटर)

(ग) बोराइल सुरक्षित जंगल (८९.८३ वर्ग किलोमीटर)

ओहि दिन लगभग साढ़े बारह बजे भोजन कयल। तत्पश्चात् नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस हिल्स काउन्सिलक कला एवं संस्कृति विभागक निदेशक लंगथासा महोदय, उप-निदेशक श्री संजय जी दूंग एवं किछु अन्य लोकनि हमरा लग अयलाह आ कहलन्हि जे ''चलू अहाँकेँ पहाड़्ई दिस लऽ चलैत छी। यदि समय बचत तँ जटींगा पहाड़ी आ गाम सेहो चलब''।

गुआहाटीमे किछु लोक सभ जानकारी देने छलाह जे जटींगा पहाड़ीपर चिड़ै सभ रातिमे रोशनी देखलापर झुण्डक-झुण्डाअबि रोशनीपर प्रहार करैत छत्रि तथा सामूहिक रूपेण आत्महत्या कऽ लैत छैक। इहो पता चलल छल जे पक्षीशास्त्री लोकनि एहिपर गहन शोधमे बहुत दिनसँ लागल छथि परन्तु एखन धरि कोनो ठोस निष्कर्षपर नहि आबि सकल छथि जे आखिर एकर रहस्य की छकि? आ एकर सत्यता की थिकैक? गुआहाटीमे मोन बना लेने रही जे जटींगा पहाड़ी अवश्य जायब। आइ ई अवसर हमरा लंगथासाजी देलन्हि तँ मोन गद् गद् भऽ गेल। हम तुरत हुनका लोकनिक संग जटींगा गाम जयबाक लेल तैयार भऽ गेलहुँ।

जटींगा पहाड़ी आ गामक रस्तामे विभिन्न प्रकारक बेंतक झाड़ी आ बांस भेटल। नॉर्थ कछार हिल्सक टोटल धरती (४८९००० हेक्टेअर)मे लगभग ३०७९०० हेक्टेअरमे बांस लागल छैक। बांस अनेक प्रकारक अनेक प्रजातिक, असम प्रदेशमे ३३ नस्ल केर बांस होइत छैक, जाहिमे लगभग २० नस्ल वा प्रजाति एहि क्षेत्रमे उपलब्ध छैक। प्रमुख प्रजातिमे काको/ पीछा वा पीछा, जाति, डालू, मूली, हिलजाति, कता, मकालू, काली-सूण्डी, टेराई आदिक नाम सामान्यो मनुक्खक जीभमे रचल-बसल छैक। बांस एहि क्षेत्रक लोकक जीवनक प्रमुख आधार छैक। एकर प्रयोग झोपड़ी, जाफरी, जारनि, पूल आदि बनेबाक लेल कएल जाइत छैक। बांसक कोपड़सँ तरकारी, अचार आदि सेहो बनायल जाइत छैक। बांसकेँ स्थानीय चाऊर, मकई आदिसँ बनल दारु पीबाक हेतु बर्तन (ग्लास-कप)क रूपमे कएल जाइत छैक। जमीनक कटाव रोकबाक हेतु बांसक आधार देल जाइत छैक। एकर अलावे बांसक प्रयोग बर्तन, फर्नीचर, कृषियन्त्र एवं उपकरण, धनुष-वाण, सजेबाक कलात्मक वस्तु, हस्तकला, बत्ती, सीढ़ी इत्यादिमे उपयोग होइत छैक। बादमे हम अनेको वाद्य या लोकवद्य यंत्र देखलहुँ जाहिमे बांसक प्रयोग कएल गेल रहैक।

अन्ततः हमरा लोकनि जटींगा गाम पहुँचलहुँ। ई गाम बोराइल रेंज केर पादगिरि (foothills) पर बसल छैक। ई पहाड़ी तरह-तरहक प्रवासी एवं देशी चिड़ै सबहक विश्राम-स्थली थिकैक। एहि स्थानमे अंग्रेजी मास सितम्बर-अक्टूबरमे चिड़ै सभ अन्हरिया पक्षक रातिमे रोशनीक कोनो स्रोत जेना कि टॉर्च, मशाल आदि देखि झुण्डक-झुण्डमे आबि खसि पड़ैत छैक आ आत्महत्या कऽ लैत छैक। जटींगा गाम हॉफलौंग शहरसँ आठ किलोमीटर केर दूरीपर बसल छैक। लोक सभसँ ज्ञात भेल जे चिड़ै सभ अन्हरिया रातिमे रोशनी देखि झलफलाक खसय लगैत छैक; जकर फायदा उठा कऽ चिड़ैमार सभ बांसक लग्गी अथवा बत्तीसँ चोन्हरायल चिड़ै सभपर प्रहार करय लगैत छैक एवं पकड़ि लैत छैक।

अन्हरिया रातिक संग-संग एक निश्चित वातावरणक भेनाई चिड़ै सबहक सामूहिक आत्महत्याक लेल सेहो कारण बनैत छैक। ई वातावरण छैक हवाक बहबाक दिशा। हवाक दिशा दक्षिण-पश्चिमसँ उत्तर-पूबमे हेबाक चाही। बोराइल पहाड़ीक अगल-बगलमे धूंध आ शीत लागल रहनाई सेहो जरूरी। धूंधमे कनीक झलफलाईत रोशनी हेबाक चाही। एहन स्थितिमे जखन दक्षिण दिशासँ धूँध चलैत छैक तखने चिद्ऐ सभ जटिंगा दिस आगाँ बढ़ैत अछि। सामूहिक आत्महत्या करय बला चिड़ै सभमे लाली चिड़ै (Indian ruddy), कौड़िल्ला (King fisher), भारतीय नौरंग (Indian pitta), हारिल, ब्लैक ड्रोंगो, उजरा बगुला, चितकबरी पौरकी, बटेर आदि प्रमुख छैक।

आश्चर्यक बात ई जे अधिकांश चिड़ै जे कृत्रिम रोशनीक चकाचौंधसँ सामूहिक रूपसँ झुण्डक-झुण्डमे झलफला या चौंधिया कऽ खसैत छैक ओ सभ देशी चिड़ै छैक। प्रवासी चिड़ै सभ संगे ई घटना घटित नहि होइत छैक। स्थानीय लोकसभसँ ईहो पता चलल जे ई प्रवृत्ति समस्त जटींगा पहाड़ीमे नहि भऽ कऽ किछु खास क्षेत्र जे कि मात्र डेढ़ किलोमीटर केर लम्बाई आ २०० मीटर केर चौड़ाईक सीमामे बन्हल छैक।

जटींगा गामक एक पच्चासी बर्षक वृद्ध जे प्रार (खासी) जनजातिक छथि सँ पता चलल जे चिड़ै सबहक जटींगामे कृत्रिम रोशनीसँ सामूहिक आत्महत्याक प्रवृत्ति केर जानकारी सर्वप्रथम १९१४ ई.क आसपास चललैक। भेलैक ई जे एक राति ककरो चारि-पांच बरद जंगल दिस भागि गेलैक। बरदक मालिककेँ भेलैक जे अगर बरदकेँ रातियेमे नहि पकड़ल गेलैक तँ बाघ-शेर सभ खाऽ जेतैक। तत्रि पाँच आदमी एकटा टोली

बना बांसक फट्ठीमे कपड़ा बान्हि ओहिमे मटिया तेल डालि ओकर मशाल बना कऽ तथा हाथमे लालटेन लय बरद सभकेँ ताकक लेल जंगल दिस बिदा भेल। कनीक कालक बाद आश्चर्यजनक ढ़ंगसँ चिड़ै सभ झुण्डमे आबि मशाल लग आबि खसय लगलैक। परन्तु ई लोकनि ओहि चिड़ै सभकेँ नहि पकड़लकैक। यद्यपि ओऽ सभ चिड़ै मांसक प्रयोगमे लाबए जोग रहैक। एकर कारण ई छलैक जे स्थानीय जेमि नागा समुदाय (जनजाति) क लोकक बीच ई भ्रान्ति रहैक जे जटींगा क्षेत्रमे रातिक भूत-प्रेत विचरण चिड़ै बनि करैत रहैत छैक। हुनका लोकनिकेँ तञि डर भेलन्हि जे चिड़ै केँ पकड़लासँ कतहु कोनो अनिष्ट ने भऽ जाए।

१९१७ ई.क आसपास लाखन-सारा नामक एक व्यक्ति कृत्रिम रोशनीसँ झलफलाएल चिड़ै सभकेँ सर्वप्रथम पकड़ि घर अनलाह एवं ओकर मांसकेँ भुजि पका कऽ खयलन्हि। आ ओकर कोनो दुष्प्रभाव हुनका सभकेँ नञि भेलन्हि। एकर बाद चिड़ै सभपर आफत शुरू भऽ गेलैक। लोकसभ अन्हरिया रातिमे कृत्रिम रोशनीक मदतिसँ चिड़ै सभक संहार प्रारम्भ कऽ देलक। हालाँकि जखन अंग्रेज प्रशासनकेँ एहि बातक जानकारी भेटलैक तँ एहि परम्परापर रोक लगा देल गेलैक।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद लोक पुनः नुका-चोरा कऽ शिकार करए लगलाह। आब पर्यावरणविद्, पक्षीशास्त्री, पत्रकार एवं अन्य लोकनिक अथक प्रयासक बाद प्रशासन पुनः कृत्रिम रोशनीसँ चिड़ै मारबाक प्रथापर प्रतिबन्ध लगा देलकैक अछि। हम ओहि स्थानपर गेलहुँ। ओतए रंग-बिरंगक चिड़ै सबहक आकर्षक फोटो टांगल रहैक। एक मूल वाक्य नीक लागल। वाक्य ई रहैक: "shoot these birds with your camera, not with bullets:.

घड़ी देखलहुँ तँ साँझ भऽ गेल छल। आब हमरा लोकनि जटींगासँ सोझे सर्किट हाउस आबि गेलहुँ। मुँह हाथ धोलाक बाद कार्यक्रम स्थलीपर पहुँचलहुँ। ओतए पाँच हजार लोक सभ आयल छलाह। सभ जनजाति केर स्त्री-पुरुष, बच्चा सीयान सभ कियो अपन समुदायक परम्परागत रंग-बिरंगक वस्त्र पहिरने सुसज्जित भेल पहुँचल छलाह। प्रशासन केर सहयोग तँ छले। डिप्युटी कमिश्नर, नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउन्सिल केर चेअरमेन, सदस्य, प्रमुख सचिव, एस.पी., स्थानीय कॉलेजक शिक्षक एवं छात्र सभ कियो पहुँचल छलाह। स्थानीय पत्रकार सभ सेहो उत्साहित छलाह।

सभ कियो हमरा माध्यमसँ आ गौतम शर्माक माध्यमसँ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र केर प्रति धन्यवाद दैत छलाह। हम सोचलहुँ जे केहेन विडम्बना छैक। जे क्षेत्र सांस्कृतिक सम्पन्नताक खान थिक ओकर एहेन अपमान! मुख्यधारासँ एहि क्षेत्रकेँ वंचित किएक कएल गेल छैक! हमरा भेल जे समस्त विश्वमे नॉर्थ कछार हिल्ससँ शान्त आर सांस्कृतिक वैविध्यसँ भरल आर कोनो जगह नञि भऽ सकैत अछि। हम अपन भाषणमे बजलहुँ: "हमरा लोकनि अहाँ सभकेँ सिखाबए नहि अएलहुँ अछि। हमरा लोकनि अएलहुँ अछि अहाँ लोकनिकेँ जाग्रत करक हेतु जे अहाँ सभ अपन सांस्कृतिक वैविध्यता तथा गरिमाकेँ बुझू आ एकरा सास्वत राखू। हमरा लोकनि एतए केर सांस्कृतिक विरासतकेँ जानए आ ओकर डॉक्युमेन्टेशन करए आएल छी। अगर अहाँ सबहक सहयोग रहल तँ बेर-बेर आएब। हमर कार्यक्रममे आ एक्शनमे कौमा (,) वा अर्धविराम भऽ सकैत अछि, पूर्ण विराम कखनहुँ नहि हैत"।

लोक सभ हमर बातकेँ सही अर्थमे लेलन्हि। पहिल दिनक कार्यक्रम लगभग साढ़े-नौ बजे राति धरि चललैक।

जखन रातिमे भोजनक उपरान्त विश्राम करए गेलहुँ तँ एक आदमीक देल एक पुस्तक पढ़य लगलहुँ। पुस्तक नॉर्थ कछार हिल्सपर छलैक। ओहि पोथीमे रातु हकमओसा नामक स्थानीय कविकेँ नॉर्थ कछार हिल्सपर लिखल किछु पंक्ति बड्ड उपयुक्त बुझना गेल: पंक्ति यथावत अंग्रेजीमे पाठक लेल लिखि रहल छी:

A harmonious game of hide and seek

Behind the bushes, marshy meadow

Under shadow with clouds view,

Ever ready for worthwhile, cherish at dawn,

The blues make enchanting heart of lovers

Midst of covers white

Changing scene that lively for romance

Beauty and bounty of brooks that flow.

Moments of joy, love to cherish

Insight the harmony game of hide and seek

Behind thick trespasses of white and blue

With narrow path of zig-zag.

The beauty of hills under cover

Orchids, white fall, violet at hills

Every moment thrilled with behalf

Nature disposal at North Cachar Hills



कमलानन्द झा,

हिन्दी विभाग, सी.एम. कॉलेज,दरभंगा

मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन : उदाहरण

पछिला चारि बर्खमे कोनो पैघ आ महत्वपूर्ण प्रकाशनसँ मैथिलीक तीन गोट कथा-संकलनक प्रकाशन मैथिली भाषा लेल एकटा शुभ-संकेत मानल जा सकै'छ। नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा सम्पादित मैथिली कथा संचयन(सन् २००५) आ सन् २००७मे तारानन्द वियोगी द्वारा सम्पादित देसिल बयना(सन् २००७) पाठकक बीच लोकप्रिय भ'ए रहल छल कि प्रकाशन विभागसँ देवशंकर नवीन द्वारा सम्पादित टटका मैथिली कथा-संग्रह उदाहरण छपि क' आबि गेल। प्रसन्नताक बात थिक जे उदाहरणक प्रकाशनसँ प्रकाशन विभागमे साहित्यिक रचनाक प्रकाशनक बाट फूजल, जे स्वागत योग्य अछि।

उदाहरणमे ललितसँ सियाराम सरस धरिकक कुल छत्तीस गोट कथा संकलित अछि। एहि संकलनसँ मैथिली कथा-संसारक परिदृश्य स्पष्ट होइत अछि। संकलनक कतोक कथा समस्त भारतीय भाषासँ कान्ही मिलान लेल तत्पर अछि, जे संकलनकर्त्ताक चयनकौशलक सूचक थिक। श्रेष्ठ कथाकार राजकमल चौधरीक कथा ÷एकटा चम्पाकली एकटा विषधर' घाघ मैथिल समाजक टोप-टहंकारकें अद्भुत रूपें अनावृत्त करैत अछि। सवर्ण मैथिलक गरीबी, ओहि गरीबीसँ उत्पन्न दयनीयता, आ तकर खोलमे दुबकल बेटीक शातिर माइ-बापक घिनौन आचरण घनघोर तनावक संग पाठककें झकझोरैत अछि। दशरथ झा आ हुनकर घरबाली अपन तेरह बर्खक बेटी चम्पाक विवाह बासैठ बर्खक वृद्ध शशि बाबू संग करेबाक षड्यंत्रापूर्ण योजना बनबैत अछि। दुनू प्राणीक गिद्ध दृष्टि शशि बाबूक सम्पति पर टिकल छनि, जकर मलिकाइन विवाहोपरान्त हुनक तेरह वर्षीया चम्पा बनैबाली छनि। अतिशयोक्ति सन लगैबला एहि घटनाक मर्मकें ओएह बूझि सकत जे मिथिलांचलक बहुविवाह प्रथासँ नीक जकाँ परिचित छथि। बीसम-एकैसम विवाहक बाद पति अपन पूर्व पत्नी सभक मुँहो बिसरि जाइ छलाह।

पत्राकारिता दुनियाक महत्वपूर्ण आ सम्वेदनशील पक्षसँ मायानन्द मिश्रक कथा ÷भए प्रकट कृपाला' साक्षात्कार करबैत अछि। मीडिया-तन्त्र पर बनल सार्थक हिन्दी सिनेमा ÷पेज थ्री' जे किओ देखने छथि, से एहि कथाक मर्मकें बेसी नीक जकाँ बुझि सकै छथि। शीघ्रतासँ नामी पत्राकार बनि जाएबाक हड़बड़ीके कथामे कलात्मक ढंगसँ उकेरल गेल अछि। कॉरपोरेट दुनियाँक बादशाह श्याम बोगलाक मृत्युक खबरि सबसँ पहिने देबाक होड़ लागल अछि। पत्रकार लोकनिक नजरिमे ओएह सभसँ पैघ खबर अछि, दुनियामे किछु भ' जाउ।

लिलीरे मैथिलीक सशक्त कथालेखिक। छथि। हुनकर कथा ÷विधिक विधान'मे कामकाजी स्त्रीक संघर्षकें यथार्थतः देखबाक, आ यथार्थक मर्मकें कलात्मक कौंध संग उभारबाक सफल चेष्टा अछि। उषाकिरण खान अपन कथा ÷त्यागपत्रा'मे ग्रामीण युवतीक अदम्य जिजीविषाकँ व्यक्त करबामे पूर्ण सफल नहि भ' सकलीह। घोर आदर्शवादी आ कठोर अनुशासित परिवारमे पालित-पोषित चम्पा कॉलेजमे पढ़' चाहैत अछि, अपन मर्जीसँ विवाह कर' चाहैत अछि। मुदा आजीवन विवाह नहि करबाक घोषणा करैत चम्पा स्वयंकें ओही परंपराक केंचुलमे समेटि लैत अछि। चम्पा विवाहक लक्ष्मण रेखा पार करैत ÷और भी ग़म हैं' कें आधार मानि अपन व्यक्तित्वकँ विस्तृत आयाम नहि द' पबैत अछि। मनमोहन झाक कया फायदा÷फयदा'मे स्त्री जातिक मोलभाव बला प्रवृत्तिक रेखांकन खूब जमल अछि, मुदा वो एहि प्रवृत्तिक वर्णन क' स्त्री जाति कोन पक्षक उद्घाटन करै छथि, से बूझब कठिन। कोनो व्यक्तिक स्वभावमे नीक आ खराब दूनू भाव रहैत अछि। कथाक हेतु कोन तरहक भावक चुनाव कयल जाए, ई महत्वपूर्ण अछि। इएह चुनाव मैथिली कथामे स्त्री चेतनाक दर्शन करा सकैत अछि।

स्त्री चेतनाक दृष्टिएँ प्रदीप बिहारीक कथा ÷मकड़ी' अपेक्षाकृत मेच्योर्ड आ बोल्ड कथा कहल जा सकैछ। बेराबेरी कथानायिका सुनीता दू बेर विवाह करैत अछि, दुनू बेर ओकर पति मरि जाइछ, मुदा ओ जिनगीसँ हारि नहि मानैत अछि। सिलाई मशीन चला क' ओ गुजर-बसर करैत अछि। एतबे नहि, ओ एकटा अनाथ आ बौक बच्चाक लालन-पालनक दायित्व ल' क' अपन व्यक्तित्वकँ विस्तार दैत अछि। कथामे मोड़ तखन अबैत अछि जखन ओ बौका समर्थ भेला पर सुनीताक स्वीकृतियेसँ सही, ओकरा गर्भाधान क' क' भागि जाइत अछि। सुनीताकें एहि बातक अपराधबोध नहि छै, जे ओ बौका संग किऐ ई कृत्य

केलक, ओ देहक विवशतासँ परिचित अछि, मुदा बौकाक भागि जेबाक दंश ओकरा व्यथित करै छै। देवशंकर नवीनक कथा ÷पेंपी' पति-पत्नीक सम्बन्ध विच्छेदक परिणामस्वरूप बेटीक मनोमस्तिष्क आ व्यक्तित्व पर पड़ैबला कुप्रभाव आ बेहिसाब उपेक्षाभावकँ करुणापूर्ण ढंगसँ व्यक्त करैत अछि। मुदा एहिमे सभटा दोष स्त्री पर फेकि देब पूर्वाग्रह मानल जा सकैछ। ई सामाजिक सत्य नहि भ' सकैत अछि। वरिष्ठ कथाकार राजमोहन झा अत्यंत

कुशलतापूर्वक ÷भोजन' कथाक बहन्ने स्त्रीक बाहर काज करबाक विरोध क' जाइत छथि। राजमोहनजीक दक्षता इएह छन्हि जे ई सभ बात कहिओ क' ओ प्रगतिशील बनल रहै छथि।

राजकमल चौधरीक ÷एकटा चम्पाकली एकटा विषधर', धूमकेतुक ÷भरदुतिया', गंगेश गुंजनक ÷अपन समांग'(ई कथा देसिल बयनामे सेहो संकलित अछि), तारानन्द वियोगीक ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' आ अशोकक ÷तानपूरा' एहि संग्रहक श्रेष्ठ कथा मानल जा सकैछ। धूमकेतुक कथा ÷भरदुतिया' व्यक्ति स्वार्थ हेतु भाई-बहिनक पावन पाबनिकँ दुरुपयोग करबैत देखबैत अछि। आजुक मनुख अहू पाबनिकें नहि छोड़लक। ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' वियोगीक सफल राजनीतिक कथा कहल जा सकैछ। कथाक ई निष्पति एकदम ठीक लगैत अछि जे सवर्णक पार्टी एहि दुआरे जीतैत रहल जे निम्नजातिक आर्थिक स्थिति बहुत खराब छल। स्वामीक पार्टी दासोक पार्टी होइछ। दोसर पार्टीक मादे सोचब मृत्युकें आमन्त्रण देब छल। आओर नहि किछु तँ आवास आ रोजगार छीनि बेलल्ला बना देब उच्चवर्गक हेतु बाम हाथक काज छल। दिल्ली-पंजाब प्रवाससँ निम्नवर्गक आर्थिक, सामाजिक स्थितिमे सुधार भेल। परिणामस्वरूप ओहि वर्गमे आत्मसम्मान आ राजनीतिक चेतनाक अंकुरण भेल। भक्तिकाव्यक उन्मेष आ ओहिमे निम्नजातिक कविक बाहूल्यक पृष्ठभूमिमे सुप्रसिद्ध इतिहाकार इरफमान हबीब मुगलकालीन विकास कार्यकँ लक्षित केलनि अछि। ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' कथाक विलक्षणता बिहारमे बनल निम्नजातिक पार्टीक आत्मालोचन थिक। कहबा लेल त' ई पार्टी निम्नजातिक-निम्नवर्गक छल, मुदा अइ पार्टीमे छल, प्रपंच, भ्रष्टाचार, अपराध आओर पाखण्ड पहिनहुँसँ तेजगर और धारदार भ' गेल छल। कथाकारक इएह द्वन्द्व कथाकें गरिमा प्रदान करैछ। चाहक दोकान चलबैबला मुदा बहुत प्रारम्भहिसँ सक्रिय मूल्यपरक राजनीति करैबला हीरा महतोक धैर्य जखन संग छोड़ि दै छनि त' ओ पार्टी प्रमुख बासुदेव महतो पर बिफरैत कहै छथि-- रे निर्लज्जा, एतबो सरम कर! जे कुकर्म करै छैं से अपन करैत रह, लेकिन एना समाजमे नहि कहिहें जे कुकर्म करब ठीक छिऐ। एतबो रहम कर बहिं...।''

अशोकक कथा ÷तानपूरा' मध्यवर्गीय हिप्पोक्रेसीक घटाटोपकँ तार-तार क' देबामे पूर्ण सफल भेल अछि। बिना कोनो उपदेश आ नैतिक आग्रहक कथा मध्यवर्गीय कुत्सित मानसिकताक दुर्ग भेदन करैत अछि। कथानायक विनोद बाबूक संगीत-प्रेमकँ हुनक पिता घोर अभाव आ द्ररिद्रयक बीच जेना-तेना पूरा करैत छथि, मुदा जखन विनोद बाबूक पुत्रा संगीत सिखबाक इच्छा प्रकट करै छनि त' दुनू प्राणीकें साँप सूँघि जाइत छनि। एहि दुआरे नहि, जे हुनका कोनो तरहक अभाव छनि। बल्कि एहि दुआरे जे संगीतक स'ख हुनक बेटाकँ रुपैया कमबैबला मशीन नहि बना सकत। जे दम्पति कोनो विषय पर कहियो एकमत नहि भेल, एहि विषय पर एकमत भ' पुत्राक एहि अव्यावहारिक स'ख'क कठ मोंकबाक साजिशपूर्ण योजना बनबए लगै छथि।

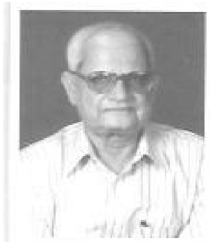
संग्रहक किछु कथा जेना अवकाश, अयना, खान साहेब, जंगलक हरीन आदि यथार्थक मोहमे शुष्क गद्य बनि क' रहि गेल अछि। एहिमे किछु कथा ततेक सरलीकृत भ' गेल अछि जे ओ नवसाक्षर हेतु लिखल कथा बुझि पडैछ। एहन कथा सभक मूल संरचना इतिवृत्तात्मक अछि। यद्यपि इतिवृत्त कोनो कथाक सीमा नहि होइछ, मुदा जखन कोनो कथा घटनाक स्थूल आ तथ्यात्मक विवरण टा दैछ, कथामे समय वा क्षणक मर्म नहि आबि पबैछ, त' एहन इतिवृत्त निपट गद्य बनि क' रहि जाइछ। यथार्थ कोनो कथाकें विश्वसनीयता देबाक बदलामे ओकरा भीतरसँ संवेदना निचोड़ि अनैत अछि, कथाकें प्रमाणिक बनेबाक फेरमँ पड़ल नहि रहैत अछि। कथाकार रमेश अपन कथा ÷नागदेसमे अयनाक व्यवसाय'मे अतियथार्थ आ इतिवृत्तक फ्रेमकें तोड़ि प्रतीक वा फैंटेसीक प्रयोगसँ कथा बुनबाक प्रयास त' केलनि, मुदा कथाक विन्यासमे एकरसता आबि गेल। एहि फ्रेम हेतु हमरा लोकनिकँ राजस्थानी कथाकार विजयदान देथा (दुविधा) आ हिन्दी कथाकार उदय प्रकाश (वारेन हेस्टिंग्स का सांढ़) आदिकँ पढ़बाक चाही। हिनका लोकनिक कथा यथार्थक फ्रेमकँ तोड़ियो क' यथार्थ बनल रहल अछि।

मैथिलीमे प्रकाशित उक्त तीनूँ कथा संकलनसँ मैथिली कथाक प्रसार राष्ट्रीय स्तर पर भ' रहल अछि, एहिमे दू मत नहि। मुदा उक्त संकलनकँ पढ़ि

आम पाठकक राय इएह बनत जे मैथिलीमे कुल इएह तीस-चालीस गोट कथाकार आइ तक भेलाहे। कारण तीनूँ संग्रहमे कथाकारक सूचीमे अद्भुत साम्य अछि। कथा पढ़ि बुझना जाइछ जे कथा चयनमे कथाक अपेक्षा कथाकारकँ महत्व देल गेल अदि। ई कहब सर्वथा अनुचित जे संकलनक कथाकार महत्वपूर्ण नहि छथि, मुदा अन्य श्रेष्ठ कथाकँ सेहो प्रकाशमे अएबाक प्रयास हेबाक चाही। हमरा लोकनि ई नीक जकाँ जनै छी जे मैथिलीमे श्रेष्ठ कथाक अभाव नहि अछि। किन्तु प्रकाशनक अभावमे पत्र-पत्रिकाकें छानि मारब कठिनाहे नहि समय-साध्य कार्य थिक। वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक पहिचान भने श्रेष्ठ कविक रूपमे छनि, मुदा हुनकर मैथिली कथा ÷चितकबड़ी इजोरिया' आ ÷रूपांतर' कतोक दृष्टिएं महत्वपूर्ण अछि। रेणुजी सेहो मैथिली कथा लिखलनि अछि। ई दीगर बात थिक जे बादमे ओ हिन्दिए टामे लिखए लगलाह। ÷नेपथ्य अभिनेता' आ ÷जहां पमन को गमन नहीं' आदि लीकसँ हटि क' लिखल गेल कथा थिक। ÷उदाहरण'मे कथाक प्रकाशन वर्ष आ सन्दर्भक अनुपस्थिति खटकैत अछि। समय-सीमा जनने बिना कोनो कथाक सम्यक मूल्यांकन सम्भव नहि। नवीनजी सदृश दक्ष आ अनुभवी सम्पादकसँ ई आशा नहि कएल जा सकै छल। एहि कमीकँ पूरा करैत अछि हुनकर चौदह पृष्ठीय भूमिका। सम्पादक मैथिली कथाक सीमा आ सम्भावनाक विस्तृत पड़तालअपन एहि भूमिकामे केलनि अछि। मैथिली कथाक इतिहासकें बुझबा लेल ई भूमिका निश्चित रूपें रेखांकन योग्य अछि।

उदाहरण

पुस्तकक नाम - उदाहरण
सम्पादक - देवशंकर नवीन
प्रकाशक - प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार
पृष्ठ - २७४ मूल्य - २०० टाका मात्रा



केदारनाथ चौधरी

जन्म 3 जनवरी 1936 ई नेहरा, जिला दरभंगामे। 1958 ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, 1959 ई.मे लॉ। 1969 ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, 1971 ई.मे सानफ्रांसिस्को वि.वि.सँ एम.बी.ए., 1978मे भारत आगमन। 1981-86क बीच तेहरान आ प्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई पुने होइत 2000सँ लहेरियासरायमे निवास। मैथिली फिल्म ममता गाबय गीतक मदनमोहन दास आ उदयभानु सिंहक संग सह निर्माता।तीन टा उपन्यास 2004मे चमेली रानी, 2006मे करार, 2008 मे माहुर। सम्पादक।

माहुर

..1..

दृ''आह! भैया आबि गेला। हाथ मे पोटरी छनि। अबस्से ओहि मे 'मीट', अरे! नहि माता दुर्गाक परसाद हेतनि!''

रंजना बाजलि छलीह। ओ दौड़ैत आंगन सँ बाहर एलीह। हुनका भाइजीक हाथ मे ठीके पोटरी छलनि जाहि मे 'मीट' रहैक। भाइजी अपन हाथक पोटरी रंजनाक हाथ मे देब' चाहलनि। फेर, ने जानि हुनका की मोन पड़लनि जे अपन पोटरी बला हाथ कँ पाछाँ घीचि लेलनि। ओ बूत बनि ठार भ' गेला। भाइजीक ठोर मे कंपन होब' लगलनि, आँखि सँ ढबढब नोर बह' लगलनि आ हुनक समग्र शरीर थर-थर काँपए लगलनि।

भाइजी अर्थात आकाश सँ हुनक एकमात्रा छोट बहिन रंजना हुनका सँ बारह बर्खक छोट छलथिन जे आब पन्द्रहम मे पयर रखने छलीह। ओ सलवार-कुर्ती पहिरने छलीह। हाथ मे चूड़ीक स्थान पर घड़ी बान्हल छलनि। पुछू किएक? रंजना विधवा छलीह।

पछिला आषाढ़ मे रंजनाक विवाह कमीशन प्राप्त सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट भास्कर चौधरी सँ भेल रहनि। एक महिनाक अवकाश समाप्त भेला पर भास्कर चैधरी अपन ड्यूटी पर कश्मीर पहुँचल छला। ओतहि आतंकवादीक संग मुठभेर मे शहीद भ' गेलाह। रंजना विधवा भ' गेलीह।

आकाश लगक शहर दरिभंगाक एक बैंक मे कार्यरत रहथि। ओ गामहि सँ स्कूटर पर बैंक जाथि आ आबथि। अष्टमी रहैक आ बैंक दशहराक छुट्टी मे बन्द छलै। गामेक दुर्गा स्थान मे बलिप्रदान कएल छागरक भड़ाक माँउस पुजेगरीक आदेश सँ बिकाइत छलै। ओही ठाम सँ आकाश एक किलो 'मीट' आ की परसाद जे कहियौ कीनि क' अनने रहथि।

सम्प्रति जे दृश्य उपस्थित भेल छलै ओहि मे आकाश हाथ मे मीटक पोटरी टंगने थरथराइत ठार रहथि। हुनका आँखि सँ दहो-बहो नोर बहि रहल छलनि। हुनक पत्नी, पांच बर्खक बेटी सुजाता, माता-पिता सभ कियो ढलानक एक कात ठार डबडबाएल आँखिए देखैत चुपचाप आकाश दिस ताकि रहल छलथिन। रंजना ठीक आकाशक सामने छलीह। हुनक बाल सुलभ सदृश मुख-मंडल पर बड़ी टा प्रश्न चिन्ह बनि गेल छल। काजर पोतल आँखि मे रंजनाक समग्र भविष्य धह-धह धधकि रहल छल। तँ नोरक एकोटा बून्न देखाइ नहि पड़ि रहल छल। परिवारक क्रंदन बीच रंजना एक अजीबे दृष्टि सँ अपन भ्राता, आकाश कैं निहारि रहल छलीह।

बड़ी काल सँ अंटकल आकाशक कंठ सँ कुहरैत शब्द बाहर भेलदृ''हे भगवान! हम ई की कएल? कियक हम 'मीट' कीनल?'' एतबा बाजि आकाश मीट'क पोटरी कँ नाला मे फेकि, दुनू हाथे माथ पकड़ि, नीचा जमीन पर बैसि हबोढेकार कान' लगलाह।

आब रंजना कैं छोड़ि परिवारक सामूहिक क्रंदन सँ स्थान पीड़ादायक बनि गेल। माता रंजना अविचल ठार रहलीह आ शून्य नजरि सँ सभ किछु देखैत रहलीह।

हम कोन तरहक खिस्सा सुनाब लगलहुँ। इहो कोनो खिस्सा भेलै? रंजनाक विवाह लड़ाइक सिपाही संग भेल छलनि। ताहू मे एहन सिपाही सँ जनिक नियुक्ति कश्मीर मे आतंकवादी सँ भिड़न्त मे भेल होअय। तखन त' प्राण जायब करीब-करीब निश्चिते छलै। तैँ रंजना विधवा बनलीह। अहि मे अजगुत बला कोनो बात नहि भेलै। दुखक बात जँ रहै त' एतबेटा जे जाहि जाति मे रंजनाक जन्म भेल रहनि ओहि जाति मे पुनर्विवाहक नियम नहि रहैक। ओहि जातिमे आ सनातन सँ आयल परम्परा मे विधवाक निदान हेतु कोनो टा व्यवस्था नहि रहैक। रंजना विधवा भेलीह त' भेलीह। पूर्वजन्मक पाप ओ नहि भोगती त' के भोगत? तैँ ई मात्रा ओहने आ ओतबेटा बात भेल जेना मनता मानल कोनो पाठीक बलि पड़ल होअय। आब अहाँ कहबै जे ई कोन तरहक मिलान भैलै? नहि अरघै अछि, त' सुनू।

मनता मानल पाठी-छागरक बलि पड़ै काल बलि देनिहार, कबुला केनिहार एवं बाँकी सभटा तमाशा देखनिहार एतबे ने सोचैत छथि यौ जे हरदि, मिरचाइ आ मसल्ला मे भूजल एकर माँउस मे कतेक सुआद हेतै? तहिना विधवा भेलि रंजना द' सभ सोच' लागल छथि जे ई आब सासुर त' जेतीह नहि, गामहि मे रहतीह। गाम मे सभहक टहल-टिकोरा करतीह, अदौरी-कुम्हरौरी खोंटतीह, अँगने मे भानस-भात करतीह, एकरा-ओकरा संग तीर्थाटन जेबा काल भनसिया बनि क' जेतीह आ छौंड़ा सँ लगाति बूढ़बा तकक करेजक तपन मेटौती। तँ बरसामबाली काकी कहने रहथिन यौ, भगवान सभहक सभटा इन्तजाम बैसले-बैसल 'क' दैत छथिन। दूर जो, मनसा सभहक लप-लप करैत जिह्वा आ आँखिक खोराकक पूर्ति सदिकाल सँ बाल-विधवे सँ पूर्ति होइत रहलै अछि। ई कोनो नुकायल गप्प छैक?

आब अहीं कहू जे मनता मानल पाठी आ विधवा भेलि रंजना मे की फर्क? कोनो तरहक शिकायत करब सेहो युक्ति संगत नहि होयत। तैँ आब नीक होयत जे अहि खिस्सा कैँ अही ठाम विराम द' क' ओही गाम मे ओही दिन घटल दोसर घटनाक जानकारी प्राप्त करी।

गामक नाम भेल पानापुर। पानापुर मे सभ जाति, समुदाय एवं सम्प्रदायक लोकक निवास। गाम आर्थिक रूपे सम्पन्न। ओहि गाम मे छल एकटा दुर्गा मंदिर, जे दस-बीस कोस दूर तक प्रसिद्ध छल। पैघ पोखरिक पूबरिया भीड़ पर तीन-चारि बीघा मे पसरल मंदिर आ मंदिरक परिसर। मंदिर मे दुर्गाक भव्य प्रतिमा। तकरबाद मंडप, पुजारीजीक आवास आ सदिकाल खल-खल हँसैत, स्वच्छ, विशाल समतल भूमि। दशहराक समय मे अही स्थान पर मेला, नौटंकी, नाच-गान आदि आयोजित होइत छल।

दुर्गा मंदिरक पुजारी छलाह काली कान्त ओझा। दुब्बर-पातर, साँची धोती, खोंसल ढेका, छाती पर उगल पंक्तिबद्ध हड्डीक उपर दू भत्ता फहराइत जनउ, गौ-खूँर बरोबरि टीक, पयर मे खराम आ ललाट पर सेनुरक ठोप। पुजारीजी सज्जन आ मृदुभाषी छलाह। वैष्णव त'ओ छलाहे आ सप्ताह मे अधिक दिन उपासे मे रहैत छलाह। मुदा हुनक पत्नी अढ़ाइ मोनक पट्टा छलथिन। थुलथुल देह, खुजल कारी केश, नाक सँ मांग तक पतिव्रताक निशानी स्वरूप सेनुरक डरीर, पान-जर्दा दुआरे कारी भेल दाँत आ बीड़ी त' ओ नैहरे सँ पिबैत आयल रहथि। जँ जुमनि त' नित्य माँउस-माँछ चाहबे करी। दू अगहनी जोड़ दू रब्बी गुण दू बरोबरि मंदिरक बर्ख भरिक अन्न-टाकाक आमदनी पर हुनक पूर्ण एकाधिकार छलनि।

पुजारीजी पत्नीक सोझा मे आब' मे कँपैत छलाह। शारीरिक दुर्बलता अथवा धार्मिक अजीर्णता, कारण जे हौउ, पुजारी जी सदिकाल पत्नी सँ डेरायल रहैत छलाह। तखन पुजारीजी के संतान स्वरूप पुत्रक प्राप्ति भेलनि कोना? ई रहस्यक विषय अवस्से छल। मुदा अहि रहस्यक छेदन नीति शास्त्रा ज्ञाता कइएक बेर क' चुकल छथि। हुनका लोकनिक अनुसारे पति-पत्नीक ग्रह-नक्षत्रा कतबो उल्टा-पुल्टा किएक ने हौउक, प्रचुरता एवं परिपक्कता बेला मे कखनहुँ काल अर्द्ध-विराम पूर्ण विराम भैए जाइत छैक। पुजारीजीक पुत्रक नाम रहनि यदुनाथ ओझा। पैघ भेला पर यदुनाथक उपनयन भेलनि आ बर्ख भरिक भीतरे विवाह सेहो भ'गेलनि।

यदुनाथक पत्नी अर्थात पुजारीजीक पुतहु जखन दुरागमन भेला पर सासुर अयलीह त' हुनक अनुपम सौन्दर्यक दुआरे सम्पूर्ण पानापुर गाम महमही सँ गमकि उठल। यदुनाथ त' अपन बापक कार्बन कॉपी छलाह। मुदा हुनक पत्नी जनिक नाम छल कामिनी, तनिका जे देखलक सैह विभोर होइत बाजल छलदु'' माइ गे माइ! एतेक रूप पुजारी जीक सन्दुक-पेटार मे झाँपल कोना रहतैक? कोनो अनहोनी ने भ' जाइक?''

अष्टमीक निस्तब्ध राति। पानापुर गामक सभटा मनुक्ख भरि दिन नाच तमासा देखलक, इच्छा भरि नशा केलक आ भरि पेट माँउस-भात खाए थाकि क' झुरझमान भ' सुति रहल। मुदा चोर-उचक्का, अत्याचारी एवं व्यभिचारी किस्मक लोक कैँ राति मे निन्न होइते ने छैक। ओहन लोक रातिए मे अपन इच्छा-पूर्तिक जोगार करैत अछि। ओहने राक्षस प्रवृतिक

श्रेणी मे छल बिदेसरा कुएक। गाम मे एकटा अस्पताल अवस्से छलै। मुदा डाक्टर महिना, दू महिना मे कहिओ काल अबैत छलाह। गामक स्वास्थ्य विभाग कुएकक जिम्मा छल। ओना सड़क-छाप बहुतो कुएक छल। मुदा बिदेसरा कुएक सभ सँ तेज-तर्रार मानल जाइत छल। ज्वर-धाह राति-विराति कखनो-ककरो भ' सकैत छलै। ताहि कालक भगवान छल बिदेसरा कुएक। ककरा मे एतेक साहस रहै जे बिदेसरा कुएक सँ तकरार करितय। नाड़ी देखै लेल अथवा सूइया भोंकै लेल बिदेसरा कुएक ककरहु आंगन मे कखनहुँ प्रवेश क' जाइत छल। ओकरा कोनो रोक-टोक नहि रहैक।

जहिया सँ यदुनाथ दुरागमन करा क' अयलाह आ सुन्दर कनिआँक कारणें गाम भरिक छौंड़ा सभहक बीच इर्खाक मूर्ति बनलाह तहिया सँ बिदेसरा कुएक हुनका मे अधिक काल सटले रहैत छल। चाह-नास्ताक संग चोटगर-मिठगर गप-सप कहि बिदेसरा कुएक यदुनाथक मोन कँ मोहैत रहल आ अन्ततः हुनकर अभिन्न मित्रा बनि गेल। एहना मे जिगरी यार बिदेसरा कुएकक फर्माइस यदुनाथ पूर्ति कोना नहि करितथि? ओही अष्टमीक राति बुझू निशा पूजा निमित्ते, दुनू यार बैसल रहथि। स्थान छल यदुनाथक शयन-कक्ष। पुजारीजीक आवास मे पहिने छल कनेटा खुजल दरबज्जा। तकरबादक कोठली मे पुजारीजी पत्नीक संग रात्रि विश्राम करैत छलाह। तकर सटले भंडार आ भनसाघर। सभ सँ अन्त मे जे कोठली छल सैह भेल यदुनाथक शयन-कक्ष। दुरगमनिआँ पलंगक एक कात टेबुल आ कुर्सी। देवाल पर सिनेमाक अभिनेत्रीक नयनाभिराम फोटोक बीच भगवतीक फोटो। खिड़की-केबाड़ पर्दा सँ झाँपल।

दू गोट कुर्सी पर यदुनाथ आ बिदेसरा कुएक आमने-सामने बैसल छल। बीचक टेबुल पर एकटा फूलदार विदेशी शराबक खुजल बोतल, पानि सँ भरल जग आ दू गोट शीशाक गिलास राखल रहैक। ताही काल यदुनाथक कनिआँ कामिनी छिपली मे भुजल माँउस टेबुल पर रखलनि आ पतिक अगिला आदेशक प्रतीक्षा मे एक कात ठार भ' गेलीह। हुनक गोरकी बाँहि मे सटल करिका ब्लॉउज ककरो एक बेर आरो देखिकए लोभ मे पटकि सकैत छल। बिदेसरा कुएक अपन नजरिक नोक कँ कामिनीक उठल ब्लॉउज मे भोंकैत बाजलदृ''यार, एतय सभ ठर्रा पिबैत अछि। मुदा अहाँ लेल हम दरिभंगा सँ सय टाका मे असली अस्सी प्रतिशत प्रूफ अल्कोहलबला 'जीन' मंगौलहुँ अछि। आब बिलम्ब नहि क' एकरा टेस्ट करियौ।''

दू टा गिलास मे शराब ढारल गेल, पानि मिलाओल गेल, गिलास टकराओल गेल आ तखन दुनू यार पिअब शुरू केलनि। माँउस निघंटि गेल। कोनो बात ने, कामिनी छिपली भरी भूजल माँउस फेर सँ अनलनि।

यदुनाथ पहिले पैग मे डोलि गेल छलाह। शराब पचेबाक ने हुनका काया रहनि आ ने प्राइटिस। दोसर पैग समाप्त करैत-करैत यदुनाथक आँखिक डिम्हा सँ टर्चक फोक्सिंग बाहर होब' लगलनि। तेसर पेगक आरम्भे मे कामिनी फेर सँ भूजल माँउस आन' चलि गेल रहथि। जाबे ओ घूमि क' एलीह ताबे हुनक नाथ पलंग पर चित बेहोश पड़ल रहथिन आ हुनकर थुथून सँ साँ-सौंक अबाज प्रसारित भ' रहल छल।

कामिनीक हाथ मे तेसर खेपबला भूजल माँउसक छिपली छलनि। ओ थकमकाइत ठार भ' गेलीह आ पलंग पर पड़ल अपन स्वामी कँ टकटक देख' लगलीह। किछु समय लेल कामिनीक मस्तिष्कक सोचक यंत्रा मे ब्रेक लागि गेलनि।

बेगूसराय सँ खगड़िया जेबाक 'हाइ वे'क दक्षिण गंगाक तटपर बसल छल पिहुआ नामक गाँव। ओही गामक मंदिरक पुजारीक कन्या छलीह कामिनी। गंगाजल सँ घोअल मंदिरक पवित्र परिसर मे कामिनीक जन्म आ पालन-पोषण भेल रहनि। सासु-ससुरक सेवा एवं पतिक आदेशक पालन करबाक बीज मंत्रा ल'क' कामिनी सासुर आयल रहथि। मुदा सासुरक वातावरण किछु अलगे तरहक रहैक। सासुक बीड़ी पिअल मुँहक गंध सँ कामिनी कँ मितली होब' लागनि, असरधा होनि। मुदा ओ अपना कँ रोकथि आ बुझबथिईकोनो बात नहि। नव स्थान मे एना प्रायः होइते छै। सभटा अपने आप ठीक भ' जेतै! केवल धैर्यक निर्वाह चाही। यद्यपि ई बात हुनका कियो सिखौने नहि छलनि। मुदा आन-आन नव विआहलि कन्या जकाँ एकर विश्वास हुनकर संस्कार मे पहिने सँ छलनि जे पति हुनकर रक्षक छथि, परमेश्वर छथि। तखन चिंता कथिक? मुदा एखन त' हुनकर रक्षक, परमेश्वर बेसुध भेल पड़ल छथि। एखुनका बयस तक कामिनी कँ नीक-बेजायक कोनो टा ज्ञान नहि भेल छलनि। तँ कामिनीक लेल एखुनका परिस्थिति अप्रत्याशित आ ओझरायल सन छल। ओ काठ बनलि ठार रहि गेलीह।



कृपानन्द झा (1970-),

जन्म- समौल, मधुबनी, मिथिला। गणितमे स्नातकोत्तर (एल.एन.एम.यू, दरभंगा), बी.लिब. (जामिया मिलिया इस्लामिया) आ सोचाना विज्ञानमे एसोसिएटशिप, आइ.एन.एस.डी.ओ.सी., नई दिल्ली। कृपानन्द जी मीरा बाइ पोलीटेकनिक, महारानी बाग, नई दिल्लीमे व्याखाता छथि। कृपानन्दजी यूथ ऑफ मिथिलाक अध्यक्ष छलाह आ एखन अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक जेनरल सेक्रेटरी छथि। हिनकर ६ टा शोध पेपर सूचना प्रबन्धनक क्षेत्रमे प्रकाशित छन्हि, संगहि हिन्दी आ अग्रेजीमे एक-एकटा कविता सेहो प्रकाशित छन्हि।–**सम्पादक**

चौकपर आणविक समझौताः

साँझ काल गामक चौकपर गहमा-गहमी छलैक। टोनुआँक दोकानपर चाहक गिलास खनखना रहल छलैक मंडलजी पान लगेवमे व्यस्त छलाह। कनीक दूरपर दुर्गा मन्दिरक पुवरिया कात बनल चबुतरापर दस-बारह युवा आ वृद्ध सम सामयिक चर्चामे मग्न छलाह। बीचमे मन्नू भाइक आवाज जोड़सँ आयल। "हौ! एहन कोन आफद आबि गेलैक अपन देशपर जे प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंहजी अपन देशक वैज्ञानिकक लगभग पछिला पचास वर्षक तपस्या आ अनुसंधान तथा भविष्यक आणविक सामरिक अनुसंधानकेँ अमेरिकाक हाथ बंधकी रखबापर उतारु भय गेल छथि।

गगनजी चबुतरापर सँ उचकि पानक पीक कातमे फेकैत कहि उठलाह, "कक्का! एहन बात नहि छैक। ई समझौता मात्र अपन देशक महज ऊर्जा आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि कएल गेल-हँ!..

मन्नू भाई तम्बाकू ठोढ़मे दैत कहलखिन, "है। ई ऊर्जा आवश्यकता महज बहाना छैक। अमेरिका एहि बहाने अपन देशक स्वतन्त्र आणविक कार्यक्रममे टाँग अड़ेबाक फिराकमे बहुत दिनसँ छल। आब ओ अपन मनशामे १२३ समझौता आ ओहिमे हाइड एक्टक प्रावधान सौँ सफल भय रहल अछि"।

गगन जी थोड़ेक चिन्तित मुद्रामे कहलखिन- "देखियौ कक्का, जहाँ तक १२३ समझौता आ भारतक आणविक सामरिक कार्यक्रमक प्रश्न छैक तँ मात्र ओ सब रियेक्टर अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सीक देखरेखमे आनल जेतैक, जे सब रियैक्टर, भारत सरकार चाहतैक। तँ बाकी कार्यक्रमपर एकर असर नहि परतैक"।

"हाँ हौ! लेकिन ई अनबाक कोन जरूरी छैक?" मन्नू भाई आवेशमे बजलाह। ताधरि बैंकर सैहैब सेहो सहटि कय चबुतरा दिश आबि गेल छलाह। गम्भीर आवाजमे मन्नू भाईकेँ सम्बोधित कय कहलथिन- "भाई, किछु एहन प्रावधान सभ जरूरी छैक एहि समझौतामे, परन्तु ई सभ निर्भर करैत छैक जे भविष्यमे भारतक स्थिति अंतर्राष्ट्रीय स्तरपर कतेक मजबूत रहैत छैक आ हमर राजनीतिज्ञ सब परिस्थितिसँ कतेक फायदा उठबैत छथि। कारण जे ड्राफ्ट एखन प्रस्तुत कएल गेल छैक ताहिमे कोनो कन्फ्लिक्टक स्थितिमे की कदम उठायल जायत आ ओ भारतक फायदामे होयत वा नुकसानमे से ओहि समयक देशक कूटनीतिज्ञ एवं अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितिपर निर्भर करत। परंच, वर्तमान परिस्थितिकेँ अगर देखल जाय तँ हमर देशक आणविक विद्युत उत्पादनक वर्तमान क्षमता मात्र ४०-५०% उत्पादन भय रहल अछि बाँकी आगू जे योजना छैक ओकरो अगर ध्यानमे राखल जाय तँ कहल जा सकैत अछि जे आणविक इन्धन एवं शान्तिपूर्व आणविकौपयोगसँ जुड़ल किछु तकनीककेँ यथाशीघ्र आवश्यकता छैक।

"हौ बैंकर! ई पक्ष तँ छैक परंच एखनहु अगर सरकार आंतरिक संसाधनकेँ सही ढंगसँ दोहन करय तँ ई आणविक इंधनक समस्या अल्पकालिक साबित होयत"। मन्नू भाई किछु शान्त मुद्रामे बजलाह। अपन बातकेँ आगू बढ़बैत कहलखिन जे "हौ, एखनहु जे योजना सब झाड़खण्डक (जादूगुड़ा, बन्दूहुरंग, तुरमडीह) आन्ध्र प्रदेशक (तुम्मालापल्ली) कर्णाटक, मेघालय आ राजस्थान आदि राज्यमे चलि रहल छैक ओ अगर सही ढंगसँ कार्यान्वित कयल जाय तँ आणविक इन्धनक ई वर्तमान समस्याक समाधान आसानीसँ कयल जा सकैछ"।

चबुतराक उतरवरिया-पछवरिया कोनापर बैसल टुन्ना बाजि उठल, "यौ कक्का, मंडलजी पानक दोकान आब बन्द करताह! ८ बाजि रहल छैक"।

बैंकर सैहैब जोड़सँ कहलखिन- ''यौ मंडलजी! आठटा पान लगाकऽ एमहर पठाऊ''।

चबुतराक पछवरिया कातमे मजहर सोचपूर्ण मुद्रामे साँझेसँ बैसल सबहक गप सुनि रहल छलाह। बैंकर सैहैब मजहरकेँ कहलखिन- ''हौ मजहर! तूँ तँ एखन कम्पीटिशन सबहक तैयारी कए रहल छह। तूँ एहि सम्पूर्ण प्रकरण पर बहुत मंथन कयने हेब। आखिर तोहर सोच की छह''?

खखसि गरदनि साफ कय खखाड़ कातमे फेकैत बजलाह- ''भाईजी! अंतर्राष्ट्रीय आ आर्थिक नीति काफी संकीर्ण विषय छैक। पहिल बात अछि जे हमरा लोकनि एन.पी.टी.पर हस्ताक्षर केने बिना अंतर्राष्ट्रीय आणविक बाजारमे सेन्ह (सेन्ध) मारवाक कोशिश कय रहल छी। एहि हालतमे किछु ने किछु अंतर्राष्ट्रीय बंधन तँ स्वीकार करहिये परत। परन्तु हम एकरा एकटा अवसरक रूपमे देख रहल छियैक। आणविक क्षेत्रक किछु एहन पक्ष छैक जाहिमे हमर देशक अनुसंधान शायद अमेरिकोसँ ऊपर अछि। हालमे एकटा रिपोर्ट पढ़ने रही, जाहिमे कहल गेल छैक जे भारतक वैज्ञानिक २००५ आ २००६ मे प्रकाशित अनुसंधान रिपोर्टक आधारपर तकनीकी रूपसँ समृद्ध देश सबकेँ सेहो पाछू छोड़ि आगू बढ़ि गेल अछि। एहि स्थितिमे आणविक इन्धन आ किछु तकनीकक आयात तँ महज अल्पकालिक छैक। दीर्घकालिक असर हमरा जनैत ई हेतैक जे भारत किछु दिनका बाद आणविक क्षेत्रमे एकटा पैघ निर्यातक भऽ कऽ उभरत। एकरामे तकनीकी क्षमता छैक आ आन्तरिक आणविक साधन, जे किछु काल पहिने चर्चा भेल जेना, झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश, मेघालय आदिमे उपलब्ध छैक तथा अंतर्राष्ट्रीय आणविक सहयोगक माध्यमसँ एकटा पैघ निर्यातक भेनाइ सम्भव छैक।

तँ हेतु हमर तँ एतबय कहब अछि जे जौँ एहि समझौताकेँ सही ढंगसँ उपयोग कयल जाय तँ ई अपन देशक लेल वरदान साबित होयत''।



कृष्णमोहन झा (1968-)

जन्म मधेपुरा जिलाक जीतपुर गाममे। ''विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट'' विषयपर जे.एन.यू. सँ एम.फिल आ ओतहिसँ ''निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में प्रेम की परिकल्पना'' विषयपर पी.एच.डी.। हिन्दीमे एकटा कविता सँग्रह ''समय को चीरकर'' आ मैथिलीमे ''एकटा हेरायल दुनिया'' प्रकाशित। हिन्दी कविता लेल ''कन्हैया स्मृति सम्मान''(1998) आ ''हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार'' (2003)। असम विश्वविद्यालय, सिल्चरक हिन्दी विभागमे अध्यापन।–**सम्पादक**

दुनूकेँ

माछकेँ देखैत अछि स्त्री

स्त्री केँ देखैत अछि माछ

अहाँ दुनू केँ देखि रहल छी



कुमार मनोज कश्यप

जन्म : १९६९ ई मे मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाम मे। स्कूली शिक्षा गाममे आ उच्च शिक्षा मधुबनी मे। बाल्य काले सँ लेखनमे आभरुचि। कैक गोट रचना आकाशवाणी सँ प्रसारित आ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रिय सचिवालयमे अनुभाग अधिकारी पद पर पदस्थापित।–**सम्पादक**

हारल मनुक्ख

बरी काल सँ प्रतीक्षा कऽ रहल छलहु बसए के। गामक कोनो बस आबिये नहिं रहल छलै। एक तऽ प्रतीक्षा ओहिना कष्टप्रद, तहु मे जेठक दुपहरिया मे। रौद आ पब्लिक ट्रांसपोर्टक स्थिति ---- खिन्न भऽ गेल मोन। समय बितेबाक आर कोनो साधन नहिं देखि, मोन नहिंयो रहैत ठंढा पिबाक लेल बढि गेलहु सामने के रेस्टोरेंट दिस -- छाँह तऽ भेटबे करत, सँगहि प्रतीक्षा के घड़ी सेहो बितत। बस एबा मे एखन आधा घंटा सँ कम समय नहिंये लगतैक।

रेस्टोरेंट के तजबीज करैत आगू बढल जाईत छलहुँ कि केयो रस्ता रोकलक - जिर्ण, मलिन, बृद्ध नहिंयो रहैत बृद्ध सन - लाठी लेने " भैया! दू रुपैया हुअय तऽ दऽ दियऽ, ट्रेकर पकड़ि गाम चल जायब। पायरे नहिं गेल भऽ रहल आछ ।" आबाज मे एकटा संकोचक सँग दयनियता साफ झलकैत छलैक । तखने हमरा आगू मे नाचि गेल भीख माँगबाक नव-नव ढ़ब़ मोन परऽ लागल पढ़ल आ सुनल खिस्सा सभ जे कोना लोक ठका गेल ई सभ ढ़ब पऱ। ओकर याचना के अनसुना करैत हम बढ़ि गेलहुँ रेस्टोरेंट दिस ।

बस अयला पर खिड़की कात सीट पर बैसि सुभ्यस्त भेलहुँ। कने काल मे बस चलि पड़ल। रस्ता कात मे सहसा ककरो पर नजरि पड़ि गेल चौंकलहुँ - 'ई वैह आदमी तऽ नहिं जे हमरा सँ दू रुपैया मँगैत छल?' दिमाग पर जोर देलहुँ हँ ई तऽ वैह आदमी आछ़क़हुना-कहुना कऽ डेग बढबैत लगभग घिसियैत जँका --चलल जा रहल आछ गंतव्य दिस। ई दृश्य हमरा विचलित करऽ लागल हमर अंतरात्मा कचोटि उठल - 'दू रुपैया! मात्र दू रुपैयाक लेल बीमार - असक्क के पायरे जाय पड़ि रहल छैक आ तों मोन नहियो रहैत दस रुपैया ठंढा पी कऽ बर्बाद कऽ देलह! धिक्कार एहन मनुष्यता के!' अपराध बोध सँ हम आकाश दिस देखैत ओकर शून्यता मे विलिन भेल जा रहल छी।

थाकल बाट

"सर, हमर मीटरक फाईल कहाँ तक पहुचलई?"

"उपर सँ नहि लौटलै"-बिजली ऑफिसक कर्मचरीक ई चिरपरिचित उत्तर फेर हमर कानमे गेल। उत्तर जेना स्टीरियोटाईप, प्री-रिकोर्डेड, बिना कोनो जाच-पड़ताल, नाम-पता पुछने, पेप्पकल सन। १५ दिन भऽ गेल बिजली ऑफिसक चक्कर लगबैत आ यैह उत्तर सुनैत ।

"अरे ई सभ बड घाघ होईत छई। बिना 'सेवा' के किछु नहि हेतौक। परेशानी सँ बँचैक छहु तऽ सेवा करहि परतौ" - अपन मित्र प्रभासक ई सलाह कचोटैतो मोन सँ मानहिं परल - विवसतामे। आखिर नोकरी छोड़ि कतेक दिन दौरैत रहब - अनायास, अनर्थक, आश्रत।

बिजली विभागक कर्मचारी 'सेवा' पबिते झट् दऽ हमरा आदेश-पत्र थम्हा देलक। जेना ओकरा सँपौती अबैत होईक- हमर मोनक आशय ओ पहिने बुझि गेल हो आ आदेश पहिने सँ तैयार रखने हो- हमरा देबाक हेतु। कायल भेलहुँ हम 'सेवा' महिमा सँ। विजयी भाव सँ आदेश-पत्र कें देखैत हम बाहर निकलि रहल छलहु कि नजरि परल कातमे लटकल बोर्ड पर जाहि पर मोंट आखरमे लिखल छलै -"रिश्वत लेना एवं देना जुर्म है।" भने लोक पानक पीक फेकि विकृत कऽ देने छलै ओकरा। उपयुक्त चिज उपयुत्त जगह रहक चाही। रस्तामे फेकना भेटल बड़का लग्गा सँ बिजलीक तारमे टोका फंसबैत। हमरा देख कऽ मुस्कियायल ओऽ। लागल जेना हमर मुँह दुसि रहल हो।

भावना

जेठ महिना मे तऽ सूरज जेना भोरे सँ आगि उगलऽ लगैत छैक। दुपहरिया तक तऽ वातावरण ओहिना जेना लोहा गलाबऽ बला भट्ठी। छुट्टी के दिन रह्ने भोर मे देरिये सँ उठलंहु; साईत तहु द्वारे कनिया भानस करबा मे अलसा रहल छलीह। अंततोगत्वा निर्णय भेल - भोजन बाहरे कएल जाय।

घर सँ बाहर निकललहुँ। बाहर एकदम सुनसान - एक्का दुक्का लोक

चलैत - सेहो साईत मजबूरीये मे। कियैक निकलत केयो घर सँ एहन समय मे? एहन रौद मे निकलनाई कोनो सजा सँ कम थोड़बे छैक। बड़ मसकत्ति के बाद एक टा रिक्सावला तैयार भेल लऽ जेबाक हेतु। रिक्सावला कि - अधबेसु, कृशकाय, हँपैत्। रेस्टोरेंट पँहुचि भाड़ा पुछलियै। कहलक दस रुपैया। कनिया लड़ि पड़ली ओकरा सँ -"पांच रुपैया के दस रुपैया मंगैत छैंह! हमरा सभ कें बाहरी बुझैत छैं कि? ठक्क नहिंतन! एना जबर्दस्ती सँ बढिया होयतौक जे पौकेट सँ पाई निकालि ले। बजबियौ पुलिस के?" बेचारा रिक्सावला घबड़ा गेल। पसेना सँ मैल-चिक्कट भेल गमछा सँ अपन मुंह पोछैत, बिना किछु बजने पांचक सिक्का लऽ कऽ चलि गेल बिना किछु बजने निरीह।

रेस्टोरेंट मे भोजनोपरांत हमरा दस रुपैया टीप के रुप मे छोड़ैत देखि कनिया बजलिह - " अपना स्टेटस के तऽ कम-सँ-कम ध्यान राखू। की दसे रुपैया दैत छियई - पाछाँ सँ गरियाओत" एतबा कहि झट सँ पचासक नोट बिल-फोल्डर मे छोड़ैत हमरा चलबाक ईसारा केलनि। आकस्मात हमरा आंखिक आगाँ रिक्सावलाक चेहरा मूर्तिमान भऽ उठल। तुलना करऽ लगलँह - रेस्टोरेंटक वेटर आ रिक्सावला मे - एकटा वातनुवूलित कक्ष मे भोजन परसैत आ दोसर रौद मे कोंढ़ँ तोरैत। भवनाक अंतर सँ सिहरि उठलँहु हम।

बी०डी०ओ०

ओकर असली नाम की छलैक से तऽ नहिं कहि; मुदा हम सभ ओकरा 'माने' कहि कऽ बजबैत छलियैक। कारण, ओ बात-बात पर 'माने' शब्दक प्रयोग करैत छलीह। से 'माने' ओकर नामे पड़ि गेलई भरि गामक लोक लै। बाल-विधवा, संतानहीन 'माने' हमर घरक सदस्या जकाँ छलीह। हमरा बाद मे बुझवा मे आयल जे 'माने' हमरा ओहिठाम काज करैत छलीह। बृद्धावस्था के कारणे आब काज तऽ नहिंये कऽ सकैत छलीह; हँ दोसर नोकर-चाकर पर मुस्तैद भऽ काज धरि अवश्य करबैत छलीह।

प्रधान मंत्रीक मधुबनी आगमन के लऽ कऽ लोक मे बेसी उल्लास आ उत्साह छलैक, सभ साक्षात दर्शनक पूण्य उठाबऽ चाहि रहल छल। लोकक एहि ईच्छा के पुरा करबा मे सहयोग दऽ रहल छलाह पार्टी कार्यकर्ता लोकनि जे बेसी-सँ-बेसी लोक के जुटा अपन शक्ति प्रदर्शन करबा लेल मुपत्त सवारी के व्यवस्था केने छलाह। हम मजाक मे 'माने' सँ पुछलियै- " प्रधान मंत्री मधुबनी मे आबि रहल छथिन। अपन गामक सभ केयो जा रहल अछि देखऽ। अहाँ नहि जायब?"

"के अबैत छथिन?"-माने पुछलनि।

"प्रधान मंत्री।"-हम उत्तर देलियै।

"धुर! ओ कोनो बी०डी०ओ० छथिन जे 'बिरधा-पेलसुम' (वृद्धावस्था पेंसन) देताह। हम अनेरे की देखऽ जाऊ हुनका ?"

हम अवाक रहि गेलंहु माने के उत्तर सँ।

नव-वर्ष

शहरी संस्कृति मे नव-वर्षक बड़ महत्त्व भऽ गेलैक आछ। चारु कात उल्लास, आनंद्र कोनो पाबनि-त्योहार सँ बेसिये। लोक पुरनका बितल साल सँ पिण्ड छोड़ा नवका साल कँ स्वागत करय मे बेहाल एहि मे केयो ककरो सँ पाछाँ नहिं रहऽ चाहैछ । धूम-धड़क्का, नाच-गान् आई जकरा जे मोन मे आबय कऽ रहल अछि नया सालक स्वागत मोन सँ कऽ रहल आछ । मुदा सब केयो थोड़बे?

शहरक एहि उल्लास के नहि बुझि पाबि; सुकना के सात सालक बेटा पुछिये देलकै ओकरा सँ -" बाबू, आई कि छियै जे लोक एना कऽ रहल आछ?"

"बाऊ, पैघ लोक सभक नया साल आई सँ शुरु भऽ रहल छै; तैं सभ पाबनि मना रहल आछ।"- बाल-मन कें बुझेबाक प्रयास केलक सुकना।

चोट्टहि प्र्श्नक झड़ी लगा देने छलई छौंड़ा - "हम सभ नया साल कियैक नहिं मनबैत छी ? हमरा सभक नया साल कहिया एतैक? हम सभ कहिया मनेबई नया साल?"

सुकना एहि अबोध कें कोना बुझबौक जे गरीबक कोनो साल नया नहिं होईत छैक। बोनिहारक सभ सांझ नया साल आ सभ भिनसर पुरान साल जकाँ होईत छैक। बोनिहारी भेटलई तऽ नूने-रोटी सही, परिवारक सभ व्यत्तिक पेट भरलैक ; नहि तऽ भुखले रहि गेल सभ गोटे। एना मे कोन सीमा-रेखा मजूरक लेल नया आ पुरानक भऽ सकैछ ज़ँ भऽ सकैछ तऽ एक मात्र मजूरी भेटब़ भेट गेल तऽ नया सालक खुशी; नहि भेटल तऽ पुरान साल सन दुख़ तै सभ सांझ नया साल आ सभ भिनसर पुरान साल।

बाप-बेटा दुनू चुप एक दोसराक मुँह देखि रहल छल साईत आँखि आँखिक भाषा बूझि गेल छलैक।

गजल

धज्जी रातुक श्याह आँचर मे,
अहल भोर के ताकि रहल छि।
अपन आंगन मे ठाढ़ हम, आई
अपने घर के ताकि रहल छि ।
आहत मोनक घायल तड़पन, पेध्ररो
आई कनाबऽ आयल।
जतऽ जलन के पीड़ा कम हो,
ओहन छाँह के ताकि रहल छी।
दोसरा कें कि दोष देबई हम,
अपनो सभ तऽ अंठिये बनला ।
याद ने कोनो बाँचल रहि जाय,
ओहन ठौर के ताकि रहल छी।
बगबाहो अपनहिं हाथें, आई कलम-
बाग सभ जारऽ आयल।
तड़पन जतऽ तड़पि रहि जायत,
ओहने कहर के ताकि रहल छि।
बिसरि गेल जे याद छलै, से सपना
कियैक याद दियौलक?
नोर ने ढ़रकय जाहि पलक सँ,
एहन आँखि के ताकि रहल छि।
निकलि गेलहुँ अछि सुन्न राह पर,
अन्हारेक टा सम्बल केवल।
अपन-आन केयो कतहु नहि, आई
ओहन दर के ताकि रहल छि।



अयोध्यानाथ चौधरी

धनुषा, नेपाल 1947-

मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक क्षेत्रमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कऽ भेल छनि। हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-संग्रह प्रकाशित छनि। सम्पादक

दू पत्र

अयोध्यानाथ चौधरी

अन्तत; आइ हम दिनेशकैँ पत्र लिखवाक लेल उद्यत भेलहुँ अछि। कागत-कलम सब दुरुस्त १९६९, माने ठीक ३६ वर्षक बाद। एतेक नम्हर अन्तराल ! की बूझत ओ ? खीझ होइत अछि हमरा जे जीवनमे एंकटा उत्साही पत्र लेखक किएक नहि वनि सकलहुँ हम ? एकटा सफल दायित्व किएक नहि निभा सकलहुँ हम ? जकरा हम पत्र लिखाक हेतु उद्यत भेलहुँ ओ हो त कहियो लिखवाक वात सोचि सकैत छल। खैर शरुआत हमरेसँ रहओ। ओकरा हेतु हमर पत्र एकटा अप्रत्याशित घटना सावित हेतैक 'अ सरप्राइज' आ, जौँ ओ जीवित नहि हो .... ? बहुत नम्हर अन्तराल भेलैक ने ! पत्र फिर्ता आबि सकैत अछि ....ओहि पर "डेड' जा मृत कोनो संकेत रहि सकैत छैक। एतेक निराशाजनक वात नहि सोचवाक चाही। ओहना स्थितिमे पोस्टमैन पत्र फारि-फेकिकऽ अपन मथ-दुक्खी सँ मृक्त भऽगेल रहत।

ई समय पत्र लिखवाक अनुकूल - बहुत अनुकूल वुझा रहल अछि। दशमीमे सब गाम अबैए- ओकरो जरुर गाम आवक चाही। तावत ओकर पत्नी, बेटा वा वेटी केओ ने के ओ पत्र सहेजिकऽराखि देने रहतैक। जाइ जमानामे हम सव 'ग्रैजुएशन' केने रही, ओइ हिसाव सँ ओ जरुर कोनो नोकरी मे हैत किएक त' नीक विद्यार्थी रहय। पता नहि पटना वोकारो, टाटा, दिल्ली कतऽ अइ..... आकि सुदुर दक्षिण केरला, मद्रास-नहि जानि कतऽ ?/

चारि वर्ष संगे अभिन्न रहवाक कारणे ओकरा पत्र लिखवामे एकटा 'पेन फ्रेन्ड' क मजा आओत। सबसँ पहिने तँ' ओकरा परिवाक हुलिया लेवऽ पडत। ओकरा परिवारमे के सब छैक ? के कतऽ की करैत छैक ? पत्रक सिलसिला जौ चालु भऽ जायत त कालान्तरमे इ हो बूझऽ मे आवि जायत जे ओकरा एकटा मनोनुकूल पत्नी भेटलैक की नहि..... आकी कोनो ना शेष जीवन वितावऽक क्रममे अइ।

याददाश्त वा फेहरिस्त रहत। तहिया सी. एम. कलेजक आलीशान आर्ट्स व्लक नव हेवाक कारणे विल्कुल कोनो सुन्दर कागज पर पारल रंगीन नक्शा वुझाइक पार्क जकाँ। जतऽ जाउ जेना पक्षीक झुण्ड आ कलरव पसरल। विशाल पुस्तकालय। वागमतीक मनोरम आ खतरनाक किछेर। रहस्यमयं गर्ल्स-कामन-रुम। विभिन्न विषयक अलग 'डिपार्टमेन्ट' आ ओ रहस्यमय कोठली, उपर हेवाक कारणे, छात्रसब कौखन कार्यवश, कौखन अनेरो, कोनो 'सरसँ भेटवाक वहानामे उपर भीड कऽदैक। परन्तु' जखन 'हुसैन' साहव माने वाइस प्रिन्सपल अपन 'चैम्बर सँ ' बहार भऽ केवल तर्जनी उठवैत छलाह तखन सब सिड़हीसँ नीचा भगैत छल कान कपार फुटवाक टांग टुटवाक कोनोटा डर नहि। हमरा सभक ग्रूपमे एकटा रीनिता नामक लड़की छलि 'जकरा मात्रे' कार प्रतिदिन कालेज पहुँचा जाइक। लक्ष्मी आ सरस्वतीक अपूर्व संयोग ! मांजल अंग्रेजी वजैत आ लिख्यैत छलि। फस्ट इयरमे 'विदेह'मे जे ओकर लेख छपैलक से लाजबाव रहैक शीर्षक छल "Exclusively ours "| लेख मार्फत ओ ओकरा सभक कोठलीक पर्दा हटा भीतरक बहुत रास रहस्योदघाटन कएने छलि। मुदा ओ एक बर्षक बाद नहि जानि कतऽ चल गेलि ? धनीक बापक वेटी रहए। प्राय: ओ कलेज झुझाअन लागल हेतैक।" Exclusively ours" एखनो कहियो काल पढि लैतछी मुदा

शीर्षकक तात्पर्य वुझवामे एखनो माथमे बल देवऽ पडैत अछि।

एकटा और घटना जकर हम सब कहियो नहि विसरि सकब। हम सव विश्वस्त छी जे जऔं पत्र लेखनक शुरुआत मित्र दिनेश राय दिससँ होइत त ओहो ओइ घटनाक चर्च जरुर करैत। हम सव भाग्यवान रही जे ओहो कोनो 'नन्दी' टाइटलवाली हमरे सभक ग्रुपक छलि आ वंगालिने छलि। ओकरा आँखिमे वास्तवमे एहन एकटा चमक छलैक जे आई ३६ वर्षसँ कतौ अन्तऽ नहिं अभरल, पता नहि ओ आँखि कतऽ अधि ? ओइ बड़का — बड़का आँखिमे ओ चमक विद्यमाने छैक वा मलीन भेलैक अछि ? जे किछु। मुदा सारा कॉलेज ओ जादुई आँखि देखने छल — देखैत छल। अनहोनी भए गेलै। एकटा हमरे सवहक सहपाठी लड़का ओकरा नाम पर — ओकर नाम लैत जहर खा लेलक मुदा समये पर अस्पताल पहुचाओल गेल आ जान वचि गेलैक। जंगली आगि जकाँ वात सौसे पसरि गेल। मुदा ओकरा लेल धन-सन। कोनो प्रतिक्रिया ने कोनो हलचल ने — सव किछु विल्कुल सामान्य। असलमे एक तरफा प्रेम छलैक। वात ओकरो तक जरुर गेल हेतै — लेकिन ओ वेहद गम्भीर जे छलि। Eng. Hons. Group मे टॉप कैलक। मुदा ओ जमाना वड़ वेजाए छलैक। लड़का — लड़कीमे बार्ताक संचार नहि होइत छलैक। लाख कोशिशक वाद हमरा आ दिनेशक मुँहसँ कंग्राच्युलेसन शब्द नहि फुटल — नहिए फुटल।

कालेज आ संवेदनशील घटना — संवेदनशील घटना आ कालेज — जेना एक दोसरक पर्याय रहैक। कतेक वात भेल। कतेक घटना घटल। मुदा पहिने पत्राचारक क्रम त शुरु होवऽ। दिनेश वहुत वातक जानकारी करा सकैए — ओहि पानि क' जे अइ। जन्मभूमि आ कर्मभूमि नेपाल भेलाक कारने बहुत रास अपन लोक छुटि गेल। ओना सीमा नहि बुझाइत छैक मुदा सम्पर्क जे टुटिगेल अछि। मुदा एकटा वात। एहि सन्धि-स्थल पर जीवाक अपन मजा छैक। कौखन उत्तराभिमुख, कौखन दक्षिणाभिमुख। दूटा संस्कृति मिश्रित जीवनक उत्फुल्लता — जुनि पुछू। पहाड़क गीत खोलामे झहरिकऽ समुद्रक लहरिमे विलन भऽ जाइत अछि। भास दू- मुदा भाव एके — ऐन-मेन। "जहाँ जहाँ वान्छौ तिमी, म पाइला वनि पच्छयाई रहन्छु " तु जहाँ-जहाँ चलेगा, मेरा साया साथ होगा"।

पहाड़क गीतक सन्दर्भमे १९७१ ई. क एकटा सांझ मोन पडैत अछि। काठमान्डौ सँ दूर उत्तर वालाजुउद्यानसँ उपर पहाडीपर English Language Trainning Institute द्वारा आयोजित वनभोज समारोह। नाच करैए ओ सव। कोन लड़का-कोन लड़की-नाचमे फर्क नहि वुझायत। निर्विकार। निर्विकार भऽ नाचत आ गाओत। मुदा एम्हर, अपना समाजमे लज्ज कलाके प्रस्फुटिता नहि होवऽ दैत छैक। गीत गओलक राममणि। सम्पूर्ण मण्डली अभिभूत आ मंत्रमुग्ध भऽ गेल। पहाडमे केवल निर्जीव पाथरे नहि होइत छैक। एकटा प्रशिक्षार्थी — एकटा शिक्षिकाक आँखिसँ नोर झहड़ए लागल आ समस्त वातावरण जेना जड़ भऽ गेल।, ओ गीत एखनो कहियो काल हंमरा मन-प्राणके जेना आन्दोलित कऽ जाइत अछि — "कोई जव तुम्हारा हृदय तोड़ दे .... " दुर्गम पहाडी गाममे एहनो गीत गाओल जाइत अछि- आ ओतुक्को लोक ओकर तात्पर्य बूझि विभोर भऽ जाइत अछि — हमरा आश्चर्य लागि गेल।

ओइ दिन हम पहाडक आँखि नोरायल देखने रही। स्पस्ट। निस्सन्देह। हमरा जनैत सैकड़ौ-हजारो वर्ष पहिने, कोनो युगमे ओइ गीत सँ बहुत बेसी, कैएक गुना वेसी दर्द-भरल गीत सुनि पहाड जे करुण क्रन्दन केने हैत तकरे फलस्वरुप एतेकं नदी नालाक जन्म भेल हैत। बहुत सम्भव गायक स्वंय Adam छल होयत आ सुननिहार ओकर प्रेयसी Eve।

राममणि शर्मा ओहि दिन सँ हमर अभिन्न भऽ गेल। ओकर आओर कतेक साथी सभक पता हमरा डायरीमे ओहिना पड़ल अछि। आव त डायरीक पन्न जीर्ण-शीर्ण भऽ पीयर भऽगेल अछि। आइए ३४ वर्षक वाद एकटा पत्र हम और लिखव, एखने लिखव ....।

१ जनवरी ,'०५

जनकपुरधाम

दिनेश भाइ,

नव वर्षक हार्दिक मंगलमय शुभकामना। आशा अछि लिफाफ पर हमरनाम पढलाक बाद हमरा चिन्हऽ मे एको क्षण देरी नहि लागल हैत। ओना किछु चौंकल जरुर होएब। से त स्वभाविके ....। कोनो अपराध वोध नहि भऽ रहल अछि। एकटा प्रश्न पुछै छिय। जीवन एना जटिल किएक भेल जा रहल छैक ? कतेक वेर विचार करैत छलहुँ .... आई लिखैछी, काल्हि पक्के लिखव .... मुदा आई .... जावत दुनूपत्र हम लिखि नहिलेव, तावत हमराअ चैन नहि .... चैन नहि ....।

शान्ति सदन, ढुहवी-१
(धनुषा)

डॉ. बलभद्र मिश्र,

सेवा निवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सा पदाधिकारी, पूर्णियाँ

लब्ध धौत प्रतिष्ठ पंजीकार- स्व. पं मोदानन्द झाजी- एक संस्मरण

स्व. पंजीकार जी विलक्षण प्रतिभा संपन्न व्यक्ति छलाह। हिनक संपर्क भेलासँ पूर्वहि सुनैत आएल छलहुँ कि शिवनगर (पूर्णियाँ, संप्रति अररिया जिला) निवासी पं. मोदानन्द झा जी पुबारिपारक एकमात्र सर्वश्रेष्ठ पंजीकार तऽ छथिए, संगहि संपूर्ण मिथिलाक मूर्धन्य पंजीकारक श्रेणीमे हिनकहु नाम लेल जाइत छलन्हि।

पंजीकारजी प्रतिवर्ष सौराठ सभा गाछी जाइत पुबारि-पछबारि पारक भेल विवाहक सिद्धान्तक लिपिबद्ध आदान-प्रदान करैत छलाह, जाहिसँ हिनक पंजी-पुस्तिका वृहदाकार होइत वंश परिचयक विशाल भंडारसँ सुशोभित अछि।

पंजीकारजी महाराज दरिभंगाक अध्यक्षतामे आयोजित ''पंजीकार धौत परीक्षा'' मे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कऽ ''लब्ध धौत प्रतिष्ठ'' भेल छलाह, जकर निर्णायक मण्डलमे महामहोपाध्याय सर गंगानाथ झाजी सम प्रभृति विद्वान लोकनि छलाह।

पंजीकारजी कतेको ठाम सम्मानित भेलाह, जाहिमे ''अखिल भारतीय मैथिल महासभा''क विद्वत् मंडलीसँ आदृत होइत विशिष्ट स्थान पौने छलाह। हिनक कृति एवं विलक्षण प्रतिभाक आलोकमे हिनक जीवनहि कालमे ''चेतना समिति'' स्वयम् आमंत्रित कऽ पंजीकारजीकेँ सादर सम्मानित करैत भेल।

जखन हमर विवाह १९५५ ई.मे पोर्णियाँ भेल तहियासँ पंजीकारजीक मृत्युसँ तीनमास पूर्व तक संपर्क बनल रहल। एहि तरहेँ पंजीकारजीक प्रति जे सुनैत आयल छलहुँ तकर यथार्थ अनुभूति हमरा पंजीकारजीक संगतिमे भेटल।

कतेको विवाह सिद्धान्त लिखबाक अवसर हमरा बुझना गेल कि- भलमानुष (जाति-पाँजि) व्यक्तिक वंश परिचय पंजीकारजी केँ जिह्वाग्र छन्हि।

यद्यपि वर कन्याक अधिकार देखबाक क्रममे पंजीकारजी केँ ''पंजी पोथा'' उलटबाक आवश्यकता नहि छलन्हि, तथापि कतहु गलती नहि भऽ जाय ई बुझि पोथा उलटबाक उपरान्ते अपन लिखित निर्णय दैत छलाह।

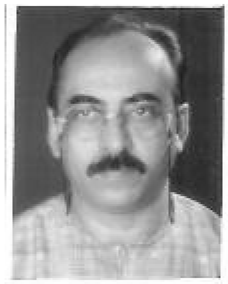
पंजीकारजी सदाचार सम्पन्न होइत सभ दिन अहं भावसँ निर्मुक्त रहलाह। हिनक रहन-सहन वेश-भूषा एवं टपकैत ओजस्विताकेँ देखि केओ अपरिचित व्यक्ति हिनक गुणसँ परिचित भऽ जाइत छल।

हम स्वयं पंजीकार जीक सद्विचार, सद्व्यवहार, सदाशयितासँ विशेष प्रभावित भेलहुँ। पंजीशास्त्रक गहन अध्ययन रहले सन्ताँ पूबारि-पछबारिक समन्वय करबाक स्तुत्य प्रयास जीवन भरि करैत रहलाह।

खुशीक गप्प जे पंजीकारजीक बालक श्री विद्यानन्द झा (मोहनजी) पंजीकारिताकक्षेत्रमे निष्ठापूर्वक अपन मनोयोग रखने छथि, जाहिसँ स्व. पं.मोदानन्द झा जीक आत्मामे अवश्ये शान्ति भेटैत होयतन्हि।

अन्ततः हम यैह कहब जे स्व. पंजीकारजीक प्रत्युत्पन्न मतित्वक आगाँ हम जे किछु कहि गेलहुँ से सूर्यकेँ दीप देखेबाक समान बुझल जाय।

एहन स्वनामधन्य पंजीकार स्व. पं. मोदानन्द झा जीकेँ मरणोपरान्त एक संस्मरणक रूपमे अपन श्रद्धा-सुमन अर्पित करैत हमर शतशः प्रणामा



श्री भालचन्द्र झा

ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे। थिएटर वर्कशॉप पर अतिथीय भाषण आ नामी संस्थानक नाटक प्रतियोगिताक हेतु न्यायाधीश। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक ''सीता'' केर निर्देशन। ''वासुदेव संगति'' आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.वी. मीडियामे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य- आभलमया (मराठी दैनिक धारावाहिक ६० एपीसोड), आकाश (हिन्दी, जी.टी.वी.), जीवन संध्या (मराठी), सफलता (रजस्थानी), पोलिसनामा (महाराष्ट्र शासनक लेल), मुन्नी उदाली आकाशी (मराठी), जय गणेश (मराठी), कच्ची-सौन्धी (हिन्दी डी.डी.), यात्रा (मराठी), धनाजी नाना चौधरी (महाराष्ट्र शासनक लेल), श्री पी.के अना पाटिल (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(नशा-सुधारपर), आहट (एड्सपर), बैंगन राजा (बच्चाक लेल कठपुतली शो), मेरा देश महान (बच्चाक लेल कठपुतली शो), झूठा पालतू(बच्चाक लेल कठपुतली शो),

टी.वी. नाटक- बन्दी (लेखक- राजीव जोशी), शतकवली (लेखक- स्व. उत्पल दत्त), चित्रकाठी (लेखक- स्व. मनोहर वाकोडे), हृदयची गोस्ता (लेखक- राजीव जोशी), हद्दापार (लेखक- एह.एम.मराठे), वालन (लेखक- अज्ञात)।

लेखन

बीछल बेरायल मराठी एकांकी, सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक १५० वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क धारावाहिकक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल-धारावाहिक), हेल्थकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।

थिएटर वर्कशॉप- कला विभाग, महाराष्ट्र सरकार, अखिल भारतीय मराठी नाट्य परिषद, दक्षिण-मध्य क्षेत्र कला केन्द्र, नागपुर, स्व. गजानन जहागीरदारक प्राध्यापकत्वमे चन्द्राक फिल्मक लेल अभिनय स्कूल, उस्ताद अमजद अली खानक दू टा संगीत प्रदर्शन।

श्री भालचन्द्र झा एखन फ्री-लान्स लेखक-निदेशकक रूपमे कार्यरत छथि।–**सम्पादक**

दू गो कविता

१. अपन अस्तीत्वक असली मोल

बुझबाक हुअए
यदि अपन अस्तीत्वक असली मोल
त पुछियौक सुकरातकें
देखबियौक ओकरा
विश्वक नक्शा पर
पहिने अपन ''देसक'' अस्तीत्व
ओहि देस मे अपन ''राज्यक'' अस्तीत्व
राज्य मे अपन ''जिलाक'' अस्तीत्व
जिला मे अपन ''गामक'' अस्तीत्व
गाम मे अपन ''घरक'' अस्तीत्व
आ तहन घर महुक ''अपन'' अस्तीत्व
आ ई सभ
''विश्वक नक्शा'' पर
से बूझि लियौक...

२. हमर माय

गर्भगृहक सुखासन सँ बहरेलहुँ
त हमर जन्मदात्री अपसियाँत रहय
भनसिया घर मे
तीतल जारैन कें धूआँ मे
करैत रहय धधराक आवाहन
देहक धौंकनी कऽकऽ
आ तहिया सँ लऽ कऽ आइ धरि
ओकरा आन कोनो ठाम नहिं देखलियैक
देखलियैक
त बस कोनटा घरक ऐँठार पर
सभक ऐँठ पखारैत
कखनो अँगना बहारैत
त कखनो जारैन बीछैत
कखनो कपड़ा पसारैत
त कखनो नेन्नासभक परिचर्या करैत
खिन मे जाँत पर, त खिन मे ढेकी पर,
चार पर, चिनमार पर

अँगनाक मरबा पर, घरक असोरा पर
दिन-दुपहर, तीनू पहर जोतल
कखनो दाईक चाइन पर तेल रगड़ैत
त कखनो छौंरी सभक जुट्टी गूहैत
राति मे पहिने दाईकँ
आ तहन बाबूकें पएर दबबैत
एहि तरहें ओकर जीवनक आध्यात्म
भनसिया घर सँ शुरू भऽ कऽ
भनसिये घर मे समाप्त भऽ गेलैक
झुलसैत देखलियैक चूल्हिक आगि मे
नारीक स्वतंत्रता, ओकर अस्मिता
ओकर मान आ स्वाभिमानकेँ
कहाँ भेटलैक पलखतियो ओकरा
एहि सभ दिसि ताकहो कैँ
आइ सोचै छी सेहो नीके भे्

अगिलुका पीढ़ी सचेत भऽ गेलैक
भलमनसियत सँ जँ नहिं भेटलैक
त छिनबाक ताकति भेटि गेलैक
मुदा ताँहिं की हमर मायक त्याग आ
बलिदान
ईब्सेन कें नोरा सँ अथवा गोर्कीक माय
सँ
रत्तियो भरि कम कहाओत?
हमरा जनितबे रत्ती भरि बेसिये बूझू

भरत माँझी

ओड़िया कवि

ओड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद शैलेन राउत्रॉय आ अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

हमर घुरलाक बाद

हमर घुरलाक बादो ओहि स्थानके
नहि छोड़ू रिक्त
पकड़ने रहू ओकरा।

फूल सभकेँ नहि फेकू
की कोनो महत्व अछि एकर जे
ओ टटका फुलाएल अछि आकि
अछि मौलाएल?

खोलू हमर सभटा नुकाएल
भोथियाएल स्वप्न,
ओकरा अलंकृत कए।

उनटि दिअ सभ ठामक लैम्पकें,
आ रोकि दिअ अन्हारक प्रति
घृणा

बिना घबरेने देखू समुद्र
आ तखनो नहि करू घृणा
अकाससँ।

नेहोरा अछि!!!

पृथ्वीकेँ बुझू एकटा सममिश्रित
स्थान

प्रयास करू आ ठाढ़ रहू ओतए।

कृपया बाट ताकू अपन
आ से करए काल, रहू जागल!

मोन राखू, हम घुरब एहि पृथ्वीपर
जे एहन एकेटा अछि
राखू मोन कि हम घुरब
हम बाउग केने छी पथकेँ
सरिसवक बीआसँ,
मोन राखू ओ पथ

भवनाथ 'दीपक'

अभियान गीत

उठह, उठह, उठह

चलह, चलह, चलह

बढह, बढह, बढह

घरक भेदभाव बूझि शत्रु आबि गेल

बुझा दियौक आन सँग एक बुद्धि भेल

विश्व मंच मध्य हम उचित जगह लेल

विशद विविध भेष

हरित भरित देश

जाति पाँति वर्ण धर्म भेद भाव हीन

राज पाट कर्म काज सब अपन अधीन

श्रमिक कृषक बुद्धिजीव, उद्यमी उदार

ग्रथित एक सूत्र मध्य व्यक्ति शत प्रकार

भुक्ति मुक्ति हेतु

वृत्त आइ एकताक सेतु

जनैत हित मिलैत माँटि

के सकत अनेर डाँटि !

सब प्रबुद्ध, सब सचेत

पैर पाछु क्यो न देत

देखाय देत शत्रुकेँ भैरवक स्वरुप

के अलच्छ निन्दमे रहत भसैत चूप ?

तिर्हुतिक माटिपर रहनिहार भाइ !

जन्म भूमि प्राण हेतु ठाढ हुअह आइ

लाख लाख कोटि कोटि केर प्रयाण

के कहैछ, मैंथिलीक पुत्र अल्पप्राण ?

लक्ष्य चीन्हि लेल आब निधि चीन्हि लेल

शत्रु मित्र केर भेद विधि चीन्हि लेल

उठह, उठह, उठह

चलह, चलह, चलह

बढह, बढह, बढह.....।



श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर" (१९५१-)

जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। सम्प्रति-जनकपुरधाम, नेपाल। त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., पी.एच.डी. (मानद)। **हाल:** प्रधान सम्पादक: गामघर साप्ताहिक, जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक, आंजुर मासिक, आंगन अर्द्धवार्षिक (प्रकाशक नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी)।

मौलिक कृति: बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे नहि जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)।

नेपाली कृति: आजको धनुषा, जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु (आलेख-संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु (अनुवाद)।

सम्पादन: मैथिली पद्य संग्रह (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान), लाबाक धान (कविता संग्रह), माथुरजीक "त्रिशुली" खण्डकाव्य (कवि स्व. मथुरानन्द चौधरी "माथुर"), नेपालमे मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोक नृत्य: भाव, भंगिमा एवं स्वरूप (आलेख संग्रह)। गामघर साप्ताहिकक २६ वर्षसँ सम्पादन-प्रकाशन, "अर्चना" साहित्यिक संग्रहक १५ वर्ष धरि सम्पादन-प्रकाशन। "आँजुर" मैथिली मासिकक सम्पादन प्रकाशन, "अंजुली" नेपाली मासिक/ पाक्षिकक सम्पादन प्रकाशन।

अनुवाद: भयो, अब भयो ("नहि आब नहि"क मनु ब्राजाकीद्वारा कयल नेपाली अनुवाद)

सम्मान: नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा पहिल बेर १९९५ ई.मे घोषित ५० हजार टाकाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कारक पहिल प्राप्तकर्ता। प्रधानमंत्रीद्वारा प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार प्रदान। विद्यापति सेवा संस्थान दरिभङ्गाद्वारा सम्मानित, मैथिली साहित्य परिषद, वीरगंजद्वारा सम्मानित, "आकृति" जनकपुर द्वारा सम्मानित, दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाद्वारा सम्मानित, जिल्ला विकास समिति धनुषा द्वारा दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल पुरस्कृत एवं सम्मानित, नेपाली मैथिली साहित्य परिषद द्वारा २०५९ सालक अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्वई द्वारा "मिथिला रत्न" द्वारा सम्मानित, शेखर प्रकाशन "पटना" द्वारा "शेखर सम्मान", मधुरिमा नेपाल (काठमाण्डौ) द्वारा २०६३ सालक मधुरिमा सम्मान प्राप्त। काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व।

सामाजिक सेवा : अध्यक्ष-तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुर, अध्यक्ष- जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपाध्यक्ष- मैथिली प्रज्ञा प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपकुलपति- मैथिली अकादमी, नेपाल, उपाध्यक्ष- नेपाल मैथिली थाई सांस्कृतिक परिषद, सचिव- दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुर, सदस्य- जिल्ला वाल कल्याण समिति, धनुषा, सदस्य- मैथिली विकास कोष, धनुषा, राष्ट्रीय पार्षद- नेपाल पत्रकार महासंघ, धनुषा।नेपालक साझा प्रकाशनक पहिल मैथिल/ मधेसी चेयरमैन **–सम्पादक**

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल

रामभरोस कापडि ‘भ्रमर’



चारिम वर्ष हम पटना गेल रही। चेतना समितिमे बैजू बाबू भेटलथि। विद्यापति स्मृति पर्व भ’ गेल रहै। कोनो आने सन्दर्भमे रही। ओ आवेशपूर्वक दिल्लीमे आयोजन होब बला अन्तर्राष्ट्रि मैथिली सम्मेलनमे अएबाक हेतु आमंत्रण देलनि। हमरा सभ लेखें पहिल आयोजन रहैक— हम आ डा. विमलकें जएबाक रहैक, मुदा जँ कि ओ बड हडबडीमे आ अस्पष्ट रुपँ अएबाक बात बाजल रहथि, हम सभ जा नहि सकल रही। बरु काठमाण्डूसँ धीरेन्द्र आ कमलेश झा गेल रहथि। ‘मिथिलारत्न’ सँ सम्मानित होइत गेलाह आ ओत्तहि घोषणा कएलनि— अगिला साल ई समारोह काठमाण्डूमे होयत। तालीक गडगडाहटि भेल।

जे से हम सभा जा नहि सकलहुँ। बादमे बैजू बाबूकें भेलनि जे नेपाल सँ किछु आरलोकनि छुटि गेलाह, अएबाक चाहियनि। ओ जनकपुर अएलाह आ धीरेन्द्र आदिसँ सम्पर्क कएलखिन्ह जे एहि वर्ष काठमाण्डूमे आयोजनक की तैयारी अछि। जे हुनका संग रहनि हुनक कथन अनुसार धीरेन्द्र आदि जे केओ गछने रहनि साफ पाछाँ हटि गेलनि। ओ मर्माहत भ’ जनकपुरसँ घूरि गेलाह। तखन ओम्हर जा मुम्वईमे आयोजन करबाक ब्योंत धरौलनि।

आब मुम्वईमे अएबालेल पुनः बैजू बाबूक आमंत्रण, आग्रह आ स्नेहपूर्ण दवाव आएल। रेवती जीकें सेहो आग्रह भ’ गेल रहिन—विद्यापति स्मृतिपर्वक अवसर पर दरिभंगेमे। ई तेसर सालक गप थिक। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन नेपाल— भारतक विद्वान, मैथिली सेवी सभक सझिआ मंच होएबाक हमर विश्वास मुम्वई चलबाले’ प्रेरित कएलक आ तखन दरिभंगासँ टिकट रिजर्बक व्यवस्था चन्द्रेशजी जिम्मा देल गेल। जेना बैजु बाबूक मुँहकहबी कार्यक्रम तहिना अस्पष्ट चन्द्रेशजीक ओरिआओन। हम सभ दरिभंगा पहुंचि दोसर दिन भेने मुम्वईक हेतु प्रस्थान कएने रही। मुम्वईक सम्पूर्ण कार्यक्रमक सन्दर्भमे पुस्तकमे आनठाम हमर विचार आबि चुकल अछि।

तहिना गत वर्ष कलकत्ताक तैयारी रहैक। एहि बेर हमरा पर थप भार द’ देलनि बैजू बाबू—‘मिथिला रत्न’क हेतु व्यक्तित्व चयनक। रेवती जीसँ सलाह कएल ओ— वदरी नारायणवर्माक नाम बतौलनि। हम डा. रामदयाल राकेशकँ एकरा लेल उपयुक्त वूझि दुनूक नाम बैजूबाबू लग पठा देलियनि। डा. राकेश कँ काठमाण्डूसँ बजाओल गेलनि। हम सभ निर्धारित तिथिकँ ‘गंगासागर’ सँ कलकत्ताक हेतु विदा भ’ गेल रही। ओत्त पहुंचलाक बाद स्टेशन पर ठाढ बैजू बाबू मोनकँ गदगद क’ देने रहथि।

तकरा बाद अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे नेपालक हमरा चारि गोटकैं फूटे कोठरीमे आवास देल गेल आ सम्मान सेहो। मैथिली सम्मेलनक अन्तर्राष्ट्रिय स्वरुप प्रदान करबा लेल हमरा सभक उपस्थिति जहिना अनिवार्य देखल गेल तहिना डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजूक व्यवहार ततबे सहज आ अपनत्व भरल।

आब चारिम चेन्नईमे अछि। तैयारी चलि रहल छैक। ओत्तहु नेपाल एकटा महत्वपूर्ण सहभागी रुपमे उपस्थित होयत तकर आशा करैत छी।

अनुभूति आ औचित्य

हमरा बूझल नहि अछि बैजू बाबू कोन उद्देश्य राखि ई अन्तर्राष्ट्रिय स्वरुपमे एकरा शुरु कएलनि। ओ एकर शुभारंभ मैथिलीकें अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटलाक बाद ताही तिथि २२ दिसम्वरकें कएलन्हि। जकरा अधिकार दिवसके रुपमे मनाओल जाइछ —२२ ता.क’ अधिकार दिवस आ २३ ता.क’ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन।

पहिल बेर दिल्लीक हेतु आमंत्रण भेटला पर हमरा सभक हिचकिचाहट, आयोजनमादे शंका ढेर सन छल। बैजू बाबूक संघर्षशील व्यक्तित्व प्रभावित त करैत छल, मुदा हरफन मौला काम काजसँ आशंका उठैत छल, पता नहि जे कहैत छथि, करबो करैत छथि वा नहि तए‘‘ दिल्लीक ओ सम्मेलन छुटल तकर हमरा काफी अफशोच अछि।

बादमे मुम्वई आ कलकत्ताक अनुभब काफी सकारात्मक, प्रशंसनीय आ अनुकरणीय रहल। अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक समस्त गरिमाकँ निर्वाह करबाक प्रयास ओ करैत छथि। कतौ स्थानीय आयोजक अपनासँ उत्रैस वुझाइत छनि तँ कतौ वीस। तए ‘‘परेशानी त हुनके उठब’ पडैत छनि। मुदा हम सभ जे अनुभव कएलहुँ ओ अत्यन्त काजक छल। मैथिली संसारक बहुतो साहित्यकार, सेवी, भाषाशास्त्री, संगीत एवं नृत्यकलाकार सभसँ भेंटघांट होइत अछि। सभक विचारक आदान—प्रदान होइत छैक। नव संसारक निर्माण होइत छैक।

भाषा, साहित्य, संस्कृतिक हेतु सेहो एहि सम्मेलनक उपादेयता स्पष्ट अछि। मैथिली भाषाक उत्थानक हेतु नव—नव योजना बनैत छैक। नव—नव पोथी प्रकाशित एवं विमोचित होइछ। विद्वान एवं प्रेमी लोकनि सम्मानित होइत छथि। सांस्कृतिक कार्यक्रममे नव—नव प्रतिभा आगां अबैत छथि। सम्पूर्ण मैथिल समाजसँ ओ प्रतिभा जुडैत अछि, जाहिसँ बादमे ओकर विकासक अवसर प्रदान होइछ। ‘राखी’ एकटा अपाहिज लडकी एहने प्रतिभा अछि जे सभकें प्रभावित कएने रहए। अमता धरानाक कलाकार लोकनि मुग्ध करैत छथि।

नेपाल आ भारतक बिचक सम्वन्धक नीक सूत्रपात ई सम्मेलन करैत अछि। नेपालक प्रतिनिधिके मंचपर उपस्थितिसँ दुनू देशक प्राचीन सम्वन्धमे ताजापन अबैछ। मुम्वई आ कलकत्तामे पंक्ति लेखकक भाषणसँ हजारोंक दर्शक दीर्धामे भेल तालीक गडगडाहटि तकर प्रमाण छैक। नेपालमे होइत मैथिली गतिविधिसँ

सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलकेँ, खास क' प्रवासी मैथिलकेँ जानकारी करएबाक ई सुन्दर अवसर होइत अछि, जकर उपयोग मुम्वई आ कलकत्ता दुनूठाम कएल गेल। कलकत्तामे नेपालमे मैथिली, नामक वूकलेट छपा वांटल गेल रहय तं राम भरोस कापडि 'भ्रमर'क सद्यः प्रकाशित पुस्तक'' राजकमलक कथा साहित्यमे नारी' विमोचित भेल। ओत्त गामघर साप्ताहिक विशेष अंक, नेमिकानन'क अंक सभ वांटल व विक्रय लेल उपलव्ध कराओल गेल। बहुतो साहित्यकार रुचिसं नेपालक भाषा, साहित्यक वारेमे जानकारी लेलनि। जानकारीक आदान प्रदान भेल। ज्ञान समृद्ध भेल।

तखन एखन धरि सहभागी भ' जे किछु अनुभव कएल अछि ओ एकर औचित्यकेँ स्वतः प्रमाणित करैत अछि। ई सम्मेलन निरन्तर जारी रहबाक चाही। वैजू बाबू जुझारु लोक छथि, आयोजनकें सफल बनएबा लेल अहर्निश खटैत छथि। हाथ, पएर, मुंह सभ धरबामे संकोच नहि करैत छथि मां मैथिलीक प्रतिष्ठाक हेतु। एहन विराट हृदयी, समर्पित आ लगनशील व्यक्तित्व भेने मैथिली समादृत भेलीह अछि।

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक अनुभूति किछु किछु सुझाव देबाक लेल हमरा उत्प्रेरित करैत अछि। जँ ई भ' जाइत त सोनमे सुगन्ध भ' जइतैक ___ ई हमरा लगैत अछि।

सूझाओ

१. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन हयबाक कारणें एकर वैनर जे बनैक ताहिमे नेपालक किछुओ प्रतीक चिन्ह अवश्य रहैक।

२. कार्यक्रम सभ व्यवस्थित आ पूर्व निर्धारित होएबाक चाही। कार्यक्रम चलैत बेरमे व्यवस्थापन करब अस्तव्यस्तता लबैत अछि।

३. सभ कार्यक्रम, सहभागी वीच एकदिन पूर्वे वितरीत भ' जाए तँ उत्तम

४. अधिकार दिवस दिन मात्र भाषण नहि, कार्यपत्र प्रस्तुति आ टिप्पणीक कार्यक्रम राखल जाए। नेपालक प्रतिनिधिकेँ कार्यपत्र आ बजबाक अवसर अवश्य देल जाइछ।

५. मूल समारोहमे नेपालक प्रतिनिधित्व मंच पर अवश्य होयबाक चाही। ओ उपस्थिति आ वक्ता दुनू रुपमे होए।

६. आवासक व्यवस्था प्रति सतर्क रहल जाए।

७ स्मारिकाक स्तरीय प्रकाशन हो, जाहिमे विगतक सम्मेलन सभक सन्दर्भमे आलेख आ चित्रवाली अवश्य देल जाए।

८. कलकत्ता सम्मेलनमे एकर निर्वाह भेल अछि, एकरा आगूओ एही रुपमे बढाओल जाए।

९. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक सहभागि सभक सूची १५ दिन पूर्व अन्तिम रुप द' सार्वजनिक क' देल जाइक आ संगहि 'मिथिला रत्न' पौनिहारक जीवनी फूटसँ प्रकाशित क' औचित्य प्रमाणित कएल जाए।

नेपालक साहित्यकार, मैथिली प्रेमी सभकेँ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनसँ बहुत किछु आशा छैक। दुनू देशमे मैथिली अपन अस्तित्व लेल लडि रहल अछि। एहनमे ई भेँटघांट, अप्पन___ अपनौती, दुख दुखक वंटवारा आपसी सम्वन्धकेँ सुदृढ त करबे करैत अछि, लक्ष्य प्राप्तिक हेतु मोनकेँ मजवूत सेहो बनबैत अछि।

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक महासचिव डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू एहि सम्वन्धक सूत्रकेँ गसिआ क' पकडने छथि। हुनक इएह स्नेह, सद्भाव आ अपनैती नेपालीय राजनीतिक इतिहासमे मिथिलाराज्य'क स्थापनार्थ शक्ति आ वातावरण निर्माणमे सहायक भ' रहल अछि। हुनक जुझारु व्यक्तित्व एत्त प्रेरणाक स्रोत रहलए। हमसभ एहि सम्वन्धक निरन्तरताक अपेक्षा करैत छी। आ नेपाल भारत बिचक आपसी आ प्रेमक प्रतीक रुपमे चलैत आबि रहल एहि सम्मेलनक सफलताक कामना करैत छी।

फ्लैश बैक-रामभरोस कपडि भ्रमर

नरेश पाछाँ चलि गेल अछि, बहुत पाछां। प्रायः पचास वर्ष पाछां। गामक सहपाठी सभक संगे खेलए ओ। बहादुर नोकर रहैक ___वावूजी जंगलकातसँ लओने छलाह। एक बोलिआ, आदेश चाही, काम फत्तह कइएक दम लैत छल। से बाबूजीकें आदेश रहैक ___ गुरुजीलग पढ ल जएबाक छै से बहादुर लाख चिचिऔलो पर नरेशकेँ कान्हपर बोकि कन्हाइ साहुक दलान पर गुरुजी लग दइए अबैक। ओत्त गेला पर गुरुजीक कांच करची अथवा खजूरक छडी ओकर सभ जीद हेरा दैक। ओ चुपचाप हाथमहक पाटीपर कारिख पोति कचरासँ साफ क चमकाब लागए आ तखन भठासँ लिखबाक प्रयास करए ___ क ख ग घ...।

''इस्स....'' गुरुजीक छडी जखन बाँहि पर पडैक तँ ओ लोहछि जाए। मन होइ भागि जाइ मुदा... वहादुरक डीलडौल आ पिताक आदेश मन पडितो मनमारि क पाटी पर आँखि गडा कखरा लिखबाक प्रयास कर लगए।

गुरुजीक ओहिठाम बटखरा कंठस्थ रहैक। ई कंठस्थ करब ओकर मजवूरी रहैक, ओना हिसावमे ओ ओहुना कमजोरी महशूस करए। चौठचन्दमे गुरुजीक संग घंटी बजबैत, काठक डंटाकेँ बजबैत घरे घरे घुमनाई आ गुरुजीक डेरापर जा गुडचाउरक प्रसाद खएनाईक अपन आनन्द रहैक।

आनन्द तँ पानि नहि पडने हर हर महादेव बना गाम घुमबै काल सेहो अबैक। कोनो सहपाठीकेँ सौंसे देहमे छाउर रगडि देल जाइत छलैक। माथपर आ बांहिमे सेहो अशोक पात सभ लपेटि देल जाइत छलैक। माथ पर जूट आ सनसँ जटा ताहिपर टीनकेँ कैंचीसँ काटि चान लटका देल जाइक। हाथमे वावाजीके त्रिशूल आनि क ध देल जाइक। वस वनि जाइक महादेब। छौडा सभक हेंज पाछां पाछां हाक परैत जाइक ___हर, हर महादेव पानी देऊ अलिकती पुगेन, बढी देउ ! भाव रहैक महादेव पानी दीअ, कम सँ नहि भेल, बेसी दीअ....। जकरा दरबज्जा पर जाइक पानि उझलि दैक। मान्यता रहैक पानि देलापर वर्षाक संभावना बढि जाइत

छैक। वेचारे महादेव बनल बौआ बादमे थर थर कांपए, वच्चा सभ ताली पिटैत हंसैक। वाल सुलभ प्रताडना ओहि समयमे खूब प्रचलित रहैक। नरेश ओहि हेंजमे अगुवा रहय....।

नरेशक ठोढ पर अपने आप मुस्की दौडि जाइत छैक। वितलाहा क्षणक स्मरण कतौसँ गुदगुदा दैत छैक ओकरा। वालशोषणक विरुद्ध ओहो कतेक आलेख लिखि चुकल अछि, कतेको सेमिनार मे भाग ल भाषण छोंटि चुकल अछि। मुदा नेनामे नेनेद्वारा कएल ई अपराध शोषण नहि रहैक ! नरेश वाल सुलभताक ओ क्षण फेरसँ स्मरण करैत सिहरि उठैत अछि आ कतौ भोतिआ जाइछ पुन.......।

मुश्किलसँ ७ ८ वर्षक छल हयत। गामेक स्कूलमे पढए, मुदा संगति रहैक अपने टोल महल्लाक धीआपूतासँ। ताही मंडलीमे एकटा छौरी रहैक इजोतिया। ओकरे लगुआक वेटी। नीक रहैक कि अधलाह ओकरा तहिया ज्ञान नहि रहैक मुदा ओकरा संगे इजोरिया रातिमे अन्हरिया इजोरिया खेलैत ओ खूब प्रशन्न रहल करए। आंगनेमे दुनूपयर आगाँ पसारि वैसि , वाँहिके केहुनी लगसँ मोडि आगाँ पाछाँ करैत आ ताही लयमे दुनू पयरके सेहो आगाँ पाछाँ करैत पाछा मुँहे घुसकैत इजोतिया खेलल करए आ गाओल करए "आगेमाई ककरी के बतिआ..." त ओकरा नीक लगैक।

इजोरिया रातिमे चानक चारुकात बनल गोल घेराकँ कौतुहल सँ देखैत काल माय रहस्यमय बोलीमे

समझबैक ई हमरा सभक पुरखा सभक वैसार छै इन्दर भगवान लग। कहै है निचाँ पानि विना अकाल पडल छै, पानि दिऔ। आब पानि हयबे करत....। नेनामे ई बात सत्य लगैक आ आश बन्हाई जरुर वर्षा हयत।

तेहने समयमे जट जटिन गीत होइक। टोलक महिला सभ जटा आ जटिन कनए आ गीत गाबि गाबि झूमए। ओहिमे पुरुष नहि, नेनाकँ छुट रहैक। नरेश नियमित ओकर दर्शक रहए, ओकर संगी इजोतिया ओहि मंडली मे सामिक रहैक, ओ एकटक ओकरा सभकँ झूकि क आगाँ बढैत आ तहिना माथ उठा क पाछाँ अबैत देखैत रहय.....।

नरेशकँ फेर किछु मोन पडैछै, ठोढ पर हँसी अबैत अबैत रुकि जाइछै। भतखोखरि बुढिआक अंगनामे वेंग कुटि मैलाक संग पतली फेकि देल जाइ छल आ ओ वुढिआ भरि राति फेकनिहारिकँ पुरा खनदानकँ उराहि दैत छलैक। वेटी रोटी करैत रहैत छली। वास्तवमे वेंट कुटि क तए ओकरे आंगनमे फेकल जाइत छलै जे ओ बेसी गाडि पढि सकैत छलीह। राति भरि जुआन छौडी सभक धुमगज्जरिक संग वालसुलभ उत्सुकतासं पाछां पाछां दौगब महज खुशी दैत छलै। लगै दिनमे बहादुरक घीसिआ क गुरुजी के चटिसारमे ल जएबाक डरसँ मुक्त रातुक ई माहौल स्वच्छन्द छैक। ने वावूजीक डर, ने वहादुरके उठा ल जएबाक चिन्ता। वात वुझौक कि नहि, नरेश रमल रहैत छल ओहि खेलमे।

ओकरा तँ तखनो ने किछु बुझायल रहै जखन इजोतिया ओकर घरक पछुआर बला गाछी आ भुसा घरलग एकटा प्रस्ताव कएने रहैक नरेश,खेलबे अर्थ त ओकरा ओतेक नै वुझल भेलै मुदा ओकर इशारासँ आशय वुझने रहय आ डेरा गेल रहैक नहि, हम नहि खेलबौ। ठाढे ओ नासकार चलि गेल रहय। जँ कि इजोतिया ओकरा उमेर सँ बेसीक वुझाइक, ओ वातकँ वुझैक, मुदा नरेश....।

पता नहि नरेशकँ किए आइ पुरना बात मोन पड लागल छै। ओ भोरेसं अपन पोताक उदण्डपनीसं फिरिशान भेल अछि। एक तं भोरमे देरीसं उठत, उठि कत्त पडायत ठेकान नहि। स्कूल जएबाक कोनो जरुरी जेना नहि होइक। कुण्डलिया छौडा सभक संगत आ पता नहि गुटका, भांग, सिगरेट किंवा आनो कोनो नशा खाइत हो ,त मनमे आशंका उठल छै। खौंझायल मोने वरण्डाक खुरसीपर बैसि गेल। तखने ओकरा वुझएलै एक ई दिन अछि आ एक ओ दिन रहय।फेर भसिया गेल रहय। एखनो मोन थीर कहाँ भेलैए...।

माय जखन ओकरा दुनू मोडलहबा टांगपर लादि दुनू हाथ पकडि घुघुमना खेलबै तँ हिल्ला झुलबाक मजा ओ लेल करए। गीतकलय संगे झुलैत नरेशक वालपन महज देहमे गुदगुदी आ आनन्द मात्र उठा सकैत रहय वुझए किछु नहि।

मुदा जखन ओ टेल्हगर भेल त मायक नक्कल करबाक मोन होइक। अपन भातिजकँ ओहिना टाँगपर ध झुलब लागय आ पढ लागय घुघुमना घुघुमना, बौआकँ गढा देब दुनू कान सोना। ओकरो झुलबैत आनन्द लगैक आ बौआ सेहो हँसि, हँसि क अपन आनन्दक अनुभूति करबैत छल। ओना ओकर छोट छोट पयर हाथ बौआके बेसी काल सम्भारबाक अवस्थामे नहि रहैक, ओ उतारि दैक तुरते।

अपन नेनपनक उछल कुदक दूटा घटना मन पडिते सौंसे देह सीहरि जाइत छैक। बड मुश्किलसँ बचल रहैक आँखि ओकर..। आँगन मे दुनू भाइ खेलैत रहय। भैया तीर धनुष बना चलौल करए। एक बेर भेलै ई जे तीर सोझे नरेशकँ आखिएमे लगलै वाम आंखिमे। सौंसे हाहाकार मचि गेलै, माय त बताह भ गेल छलीह। ओकरा कनैत कनैत बेहाल रहैक। गामेक टोटकासँ आँखि ठीक भेल रहैक। पता नहि माय कोन कोन दैब पीतरकँ एहि लेल मानि देने छलीह। तहिना एकबेर गछुलीमे आम लुटए बेरमे अन्धाधुन्ध दौगल रहय नरेश, त गाछीमे गाडल एकटा खुट्टाक नोक सोझे कपारमे गरि गेल रहैक। माथ सुन्न भ गेल रहैक। मायके जखन पता लगलै त ओ हकासल पिआसल दौगलि रहय घराडी पर आ ओकरा समेटि क गामक बैद्य लग लए जाएकँ उपचार करौने रहैक।

वाल सुलभ जीवन शैली, गार्मसँ जनकपुर धरिक यात्रा, पढाइ आ डिग्री सभक अपन अपन कथा रहैक। धन खेती जे होइक, शिक्षामे पछुआएल परिवारक प्रत्येक ओ संघर्ष ओकरा भोग पडलै जे एकटा सभ्य समाजक अंग बनबा ले जरुरी होइत छैक। आइ जखन उमेरक चारिम प्रहरमे जएबा ले तैयार अछि ओकरा लगैछै ओ फेरसं

बचपन दिश लौट चाहैए। दिन रातिक षडयन्त्र, राजनीतिक विद्रुपतता, चन्दा, अपहरण, हत्या किंवा दिन दिन बढैत असुरक्षाक भय आ आतंकसँ त्रसित समाजमे तनावक जिनगी जीबाक अर्थेकी?

मुदा फेरसँ ओ स्वयं प्रश्न करैत अछि की ओ नेनपनक स्वच्छन्द, सहज स्नेहसं भरल किछु साल घूरि सकत ! चलु ओ वितलहा वर्ष नहि घूरत ई सत्य थिक, अपने तँ ओहि युगमे जा सकैछी ने ! हँ, ई संभव छैक। भ सकैछ एना भेने तनावमे कमि अबैक, मुंहपर चापलुसीक वोल झाडैत, परोक्षमे चरित्र हत्याले उताहुल सरसमाजक व्यक्तित्वक दोगला मुँह देखबाक दुर्भाग्यसँ बंचि तँ सकै छी। हमहीं किएने अपनाकेँ नेना बनाली !

नरेशकेँ अपने सोचपर हँसी लगै छी। की ई संभव छैक। ओहुना साठिक बाद लोक नेनपनमे पुनः प्रवेश क जाइए कहाँदन। ओकरो अवस्था तँ आबिए रहल छैक। चलल जाए एक बेर सएह सही....।

नरेशकेँ जेना सौंसे देह हल्लुक लगैत छैक। वरण्डासं उठैत अछि। आंगन मे अबैत अछि। पोता आबि गेल छै। ओकरा डँटबाक इच्छा रहितो ओ चुप रहैत अछि। प्रारंभ एत्तहिसँ हुअए तँ हर्जे की?

बिनीत ठाकुर

बाँहिके गोदना कविता

रैहगेल निशानी आब बाँहीके
गोदना
अनाहकमे मारल गेलै बुधनीके
बुधना

उमेरोनै बेसी भेलरहै मात्र बिस
मरैतकाल ए राम बजलैनै ईश
फटलैजे बम त शरीर भेलै चिथरा
दैवोनै गवाही त कहबै की ककरा

लागल छै गाराभुकुर बुधनिके
चिन्ता
के करतै आब पुरा ओकर
बच्चाके सिहन्ता

ऐ देशेके लागलछै सतीक श्राण
एत सिधा सोझा जनताके केउ नै
माई बाप

भरल नोर मे

केहन सपना हम मीता देखलौँ
भोर मे
माय मिथिला जगाबथि भरल
नोर मे
कहथि रने वने घुमी अपन
अधिकार लेल
छैं तूँ सुतल छुब्ध छी तोहर
बिचार लेल

कनिको बातपर हमरा तूं करै
विचार
की सुतलासँ ककरो भेटलै अछि
अधिकार
जोरि एक एक हाथ बनवै जो
लाखों हाथ
कर हिम्मत तूं पुत्र छियौ हम
तोहर साथ

अछि तोरापर बाँकी हमर दूधक
कर्ज
करै एहिबेर तूं पुरा सबटा अपन
फर्ज
लौटादे हमर आब अपन
स्वाभिमान
पुत्र तूं छै महान तोहर कर्म छौ
महान



बी.के कर्ण (1963-)

पिता श्री निर्भय नारायण दास गाम- बलौर, भाया- मनीगाछी, जिला-दरभंगा। पैकेजिंग टेक्नोलोजीमे स्नातकोत्तर आ यू.एन.डी.पी. जर्मनी आ इग्लैण्डक कार्यक्रमक फेलोशिप, २२ वर्षक पेशेवर अनुभव आ २७ टा पत्र प्रकाशित। डायगनोस्टिक मिथिला पेंटिंग आ मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक समस्यापर चिन्तन। सम्प्रति इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, हैदराबादमे उपनिदेशक (क्षेत्रीय प्रमुख)।–**सम्पादक**

संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल

मिथिलाक विकास क़ेना आ कखन

विकासक बिना जिनगी बड कठिन। विकासक रस्ता बड उबड ख़ाबड।

संघर्ष सदिखन। डेग डेगपर। बिना संघर्षक विकासो संभव नहि।

सर्वांगीन विकासक हेतु व्यक्तिगत विकासे आधार होइछ।

बहुत किछु गमेलहुँ मुदा आब नहि।

मैथिल युवा मोर्चा तैयार भए रहल अछि। विकसित वा अविकसितक बिच-बिचवामे छी।एतवा तँ तए अछि जे आर्थिक विकासक लेल सुर सार भए रहल अछि। आर्थिक विकास एकटा गति होइछ जे कखनो कम वा बेशी।

आर्थिक उपार्जनक लेल हम सब सकारात्मक प्रयासमे सुतल छी। जहिया उठब़ तहिया सिंह जकाँ दहारब वा साँप जकाँ फूफकारब।

जय श्री हनुमानजी एक समयमे अपन शक्ति बिसरि गेल छलाह, तहिना हम सब मैथिल अपन शक्ति बिसरौने छी।

बहुतो मैथिल प्रवाशी जीवनम़े अपन आर्थिक सक्षमता मे वृद्धि केलाह, परञ्च हुनक धिया पूता मिथिला मैथिल सँ कोसो दुर !!! पैघ संकट। ग्रेट रिस्क!!!

मैथिलक सम्मान मैथिली थीक आओर एकर अपमान मैथिले कऽ रहल छथि। अपने परिवारमे मैथिलीपर मतांतर। मैथिली घरेमे टूअर।

मैथिल पलायनसँ मैथिलीक आकस्मिक अन्त। केऽ विलाप कडत।

पलायन दुइ स्थितिमे-

१. जीवन भरण पोषणक लेल

२. व्यक्तिगत उद्देश्यक पूर्तिक लेल

मिथिलामे की कमी

डेग डेग पर पोखरि
घर घरमे पतरा-पोथी।
गाम गाममे जाति पाँति
छोटका पाँति लैऽ कऽ एके परिवारमे शानक घमासान।

मैथिली संकटमे, आवश्यकता अछि कोमल स्पर्शक।

कतेको बेर बिहार सरकार द्वारा मैथिली भाषापर सीधा प्रहार भेल। परम दुखक बात ई अछि जे किछु मैथिल मैथिलीकँ तोड़यमे लागल रहल छथि। परञ्च चिंताक कोनो बात न्नहि। मैथिली अछि अटल़-अविचल। मैथिलीक जड़ बड़ मजगूत।

हम मैथिलसब अपन मौलिक कर्तव्य बूझि आ अपन भाषा सँ अथाह लगन लगावी।

बंगाली-पंजाबी-मराठी कँ देखु जे अपन मातृभाषाक प्राणोंसँ ऊपर स्थान देने छथि। एतबाऽ नहि हर मंचपर अपन भाषाक प्रति स्नेह तथा सम्मान कन्निको कट्टौती नहि करैत छथि। परञ्च़ हम मैथिल कतेक निष्ठा रखैत छी। एहन किछुए मैथिलके देखल जा सकैछ।

बंगालमे बंगाली, पंजाबमे पंजाबी। एहिना बहुतो प्रादेशिक राज्यम़े अपन-अपन भाषाकँ अपन जीऽ जान सँ पैध लगाव रखने छथि।

बंगालीक भाषा बंगाली
पंजाबीक भाषा पंजाबी
मराठीक भाषा मराठी
बिहारीक भाषा की?
हिन्दी-भोजपुरी आ मैथिली

हिन्दी तँ राष्ट्रभाषाक अस्तित्वमे अछि। भोजपुरी काफी लोकप्रियता हासिल कय रहल अछि। भोजपुरी सिनेमा उद्योगकँ काफी सफलता भेटल। मुदा मैथिलीक स्थिति बिहारमे केहन अछि से की कहल जा्इछ। मैथिलीक स्थिति मिथिलामे बड़ कमजोर।

गैरमैथिल बिहारी कतेक प्रतिशत मैथिलीक इज्जत करैत छी।अनुमानित प्रतिशत बड़ कम होयत।

मैथिल अपनाकँ गोद लेल मैथिल जेकाँ आचरित कहिआ धरि करताह?

मैथिली सशक्त भाषा अछि। एकर अपन इतिहास अछि। परञ्च हम सब मैथिली बाजय वालाकेँ आ लिखय वालाकेँ पिछड़ल बुझैत छी।अनेक भाषा सीखू बाजू मुदा मैथिलीकेँ छोड़ि कऽ नहि। मैथिलीकेँ बोझ नहि बुझियौक।

मैथिल जे कहियो मैथिली छोड़ लन्हि ओ मानसिक रूपसँ गरीब भए गेलाह। आर्थिक विकास भेलाक तदुपरान्तों अपन मनसँ बहुत गरीब। अमेरिकामे जे भारतीय मूलक स्थिति पर जे एकटा अमेरिकन पत्रकार अध्ययन केलाह जरूर देखल जाए।

Family Ties and the Entanglements of Caste http://www.nytimes.com/2004/10/24/nyregion/24caste.html

अमेरिकन क़ी मिथिलामे रहि सकैत अछि

नहि कथमपि नहि।

की अमेरिकन आ कोनो विकसित देश व राज्य के एकोटा लोक अपन मैथिली भाषा अपनायत

नहि कथमपि नहि।

बेसी मैथिले भेटताह ज़े मिथिला आ मैथिली छोड़ि ताहिमे सबसँ आगू ।

मैथिल मिथिलाक सीमाक बाहर बड मेहनती परञ्च मिथिलाक सीमाक अन्दर बड आलसी। मेहनती मैथिल कतौऽ रहथि धाक जमौने छथि परञ्च मैथिली पर जेना मतसुन। एको रति रू चि नहि रखैत छथि, हुनकर धिया पुताक बाते छोडु।

गिर्यसन जकाँ खोजी एहि पर अलग विचार रखैत छथि।

मैथिलीके बोझ बुझय वाला मैथिल सोचि विचारमे बड़ गरीब।

गरीबी झेलबाक मानसिकता मैथिल मे कियाक बेसी।

मिथिलामे मौलिक सुख सुविधाक कमी कोन कारणे। बहूतो कारण भए सकैछ। गरीबीमे ककरा नेऽ इ कष्ट झेल्ऽ पऽड़ैत।

मैथिल मेहनती तँ मिथिलामे गरीबी किएक

गरीबी झेलबाक मानसिकता किएक !!!ग्रेट रिस्क !!!

कतेक मैथिल कहताह जे भाग्यक लिखल कष्ट अछि। एहि प्रश्नक जबाब खोजि रहल छी जे पाँच करोड़क मैथिलक एके रंग भाग्य कियाक। गरीबीक झेलबाक मानसिकता कतेक दिन तक।

हम मैथिल सब वाक विवादमे बड प्रखंड छी। हरएक बातपर अपनाक अनुभवी प्रमाण दैत छी।

मनसँ वाक पटूतामे धनी। जीवनक मौलिक आवश्यकताक पूर्तिकक लेल हम सब मैथिल बड़ गरीब।

गरीब मानसिकता गरीबी झेलबाक लेल सदिखन तैयार।

स्वस्थ नेताविहीन मैथिल समाज अपन मौलिक हक सँ दूर कोसो दूर अछि।

जड़ जड़ हालतमे मैथिल समाज अपन देशक आजादीक बाद मिथिलामे आधारभूत ढाँचाक शूरूआतोऽ तँ नहि भेल।

ककरा कहबै के सूनत के सुधि लेत।

रिस्क आ मैथिल

मुद्दा व्यवसाय

विकसित देश वा विकसित राज्यक पाछु यदि सुक्ष्म रूपसँ देखू तँ भेटत जे ओहि क्षेत्रक व्यवसाय विकासक मुल कारण अछि। मिथिलामे विद्वान वा ज्ञानी मैथिलक कमी नहि। व्यापारी वर्ग नोइसो बराबरि नहि।

मैथिल व्यापारो करताह ?

सिन्धी माड़वारी आ पंजाबी समाज मिथिलामे अपन व्यवसायमे मैथिल जकाँ संस्कार अपनओने के साथ केवल ५० सालमे बढ़िया धाक जमा लेलाह, परन्तु हम मैथिल जे छी जे डींग हकैसँ फुर्सतेऽ नहि भेटि रहल अछि।

मैथिल मिथिलामे की करताह ?

मिथिलामे किछु मैथिलके देखबाऽ मे आयत ज़े मिथिलाक सिन्धी माड़वारी आ पंजाबी के व्यवसायमे नौकरी करताह।

हिन्दी अखबार माँगि कए पढ़ताह परञ्च मिथिलाक विद्वान वा ज्ञानी अखबार प्रिन्ट आ बाजार मे आनबाक जोखिम नहि ऊठैऽताह।

मिथिलामे चाहक दुकान पर प्रतिदिनक दिनचर्यामे लालु के लालूवाणी पर अखण्ड बहस करताह।

मिथिलामे सुइदसँ किछु मैथिल सुइदखोर व्यवसायमे वृद्धि केलाह हऽ। कोनो नियमके पालन नहि कए रहल छथि। अपन नियम बना कऽ अपराध मे रमल छथि। मिथिला बैंकक शुरआत होए अपराधी सुइदखोर मैथिल के झेलनाइ एकटा बढ़ पैघ अपराध अछि।

!!!!Great Risk !!!!

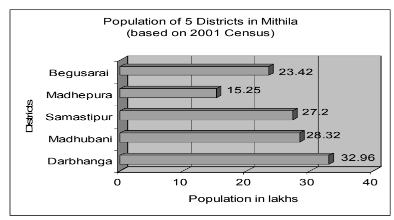
मुदा बहुतो अछि पर रिक्सो सँ ज्यादा भयावह।

सन २००१क जनगणणा के अनुसाऱ मिथिलाक आबादी करीब ६ करोड़ छल। जाहिमे़ व्यवसायिक वर्ग २ प्रतिशतो कम।

बहुतोसँ पुछलहु जे एतबा प्रतिशत किएक कम अछि परञ्च एकर कारण की से नहि जानि सकलहुँ।

मिथिलासँ आयात आ निर्यातक बातेऽ छोड़ू, व्यापार तँ बद सँ बदतर

मिथिलाक पाँच जिलाक केस स्टडी:



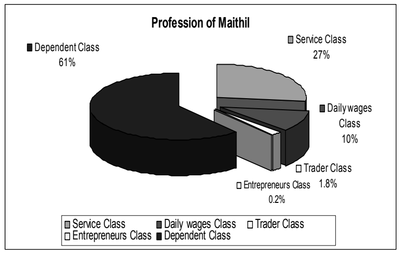
पांचो जिलाक कुल आबादी सन २००१ जनगणनामे करीब एक करोड़ अठाइस लाख छल। जनसंख्या अनुमानित ५ वा ७ प्रतिशतसँ प्रतिसाले वृद्धि भ रहल अछि। एकटा बात महसूस भऽ रहल अछि जे मिथिलामे गरीबी कम भेल अछि। यदि सन १९८० सँ पहिने हरेक गॉवमे हरेक दिन ४ या ५ घरमे उपवास रहैत छलैक़ परञ्च से उपवास आब

गरीबीक उपवास पूजा पाठक उपवास होइत अछि।

मुदा भौतिक सुविधाक पिछड़ापन तँ पराकाष्ठा पर अछि। जिनगी भगवानक भरोसे।

पांचो जिलाक मैथिल पर यदि ध्यान देल जाए तँ एकटाक सदस्य परिवारमे नौकरी करयबाला बॉकी आश्रित सदस्य किछु नहि करयबाला बल्कि गप छटय बाला आ शान बघारय वाला।

पर आश्रित भेनाए अपनेमे एकटा रिक्स एहन जे भावुक जरूरतसँ ज्यादा आ कर्मठहीन ज्यादा बनाबैत अछि। !!!!ग्रेट रिस्क !!!!



जनसंख्याक वृद्धि मानु जे कष्टक पहाड़। हर क्षण हरेक दिस स्थिति दयनीय हेबे कड़त।

मिथिलामे मैथिल रिक्स लेताह ?

मिथिलामे मैथिल तँ अपन जिनगीक रिक्स लेबाऽमे सर्वोपरि छथि। जेना की सोचु नदीक के ऊपर जड़ जड़ हालमे पूल ओहि पर खचाखच बस् आ रेल गाड़ी जाहिमे छत सेहो भड़ल। फोटो देखल जाए।

सोचु कनिऽ जे जिनगी आओर मौत के बीच केवल एकटा रिक्स फैक्टर अछि।

मैथिल जिनगीक रिक्स हर क्षण।

मिथिलामे जिनगीक रिक्स बड़ आसान पर व्यापारक रिक्स बड़ कठिन अछि।



वृषेश चन्द्र लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ई. कँ भेलन्हि। पिताः स्व. उदितनारायण लाल,माताः श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मी । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार। लगभग ८ वर्ष जेल । सम्प्रति तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष। मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित। आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पीं कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित। ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।–**सम्पादक**

फेकनाक दिआबाती

दिआबातीमे
फुलझडी, अनार भुइँपटका
आ कनफर्रा फटक्कासभसँ कात
आँखि बचा–बचाकय
फेकना ताकि रहल अछि तेल
बुताएल दिआसभमे
एक मुठि भातपर
सुअदगर तिलकोरक तरुआ लोभेँ!

क्षणक छनाक...!

१
चाही सभके
शासन चलबएला
अनुशासन !

२
लाल पहाड
महाभारतबला ?
खूनक ढेरी !

३
मीत अपने
हएबन्हि, ओ किछु
अओर छथि !

४
'एकता' माने
सभलेल नै खाली
'एकटा'लेल !

५
गढैअछि शब्द
काबिलसभ, बात
चिबबैलेल !

६
सफल भेल
अपनेस ? जरुर

फेरल हैत !
७
सनकी अछि
दोष देखोनिहार
धरतीपर !
८
बरिआतमे
छिटल गेल इत्र
गन्हाइ छलै !
९
पुरान मन
रचतै युग नव ?
नइ हेतै !
१०
गैंडाक खाक
ओकर शिकारक
कारण थिक !

छवि झा/ कुमुद सिंह

लेखिका छवि झा पिछला तीस वर्ष स मिथिला चित्रकला कए अर्थ पर काज कए रहल छथि। संप्रति ओ 'स्नेह छवि मिथिला स्कूल ऑफ आर्ट, दरभंगा क निदेशक छथि आ एकरा परिभाषित करबा मे लागल छथि।
लेखिका कूमुद सिंह मैथिलीक पहिल ई-पेपर समादक संपादक छथि।–**सम्पादक**

मिथिला चित्रकला : अर्थक अधिकता आ सार्थकता

1960 क दशक मे मिथिला चित्रकला कए दीवार स कागज पर उतारबाक प्रयास शुरू भेल छल आ तहिए स शुरू भ गेल एहि चित्र मे नव-नव प्रयोग। तहिये स शुरू भेल एकर अर्थक नव संसार जे मिथिलाक सोच आ संस्कृति स पूरा भिन्न अछि। नव प्रयोग आ पुरान अर्थक एहन मिश्रण भेल जे कलाक पूरा स्वरूप आ अर्थक औचित्य पर सवाल उठा देलक।

सब कलाकृतिक एकटा अर्थ होइत छैक। जेकर कलाकृति स घनिष्ट संबंध होइत अछि। कलाकृति आ ओकर अर्थ ओ कृतिक सार्थकता कए सिद्ध करैत अछि। मिथिला चित्रकलाक संबंध मे जखन विचार करैत छी त कएकटा गप सामने अबैत अछि, मुदा एकटा गप स्पस्ट होइत अछि जे मिथिला आ भारतक विद्वान् एहि कलाक प्रति आइ धरि अपन नजरिया नहि बना सकलथि अछि। पिछला पांच दशक मे विदेशी विद्वान जे एहि कलाक प्रति नजरिया स्थापित केलथि अछि, देशक विद्वान ओकरे आधार मानि कए आगू बढैत रहलथि अछि। च पूछु त देशी विद्वान कहियो अपन नजरिया प्रस्तुत करबाक प्रयास तक नहि केलथि। मिथिला चित्रकलाक एहि गुप्त आ जटिल वास्तविकता कए धुंध स निकालबाक पहिल प्रयास सेहो अमरीका मे कैल गेल। 1984 मे अमरीका स प्रकाशित मानव शास्त्र पर आधारित पत्रिका मे पहिल बेर एहि गप कए रोचक आ गंभीरतापूर्वक उठाउल गेल जे अर्थक अधिकता स केना एहि कलाक सार्थकता खत्म भ रहल अछि।

उत्तर बिहार आ नेपालक तराई मे पसरल मिथिला क महिला द्वारा अपन घरक दीवार आ आंगना मे बनाउल जाइवाला एहि चित्रक संबंध मे एखन धरि कसक बेर लिखन जा चुकल अछि आ कसक ठाम कहल जा चुकल अछि। एतबे नहि कई टा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर एकर प्रस्तुति सेहो भ चुकल अछि। मुदा एकर संबंध मे लिखल साक्ष्य बेसी पुरान नहि अछि। 1949 मे पहिल बेर एहि पुरातन कलाक संबंध मे कागज पर किछु लिखल गेल। डब्ल्यू जी आरचर अपन किताब मे एहि चित्रकला कए अद्भुत आ आश्चर्यजनक कहने छथि। मुदा 1962 मे प्रकाशित लक्ष्मीनाथ झाक पुस्तक मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला सही मायने मे एहि चित्रकला पर पहिल आधिकारिक दस्तावेज अछि। देसी नजरियाक संग-संग एकर भाषा मे सेहो हिंदी आ मैथिलीक मिश्रण अछि, जाहि स अर्थक भाव अंगरेजी स बेसी साफ बुझबा मे अबैत अछि। देशी नजरियावाला एहन पुस्तक कए पाठक तक नहि पहुँचब एहि कलाक अर्थक अधिकताक मूल कारण कहल जा सकैत अछि।

मिथिला चित्रकलाक अर्थक संबंध मे समय-समय पुस्तक प्रकाशन होइत रहल अछि। 1952 मे ब्राउन आ लेन्यूइस, 1966 मे माथुर, 1977 मे इब्स विको (वैक्यूवाद) आ 1990 मे जयकर एहि कलाक अर्थक संबंध मे बहुत किछु लिखलथि। अविश्वसनीय मुदा सत्य अछि जे एहि किताब सब मे जे किछु लिखल गेल अछि ओ मिथिला मे प्रचलित अर्थक सँ सर्वथा भिन्न अछि। एहि संबंध मे अमरीकाक चीको विश्वविद्यालयक कैरोलिन ब्राउन लिखैत छथि जे मिथिला चित्रकलाक अर्थ कए हरदम गलत आ भ्रमक तरीका स विश्वक समक्ष राखल गेल अछि। एकर मुख्य कारण इ रहल जे एहि पर देशी खास कए मिथिलाक विद्वान गंभीर काज नहि केलथि, जे काज भेल ओ विदेशी विद्वानक शोध स भेल। मिथिलाक अंगना मे बनाउल गेल एहि चित्रक संबंध मे पुख्ता जानकारी लेब कोनो विदेशी लेल हरदम एकटा चुनौती रहल अछि। लोककला कए बुझलाक बाद ओकर सही अर्थ बुझब आ फेर ओकरा सही रूप मे परिभाषित करि अभिव्यक्त करब कोनो विदेशी शोधकर्ता लेल राई क पहाड़ सन काज अछि। 1986 मे एसैड, वैल, मारकस आ फिसर, 1988 मे क्लिवाड आ 1992 मे वूल्फ क आलेख स बुझबा मे अबैत अछि जे ओ किछु एहने सच्चाई स सामना केने हेताह। कैरोलिन ब्राउन एहि संबंध मे साफ तौर पर लिखैत छथि- हम पश्चिम कए लोक एहि चित्रकला कए परिभाषित नहि कए सकैत छी, ताहि कारण हम सब एहि अद्भुत विषय कए तोडि-मरोड़ी कए पेश करैत रहलहुं अछि। हालांकि

एहि मे कोनो संदेह नहि अछि जे एकटा समाज मे भिन्न-भिन्न लोकक अगल-अलग नजरिया भ सकैत अछि, ओ एकटा चित्रक भिन्न-भिन्न अर्थ कहि सकैत छथि, मुदा विभिन्न अर्थक बीच मे एकटा समानता होइत अछि, जे अर्थ कए कतहु ने कतहु जोड़ैत अछि। उदहारण लेल मिथिला मे पुरुख कर्मकांड, न्यायशास्त्र सन शास्त्रीय विधा मे नीक पकड़ रहैत छथि आ ओहि स जुड़ल पावैन-तिहार क व्याख्या नीक जेकाँ कए लैत छथि, ओतहि मौगी घरेलू पावैन-तिहार पर नीक पकड़ रखैत छथि आ ओकर अपन अनुसारे व्याख्या सेहो करैत छथि। एहि लेल कुलदेवीक पूजा या गौरी पूजा मे पुरुखक योगदान कम देखबा मे अबैत अछि।

एकर पाछु कारण इ अछि जे अत्यंत गूढ़ संसार आ अत्यधिक विकसित समाजक सबटा गपक ज्ञान राखब असंभव अछि। ओना मिथिला समाजकेँ अत्यंत विकसित समाज बहुत कम विद्वान मानने छथि। जेना कि 1991 मे दरिदा आ 1994 मे वाल साफ तौर पर लिखने छथि जे एहि चित्रकलाक सही अर्थ मिथिला मे आब गिनल-चुनल लोक बता सकैत अछि। वेल क कहब अछि जे मिथिला मे जे चित्रक अर्थ कहि सकैत छथि ओ चुप रहय चाहैत छथि, जखन कि अर्थ नहि जननिहार लोक कए चुप राखब एकटा कठिन काज अछि। ओना एहि संबंध मे ब्राउनक मत किछु अलग अछि। ब्राउन कहैत छथि, 'इ सच अछि जे आम मैथिल एहि कलाक संबंध में कम जानकारी रखैत छथि, मुदा बहुत विद्वान लेल इ कोनो महत्व नहि रखैत अछि जे मैथिल एहि संबंध में कतेक बुझैत अछि आ की कहैत अछि। अधिकतर विद्वान मैथिलक भावना कए अपन शोध मे तोडि-मरोडि कए प्रस्तुत करबा स पाछु नहि हटला अछि। दुर्भाग्य अछि जे एखन तक कोनो देशी विद्वान एहि तथ्य कए रेखांकित नहि केलाह अछि, मुदा ब्राउन अपन मिथिला प्रवासक दौरान किछु एहने महसूस केलीह।

असल मे सबस पैघ गप इ अछि जे पाश्चात्य संस्कृति, व्यवहार आ शिक्षा हमरा लोकनि क सोच कैँ दबा देलक अछि या इ कहू जे सीमित कए देलक अछि। एकर अलावा हमरा लोकनि मे अनुवाद करबाक क्षमता सेहो कम भ चुकल अछि। आब सवाल उठैत अछि जे एतेक जटिल आ गुप्त तथ्यक कोनो एक व्यक्ति द्वारा कसल अनुवादकेँ सर्वोच्च मानल जा सकैत अछि? एहि ठाम इ कहब जरूरी अछि जे एकटा चित्रक कई टा अर्थ भ सकैत अछि, मुदा ओकर सूत्र टूटा नहि भ सकैत अछि। वैह एकटा सूत्र ओकरा आन स भिन्न करैत अछि। एहि सूत्रक चारूकात ओकर अर्थ घुमैत रहैत छैक। एहन सूत्र मिथिला मे एखनो किछु महिलाकेँ बुझल छैन, मुदा ओ निश्चित रूप स व्यावसायिक नहि छथि। ताहि लेल हुनका स ओ सूत्र बुझब कोनो देशी विद्वान लेल कठिन काज अछि, एहन मे विदेशी विद्वानक गप करब बेकार अछि। दरअसल मिथिलाक मौगी एहि सूत्रकेँ अपन शरीरआ आत्मा मे बसा रखने छथि आ नव पीढ़ीकेँ थोड़े-थोड़े कएकेँ कए बुझाउल जाइत रहल अछि। एहन मे अल्प ज्ञानी स जानकारी लेलाक बाद विदेशी विद्वान मिथिलाक सूत्र जनिनिहार महिलाक नजरअंदाज कए दैत छथि।

मिथिला चित्रकला क सबस प्रचलित चित्र कोहबरक पुरैन कए ल कए सबस बेसी भ्रमक स्थिति अछि। अधिकतर विद्वान एकरा कोहबर नाम स परिभाषित केलन्हि अछि, जखन कि पुरैन कोहबरक अनेक चित्रगुच्छक एकटा सदस्य मात्र अछि। आइ जे पुरैनक स्वरूप देखबा मे आबि रहल अछि, ओ जानकार महिला मे भ्रम पैदा कए रहल अछि। हालांकि एतबा अवश्य अछि जे एकटा गोलाकार आकृतिक चारुकात छह टा मौगिक मुँह बनाउल गेल अछि, जेकर बीच मे सातम मुँह सेहो अछि जे छह टा मुँह स कनि पैघ आकारक अछि। एहि चित्रकेँ रेखाचित्रक रूप मे बनाउल गेल अछि। पुरैनक सूत्र पर बनाउल गेल एहि रेखाचित्र स भ्रण हेबाक कईटा कारण अछि। मिथिला मे पुरैन रेखाचित्र नहि, बल्कि भित्तिचित्र अछि आ पाँचटा रंग सँ बनाउल जाइत अछि। हाँलाकि आइ अधिकतर कागज पर एहन चित्र बनाउल जा रहल अछि, लेकिन एहि चित्रक विशेष मे साफ तौर पर कहल गेल अछि जे एकरा दीवार पर बनाउल जाइत अछि। मिथिला मे रेखाचित्रकेँ अरिपन कहल जाइत छैक आ ओ जमीन पर बनाओल जाइत अछि। ओनाओ मिथिला मे पुरैनक दू टा सूत्र अछि। एकटा ब्राह्मण आ दोसर कर्णकायस्त लोकनिक पुरैन। दूनू मे सूत्रक अंतर अछि। मुदा एहि चित्र मे एकर प्रारूपक कोनो चर्च नहि अछि। सातटा मौगिक मुँहक संग साँप, कछुआ, माछ आदिक चित्रक औचित्य जखन मिथिलाक लोक लेल बुझब कठिन अछि तखन विदेशी की बुझत? विदेशी विद्वान लेल इ मात्र एकटा भीड़वाला चित्र अछि, जाहि मे संदेशक कोनो स्थान नहि अछि। बहुत रास विदेशी विद्वान त एकरा जादू-टोना आ भूत-प्रेत लेल बनाउल गेल चित्र कहलथि अछि। मुदा ब्राउनक कहब अछि जे इ पुरैनक नव रूप अछि आ कायस्त प्रारूप स मिलैत-जुलैत अछि।

मिथिला मे पुरैन कमलक लत्तीकेँ कहल जाइत अछि। ब्राह्मण प्रारूप मे नौ आ कायस्थ प्रारूप मे सातटा कमलक पात दर्शाउल जाइत अछि। चूंकि कमलक लत्ती पानि मे होइत अछि, ताहि लेल एकर संग-संग पानि मे रहैवाला वस्तु आ जीवक चित्र बनाओल जाइत अछि। लक्ष्मीनाथ झा एहि संबंध मे लिखैत छथि जे पुरैन मुख्य रूप स वंश वृद्धिक लेल नव दंपति स सांकेतिक अनुरोध अछि। जेना कमलक एकटा लत्ती पोखरि कए कहियो कमल विहीन नहि होअए दैत अछि, तहिना नव दंपति कए घर कए कहियो वंश विहीन नहि हुए देबाक कर्तव्य निभेबाक चाही। एतबा त जरूर अछि जे 20वीं शताब्दी मे पश्चिम मे पलल-बढ़ल कोनो व्यक्ति एहि स्त्रीत्व कए(स्त्री कए हृदय मे वास करैयवाला भावना) घेरा नहि बुझि पाउत। आइ जखन बियाह एकटा अलग अर्थ ल चुकल अछि, एहन मे पुरैनक औचित्य जरूर प्रासंगिक भगेल अछि।

1960 क दशक मे एहि चित्र कए कागज पर उतारबाक प्रयास शुरू भेल छल आ तहिए स शुरू भेल एहि चित्र मे नव-नव प्रयोग। तहिये स शुरू भेल एकर अर्थक नव संसार जे मिथिलाक सोच आ संस्कृति स पूरा भिन्न अछि।

नव प्रयोग आ पुरान अर्थक एहन मिश्रण भेल जे कलाक पूरा स्वरूप आ अर्थ क औचित्य पर सवाल उठा देलक। सच कहल जाए त मिथिलाक महिलाक एहि विलक्षण प्रतिभा कए परिभाषित करबा मे एखन धरि कोनो विद्वान सफलता नहि पाबि सकलथि अछि। समस्त मिथिला मे बनाउल जाइवाला एहि चित्र कए किछु चारि-पांच टा गाम मे समेट देबाक अलावा इ विद्वान लोकनि एहि चित्र कए कएटा अनपढ़-गँवार मौगी द्वारा बनाउल गेल चित्र सँ बेसी किछु नहि साबित कए सकलथि अछि। मिथिला मे एखनो कई टा महिला अपन फाटल पुरान कॉपी निकालि देखबैत छथि, जाहि मे कईटा विदेशी विद्वानक लिखल वाक्य अछि। दुख आ तामस तखन होइत अछि जखन कॉपी पर लिखल वाक्य पढ़ैत छी, जाहि मे लिखल रहैत छैक जे इ चित्र एकटा पिछड़ल समाजक गवांर, अनपढ़ आ मूर्ख महिला द्वारा बनाउल गेल अछि। विदेशी विद्वान मे इ सोच अचानक नहि आबि गेल अछि। हुनका कई प्रकार स इ बतेबाक बेर-बेर प्रयास भेल अछि। दुनिया मे इ धारण कए स्थापित करबाक श्रेय इब्स विको कए अछि। विको स बेसी शायद कोनो विद्वान एहि चित्रकला पर काज नहि केलथि अछि, मुदा ओ जतेक एहि चित्रक करीब अबैक कोशिश केलाह, एकर अर्थ स ओ ओतेक दूर होइत गेलाह। विको राय औवेन्स क संग एकटा फिल्म सेहो बनौलथि, जेकर नाम 'मुन्नी अछि। ओ एकटा फ्रेंच फिल्म सेहो बनउलथि, मुदा चित्रक अर्थ बुझबा आ बुझेबा मे सब बेर असफल भेलथि। विको तखनो हार नहि मानलथि, ओ 1994 मे एकटा विडियो फिल्म 'मिथिला पेंटरस... बनौलथि, मुदा नव किछु नहि कहि पाओलथि। आइ स्थिति एहन भ चुकल अछि जे समाजक सब लोक इ बुझबा मे लागल अछि जे आखिर इ परंपराक कोन वस्तुक बारे मे थिक।

एहि चित्रकलाक संबंध मे सबसँ लोकप्रिय स्रोत विकोक 1977 मे छपल किताब' द वीमेंस पेंटर ऑफ मिथिला... अछि। जखन कियो एहि पुस्तकक एक-एक टा चित्र कए गौर स देखैत अछि आ ओकर रूपरेखा कए पढ़ैत अछि त ओकर सामना एकटा आशचर्यजनक, अद्भुत आओर लगभग असंभव सन प्रतीत होइवाला संसार स होइत अछि।

विको लिखैत छथि जे मिथिला समाज मे मुख्यपात्र महिला छथि आ एहि ठाम पुरुषक भरमार अछि। एहि ठाम युवती हमउम्र युवक स विवाह करबा लेल तरह-तरह स प्रयास करैत छथि।(1977, पृष्ठ- 17)।

विको एहि गप कए बाजारू आओर रोचक बनबैत आगू लिखने अछि जे मिथिला मे एकटा युवती अपना लेल सुयोग्य युवक कए चुनैत अछि आ विवाहक प्रस्ताव स्वरूप ओकर सामने कोहबर रखैत अछि ।(1977, पृष्ठ- 17)। ओ लोक जे मिथिला कए नीक जेकाँ नहि चिन्हला अछि, हुनको इ वाक्य पढ़लाक बाद आश्र्चर्य हेतिन जे विको केना मिथिला समाज कैं अतेक चरित्रहीन बना देलथि। इ अद्भुत मुदा सत्य सन आलेख कए पढ़लाक बाद एहन प्रतीत होइत अछि जे विकोकैं कए एहन अनुवादक भेटलन्हि जेकरा मिथिला समाज, संस्कृति आ सभ्यता स कोनो वास्ता नहि रहैन, संगहि हुनका मिथिलाक रिति-रिवाज आ लोकाचार तक केर ज्ञान नहि रहैन। सच पूछु त अनुवादकलेल विको मात्र टका देनिहार विदेशी छलाह। ओना देखल जाए त विको क इ किताब एहि विषय पर लिखल गेल पहिल अथवा आखिरी किताब नहि थिक। इ पुस्तक एहि लेल महत्वपूर्ण भ गेल अछि, किराक कि मिथिला चित्रकला पर शोध केनिहार अधिकतर विद्वान एहि पुस्तक स प्रभावित छथि। एतबा धरि कि भारतीय विद्वान उपेंद्र ठाकुर तक अपन किताब मे विको क नजरिया कए नजरअंदाज नहि केलथि अछि। विको क एहि किताब क महत्व पर ब्राउनक कहब अछि जे पश्चिमक विद्वान जखन कोनो विषय पर काज शुरू करैत छथि तखन ओहि विषय पर लिखल गेल पूर्वक किताब स काफी प्रभावित होइत छथि। मिथिला चित्रकलाक संग सेहो किछु एहने भेल। अधिकतर विद्वान विकोक रूप-रेखा स प्रेरणा लेलथि, किछु त हुनकर नकल तक कैलथि। ताहि लेल इ अन्य पुस्तक बेसी महत्वपूर्ण भ जाइत अछि। दोसर इ जे विको बहुत दिन धरि एहि विषय पर काज केलथि अछि आ कई प्रकार स एकरा दुनियाक समक्ष अनलथि अछि, एहन मे विदेशी विद्वान लेल हुनका नजरअंदाज करब कठिन रहल अछि। एहि प्रकारे विको भ्रमक आओर सर्वथा गलत तरीका स अनुवाद कए झूठ कैं एकटा सत्य सँ बेसी सत्य रूप मे स्थापित केलथि अछि। ओना अधिकतर विदेशी विद्वानक कहब अछि जे मिथिला समाज विश्वक सबस चरित्रवान समाज मे स एक अछि। एकर संस्कृतिक संबंध मे प्राख्यात चिकित्सक डॉ कैमेल क कहब अछि जे आइ 'जीन (अणु) क संबंध मे दुनिया भरि मे शोध भ रहल अछि, जखनकि मिथिला मे पंजी व्यवस्था ओकरे एकटा रूप अछि। मिथिलाक ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ लग एखनो बीस-बीस पीढिक़ जानकारी उपलब्ध अछि।

विको कए शायद इ नहि बताउल गेल कि मिथिला मे युवतिक विवाह पंजीकारक राय स तय कैल जाइत अछि। युवतिक इच्छा एहि ठाम कोनो मायने नहि रखैत अछि। एहि तथ्य कए ब्राउन बहुत साफ तौर पर रखने छथि। ब्राउन कहैत छथि जे ओ मिथिला प्रवासक दौरान पंजीक विधिवत शिक्षा ल चुकल छथि। ओ एहि गप कए सेहो साफ करबाक प्रयास केलथि अछि जे मिथिला मे कहियो युवति कैं पति चुनबाक अधिकार नहि रहल अछि। सीताक संबंध मे सेहो ब्राउनक मत स्पष्ट अछि। ओ कहैत छथि जे सीताक स्वयंवर नहि छल ओ एकटा सशर्त विवाह छल। इ सच अछि जे ओहि विवाह मे पंजीक कोनो व्यवस्था नहि छल, मुदा धणुष रामक बदला मे रावण उठा लैत त कि सीताक इच्छा रहितो राम सँ विवाह संभव छल? सीताक इच्छा हुनक विवाह मे कोनो मायने नहि रखैत छल। ब्राउल इ तर्क देलाक बाद आखिरी फैसला मिथिलाक लोक पर छोड़ैत कहैत छथि जे हमर एहि मत स शायद मिथिलाक लोक सहमत नहि हेताह। वैकसेनेलक शब्द मे कहल जा सकैत अछि जे मिथिला चित्रकला एकटा आँखिक भाँति अछि जे समयक संग-संग अपना कए बदलैत

रहल अछि, मुदा अपन मूल सिद्धांत स कखनो समझौता नहि केलक अछि। इ कला जगतक एकटा अद्भुत औजार अछि जेकरा स कलाकार अपन समाजक संग-संग पूरा विश्वक गुढ़ गप आ रीति-रिवाज कए चित्रक माध्यम स प्रस्तुत करैत आइल अछि। (1972,पृष्ठ-38) जे किछु होआए एतबा त अवश्य भेल अछि जे मिथिलाक संस्कृति कँए दुनियाक सामने सर्वथा गलत तरीका स परिभाषित कएल गेल अछि। आइ मिथिला चित्रकला अधिकतर एहन चित्र बनाओल जा रहल अछि, जेकर एतुका संस्कृति स कोनो लेनादेना नहि अछि। आवश्यकता अछि एहि चित्र क गंभीरता स शोध करबाक आ एकर अर्थक अधिकता कए समाप्त करबाक, नहि त इ चित्र हरदम लेल हमरा लोकनिक अज्ञानताक द्योतक बनल रहत।



डॉ. देवशंकर नवीन (१९६२-)

ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।

सम्पादन: प्रतिनिधि कहानियाँ: राजकमल चौधरी, अग्निस्नान एवं अन्य उपन्यास (राजकमल चौधरी), पत्थर के नीचे दबे हुए हाथ (राजकमल की कहानियाँ), विचित्रा (राजकमल चौधरीक की अप्रकाशित कविताएँ), साँझक गाछ (राजकमल चौधरी मैथिली कहानीयाँ), राजकमल चौधरी की चुनी हुई कहानियाँ, बन्द कमरे में कब्रगाह (राजकमल की कहानियाँ), शवयात्राक बाद देहशुद्धि, ऑडिट रिपोर्ट (राजकमल चौधरी की कविताएँ), बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, उत्तर आधुनिकता कुछ विचार, सद्भाव मिशन (पत्रिका)क किछु अंकक सम्पादन, उदाहरण (मैथिली कथा संग्रह संपादन)।–**सम्पादक**

अदद्दी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता

मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत तकैत दूर धरि नजरि जाइत अछि, सबसँ पहिने देखाइत अछि जे उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक, गम्भीर चिन्तन-मनन करबाक, छोट-सँ-छोट बात पर पर्याप्त विचार-विमर्श करैत निर्णय लेबाक प्रथा मिथिलामे पुरातन कालसँ अबैत रहैत रहल अछि। मुदा तकर अतिरिक्त ÷परसुख देबामे परमसुख'क आनन्द लेबाक आ जीवनक हरेक आचार एवं आचरणमे लयाश्रित रहबाक अभ्यास मैथिल जनकँ निकेनाँ रहलनि अछि। स्वयं कष्ट सहिओ क', अपन सब किछु गमाइओ क', दोसरकँ अधिकसँ अधिक प्रसन्नता देबाक आदति मिथिलामे बड़ पुरान अछि। प्रायः इएह कारण थिक जे अतिथि सत्कारमे मिथिलाक लोक अपना घरक थाड़ी-लोटा धरि बन्हकी राखि देलनि। दोसरकँ सम्मान देबामे मैथिल नागरिक बढ़ि-चढ़ि कए आगू रहल अछि। भनसियाक काज कर'बला व्यक्तिकँ महराज अथवा महराजिन, केस-नह-दाढ़ी-मोंछ साफ कर'बला व्यक्तिकँ ठाकुर-ठकुराइन, घर-आँगनमे नौरी-बहिकिरनी आ सोइरी घ'रमे परसौतीक काज करबाब'वाली स्त्राकँ दाय कहि

क' सम्बोधित करबाक प्रथा मिथिलामे एहने धारणासँ रहल होएत। ध्यान देबाक थिक जे मिथिलामे दादीकँ, जेठ बहिनकँ आ घ'रक अत्यधिक दुलारि बेटीकँ दाय कहबाक परम्परा अछि।

अध्ययन, चिन्तन, मननक प्रथा मिथिलामे बड़ पुरान अछि। मुदा ई सत्य थिक जे अशिक्षेक कारणँ मिथिला एतेक पछुआएलो रहल। गनल गूथल जे व्यक्ति अध्ययनशील भेलाह, से अत्यधिक पढ़लनि, जे नहि पढ़ि सकल, से अपन रोजी-रोटीमे लागल रहल। रोजी-रोटीक एक मात्रा आधार कृषि छल। विद्वान लोकनिक गम्भीर बहसमे बैसबाक अथवा ओहिमे हिस्सा लेबाक तर्कशक्ति, बोध-सामर्थ्य, आ पलखति रहै नहि छलनि, तँ जे उपदेश देल जाइन, तकरा आर्ष वाक्य मानि अपन जीवन-यापनमे मैथिल लोकनि तल्लीन रहै छलाह। ईश भक्तिक प्रथा अहू कारणें मिथिलामे दृढ़ भेल। मानव सभ्यताक इतिहास कहै'ए जे प्रकृति-पूजन, नदी-पहाड़-भूमि-वृक्ष-पशु आदिक पूजन एहि करणेँ शुरुह भेल जे प्रारम्भिक कालमे जीवन-रक्षाक आधार इएह होइत छल। लोक अनुमान लगौलक जे सृष्टिक कारण, स्त्री-पुरुषक जननांग थिक, तँ

ओ लिंग पूजा आ योनि-पूजा शुरुह केलक, जे बादमे शिवलिंग आ कामयोनि पूजाक रूपमे प्रचलित भेल। बादमे औजार पूजन होअए लागल।... तें पूजा पाठमे लीन हेबाक प्रथा पुरान अछि। मिथिलामे ओहि समस्त पूजन-पद्धतिक अनुपालन तँ होइते रहल; पितर पूजा, ग्रामदेव पूजा, ऋतु पूजा, फसल पूजा, कुलदेव-देवी पूजा आदिक प्रथा बढ़ल। हमरा जनैत विद्वान लोकनि द्वारा ईश भक्तिक उपदेश एहि लेल देल जाइत रहल हएत जे ईश भक्तिमे लागल लोक धर्म-भयसँ सदाचार अनुपालनमे लागल रहत, सद्वृत्तिमे लीन रहत, सामाजिक मर्यादाक ध्यान राखत, भुजबल-धनबलक मदमे निर्बल-निर्धन पर अत्याचार नहि करत।...लक्ष्यपूर्ति त' नहिएँ भेल, उनटे लोक धर्मभीरु, पाखण्डी अन्धविश्वासी आ निरन्तर लोभी, स्वार्थी, अत्याचारी होइत गेल, परिणामस्वरूप आजुक मैथिल-प्रवृत्ति हमरा सभक सोझाँ अछि।

कृषि जीवनसँ समाजक कौटुम्बिक बन्हन एते मजगुत छल, जे भूमिहीनो व्यक्ति सम्पूर्ण किसानक दर्जा पबै छल। हरेक गाममे सब वृत्तिक लोक रहै छल। डोम, चमार, नौआ, कुमार, गुआर, धोबि, कुम्हार, कोइरी, बाह्मण, क्षत्री... आदि समस्त जातिक उपस्थितिसँ गाम पूरा होइ छल। जमीन्दार लोकनि समस्त भूमिहीनकें जागीर दै छलाह, बाह्मण पुरहिताइ करै छलाह, नौआ केश कटै छलाह; कुमार ह'र-फार, चौकी केबाड़ बनबै छलाह; धोबि कपड़ा-बस्तर धोइ छलाह...। सम्पूर्ण समाज एक परिवार जकाँ चलै छल। सब एक दोसरा लेल जीबै छलाह, सब गोटए किसान छलाह, कृषि-सभ्यतामे मस्त छलाह।

सिरपंचमी दिनक ह'र-पूजा हो; दसमी, दीया-बाती, सामा-चकेबाक उत्सव हो; मूडन-उपनयन-विवाह-श्राद्ध हो; छठि अथवा फगुआ हो... बिना सर्वजातीय, सर्ववृत्तीय लोकक सहभाग नेने कोनो काज पूर नहि होइ छल। एहिमेसँ बहुत बात तँ एखनहुँ बाँचल अछि, होइत अछि ओहिना, ओकर ध्येय कतहु लुप्त भ' गेल अछि।

मिथिलाक विवाहमे एखनहुँ जा धरि नौआ ब'रक कानमे हुनकर खानदान लेल गारि नहि देताह (परिहास लेल); धोबिन अपना केस संगें कनियाँक केस धो क' सोहाग नहि देतीह, विवाह पूर्ण नहि मानल जाइत अछि। ध्यान देबाक थिक जे एहि तरहें ओहि नौआकेँ कन्याक पिता आ धोबिनकेँ कन्याक माइक ओहदा देल जाइत अछि। मिथिलाक छठि पाबनि तँ अद्भुत रूपें सम्पूर्ण विरासतक रक्षा क' रहल अछि। नदीमे ठाढ़ भ' कए सूर्यकेँ अर्घ देबाक ई प्रथा जाति-धर्म समभावक सुरक्षा एना केने अछि जे समाजक कोनहुँ वर्गक सहभागक बिना ई पाबनि पूर्ण नहि होएत। नेत अइ स'ब टामे एकता आ समानताक सूत्र स्थापित रखबाक रहैत छल। ई कलंक स्वातन्त्र्योत्तरकालीन मिथिलाक स्वाधीन मानवक नाम अथवा वैज्ञानिक विकास, बौद्धिक उन्नति, औद्योगिक प्रगतिक माथ जाइत अछि, जे समस्त विकासक अछैत मानव-मनमे लोभ-द्रोह, अहंकार एहि तरहें भरलक छूआछूत, जाति-द्वेष, शोषण-उत्पीड़न बढ़ैत गेल; आ आइ मिथिला-समाज, जे त्याग, बलिदान, प्रेम, सौहार्द लेल ख्यात छल, सामाजिक रूपें खण्ड-खण्ड भेल अछि। पैघसँ पैघ आपदा, विभीषिका ओकरा एक ठाँ आनि कए, एकमत नहि क' पबै'ए। मिथलाक उदारता आ सामाजिकता ई छल जे ककरो बाड़ी-झारीमे अथवा लत्ती-फत्तीमे अथवा कलम-गाछीमे नव साग-पात, तर-तरकारी, फूल-फल होइ छल तँ सभसँ पहिने ग्रामदेवक थान पर आ पड़ोसियाक आँगनमे पहुँचाओल जाइ छल; कोनो फसिल तैयार भेलाक बाद आगों-राशि कोनो परगोत्री देल जाइ छल; खेतमे फसिल कटबा काल खेतक हरेक टुकड़ीमे एक अंश रखबारकेँ देल जाइ छल...ई समस्त बात सामाजिक सम्बन्ध-बन्धक मजगूतीक उदाहरण छल।

कोनो स'र-कुटुमक ओतएसँ कोनो वस्तु सनेसमे आबए, तँ ओ सौंसे टोलमे लोक बिलहै छल।...कहबा लेल कहि सकै छी जे ई मैथिलजनक जीवनक नाटकीयता आ प्रशंसा हेतु लोलुपता रहल होएत... मुदा तकर अछैत एहि पद्धति आ परम्पराक श्रेष्ठता आ सामाजिक मूल्य हेतु एकर आवश्यकतासँ मुँह नहि मोड़ल

जा सकैत अछि। गाममे कोनो बेटीक दुरागसनक दिन तय होइ छल, तँ बेटीक सासुरसँ आएल मिठाइ भरि गाममे बिलहल जाइ छल। तात्पर्य ई होइ छल जे भरि गामक लोक बूझि जाए, जे ई बेटी आब अइ गामसँ चल जाएत। ओहि बेटीकें भरि गामक लोक धन-वित्त-जातिसँ परे, ओहि बेटीकेँ अपना घ'रमे एक साँझ भोजन करबै छल। सब किछुक लक्ष्यार्थ गुप्त रहै छल। एकर अर्थ ई छल, जे सम्पूर्ण गाम अपन-अपन थाड़ी-पीढ़ी देखा कए ओहि बेटीकेँ विवेककेँ उद्बुद्ध करै छल जे बेटी! आब तों ई गाम, ई कुल-वंश छोड़ि आन ठाम जा रहल छह, हमरा लोकनि अपन शील-संस्कृतिक ज्ञान तोरा देलियहु, सासुर जा कए, ओतुक्का शील-संस्कार देखि कए अपन विवेकसँ चलिह', आ अपन गाम, अपन कुल-शीलक प्रतिष्ठा बढ़बिह'। इएह कारण थिक जे पहिने कोनो बेटीक दुरागमनक दिन पैघ अन्तराल द' कए तय होइ छल। मुदा आब ई रिवाज एकटा औपचारिकता बनि कए रहि गेल अछि; गामक बेटीकें अपन बेटी मानिते के अछि?

मिथिलामे कोनो स्त्री संगें भैंसुर आ ममिया ससुरक वार्तालाप, भेंट-घाँट वर्जित रहल अछि, एते धरि जे दुनूमे छूआछूतक प्रथा अछि। आधुनिक सभ्यताक लोक एकरा पाखण्ड घोषित केलनि। परिस्थिति बदलै छै, त' मान्यताक सन्दर्भ बदलि जाइ छै, से भिन्न बात; मुदा एहि प्रथाकेँ पाखण्ड कहनिहार लोककेँ ई बुझबाक थिक जे ई प्रथा एहि लेल छल, जे एहि दुनू सम्बन्धमे समवयस्की हेबाक सम्भावना बेसी काल रहै छल। संयुक्त परिवारक प्रथा छल, कखनहुँ कोनो अघट घटि सकै छल। ई वर्जना एकटा शिष्टाचार निर्वहरण हेतु पैघ आधार छल। प्रायः इएह कारण थिक जे विवाह कालमे घोघट देबा लेल प्राथमिक अधिकार अही दुनू सम्बन्धीय व्यक्तिकेँ देल जाइ छनि। जाहि स्त्रीकेँ केओ भैंसुर अथवा ममिया

ससुर नहि छनि, हुनकहि टा ससुर स्थानीय कोनो आन व्यक्ति घोघट दै छनि। घोघट देबाक प्रक्रियामे कतेक नैतिक बन्हन रहैत अछि, से देखू, जे सकल समाजक समक्ष भैंसुर, नव विवाहित भावहुक उघार माथकेँ नव नूआसँ झाँपै छथि आ बगलमे ठाढ़ ब'र ओहि नूआकेँ घीचिकए माथ उघारि दैत अछि, ई प्रक्रिया तीन बेर होइत अछि, अन्तिम बेर माथ झाँपले राखल जाइत अछि। अर्थात्, सकल समाजक सम्मुख ओ व्यक्ति प्रतिज्ञा करैत अछि--हे शुभे! हम, तोहर भैंसुर (ससुर) प्रण लैत छी, जे जीवन पर्यन्त तोहर लाजक रक्षा करब! एते धरि जे अग्नि, आकाश, धरती, पवनकेँ साक्षी राखि जे व्यक्ति तोरा संग विवाह केलकहु अछि, सेहो जखन तोहर लाज पर आक्रमण करतहु, हम तोहर रक्षा लेल तैयार रहब!

अही तरहेँ उपनयनमे आचार्य, बह्मा, केस नेनिहारि, भीख देनिहारि, डोम, चमार, नौआ, धोबि, कमार, कुम्हार आदिक भागीदारी; आ एहने कोनो आन उत्सव, संस्कारमे सामूहिक भागीदारी सामाजिक अनुबन्धक तार्किक आधार देखबैत अछि।

कहबी अछि जे मैथिल भोजन भट्ट होइ छथि। अइ कहबीक त'हमे जाइ तँ ओतहु एकर सांस्कृतिक, पारम्परकि सूत्रा भेटल। मिथिलाक स्त्राी, खाहे ओ कोनहु जाति-वर्गक होथि, तीक्ष्ण प्रतिभाक स्वामिनी होइत रहल छथि। मुदा परदा प्रथाक कारणें हुनकर पैर भनसा घरसँ ल' क' अँगनाक डेरही धरि बान्हल रहै छलनि। अधिकांश समय भनसे घरमे बितब' पड़नि। सृजनशील प्रतिभा निश्चिन्त बैस' नहि दैन। की करितथि! भोजनक विन्यासमे अपन समय आ प्रतिभा लगब' लगलथि। आइयो भोजनक जतेक विन्यास, तीमन-तरकारीक जतेक कोटि, चटनी आ अचारक जेतक विधान मिथिलामे अछि, हमरा जनैत देशक कोनहुँ आन भागमे नहि होएत। वनस्पतिजन्य औषधिकेँ सुस्वादु भोजन बनएबाक प्रथा सेहो मिथिलामे सर्वाधिक अछि।... आब जखन एते प्रकारक भोजन ओ बनौलनि, तँ उपयोग कतए हैत?... घरक पुरुष वर्गकेँ खोआओल जाएत। सर्वदा एहिना होइत रहल अछि, जे कोनो क्रियाक विकृति प्रचारित भ' जाइत अछि, मूल तत्व गौण रहि जाइत अछि। मैथिल पेटू होइत अछि, से सब जनैए, मुदा मिथिलाक स्त्रीमे विलक्षण सृजनशीलता रहलैक अछि, से बात कम प्रचारित अछि। जे स्त्री कामकाजी होइ छलीह, खेत-पथार जा कए शरीर श्रम करै छलीह, गामक बाबू बबुआनक घर-आँगन नीपै, लेबै छलीह, तिनकहु कलात्मक कौशल हुनका लोकनिक काजमे देखाइ छल।

स्त्री जातिक कला-कौशलक मनोविज्ञानक उत्कर्ष तँ एना देखाइ अछि जे हुनका लोकनिक उछाह-उल्लास धरिमे जीवन-यापनक आधार आ घर-परिवारक मंगलकामना गुम्फित रहै छल। जट-जटिन लोक नाटिका विशुद्ध रूपसँ कृषि कर्मक आयोजन थिक, जे अनावृष्टिक आशंकामे मेघक आवाहन लेल होइ छल, होइत अछि; सामा भसेबा काल गाओल जाइबला गीतमे सब स्त्री अपन पारिवारिक पुरुष पात्राक स्वास्थ्यक कामना करै छथि; विवाह उपनयनमे अपरिहार्य रूपें वृक्ष पूजा (आम, महु), नदी पूजा, प्रकृति पूजा आदि करै छथि। विभिन्न वृत्तिक लोकक अधिकार क्षेत्र पर नजरि दी, तँ नौआ, कमार, कुम्हार, डोम, धोबि... सबहक स्वामित्व निर्धारित रहैत आएल अछि। जाहि गाम अथवा टोल पर जिनकर स्वामित्व छनि, हुनकर अनुमतिक बिना केओ दोसर प्रवेश नहि क' सकै छलाह। ई लोकनि आपसी समझौतासँ अथवा निलामीसँ गामक खरीद-बिक्री करै छलाह। एहि व्यवहारमे

जजमानक कोनो भूमिका अथवा दखल नहि होइ छल।

हस्तकलाक कुटीर उद्योग एतेक सम्पन्न छल, जे सामाजिक व्यवस्थामे सब एक दोसरा पर आश्रित छल। सूप, कोनियाँ, पथिया, बखाड़ी, घैल, छाँछी, सरबा, पुरहर, मौनी, पौती, जनौ, चरखा, लदहा, बरहा, गरदामी, मुखारी, उघैन, कराम, खाट, सीक, अरिपन... सब किछु लुप्तप्राय भ' गेल। एते धरि जे ई शब्द आ क्रिया अपरिचित भेल जा रहल अछि। ढोनि केनाइ, भौरी केनाइ, केन केनाइ, पस'र चरेनाइ, झिल्हैर खेलेनाइ सन क्रिया, आ सुठौरा, हरीस, लागन, बरेन, जोती, कनेल, पालो, चास, समार, फेरा, पचोटा, ढोसि, करीन सन शब्द आब आधुनिक साहित्योमे कमे काल अबैए।

मिथिलाक एहेन विलक्षण विरासत--कला, संस्कृति आ जीवन-यापन पद्धतिक उत्कृष्ट उदाहरण सम्भावनाविहीन भविष्यक कारणेँ आ सामाजिक कटुताक कारणेँ हेराएल जा रहल अछि। नवीन शिक्षा पद्धतिसँ सामाजिक जागृति बढ़ल, मुदा ओहि जागृतिक समक्ष ठाढ़ भेल वैज्ञानिक विकास आ आर्थिक उदारीकरणक प्रभावमे अहंकारग्रस्त समृद्ध लोककेँ लोलुपता आ क्षुद्र वृत्ति। संघर्ष जायज छल। अपन पारम्परिक वृत्ति आ हस्तकलामे, पुश्तैनी पेशामे लोककें अपन भविष्य सुरक्षित नहि देखेलै। ÷रंग उड़ल मुरूत' कथामे मायानन्द मिश्र आ ÷रमजानी' कथामे ललित मिथिलाक परम्परा पर आघात देखा चुकल छथि।...

ख'ढ़क घर आब होइत नहि अछि, घरामीक वृत्ति एहिना चल गेल। सीक'क प्रयोजन, खाटक प्रयोजन समाप्त भ' गेल, बचल-खुचल माल-जाल लेल नाथ-गरदामी आब प्लास्टिकक बनल-बनाएल डोरिसँ होअए लागल, बच्चाक खेलौना प्लास्टिकक होअए लागल। नौआ, कमार, धोबि, डोमक जागीर आपस लेल जा लागल। ओ लोकनि अपन पुश्तैनी पेशा छोड़ि आन-आन नोकरी चाकरीमे जाए लगलाह। स्त्री जाति आब भानस करबा लेल किताब पढ़ए लगलीह, फास्ट फूड खएबाक प्रथा विकसित भेल। मिथिला पेंटिंगकें आफसेट मशीन पर छपबा कए पूँजीपति लोकनि री-प्रोडक्शन बेच' लगलाह। जट-जटिन आ सामा-चकेबाक खेलक विडियोग्राफी देखाओल जाए लागल। गोनू झा, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, कारू खिरहरि, लोरिकाइनि आदिक कथा छपा कए बिक्री होअए लागल, टेप पर रेकॉर्ड क' कए, अथवा सी.डी.मे तैयार क' कए, री-

मिक्ससँ ओकर मौलिकतामे फेंट-फाँट क' कए लाक सुन' लागल, आ एकरा अपन बड़का उपलब्धि घोषित कर' लागल। ... अर्थात् जे लोककला लोकजीवनक संग विकसित आ परिवर्द्धित होइ छल, तकर अभिलेखनसँ (डकुमेण्टेशन) ओकरा स्थिर कएल जा लागल। लोकजीवनक संग अविरल प्रवाहित रहैबाली सांस्कृतिक-धारा आब अभिलेखागारमे बन्द रहत, ओकर विकासक सम्भावना स्थगित रहत।

अइ समस्त वृत्तिमे जुड़ल लोकक सम्मानित जीवन जीबै जोगर वृत्ति द' कए एकर विकासमान प्रक्रियाकें आओर तीव्र करबाक आवश्यकता छलै, मुदा जखन मिथिलाक लोके ओ ÷लोक' नहि रहि गेल अछि, तखन लोक-संस्कृति आ लोक-परम्पराक रक्षा के करत?



धर्मेन्द्र विह्वलजन्म विक्रम सम्वत २०२३-१२-०४, बस्तीपुर सिरहा,शिक्षा: एम ए (मैथिली/राजनीतिशास्त्र), डिप्लोमा ईन डेभलपमेन्ट जर्नालिज्म, प्रकाशित कृति : एक समयक बात (वि स २०६१ मैथिली हाईकु संग्रह), रस्ता तकैत जिनगी (वि स २०५०/ कविता संग्रह),एक सृष्टि एक कविता (२०५७/दीर्घ कविता),हमर मैथिली पोथी (कक्षा 1 सं ५ धरिक पाठय पुस्तक),सम्प्रति: सभापति, नेपाल पत्रकार महासंघ–सम्पादक

किछु छौंक

१) बदनामी

प्रेम आ सिनेहकँ

सरेबजार

निलाम नहि करू

गौरवमय इतिहासकँ

एना बदनाम नहि करू ।

२) विज्ञापन

जानि नहि

आदमीक जंगलमे

हम कतय

हेरा रहल छी

अखवारक ढ़ेरमे

हम जिनगीक विज्ञापन

ताकि रहल छी ।

३) इज्जत

खुलेआम इज्जत

बिका रहल अछि

दाम दऽ

झट कीनि दिअ

जल्दि करू

स्टोक सीमित अछि ।



धीरेन्द्र प्रेमर्षि (१९६७-)

मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति आदि विभिन्न क्षेत्रक काजमे समान रूपेँ निरन्तर सक्रिय व्यक्तिक रूपमे चिन्हल जाइत छथि धीरेन्द्र प्रेमर्षि। वि.सं.२०२४ साल भादब १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि। सरल आ सुस्पष्ट भाषा-शैलीमे लिखनिहार प्रेमर्षि कथा, कविताक अतिरिक्त लेख, निबन्ध, अनुवाद आ पत्रकारिताक माध्यमसँ मैथिली आ नेपाली दुनू भाषाक क्षेत्रमे सुपरिचित छथि। नेपालक स्कूली कक्षा १,२,३,४,९ आ १०क ऐच्छिक मैथिली तथा १० कक्षाक ऐच्छिक हिन्दी विषयक पाठ्यपुस्तकक लेखन सेहो कएने छथि। साहित्यिक ग्रन्थमे हिनक एक सम्पादित आ एक अनूदित कृति प्रकाशित छनि। प्रेमर्षि लेखनक अतिरिक्त सङ्गीत, अभिनय आ समाचार-वाचन क्षेत्रसँ सेहो सम्बद्ध छथि। नेपालक पहिल मैथिली टेलिफिल्म मिथिलाक व्यथा आ ऐतिहासिक मैथिली टेलिश्रृङ्खला महाकवि विद्यापति सहित अनेक नाटकमे अभिनय आ निर्देशन कऽ चुकल प्रेमर्षिकेँ नेपालसँ पहिलबेर मैथिली गीतक कैसेट कलियुगी दुनिया निकालबाक श्रेय सेहो जाइत छनि। हिनक स्वर सङ्गीतमे आधा दर्जनसँ अधिक कैसेट एलबम बाहर भऽ चुकल अछि। कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। "पल्लव" मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ "समाज" मैथिली सामाजिक पत्रिकाक–**सम्पादक**

मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

रूप-रङ्ग एवं चालि-प्रकृति देखलापर गीत आ गजल दुनू सहोदरे बुझाइत छैक। मुदा मैथिलीमे गीत अति प्राचीन काव्यशैलीक रूपमे चलैत आएल अछि, जखन कि गजल अपेक्षाकृत अत्यन्त नवीन रूपमे। एखन दुनूकेँ एकठाम देखलापर एना लगैत छैक जेना गीत-गजल कोनो कुम्भक मेलामे एक-दोसरासँ बिछुड़ि गेल छल। मेलामे भोतिआइत-भासैत गजल अरबदिस पहुँचि गेल। गजल ओम्हरे पलल-बढ़ल आ जखन बेस जुआन भऽ गेल तँ अपन बिछुड़ल सहोदरकेँ तकैत गीतक गाम मिथिलाधरि सेहो पहुँचि गेल। जखन दुनूक भेट भेलैक तँ किछु समय दुनूमे अपरिचयक अवस्था बनल रहलैक। मिथिलाक माटिमे पोसाएल गीत एकरा अपन जगह कब्जा करऽ आएल प्रतिद्वन्दीक रूपमे सेहो देखलक। मुदा जखन दुनू एक-दोसराकेँ लगसँ हियाकऽ देखलक तखन बुझबामे अएलैक-आहि रे बा, हमरासभमे एना बैर किएक, हम दुनू तँ सहोदरे छी! तकरा बाद मिथिलाक धरतीपर डेगसँ डेग मिला दुनू पूर्ण भ्रातृत्व भावेँ निरन्तर आगाँ बढ़ैत रहल अछि।

गीत आ गजलक स्वरूप देखलापर दुनूक स्वभावमे अपन पोसुआ जगहक स्थानीयताक असरि पूरापूरा देखबामे अबैत अछि। गीत एना लगैत छैक जेना रङ्गबिरङ्गी फूलकेँ सैँतिकऽ सजाओल सेजौट हो। मिथिलाक गीतमे काँटोसन बात जँ कहल जाइछ तँ फूलेसन मोलायम भावमे। एकरा हम एहू तरहेँ कहि सकैत छी जे गीत फूलक लतमारापर चलबैत लोककेँ भावक ऊँचाइधरि पहुँचबैत अछि। एहिमे मिथिलाक लोकव्यवहार एवं मानवीय भाव प्रमुख भूमिका निर्वाह करैत आएल अछि। जाहि भाषाक गारियोमे रिदम आ मधुरता होइत छैक, ओहि भूमिपर पोसाएल गीतक स्वरूप कटाह-धराह भइए नहि सकैत अछि। कही जे गीतमे तँ लालीगुराँसक फूलजकाँ ओ ताकत विद्यमान छैक जे माछ खाइत काल जँ गऽरमे काँट अटकि गेल तँ तकरो गलाकऽ समाप्त कऽ दैत छैक।

गजलक बगय-बानि देखबामे भलहि गीतेजकाँ सुरेबगर लगैक, एहिमे गीतसन नरमाहटि नहि होइत छैक। उसराह मरुभूमिमे पोसाएल भेलाक कारणे गजलक स्वभाव किछु उस्सठ होइत छैक। ई कट्टर इस्लामीसभक सङ्गतिमे बेसी रहल अछि, तँ एकर स्वभावमे "जब कुछ न चलेगी तो ये तलवार चलेगा" सन तेज तेवरबेसी देखबामे अबैत छैक। यद्यपि गजलकेँ प्रेमक अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम मानल जाइत छैक। गजल कहितहिँदेरी लोकक मन-मस्तिष्कमे प्रेममय माहौल नाचि उठैत छैक, एहि बातसँ हम कतहु असहमत नहि छी। मुदा गजलमे प्रेमक बात सेहो बेस धरगर अन्दाजमे कहल जाइत छैक। कहबाक तात्पर्य जे गजल तरुआरिजकाँ सीधे बेध दैत छैक लक्ष्यकेँ। लाइलपटमे बेसी नहि रहैत

छैक गजल। मिथिलाक सन्दर्भमे गीत आ गजलक एक्कहि तरहेँ जँ अन्तर देखबऽ चाही तँ ई कहल जा सकैत अछि जे गजल फूलक प्रक्षेपणपर्यन्त तरुआरिजकाँ करैत अछि, जखन कि गीत तरुआरि सेहो फूलजकाँ भँजैत अछि।

मैथिलीमे संख्यात्मक रूपेँ गजल आनहि विधाजकाँ भलहि कम लिखल जाइत रहल हो, मुदा गुणवत्ताक दृष्टिएँ ई हिन्दी वा नेपाली गजलसँ कतहु कनेको झूस नहि देखबामे अबैत अछि। एकर कारण इहो भऽ सकैत छैक जे हिन्दी, नेपाली आ मैथिली तीनू भाषामे गजलक प्रवेश एक्कहि मुहूर्त्तमे भेल छैक। गजलक श्रीगणेश करौनिहार हिन्दीक भारतेन्दु, नेपालीक मोतीराम भट्ट आ मैथिलीक पं. जीवन झा एक्कहि कालखण्डक स्रष्टासभ छथि।

मैथिलीयोमे गजल आब एतबा लिखल जा चुकल अछि जे एकर संरचनाक मादे किछु कहनाइ दिनहिमे डिबिया बारबजकाँ लगैत अछि। एहनोमे यदाकदा गजलक नामपर किछु एहनो पाँतिसभ पत्रपत्रिकामे अभरि जाइत अछि, जकरा देखलापर मोन किछु झुझुआन भइए जाइत छैक। कतेकोगोटेक रचना देखलापर एहनो बुझाइत अछि, जेना ओलोकनि दू-दू पाँतिवला तुकबन्दीक एकटा समूहकेँ गजल बूझैत छथि। हमरा जनैत ओलोकनि गजलकेँ दूरेसँ देखिकऽ ओहिमे अपन पाण्डित्य छाँटब शुरू कऽ दैत छथि। जँ मैथिली साहित्यक गुणधर्मकेँ आत्मसात कऽ चलैत कोनो व्यक्ति एकबेर दू-चारिटा गजल ढङ्गसँ देखि लिअए, तँ हमरा जनैत ओकरामे गजलक संरचनाप्रति कोनो तरहक द्विविधा नहि रहि जएतैक।

तँ सामान्यतः गजलक सम्बन्धमे नव जिज्ञासुक लेल जँ किछु कहल जाए तँ विना कोनो पारिभाषिक शब्दक प्रयोग कएने हम एहि तरहेँ अपन विचार राखऽ चाहैत छी- गजलक पहिल दू पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत छैक। अन्तिम एक, दू वा अधिक शब्द सभ पाँतिमे सझिया रहलहुपर साझी शब्दसँ पहिनुक शब्दमेअनुप्रास वा कही तुकबन्दी मिलल रहबाक चाही। अन्य दू-दू पाँतिमे पहिल पाँति अनुप्रासक दृष्टिएँ स्वच्छन्द रहैत अछि। मुदा दोसर पाँति वा कही जे पछिला पाँति स्थायीवला अनुप्रासकेँ पछुअबैत चलैत छैक।

ई तँ भेल गजलक मुह-कानक संरचनासम्बन्धी बात। मुदा खालि मुहेँ-कानपर ध्यान देल जाए आ ओकर कथ्य जँ गोङिआइत वा बौआइत रहि जाए तँ देखबामे गजल लगितो यथार्थमे ओ गीजल भऽ जाइत अछि। तँ प्रस्तुतिकरणमे किछु रहस्य, किछु रोमाञ्चक सङ्ग समधानल चोटजकाँ गजलक शब्दसभ ताल-मात्राक प्रवाहमय साँचमे खचाखच बैसैत चलि जएबाक चाही। गजलक पाँतिकेँ अर्थवत्ताक हिसाबेँ जँ देखल जाए तँ कहि सकैत छी जे हऽरक सिराउरजकाँ ई चलैत चलि जाइत छैक। हऽरक पहिल सिराउर जाहि तरहेँ धरतीक छाती चीरिकऽ ओहिमे कोनो चीज जनमाओल जा सकबाक आधार प्रदान करैत छैक, तहिना गजलक पहिल पाँति कल्पना वा विषयवस्तुक उठान करैत अछि, दोसर पाँति हऽरक दोसर सिराउरक कार्यशैलीक अनुकरण करैत पहिलमे खसाओल बीजकेँ आवश्यक मात्रमे तोपन दऽकऽ पुनः आगू बढ़बाक मार्ग प्रशस्त्र करैत अछि। गजलक प्रत्येक दू-पाँति अपनहुमे स्वतन्त्र रहैत अछि आ एक-दोसराक सङ्ग तादात्म्य स्थापित करैत समग्रमे सेहो एकटा विशिष्ट अर्थ दैत अछि। एकरा दोसर तरहेँ एहुना कहल जा सकैत अछि जे गजलक पहिल पाँति कनसारसँ निकालल लालोलाल लोह रहैत अछि, दोसर पाँति ओकरा निर्दिष्ट आकारदिस बढ़एबाक लेल पड़ऽ वला घनक समधानल चोट भेल करैत अछि।

गीतक सृजनमे सिद्धहस्त मैथिलसभ थोड़े बगय-बानि बुझितहिँ आसानीसँ गजलक सृजन करऽ लगैत छथि। सम्भवतः तेँ आरसीप्रसाद सिंह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ महेन्द्र, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. गङ्गेश गुञ्जन, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र आदि मूलतः गीत क्षेत्रक व्यक्तित्व रहितहु गजलमे सेहो कलम चलौलनि। ओहन सिद्धहस्त व्यक्तिसभक लेल हमर ई गजल लिखबाक तौर-तरिकाक मादे किछु कहब हास्यास्पद भऽ सकैत अछि, मुदा नवसिखुआसभकेँ भरिसक ई किछु सहज बुझाइक।

मैथिलीमेकलम चलौनिहारसभमध्य प्रायः सभ एक-आध हाथ गजलोमे अजमबैत पाओल गेलाह अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्र ''यात्री'' सेहो ''भगवान हमर ई मिथिला'' शीर्षक कविता पूर्णतः गजलक संरचनामे लिखने छथि। मुदा सियाराम झा ''सरस'', स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ.राजेन्द्र विमल सन किछु साहित्यकार खाँटी गजलकारक रूपमे चिन्हल जाइत छथि। ओना सोमदेव, डॉ.केदारनाथ लाभ, डॉ.तारानन्द वियोगी, डॉ.रामचैतन्य धीरज, बाबा वैद्यनाथ, डॉ. विभूति आनन्द, डा.धीरेन्द्र धीर, फजलुर्रहमान हाशमी, रमेश, बैकुण्ठ विदेह, डा.रामदेव झा, रोशन जनकपुरी, पं. नित्यानन्द मिश्र, देवशङ्कर नवीन, श्यामसुन्दर शशि, जनार्दन ललन, जियाउर्ररहमान जाफरी, अजितकुमार आजाद, अशोक दत्त आदिसमेत कतेको स्रष्टाक गजल मैथिली गजल-संसारकेँ विस्तृति दैत आएल अछि।

गजलमे महिला हस्ताक्षर बहुत कम देखल जाइत अछि। मैथिली विकास मञ्चद्वारा बहराइत पल्लवक पूर्णाङ्क १५, २०५१ चैतक अङ्क गजल अङ्कक रूपमे बहराएल अछि। सम्भवतः ३४ गोट अलग-अलग गजलकारक एकठाम भेल समायोजनक ई पहिल वानगी हएत। एहि अङ्कमे डा. शेफालिका वर्मा एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे गजलक सङ्ग

प्रस्तुत भेलीह अछि। एही अङ्कक आधारपर नेपालीमे मैथिली गजल सम्बन्धी दूगोट समालोचनात्मक आलेख सेहो लिखाएल अछि। पहिल मनु ब्राजाकीद्वारा कान्तिपुर २०५२ जेठ २७ गतेक अङ्कमे आ दोसर डा. रामदयाल राकेशद्वारा गोरखापत्र २०५२ फागुन २६ गतेक अङ्कमे। छिटफुट आनहु गजल सङ्कलन बहराएल होएत, मुदा तकर जानकारी एहि लेखककेँ नहि छैक। हँ, सियाराम झा ''सरस''क सम्पादनमे बहराएल ''लोकवेद आ लालकिला'' मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप दऽ बहुत किछु फरिछाकऽ कहैत पाओल गेल अछि। एहिमे सरससहित तारानन्द वियोगी आ देवशङ्कर नवीनद्वारा प्रस्तुत गजलसम्बन्धी आलेख सेहो मैथिली गजलक तत्कालीन अवस्थाधरिक साङ्गोपाङ्ग चित्र प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि।

समग्रमे मैथिली गजलक विषयमे ई कहि सकैत छी जे मैथिली गीतक खेतसँ प्राप्त हलगर माटिमे गुणवत्ताक दृष्टिएँ मैथिली गजल निरन्तर बढ़िरहल अछि, बढ़िएरहल अछि।

गजल १

झुट्ठो जे नहि डाइन नचौलक ओ भगता ओ धामी की
एको गाम जँ डाहि ने सकलहुँ तँ ओढ़ने रमनामी की

अक्षत-चानन धूप-दीपसँ जतऽ यज्ञ सम्पूर्ण हुअए-
ततऽ जँ क्यो हड्डी रगड़ैए, ओ कामी ओ कलामी की

बाप-माएपर्यन्त परोसै स्नेह जखन बटखारासँ-
नकली सभक दुलार लगैए, से काकी, से मामी की

सोनित सेहो शराब बनै छै शासनकेर सनकी भट्ठी
दियौ घटाघटि जे भेटए से, फुसियाही की दामी की

पोखरिक रखबारी पएबालए कण्ठी खालि बान्हि लिअ
फेर गटागटि घोँटने चलियौ, से पोठिया से बामी की

पाग उतारिकऽ कूदि गेल ''प्रेमर्षि'' सेहो अखाड़ामे
ढाहि सकल ने जुल्म-इमारत करतै ओहन सुनामी की

(वि.२०६२/०५/३०)

गजल २

मोन जँ कारी अछि तँ चमड़ी गोरे की करतै?
ममते जँ अरुआएल तँ माएक कोरे की करतै?
गगनसँ उतरै मेघ नयनमे जखन साँचिकऽ शङ्का
केहनो अन्हार चीरिकऽ जनमल भोरे की करतै?

नीम पीबिकऽ माहुर सेहो पचाबैत आएल छी तँ
काँटकेँ धाडैत डेगकेँ थोड़े अङोरे की करतै?

घामक सिँचल धरती छोड़ि ने जकरा कतौ भरोसा
तकरा लेल बनसीक सुअदगर बोरे की करतै?

आगि पीबिकऽ बज्र बनौने छै जे अप्पन छाती
तकरा आगाँ गोहिया आँखिक नोरे की करतै?

तैयो लागल ''प्रेमर्षि'' अछि बस प्रेमक खेतीमे
प्रेमक धन भेल घरमे जाबिड़ चोरे की करतै?

(वि.२०६२/०५/२०)

शुभकामना दिआबातीक

चमकैत दीपकेँ देखिकऽ
जेना झुण्ड कीड़ा-मकोड़ा
कऽ दैछ न्यौछावर अपन अस्तित्व
दुर्गुण वा खलतत्त्वरूपी कीड़ा-मकोड़ाकेँ
नष्ट करबाक लेल चाही ने आओर किछु
अपना भीतरक मानवीय इजोतक टेमी
कने आओर उसका ली
अपनाकेँ सभक मन-मनमे मुसका ली
इएह अछि शुभकामना दिआबातीक-
देहरि दीप जरए ने जरए
मनधरि सदति रहए झिलमिल
किएक तँ अपना मात्र इजोतमे रहने
मेटा नहि सकैछ संसारसँ अन्हार

दिगम्बर झा 'दिनमणि'

१

चल रौ बौआ चलै देखऽले घुसहा सब पकड़ेलैए

घुसुर घुसुर जे घुस लैत छल,

से सब आइ धरैलैए

मालपोत, भन्सार, पुलिस कि, कर अदालत जेतौं

घूसखोरक संजाल पसारल छै बाँच नै पबितौं

अनुसन्धानक कारवाइमे

सवहक होस हेरेंलैए

विना घूसके कहियो ककरो, जे नै कानो काज करै

बैमानी सैतानी करबा, मे नै कनिको लाज करै

क्यो कानूनके चंगुलमे फँसने

परदेस पड़ेलैए

२

हम सुना रहल छी तीन धार

भारी सहैत अछि भार कहथि सभ खेती सहिते अछि उजाड़।

गिद्दड़ सन सुटकओने नाङरि आगू पाछू जे छल करैत।

जे भोर साँझ, दश लोक माझ, हमरे दिश छल रहि-रहि बढ़ैत।

हम आङुर पकड़ि जकरा पथपर अति शीघ्र चलाऽ देलौं

हमरे प्रगतिक पथकेँ आगाँ, से ठाढ़ भेल बनिकऽ पहाड़॥

हम सुना

ककरा कहबै के सुनत आब, पओ कतौ छैक छै कतौ घाव,

हम भेलौं आब हड्डी समान, कहियो हमहीं रुचिगर कवाव।

हम घास खाअकऽ पालि-पोसि, जकरा कएलौं दुधगरि लगहरि,

तकरा लगमे जँ जाइत छियै, तऽ हमरे मारैए लथार॥ हम सुना,

हम तोड़ि देबै झिक-झोड़ि देबै शाखा फल-फूल मचोड़ि देबै,

स्वार्थक छै जे जड़िआएल बृक्ष तकरा जड़िस हम कोड़ि देबै।

मनमे जे चिनगी सुनगि रहल, से कहियाधरि हम झाँपि सकब,

तें ई मन जहिया लहरि जेतै, तहिया खएतै धोविया पछाड़॥ हम सुना

३

चलैमन जगदम्बाक द्वारि चलैमन जगदम्बाक द्वारि।

सब दुःख हरती झोड़ी भरती, बिगड़ल देती सम्हारि॥

चलै मन...

मधु कैटभक डरे पड़एला जटिया स्वयं विधाता।

पूजन ध्यान बन्दना कएलनि कष्टहरु हे माता॥

बोधल हरि मारल मधु कैटभ बिधिकेँ कएल गोहारि।

चलै मन..

महिषासुरक त्राससँ धरती थर-थर काँपए लागल

छोड़ि अपन घर द्वारि देवता ऋषि मुनि जंगल भागल।

हुनका सबहक कष्ट हरि लेलनि महिषासुरकेँ मारि। चलै मन..

हुँ कारक उच्चरित शब्दसँ धुम्र गेल सुरधाम।

चण्ड-मुण्ड आ रक्तवीजकेँ मिटा देलनि माँ नाम।

शुम्भ-निशुम्भ मारि धरतीसँ दैत्य कएल निकटारि॥ चलै मन...

शशि कुज बुध गुरु शुक्र शनिश्रवर की दिनमणिक तारा।

सर, नर मुनि, गन्धर्व अप्सरा सबहक अहीँ सहारा।

हमरो नैया पार करु माँ, भबसँ दिय उबारि। चलै मन...



गजेन्द्र ठाकुर

(जन्म 30 मार्च 1971) कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-1 सँ 7 (लेखकक छिड़िआयल पद्य, उपन्यास, गल्प-कथा, नाटक-एकाङ्की, बालानां कृते, महाकाव्य, शोध-निबन्ध आदिक समग्र संकलन) प्रेसमे अछि। ई-मेल- ggajendra@airtelmail.in

केदारनाथ चौधरीक उपन्यास ''चमेली रानी'' आ माहुर

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल । एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ खतम भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- ''...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ ''कन्यादान''क पश्चात् ''द्विरागमन'' लिखए पड़लनि तहिना ''चमेलीरानी''क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि''।

ई दुनू खण्ड कैक तरहेँ मैथिली उपन्यास लेखनमे मोन राखल जाएत। एक तँ जेना रामलोचन ठाकुर जी कहैत छथि- ''..पारस-प्रतिभाक एहि लेखकक पदार्पण एते विलम्बित किएक?'' ई प्रश्न सत्ये अनुत्तरित अछि। लेखक अपन ऊर्जाक संग अमेरिका, ईरान आ आन ठाम पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि रोजगारमे रहथि मुदा ममता गाबए गीतक निर्माता घुमि कऽ दरभंगा अएलाह तँ अपन समस्त जीवनानुभव एहि दुनू उपन्यासमे उतारि देलन्हि। राजमोहन झासँ एकटा साक्षात्कारमे हम एहि सम्बन्धमे पुछने रहियन्हि तँ ओ कहने रहथि जे बिना जीवनानुभवक रचना संभव नहि,जिनकर जीवनानुभव जतेक विस्तृत रहतन्हि से ओतेक बेशी विभिन्नता आ नूतनता आनि सकताह। केदारनाथ चौधरीक ''चमेली रानी'' आ ''माहुर'' ई सिद्ध करैत अछि। चमेली रानी बिक्रीक एकटा नव कीर्तिमान बनेलक। मात्र जनकपुरमे एकर ५०० प्रति बिका गेल। लेखक ''चमेली रानी''क समर्पण ''ओहि समग्र मैथिली प्रेमीकेँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगीमे अपन कैंचा खर्च कऽ मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि'' केँ करैत छथि, मुदा जखन अपार बिक्रीक बाद एहि पोथीक दोसर संस्करण २००७ मे एकर दोसर खण्ड ''माहुर''क २००८ मे आबए सँ पूर्वहि निकालए पड़लन्हि तखन दोसर भागमे समर्पण स्तंभ छोड़नाइये लेखककेँ श्रेयस्कर बुझेलन्हि। एकर एकटा विशिष्टता हमरा बुझबामे आएल २००८ केर अन्तिम कालमे जखन हरियाणाक उपमुख्यमंत्री एक मास धरि निपत्ता रहलाह, मुदा राजनयिक विवशताक अन्तर्गत जाधरि ओ घुरि कऽ नहि अएलाह तावत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जा सकल। अपन गुलाब मिश्रजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण निपत्ता रहलोपर गद्दीपर बैसले रहलाह,क्यो हुनका हँटा नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होए। उपन्यास-लेखकक जीवनानुभव एकर सम्भावना चारि साल पहिनहिए लिखि कऽ राखि देलक। भविष्यवक्ता कोनो टोना-टापरसँ भेनाइ संभव नहि होइत अछि वरन् जीवनानुभव एकरा सम्भव बनबैत अछि। एहि दुनू उपन्यासक पात्र चमत्कारी छथि, आ सफल सेहो कारण उपन्यासकार एकरा एहि ढंगसँ सृजित करैत छथि जेना सभ वस्तुक हुनका व्यक्तिगत अनुभव होइन्ह।

उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। ''चमेली रानी'' उपन्यासक प्रारम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होइत छथि जखन एकर लयात्मक प्रारम्भ पाठकमे रुचि उत्पन्न करैत अछि। कीर्तिमुखक पाँच टा बीटाक नामकरणक लेल ओकर जिगरी दोस कन्टीरक विचार जे ''पाँचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ''। फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ बच्चा होइत रहैक से कौरवक नाम राखए पड़ितैक। नायिका चमेली रानीक आगमन धरि कीर्तिमुखक बेटा सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपकुम्मरिक सन्तान सुनयनाक विवरण अबैत अछि। फेर रूपकुम्मरिक बेटी सुनयनाक बेटी शनिचरी आ नेताजी रामठेंगा सिंह ''चिनगारी''क विवाह आ नेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कनही मोदियानि लग लोक-लाजक द्वारे राखि पटना जाएब, नेताजीक मृत्यु आ शनिचरी आ कीर्तिमुखक विवाहक वर्णन फेरसँ खिस्साकेँ समेटि लैत अछि। तकर बाद चमेली रानिक वर्णन अबैत छथि जे बरौनी रिफाइनरीक स्कूलमे बोर्डिंगमे पढ़ैत छथि आ एहि कनही मोदियानिक बेटी छथि। कनही मोदियानिक मृत्युक समय चमेली रानी दसमाक परीक्षा पास कऽ लेने छथि। भूखन सिंह चमेली रानीक धर्म पिता छथि। डकैतीक विवरणक संग उपन्यासक पहिल भाग खतम भऽ जाइत अछि।

दोसर भागमे विधायकजीक पाइ आकि खजाना लुटबाक विवरण, जे कि पूर्व नियोजित छल, एहि तरहेँ देखाओल गेल अछि जेना ई विधायक नांगटनाथ द्वारा एकटा आधुनिक बालापर कएल बलात्कारक परिणामक फल रहए। आब ई नांगटनाथ रहथि मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे राजनीतिक दाँवपेंचमे विधायक बनि गेलाह। २००८ ई.क अरविन्द अडिगक बुकर पुरस्कारसँ सम्मानित अंग्रेजी उपन्यास ''द ह्वाइट टाइगर''क बलराम हलवाइक चरित्र जे चाहक दोकानपर काज करैत दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनि फेर ओकरा मारि स्वयं धनिक बनि जाइत अछि, सँ बेश मिलैत अछि आ चारि बरख पूर्व लेख एहि चरित्रक निर्माण कऽ चुकल छथि। फेर के.जी.बी. एजेन्ट भाटाजीक आगमन होइत अछि जे उपन्यासक दोसर खण्ड ''माहुर'' धरि अपन उपस्थिति बेश प्रभावी रूपेँ रखबामे सफल होइत छथि।

उपन्यासक तेसर भागमे अहमदुल्ला खाँक अभियान सेहो बेश रमनगर अछि आ वर्तमान राजनीतिक सभ कुरूपताकेँ समेटने अछि।

उपन्यासक चारिम भाग गुलाब मिसिरक खेरहा कहैत अछि आ फेरसँ अरविन्द अडिगक बलराम हलवाइकेँ मोन पाड़ैत अछि। भुखन सिंहक संगी पन्नाकेँ गुलाब मिसिर बजबैत अछि आ ओकरा भुखन सिंहक नांगटनाथ आ अहमदुल्ला अभियानक विषयमे कहैत अछि। संगहि ओकरा मारबाक लेल कहैत अछि से ओ मना कऽ दैत छैक। मुदा गुलाब मिसिर भुखन सिंहकेँ छलसँ मरबा दैत अछि।

पाँचम भागमे भुखन सिंहक ट्रस्टक चरचा अछि, चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि बैद्यनाथ धाम चलि जाइत छथि। आब चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। स्टिंग ऑपरेशन होइत छथि आ गुलाब मिसिर घेरा जाइत छथि।

उपन्यासक छठम भाग मुख्यमंत्रीक निपत्ता रहलाक उपरान्तो मात्र फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाओल जएबाक चरचा होएबाक अछि जे कोलिशन पोलिटिक्सक विवशतापर टिप्पणी अछि।

उपन्यासक दोसर खण्ड ''माहुर''क पहिल भाग सेहो घुरियाइत-घुरियाइत चमेली रानीक पार्टीक संगठनक चारू कात आबि जाइत अछि। स्त्रीपर अत्याचार, बाल-विधवा आ वैश्यावृत्तिमे ठेलबाक संगठन सभकेँ लेखक अपन टिप्पणी लेल चुनैत छथि।

माहुरक दोसर भागमे गुलाब मिसिरक राजधानी पदार्पणक चरचा अछि। चमेली रानी द्वारा अपन अभियानक समर्थनमे नक्सली नेताक अड्डापर जएबाक आ एहि बहन्ने समस्त आन्दोलनपर लेखकीय दृष्टिकोण, संगहि बोनक आ आदिवासी लोकनिक सचित्र-जीवन्त विवरण लेखकीय कौशलक प्रतीक अछि। चमेली रानी लग फेर रहस्योद्घाटन भेल जे हुनकर माए कनही मोदियाइन बड़ड पैघ घरक छथि आ हुनकर संग पटेल द्वारा अत्याचार कएल गेल, चमेली रानीक पिताक हत्या कऽ देल गेल आ बेचारी माए अपन जिनगी कनही मोदियाइन बनि निर्वाह कएलन्हि। ई सभ गप उपन्यासमे रोचकता आनि दैत अछि।

माहुरक तेसर भाग फेरसँ पचकौड़ी मियाँ, गुलाब मिसिर, आइ.एस.आइ. आ के.जी.बी.क षडयन्त्रक बीच रहस्य आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि।

माहुरक चारिम भाग चमेली रानी द्वारा अपन माए-बापक संग कएल गेल अत्याचारक बदला लेबाक वर्णन दैत अछि, कैक हजार करोड़क सम्पत्ति अएलासँ चमेली रानी सम्पन्न भऽ गेलीह।

माहुरक पाँचम भाग राजनैतिक दाँव-पेंच आ चमेली रानीक दलक विजयसँ खतम होइत अछि।

विवेचन: उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक ''डॉन क्विक्जोट'', जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवती चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।

जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

नचिकेता:नो एण्ट्री : मा प्रविश

विवेचन: भारत आऽ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक ''नाट्यशास्त्र'' आऽ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक ''काव्यशास्त्र''।

भरत नाट्यकेँ ''कृतानुसार'' ''भावानुकार'' कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि।

अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आऽ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आऽ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल

जाएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होए से आवश्यक नहि, नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि तँ कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आऽ नहिए कोनो प्रासांगिक, कारण एहिमे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नहि अछि। जे बजारी उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ैत छथि से कनेक कालक बाद गौण पड़ि जाइत छथि। जाहि उच्क्काक सोझाँ चोर सकदम रहैत अछि से किछु कालक बाद, किछु नव नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थर्रेने छथि से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज, मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आऽ निभा सेहो हुनका आऽ चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। वामपंथीक आऽ अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आऽ रिबाउन्ड करैत छथि।

कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आऽ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आऽ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आऽ यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आऽ भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि! मात्र यमराज आऽ चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बद्ध नहि अछि आऽ इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आऽ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबसँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना आदि जाहि सरलताक संग फ्लोमे अबैत अछि, से ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जाएत। फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आऽ इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मनैत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश केँ काल्पनिकमूलक श्रेणीमे एहि हिसाबसँ राखल जाएत। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र, यशस्वी आऽ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे जे चरित्र सभ छथि ताहिमे सभ चरित्रमे सत् असत् केर मिश्रण अछि। निभा उच्चवंशीय छथि मुदा रमणी मोहन जे बलात्कारक बादक पिटाई केर बाद मृत भेल छथि हुनकासँ हिलि-मिलि जाइत छथि। भिखमंगनी मिथिला चित्रकार अनसूया छथि। दुनू भद्रपुरुष बजारी आऽ चारू सैनिक एहि प्रकारेँ बिन कलुषताक सोझाँ अबैत छथि। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आऽ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहैत छथि। बजारी आऽ दुनू भद्रपुरुष संगीतक बेश प्रेमी छथि तँ रमणी मोहन प्रेमी-प्रेमिकाकेँ देखि कए ईर्ष्यालू, सैनिक सभ शान्त छथि क्षत्रियोचत गुण सेहो छन्हि से धीरोदत्त आऽ धीरप्रशान्त दुनू छथि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि प्रकारक विभाजन सम्भव नहि अछि।

भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राम्याशा, नियताप्ति आऽ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत छथि। प्राम्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांत आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आऽ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे उलझन अबैत अछि, अन्तिम दू मे सुलझन।

कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आऽ कार्य अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे बीया अछि एकटा द्वन्द मृत्युक बादक लोकक, बीमा एजेन्ट एतए बिनु मृत्युक पहुँचि जाइत छथि। यमराज आऽ चित्रगुप्त मेकप आर्टिस्ट निकलैत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आऽ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे ओऽ धरणापर खतम भए जाइत अछि! अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आऽ अवसान कहैत छथि। आब आऊ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आऽ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आऽ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आऽ प्राम्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आऽ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आऽ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आऽ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मुख/ प्रतिमुख आऽ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आऽ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आऽ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दुइये घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होए आऽ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होय। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कल्लोलक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आऽ नव कार्यारम्भमे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आऽ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओऽ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि अबैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आपसी गपशपमे- जकरा फ्लैशबैक सेहो कहि सकैत छी- ककर मृत्यु कोना भेल से नीक जेकाँ दर्शित कएल गेल अछि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आऽ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आऽ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि मुदा पठनसँ सेहो

रसास्वाद भेटैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे पहिल कल्लोलक प्रारम्भमे ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एतए दृश्यत्वकेँ प्रधानता देल गेल अछि। पश्चिमी रंगमंच नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भारतीय विधानकेँ अंगीकृत कएल गेल- जेना मृत्यु प्राप्त सभ गोटे द्वारा स्वर्ग प्रवेश द्वारक अदृश्य देबाड़क गपशप आऽ अभिनय कौशल द्वारा स्पष्टता। अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आऽ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल। नो एण्ट्री: मा प्रविश मैथिलीक परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ने अछि मुदा संगहि इतिहास, पुराण आऽ समकालीन जीवनचक्रकेँ देखबाक एकटा नव दृष्टिकोण लए आएल अछि, सोचबाऽ लए एकटा नव अंतर्दृष्टि दैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक "नायकक नाम जीवन, एक छल राजा", श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एण्ट्री: मा प्रविश तार्किकता आऽ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। वामपंथीकेँ यमराज ईहो कहैत छथिन्ह, जे वामपंथी देखि रहल छथि से सत्य नहि सपनो भए सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आऽ वामपंथी सेहो कहैत छथि कि चोर नेता नहि बनि सकैत छथि मुदा नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृति मारल जाए बला छन्हि। नाटकमे आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आऽ नीक-खराबक भावना रहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। यमराज आऽ चित्रगुप्त तक मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आऽ चरित्र सभक नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि अछि। यदि अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचए बला- विद्यमान छथि। कारण, नियन्त्रण आऽ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आऽ नारीवादी दृष्टिकोण आऽ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि। एहि तरहेँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण दर्शित होइत अछि, एतए पाठक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द नाटकक अंतमे दर्शित भेल से उत्तर-आधुनिक युगक पाठककेँ आश्चर्यित नहि करैत छन्हि, किएक तँ ओऽ दैनिक जीवनमे एहि तरहक द्वन्दक नित्य सामना करैत छथि।

ई नाटक मैथिलि नाटक लेखनकेँ एकटा नव दिशामे लए जाएत आऽ आन विधामे सेहो नूतनता आनत से आशा कए सकैत छी।

कथा: पहरराति

"सुनू। प्रयोगशालाक स्विच ऑफ कए दियौक"।

चारि डाइमेन्शनक वातावरणमे अपन सभटा द्वि आ त्रि डाइमेन्शनक वस्तुक प्रयोग करबाक लेल धौम्य प्रयोगशालामे प्रयोग शुरू करए बला छथि। हुनकर संगी-साथी सभ उत्सुकतासँ सभटा देखि रहल छथि।

"दू डाइमेन्शनमे जीबए बला जीव तीन डाइमेन्शनमे जीबए बला मनुक्खक सभ कार्यकेँ देखि तऽ नहि सकैत छथि मुदा ओकर सभटा परिणामक अनुभव करैत छथि। अपन एकटा जीवन-शैलीक ओ निर्माण कएने छथि। ओहि परिणामसँ लड़बाक व्यवस्था कएने छथि। तहिना हमरा लोकनि सेहो चारि डाइमेन्शनमे रहए बला कोनो सम्भावित जीवक वा ई कहू जे तीनसँ बेशी डाइमेन्शनमे जिनहार जीवक हस्तक्षेपकेँ चिन्हबाक प्रयास करब"। धौम्य कहैत रहलाह।

एक आ दू डाइमेन्शनमे रहनिहारक दू गोट प्रयोगशालाक सफलताक बाद धौम्यक ई तेसर प्रयोग छल।

"एक विमीय जीव जेना एकटा बिन्दु। बच्चामे ओ पढ़ैत छलाह जे रेखा दू टा बिन्दुकेँ जोड़ैत छैक। नञि तऽ बिन्दुमे कोनो चौड़ाइ देखना जाइत अछि आ नहिये रेखामे। रेखा नमगर रहैत अछि मुदा बिन्दुमे तँ चौड़ाइक संग लम्बाइ सेहो नहि रहैत छैक। एक विमीय विश्वमे मात्र आगाँ आ पाछाँ रहैत अछि। नञि अछि वाम दहिनक बोध नहिये ऊपर नीचाँक। मात्र सरल रेखा, वक्रता कनियो नहि। आब ई नहि बुझि लिअ जे अहाँ जतए बैसल छी, ओतए एकटा रेखा विचरण करए लागत। वरण ई बुझू जे ओ रेखा मात्र अछि, नहि कोनो आन बहिः।

"द्वि बीमीय ब्रह्माण्ड भेल जतए आगू पाछूक विहाय वाम दहिन सेहो अछि मुदा ऊपर आ नीछाँ एतए नहि अछि। ई बुझू जे अहाँक सोझाँ राखल सितलपाटीक सदृश ई होएत, जाहिमे चौड़ाइ विद्यमान नहि अछि।" "मुदा श्रीमान् ई चलैत अछि कोना। गप कोना करत, एक दोसरकेँ संदेश कोना देत"।

"आऊ। पहिने एक विमीय ब्रह्माण्डक अवलोकन करैत छी"।

धौम्य एक विमीय प्रयोगशालाक लग जाइत छथि। ओतए बिन्दु आ बिन्दुक

सम्मिलन स्वरूप बनल रेखा सभ देखबामे अबैत अछि। ई जीव सभ अछि। एक विमीय ब्रह्माण्डक जीव जे एहि तथ्यसँ अनिभिज्ञ अछि जे तीन विमीय कोनो जीव ओकरा सभकेँ देखि रहल छैक।

"देखू। ई सभ जीव एक दोसराकेँ पार नहि कए सकैत अछि। आगू बढ़त तँ तावत धरि जा धरि कोनो बिन्दु वा रेखासँ टक्कर नहि भए जएतैक। आ पाछाँ हटत तावत धरि यावत फेर कोनो जीवसँ भेँट नहि होएतैक। एक दोसराकेँ संदेश सेहो मात्र एकहि पँक्तिमे दए सकत कारण पंक्तिक बाहर किछु नहि छैक। ओकर ब्रह्माण्ड एकहि पंक्तिमे समाप्त भए जाइत अछि।

"आब चलू द्वि बीमीय प्रयोगशालामे"।

सभ क्यो पाछाँ-पाछाँ जाइत छथि।

"एतय किछु रमण चमन अछि। पहिल प्रयोगशाला तँ दू तहसँ जाँतल छल, दुनू दिशिसँ आ ऊपरसँ सेहो। मात्र लम्बाइ अनन्त धरि जाइत छल। मुदा एतय ऊपर आ नीचाँक सतह जाँतल अछि। ई आगाँ पाछाँ आ वाम दहिन दुनू दिशि अनन्त धरि जा रहल अछि। ताहि हेतु हम दुनू प्रयोशालाकेँ पृथ्वीक ऊपर स्वतंत्र नभमे बनओने छी। एतुक्का जीवकेँ देखू। सीतलपाटी पर किछुओ बना दियौक। जेना छोट बच्चा जे आधुनिक चित्रकार बनबैत छथि। एतय ओ सभ प्रकार भेटि जाएत। मुदा ऊँचाइक ज्ञान एतए नहि अछि। एक दोसरकेँ एक बेरमे मात्र रेखाक रूपमे देखैत अछि ई सभ। दोसर कोणसँ दोसर रेखा आ तखन स्वरूपक ज्ञान करैत जाइत अछि। लम्बाइ आ चौड़ाइ सभ कोणसँ बदलत। मुदा वृत्ताकार जीव सेहो होइत अछि। जेना देखू ओ जीव वाम कातमे। एक दोसराकेँ संदेश ओकरा लग जा कए देल जाइत अछि। पैघ समूहमे संदेश प्रसारित होयबामे ढ़ेर समय लागि जाइत अछि"।

"श्रीमान, की ई संभव अछि, जेना हमरा सभक सोझाँ रहलो उत्तर ओ सभ हमरा लोकनिक अस्तित्वसँ अनभिज्ञ अछि तहिना हमरा सभ सेहो कोनो चारि आ बेशी विमीय जीवक अस्तित्वसँ अनभिज्ञ होइ"।

"हँ तकरे चर्चा आ प्रयोग करबाक हेतु हमरा सभ एतए एकत्र भेल छी। अहाँमे सँ चारि गोटे हमरा संग एहि नव कार्यक हेतु आबि सकैत छी। ई योजना कनेक कठिनाह अछि। कतेक साल धरि ई योजना चलत आ परिणाम कहिया जा कए भेटत, तकर कोनो सीमा निर्धारण नहि अछि"।

पाँच टा विद्यार्थी श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा एहि कार्यक हेतु सहर्ष तैयार भेलाह। धौम्य पाँचू गोटेकेँ अपन योजनामे सम्मिलित कए लेलन्हि।

"चारि बीमीय विश्वमे तीन बीमीय विश्वसँ किछु अन्तर अछि। तीन बीमीय विश्व भेल तीन टा लम्बाइ, चौड़ाइ आ गहराइ मुदा एहिमे समयक एकटा बीम सेहो सम्मिलित अछि। तँ चारि बीमीय विश्वमे आकि पाँच बीमीय विश्वमे समयक एकसँ बेशी बीमक सम्भावना पर सेहो विचार कएल जाएत। मुदा पहिने चारि बीमीय विश्व पर हमरा सभ शोध आगाँ बढ़ाएब। एहिमे मूलतः समयक एकटा बीम सेहो रहत आ ताहिसँ बीमक संख्या पाँच भए जायत। समयकेँ मिलाकए चारि बीमक विश्वमे हमरा सभ जीबि रहल छी। जेना वर्ण अन्धतासँ ग्रसित लोककेँ लाल आ हरिअरक अन्तर नहि बुझि पड़ैत छैक ताहि प्रकारसँ हमरा सभ एकटा बेशी बीमक विश्वक कल्पना कए सकैत छी, अप्रत्यक्ष अनुभव सेहो कए सकैत छी"। धौम्य बजलाह।

सभा समाप्त भेल आ सभ क्यो अपन-अपन प्रकोष्ठमे चलि गेलाह। सैद्धांतिक शोध आ तकर बाद ओकर प्रायोगिक प्रयोगमे सभ गोटे लागि गेलाह। त्रिभुज धरातल पर खेंचि कए एक सय अस्सी अंशक कोण जोड़ि कए बनएबाक अतिरिक्त पृथ्वीकार आकृतिमे खेंचल गेल त्रिभुज जाहि मे प्रत्येक रेखा एक दोसरासँ नब्बे अंशक कोण पर रहैत अछि । मुदा रेखा सोझ नहि टेढ़ रहैत अछि। ओहिना समय आ स्थानकेँ टेढ भेला पर एहन संभव भए सकैत अछि जे हमरा सभ प्रकाशक गतिसँ ओहि मार्गे जाइ आ पुनः घुरि आबी। प्रकाश सूर्यक लगसँ जाइत अछि तँ ओकर रस्ता कनेक बदलि जाइत छैक।

श्वेतकेतु आ रैक्व एकटा सिद्धान्त देलन्हि- जेना कठफोरबा काठमे, वृक्षमे खोह बनबैत अछि, तहिना एकटा समय आ स्थानकेँ जोड़एबला खोहक निर्माण शुरू भए गेल। अपाला एकटा ब्रह्माण्डक डोरीक निर्माण कएलन्हि, जकरा बान्हि कए प्रकाश वा ओहूसँ बेशी गतिसँ उड़बाक सम्भावना छल। सत्यकाम एकटा एहन सिद्धान्तक सम्भावना पर कार्य शुरू कएने छलाह, जकर माध्यमसँ तीन टा स्थानिक आ एकटा समयक बीमक अतिरिक्त कताक आर बीम छल जे बड़ लघु छल, टेढ छल आ एहि तरहेँ वर्त्तमान विश्व लगभग दस बीमीय छल। घोषा स्थान समयक माध्यमसँ भूतकालमे पहुँचबासँ पूर्व देशक विधिमे ई परिवर्त्तन करबाक हेतु कहलन्हि जाहिसँ कोनो वैज्ञानिक भूतकालमे पहुँचि कए अपन वा अपन शत्रुकेँ जन्मसँ पूर्व नहि मारि दए। घोषा विश्वक निर्माणमे भगवानक योगदानक चरचा करैत रहैत छलीह। जौँ विश्वक निर्माण भगवान कएलन्हि, एकटा विस्फोट द्वारा आ एकरा सापेक्षता आ अनिश्चितताक सिद्धांतक अन्तर्गत छोड़ि देलन्हि बढ़बाक लेल तँ फेर समयक चाभी तँ हुनके हाथमे छन्हि। जखन ओ चाहताह फेरसँ सभटा शुरू भए जायत। जौँ से नहि अछि, तखन समय स्थानक कोनो सीमा, कोनो तट नहि अछि, तखन तँ ई ब्रह्माण्ड अपने सभ किछु अछि, विश्वदेव, तखन भगवानक कोन स्थान? घोषा सोचैत रहलीह।

आब धौम्यक लेल समय आबि गेल छल। अपन पाँचू विद्यार्थीक सभ सिद्धांतकेँ ओ प्रयोगमे बदलि देलन्हि। आ आब समय आबि गेल। पहरराति।

पुष्पक विमान तैयार भेल स्थान-समयक खोहसँ चलबाक लेल। ब्रह्माण्डीय डोरी बान्हि देल गेल पुष्पक

पर। धौम्य सभसँ विदा लेलन्हि। प्रकाशक गतिसँ चलल विमान आ खोहमे स्थान आ समयकेँ टेढ़ करैत आगाँ बढ़ि गेल। ब्रह्माण्डक केन्द्रमे पहुँचि गेलाह धौम्य। पहरराति बीतल छल। आगाँ कारी गह्वर सभ एहि समय आ स्थानकेँ टेढ़ कएल खोहमे चलए बला पुष्पकक सोझाँ अपन सभटा भेद राखि देलक।

भोरुका पहरक पहिने धौम्यक विमान पुनः पृथ्वी पर आबि गेल। मुदा एतए आबि हुनका ई विश्व किछु बदलल सन लगलन्हि। श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा क्यो नहि छलाह ओतए। विमानपट्टी सेहो बदलल सन। विश्वमे समय-स्थानक पट्टी सभ भरल पड़ल छल।

"यौ। समय बताऊ कतेक भेल अछि"।

"कोन समय। सोझ बला वा स्थान-समय विस्थापन बला। सोझ बला समय अछि, सन् ३१०० मास..."।

ओ बजिते रहि गेल छल मुदा धौम्य सोचि रहल छलाह जे स्थान-समय विस्थापनक पहररातिमे हजार साल व्यतीत भए गेल। ककरा बतओताह ओ अपन ताकल रहस्य। आकि एतुक्का लोक ओ रहस्य ताकि कए निश्चिन्त तँ नहि भए गेल अछि?

कथा - आर्या

विवाहक उपरान्त ढ़ेरी-ढ़ाकी लोक हमरासँ भेँट करबाक हेतु सासुरमे आबि रहल छलाह। ताहिमे छलि एकटा नवम् कक्षाक छात्रा आर्या आ ओकर पितामही आ माए।

ओ माएक संग नहि आबि असगरे आएल छलीह। खूब कारी, दुबर-पातर, आवश्यकतासँ बेशी अनुशासित आ शिष्ट आ नापि-जोखि कए बजनिहारि। हमरासँ सभ गपमे उलटा। हमर कनियाँ हुनकासँ हमर परिचय करओलन्हि आ ओकर प्रशंसा सेहो कएलन्हि। किछु कालक बाद ओकर पितामही आ माए हमरासँ भेँट करबाक हेतु अएलीह।हमरा अनुभव भेल जे हुनकर पितामहीक तँ लेहाज राखल गेल छल मुदा हुनकर माएक अवहेलना सन हमर कनियाँ आ सासु केने छलखिन्ह। गप्प करबामे ओ नीक छलीह आ जाइत-जाइत कहि गेलीह जे हमरा सभ अहाँक ससुरक किरायादार छी आ उपरका महला पर रहैत छी। से भीड़-भाड़ कम भेला पर अवश्य आऊ।

ई गप्प जाइत-जाइत हमर सासु प्रायः सुनि लेलन्हि से हमर पत्नीकेँ स्थिरेसँ मुदा आज्ञार्थक रूपेँ कहलन्हि जे ऊपर जएबाक कोनो जरूरी नहि छैक। हम पत्नीसँ पुछलियन्हि जे बेचारी एतेक आग्रहसँ बजओलन्हि अछि। पत्नी कहलथि जे सुनलियैक नहि, माँ मना कएलन्हि अछि। कारण पुछला पर गप अन्ठा देलन्हि।

किछु दिनुका बादक घटना छी, अन्हरोखेमे गेटक झमाड़ि कए खुजबाक अबाज भेल। लागल जे क्यो पीबि कए बड़बड़ा रहल अछि। हमर अतिरिक्त क्यो ओहि अबाज पर ध्यान नहि देलन्हि आ अन्ठयबाक स्वांग कएलन्हि। हम बाहर अएलहुँ तँ एकटा अधवयसु झुमैत अबैत दृष्टिगोचर भेलाह। हमरा देखि डोलैत हाथसँ जमायबाबू कहि नमस्कार कएलन्हि। ओ अखन धरि हमरासँ भेँट नहि होएबाक कारण हमर पत्नीकेँ फड़िछओलन्हि आ डोलैत ऊपर सीढ़ीक दिशसँ चलि गेलाह। हमर पत्नी हाथ पकड़ि कए हमरा भीतर आनि लेलन्हि आ ईहो सूचना देलन्हि जे ईएह आर्याक पिता थीक। अनायासहि हमरा माथमे आएल जे रंग जे आर्याक छैक से बापे पर गेल छैक। बादमे हमर सासु ऊपर जा कए भाषण दए अयलीह आ एक महिनाक भीतर घर छोड़बाक अल्टीमेटम सेहो आर्याक परिवारकेँ दए देलन्हि। हमर सार कहलथि जे ई दसम अल्टीमेटम छैक मुदा हमर सासु अडिग छलीह जे किछु भए जाय एहि बेर ओ नहि मानतीह। जमाय की बुझताह जे केहन भाड़ादार रखने छी हम सभ। पहिने ठकिया-फुसिया कय बहटारि लैत छल।

पुछला पर पता चलल जे आर्याक पिता डॉक्टर छैक आ सेहो होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक किंवा भेटनरी नहि वरन् एम.बी.बी.एस.। मुदा लक्षण देखियौक। ओना सासु ईहो गप कहलन्हि जे ई पीने रहबाक उपरान्तो गप्प एकोटा अभद्र नहि बजैत अछि, जेना आन पीनहार सभक संग होइत छैक। मनुक्खो ठीके अछि मुदा यैह जे एकटा गड़बड़ी छैक से बड़ड भारी।

अगला दिन नशा उतरलाक बाद पति-पत्नी दुनू गोटे नीचाँ अएलीह आ सासुकेँ कहलन्हि जे आर्याक बोर्डक बाद ओ सभ पटना चलि जयतीह से हुनका सभक खातिर नहि मुदा आर्याक खातिर तावत धरि रहए दिअ। घोँघाउजक बाद से मोहलति भेटि जाए गेलन्हि। तकरा बाद हुनकर पत्नीक नजरि हमरासँ मिलल तँ ओ कहलन्हि जे अहाँ तँ ऊपर नहिये आएब। आ एहि बेर ऊपर अयबाक आग्रहो नहि कएलथि।

किछु दिन बीतल आ फेर सासुर जयबाक अवसर भेटल। किछु दिनमे पता चलल जे किरायादार बदलि गेल छथि। घरक लोक मात्र एतबे कहलथि जे आर्याक पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि आ अनुकम्पाक आधार पर ओकर माएकेँ नौकरी भेटि गेलैक। आब ओ सभ क्यो पटनामे रहैत छथि।

घरक लोक आगाँ किछु नहि कहलन्हि मुदा कनियाँक एकटा पितयौत भाए आयल रहथि, से कहलथि जे डॉक्टरी रिपोर्टमे विष खा कए आत्महत्याक वर्णन रहए। फेर आगाँ पति-पत्नीक मध्य मचल तुमुलक चर्च भेल। कनियाँ कहइत रहथिन्ह जे ई डॉक्टर बड़ड पिबैत छथि ताहि लेल झगड़ा होइत अछि तँ डॉक्टर साहब कहथि जे झगड़ाक द्वारे पिबैत छी। अस्तु मृत्युक बाद हुनकर कनियाँक भाव एहन सन छल जेना मुक्ति भेटि गेल होअए आ एहि बातमे सभ क्यो एक मत रहथि।

फेर दिन बितैत रहल आ बादमे फोन पर समाचार भेटल जे आर्या सेहो आत्म हत्या कए लेलक। फेर बहुत रास बात मोनमे घूमि गेल। आर्या भावुक

छलि, किछु बेशी तनावमे रहिते छलि। गपकेँ गंभीरतासँ लैत छलि।

एकटा सारि रहथि, हुनकर गप सेहो मोन पड़ल। एक गोट युवकक विषयमे आर्या कहैत छलि । ओकरा संगीकेँ होइत छैक जे ओ युवक ओकरासँ प्रेम करैत अछि। मुदा आर्याक मत छल जे ओ युवक ओकर संगीसँ नहि वरन् आर्यासँ प्रेम करैत छल। हम सारिकेँ कहने रहियन्हि जे आर्या बच्चा अछि, ओहिना हँसी कएने होएत। मुदा ओ कहलन्हि, जे नहि यौ। बड्ड भावुक अछि आर्या। कहैत अछि जे ओहि युवकके प्राप्त करबाक हेतु किछुओ करत।

एहि बात पर हम तखन कोनो बेशी ध्यान नहि देने रहियैक। मुदा एहि बातक आब महत्त्व बढ़ि गेल छल। हम फोन दोबारा लगेलहुँ। पता चलल जे ओ युवक कोनो पुरान महारानीक बेटीक बेटा छी। ओकर माता शिक्षिका अछि आ बाप मेरीनमे काज करैत अछि। साल-छह मास पर अबैत अछि। आ जखन अबैत छल तँ जे मास-पंद्रह दिन रहैत छल से मारि-पीटमे बिता दैत छल। पूरा मोहल्लामे बदनामी छैक। माएक शील-स्वभाव बड्ड नीक, बोलीसँ फूल-झड़ैत छैक। बापकेँ तँ लोक चिन्हितो नहि छैक। खाली झगड़ाक अबाजे सुनैत अछि लोक।

एक बेर आर्याक संगीकेँ स्कूल बससँ उतरबा काल क्यो तंग कएने छल तँ ओ युवक सभकेँ मारि-पीटि कए भगा देने छल आ तकर किछु दिनुका बाद आर्या एहि शहरसँ दूर भऽ गेल। ओ माएकेँ कहैत रहलि जे परीक्षा धरि रहए दिअ मुदा माए विमुक्त भेलाक बाद एको पल पुरान कटु-स्मृतिकेँ देखए नहि चाहैत छलीह।

हम फोन पर पुछए गेलियन्हि जे ओहि युवकक विवाह आर्याक मृत्युसँ पहिने भऽ गेल छल से कतए भेल छल। तँ सासुरक लोक अचंभित भऽ पुछलन्हि, जे ओकर विवाह तँ भेल मुदा अहाँ कोना बुझलहुँ।

पता चलल जे सिलीगुड़ी-दिशक कोनो कन्यागत रहथि आ ओ युवक अपन बाप जेकाँ घर-जमाए बनि रहबाक नियार कएने अछि। एहि शहरक लोककेँ तँ विवाहक हकारो नहि भेटल।

हम आर्याकेँ एकटा दृढ़ बालिका बुझैत रही। मुदा ओकर 'किछुओ कड़य पड़त से करब' केर अर्थ आब जा कए बुझलहुँ। ओहि युवकक बियाह भऽ गेल होएतैक से हमर अन्दाज मात्र रहए आ से आर्याक आत्महत्याक घटनाक जानकारी भेलाक बाद ।

आ ओकर आत्महत्याक दोष ककरा पर अछि। ओ जे दारू पिबैत रहए से बाप। आकि ओ मी जे बापक संग तंग आबि गेल रहए। ओ प्रेमी।

हमरा जनैत एकर सभक कारण अछि आर्याक परिवारक सम्बन्धी आ परिवारिक दोस-महीम सभ जे एक तरहेँ आर्या सभकेँ बारि देने रहए। ओ समाज जे ओकर परिवारक घटनाक चटखारा लऽ कए चर्च करैत छल ।

ओ घटना सभ जे ओकर पिताक मृत्युक रहए । ओकर पिता द्वारा गेट पिटबाक घटनाक चरचा आकि आर कोनो गप।बालिका भावुक रहए कोना सहि सकैत छलीह। आत्महत्याक नाम दए ओकरा मृत्युदण्ड देलक समाज।

कविता

१.

देखैत दुन्दभीक तान
बिच शामिल बाजाक

सुनैत शून्यक दृश्य
प्रकृतिक कैनवासक
हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द
क्यो देखत नहि हमर चित्र एहि अन्हारमे
तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर

सागरक हिलकोरमे जाइत नाहक खेबाह
हिलकोर सुनबाक नहि अवकाश

देखैत अछि स्वरक आरोह अवरोह
हहाइत लहरिक नहि ओर-छोर

आकाशक असीमताक मुदा नहि कोनो अन्त
सागर तँ एक दोसरासँ मिलि करैत अछि
असीमताक मात्र छद्म, घुमैत गोल पृथ्वीपर,
चक्रपर घुमैत अनन्तक छद्म।

मुदा मनुक्ख ताकि अछि लेने
एहि अनन्तक परिधि
परिधिकेँ नापि अछि लेने मनुक्ख।

ई आकाश छद्मक तँ नहि अछि विस्तार,
एहि अनन्तक सेहो तँ नहि अछि कोनो अन्त?
तावत एकर असीमतापर तँ करहि पड़त विश्वास!

स्वरकेँ देखबाक
चित्रकेँ सुनबाक
सागरकेँ नाँघबाक।
समय-काल-देशक गणनाक।

सोहमे छोड़ि देल देखब
अन्हार खोहक चित्र,
सोहमे छोड़ल सुनब
हहाइत सागरक ध्वनि।

देखैत छी स्वर, सुनैत छी चित्र
केहन ई साधक
बनि गेल छी शामिल बाजाक
दुन्दभी वादक।

*राजस्थानमे गाजा-बाजावलाक संग किछु तँ एहेन रहैत छथि जे लए-तालमे बजबैत छथि मुदा बेशी एहन रहैत छथि जे बाजा मुँह लग आनि मात्र बजेबाक अभिनय करैत छथि। हुनका ई निर्देश रहैत छन्हि जे गलतीयोसँ बाजामे फूक नहि मारथि। यैह छथि शामिल बाजा।

2

पक्काक जाठि

तबैत पोखरिक महार दुपहरियाक भीत,
पस्त गाछ-बृच्छ-केचली सुसुम पानि
शिक्त।

जाठि लकड़ीक तँ सभ दैछ पक्काक
जाठि ई पहिल,
कजरी जे लागल से पुरातनताक
प्रतीक।

दोसर टोलक पोखरि नहि, अछि डबरा
वैह,
बिन जाठिक ओकर यज्ञोपवीत नहि भेल
कारण सएह ।

सुनैत छिऐक मालिक ओकर अद्विज
छल,
पोखरिक यज्ञोपवीतसँ पूर्वहि प्रयाण
कएल।

पाइ-भेने सख भेलन्हि पोखरि खुनाबी,
डबरा चभच्चा खुनेने कतए यश पाबी।

देखू अपन टोलक पक्काक जाठि ई,
कंक्रीट तँ सुनैत छी, पानियेमे रहने
होइछ कठोर,
लकड़ीक जाठि नहि जकर जीवन होइछ
थोड़।

3
पिताक स्वप्न

पिताक स्वप्न

पिताक छल आश
झूठ बजनाइ पाप,
गलत काजक सर्वदा त्याग ।

सभ होए समृद्ध,
साधारण जीवन उत्तम विचारक बीच।

करैत पालन देखल जे,
बुरबक बुझैत अछि लोक
तँ की बदली? अपन शिक्षाक अर्थ !

त्यागि रस्ता मुदा वैह लक्ष्य
आ रस्ता जिदियाहवला !

मुदा बजने की ? बस करैत रहू
सोझाँवलाकँ बुझए दियौक,
जे छी हम बुरबक।

जावत बुझत तावत भऽ जएतैक हारि,
पिताक सत्यकँ झुकैत देखने रही
स्थितप्रज्ञतामे
तहियै बुझने रही जे
त्याग नहि कएल होएत
रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

4
यौ शतानन्द पुरहित

यौ शतानन्द पुरहित

अगहन शुक्ल विवाह पंचमी,
विवाहक सभसँ नीक दिन,
पुरहित शतानन्द,
राम सीताक विवाह कएल सम्पन्न ।

खररख वाली काकीक विवाह,
सेहो विवाह पंचमीएकँ भेल,
पुरहित सेहो कोनो पैघे पण्डित रहथि,
सीता दाइ कतेक कष्ट कटलन्हि,
मड़बापर चित्रकला लिखल रहए
मिथिलाक,
परिछन, नैना-जोगिन सभटा भेल,
ओहिना जेना भेल रहए सीता दाइक
विवाहमे ।

बाल-विवाह तँ भेले रहन्हि खररख वाली
काकीक,
विवाहोक दिन सभसँ नीक,
नैना जोगिन, जोगक गीत,
किछुओ कहाँ बचा सकल,
भऽ गेलीह विधवा।

कहैत छथि हमर संगी,
जहिया लऽ जाइत छथि ओ भौजीकेँ,
पेंशनक लेल दानापुर कैण्ट,
विधवा भौजीकँ देखि,
भीतरे-भीतरे कनैत रहैत छथि ।

बाबूकँ कहलन्हि जे विधवा विवाह हेबाक
चाही,
तँ मारि-मारिकँ ओ उठलथि,
नेऊराक राजपूत बाबूसाहेबक ई
खानदान,
बड़ काबिल भेलाह ई,
मुदा अछि बुझल हमरो,
कुहरैत रहैत छथि बापो ।

मुदा बोझ उठेने छथि समाजक
कुरीतिक,
उपाय कतए छनि कोन दोसरो।

5
निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्

निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्

चन्द्रयाणक पूर्वापर,
आर्यभटक उद्घोष पड़ैत अछि मोन ।

एहि कुसुमपुरमे करैत छी ज्ञानक वर्णन,
नापल पृथ्वी,सूर्य आ चन्द्रक व्यास,
पृथ्वी अचला नहि
अछि गतिमान ई भू ।

भं अछि तरेगण जे अछि अचल,
ग्रहण नहि राहुक ग्रास, वरण अछि
मात्र छाह।

चलू चन्द्रयाणक लेल बधाई,
इसरोक वैज्ञानिक लोकनिकँ आ माधवन
नायरकँ,
आएल अर्यभट्टक पंद्रह सए साल बादो तँ
की !

ओहि देशवासी लए नहि विलम्बित,
लीलावती पढ़ियो कए जे नहि गानि
सकलाह तरेगण,
कुसुमपुर नहि तँ श्रीहरिकोटामे सैह ई
दिन।

कुसुमपुरमे ज्ञानक वर्णन नहि तँ,
कमसँ कम कसुमपुरसँ दए तँ दियौक
बधाइ,
चन्द्रमाकँ छूबाक लेल थारीमे पानि नहि
राखब आब,
आर्यभटस्त्विह निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं
ज्ञानम्
कमसँ कम कसुमपुरसँ दए तँ दियौक
बधाइ।

कुमार शुशान्त

डटिकए जलपान

एकटा कविताक भाव निश्चितरुपसँ स्मरण होयत,

"सात समुद्रक जलकँ स्याही बनादेलजाए,

वनक जँगलके लेखनी,

समस्त धर्तीकँ कागज बनादेलजाए,

तखनो भगवानक महिमा पूर्णरुपसँ नहि लिखल जाऽसकैया"

भगवानक महिमा त छोडि दिय एतबा में त डटकेजलपानेक महिमा नई अटत। डटकेजलपान हूनक वास्तविक नाम छन्हि दिबसलाल। जे हुनकर कर्मेन भेटल छन्हि हुनक किछु महिमा प्रस्तुत अइछ,

कीत्रृ परिक्षाक सेंन्टर गामसँ ७० कि.मि. दूर एकटा स्कूल में रहें, आवत___ जावत नई संभव हाएत ई विचार कऽक गामक १० टा जे परिक्षार्थी छल सबगोटे एके ठाम डेरा लेनहुँ। पहिलबेर अभिभावकके नजरसँ दूर स्वच्छंद लंगोटिया यार दोस्त संग रहबाक मौका भेटल। उमंग उत्साह त एते कि बर्णने उचित नई। ओम्हर अभिभावकके कि फुरौलनि से भगवान जानथि। देख___ रेखलेल संग लगौलनि डटकेजलपानके। एक त राकश मंडलि उपर स न्योत से भेट गेल, डेरामें समानसब राइखकऽ फ्रेश होयबाकलेल कोका कोला पिबाक निर्णय भेल मंइलिके। दोकानपर पहुँचिते हुकुम भेल दोकनदारके,

"दसटा खूब ठंढा कोका कोला दऽ"

डटकेजलपान लगा कुल संख्या छल एग्यारह, मुदा जानि बूझकऽ मंगनऊ दशेटा।

आवशुरु भेल विवेचन

एकटा मित्र "जा हुनका नइ भेटलनि "

दोसर "नई नई हुनका देबो नइ करबनि "

तेसर "से किया ?"

चौथा "बड़ कडा निशा होइत छैक अइ में"

सब गोटे जाहि मंशासँ गप्प नारने छलहुँ से पुरा भेल, डटकेजलपान बजलथि।

डटके "उबारु सब, माँए बाप परिक्षा देबला पढएने छन्हि आ ईसब एतऽ दारु पिबइ छथि "

एक मित्र "तोहरा अपन ँबतजभच के शपथ छह, कतौ बजिहऽ नई "

अंगूठा द्दाप, ँबतजभच के मतलब नई बूझलथि ताएँ झगड़ा नई कएलथि, एतबे बजलनि

"ठिकछई २ नइ कहब "।

किछुदेर सऽबके पिबैत देख नइ रहलगलन्हि, पूछि बैसलथि,"कते कड़ा होइछै एकर निशा ?"

मित्र "नइ पूछह, झूमा देतौ "

डटके "(मूंह बिचकबइत) हूँह, केहन २ भाँग धतूर के त सिधें घोंटि जाइ छियनि त ई कि झूमाओत ?"

मित्र "कहैत छिओ ने , भूलियोकऽ नई पिविहऽ "

डटके "एहन बात छइ तहन लबही तरे "

लेलथि कोका कोला; मुश्किलसँ आधा बोतल पिने रहथि कि लड़बड़ाईत आवाजमें कहैछथि "हमरा

कान में फहऽहऽहऽ करईया "

एक मित्र "हौ, ई कोन बिमारी भेल "

दोसर मित्र "बिमारी नई, हिनका निशा लागि गेल छन्हि "

हौजी एतवा सुनिते आधा बोतल कोका कोला हाथमें नेने ओङ्घराए लगलथि रोडपर। आबत भेल भीड़, जे तुरत्ते आएल रहथि हूनक एकैटा प्रश्न रहन्हि "कि भ गेल छन्हि "

"निशा लागल छन्हि "

"कि लऽ लेलथि "

"कोका कोला "

"बड़ नौटंकियाह लोक छथि, ओइसँ कोनो निशा लगइ छइ "

जइन एतबे जवाब धिरे धिरे जम्मा भेल पचासटा लोकसँ सुनलथि तइन ठाढ भऽ क देहपर लागल माटि झाड़ैत बजलथि,"उबारु सब, झूठे किया बजैजाइत गेले हऽ जे निशा बला चिज छइ से, करा देले ने बेइज्जति"।

एकटा मित्र "तों किया चिंता करैत छऽ बेइज्जतिके?, ओकरा करऽ दहक ने जकरा ठाम इज्जत छई "।

"बोनि निक भेटल" चर्चा करैत सब गोटे पहुँचनऊ डेरामें।

आब निर्णय भेल भोजन लेल जएबाक।बेरा बेरी भोजन कऽक आएल जाए।

२ रुपैयामे भरिपेट भोजन पहिनहिं एकटा होटलमे तय कऽ क एडभान्स १० रुपैया जमा सेहो करा चुकल छलहुँ। होटलके नाम कहिकऽ सबसँ पहिने भोजन करबाकलेल पठाओलगेल डटके जलपानकँ। घन्टा दू घन्टा, चारि घन्टा भऽगेल मूदा डटके जलपान अएलथि नहि। चिन्ता सँ बेसी कौतुहुलतावश हुनक तलाशमे सबगोटे निकललहुँ। होटल आगा पहुँचलहुँ त फेर सँ नजर पडल किछु लोकक भीडपर। पहुचिते देखैत छी जे डटकेजलपान आओइ होटल मालिक बीच गर्मागरम बहश भऽरहल अछि।

होटल मालिक "हम कोनहुँ किमतपर नईं खुवा सकैत छी"

डटके "अपने मने नई खुएबे, पाई देने छियौ, फोकटमे नईं"

बीच बचाव करैत होटल मालिकसँ प्रश्न पुछि बसिलहुँ "की बात "

जबावमे खाना बनाबऽवला महराज बडका हण्डाके करछुसँ पिटैत पहुँचल ओतऽ जतऽ हमसब ठाढ छलहुँ।

दोकानदार (खाली हण्डा दिस ईशारा करैत)"आब बुमाएल बात"

किछुदेरक चुप्पीक बाद, फेरसँ हाथ जोडिकऽ बजलथि "सरकार हम मनुख्खक भोजनके बात कएने छलहुँ"

हमसब कहलियैन्हि "ई त ऊचीत नई भेल ! हमसब त एडभान्स देने छी"

दोकानदार गल्लामेसँ १२ टका निकालिकऽ, लगमे आबि हाथमे पकडा देलक आ कानमें धिरेसँ कहैया "बारह टका देलहुँ, १० टका जे अपने एडभान्स देने छलहुँ से आ सुनु ऊ जे सामनेके होटल अछि(सामनेके होटल दिस ईशारा करैत) ओकरा मालिकसँ बड कसिकऽ दू दिन पहिने हमरा मगडा भेल छल, उपरका जे फाजिल दू टका अछि ओ हमरा तरफसँ घूसभेल, अई आदमिके काल्हिसँ ओही होटलमें पठाऊ"

दोकानदार सँगे सब मित्रके हँसैत ___ हँसैत पेट दुखाए लागल।

डटकेजलपान अर्थात दिवसलालजीक एक एकटा काजक वर्णन लिखऽमे जौं समुद्रक पानिके मसी बनादेल जाए त भलेही समुद्र सुखा जाए मूदा दिवसलालजीक कारनामा नई लिखा सकत। धन्यछथि....दिवसलालजी!

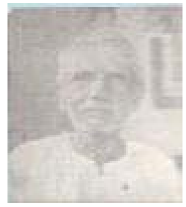


श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर

उम्र 60 वर्ष, ग्राम- हँठी-बाली, जिला मधुबनी।षडदल अरिपन

मिथिलामे भगवती पूजाक अवसर पर ई अरिपन पाड़ल जाइत अछि।एतय देवी भागवत पुरानक षटकोण यंत्र पारल गेल अछि। छः टा कमल दल एहिमे अछि। आदिशक्ति भुवनेश्वरीक पद चिन्ह आ पञ्चोपचार पूजाक सामग्रीसँ युक्त ई अरिपन अछि।





काशीकान्त मिश्र "मधुप" (1906-1987)

'राधाविरह' (महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता 'झंकार' कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । 'घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना– दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि।

मधुप जीक कवितामय चिट्ठी (अप्रकाशित पद्य-डॉ.पालन झाक सौजन्यसँ)

चि. श्री चन्द्रकान्त मिश्र शुभाशीर्वाद पाबि
अहाँकेँ कुशल थिकहुँ सह्लाद
गामहुमे परिवार अपन आनन्द
अहींक हेतु छल चिन्तित चित्त अनन्त।
घेंट-पेट ओ तैठ पेटसँ हीन
उदय रहए अछि मनहि मन किछु खिन्न।
मंगलमय श्री मंगल झा सूरधाम
काशीवासी 'तजि वनता' आराम।
अहूँ हुनक सेवामे मेवा छी चखैत
छी तहिठाम जतए केओ नहि अछि झखैत।

(चन्द्रकान्त मिश्र-मधुप जीक छोट भाइ
उदय- चन्द्रकान्त मिश्रक बालक
चन्द्रकान्त मिश्रक विवाह मंगलदत्त झा, गाम हरौलीक कन्यासँ।
मंगल झाक काशी प्रवासमे लिखल पत्र, सूर्यक उत्तरायणमे गेलापर मृत्युक वरण, संगमे उदय आ मंगल झाक पौत्र श्री प्रद्युम्न (कुमार झा सेहो संगमे रहथि।)



महाप्रकाश (१९४६-)

जन्म वनगाँव, सहरसा। १९७२ ई. मे पहिल कविता संकलन "कविता संभवा"।

सुभाषचन्द्र यादव

आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यमे एकटा नाम जे सर्वाधिक स्वीकृत आ प्रसिद्धि पौलक अछि, ओ थिक- सुभाष चन्द्र यादव। सुभाषक कथा-यात्रा पर दृष्टिपात करैत ई लगैत अछि जे ओ कथाक अन्वेषण कयलनि अछि। प्रायः लेखनक आरम्भ करिते ओ अनेक स्थान आ अनेक भाषाक यात्रा शुरू कयलनि। ई यात्रा वा भटकाव, जे हुनक नियति सेहो रहल अछि, हुनका अनुभव सँ लैस कयलक, तीक्ष्ण दृष्टि देलक आ अपन समकालीन सँ अलग विशिष्ट सांचामे ढालि देलक।



महेन्द्र कुमार मिश्र (पूर्व सांसद, नेपाल)

आतंकवाद महत्वाकांक्षाक खेतमे आकुरण होइत अछि

आतँक प्राणी जगतमे आदिम प्रत्युषा सँ चलैत आवि रहल अछि। प्राणीके अपन अपार, शक्ति आ कार्यक्षमताक कारणे आतँकक परिणाम आ प्रकार सभमे विविधता देखल जा सकैत अछि। पुराणादिमे वर्णित देवासुर संग्रामसभ आतँकवादीक श्रृंखलाक महागाथा अछि। महिषासुरक क्रिया कलाप सँ आतँककीत देवतागण शक्तिक आराधनामे लागि नारी द्वारा छल प्रपञ्च रचना कऽ ओकरा समाप्त कयलगेल प्रसँग दुर्गा सप्तशतिमे वर्णित अछि। रावणक आतँक समाप्त करवालेल राम अनेक जातिक सहयोग ल समाजके मुक्ति दिलौलनि। तहिना कंशक उन्माद अती भेलाक पश्चात एकटा सामान्य गोपाल कृष्णक रुपमे अवतरीत भेलाह।

कहवी छैक, बीनु बीज वृक्षक आकुरण नहि होइत छैक। अमेरिकाक जन्माओल सद्दाम आ ओसामावीन लादेन अमेरिका विरुद्ध कियाक आततायी भ प्रगट भेल ? इन्दिरा गाँधीद्धारा पालीत सन्त जर्नेल सिंह भिण्डेरबाला इन्दिराक प्राणे ल लेलक। ओसामावीन आ ओमार आजुक युगक विश्वके सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न अमैरिकाक निन्न आ भूख उडादेने अछि। आतँकवाद कहियो महत्वाकाँक्षाक खेतमे अंकुरण होइत अछि आ अन्याय अत्याचार, शोषण आ दमनक वर्षामै वढैत या त ताही श्रृंखला तोडैत अछि कि त अपने समाप्त भ जाइत अछि। संसारक आतंकके इतिहास ओएह परिणाम देखवैत अछि। हिंसामे प्रतिहिंसा जकां आतंकवादी सभ मात्र अपने हत्या हिंसा, लुटपाट आ अगिलग्गी नहि करैत छैक दोसर पक्षके सेहो ओहने काज करवालेल वाध्य करवैत अछि। संसारक द्धन्द्वरत पक्षके गहींर सं अध्ययन, मनन कयला उपरान्त एकरा सभहक क्रिया कलापक परिणति, इएह प्रमाणित होइत अछि।

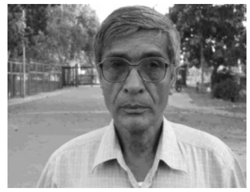
आतंक शब्द सँ कोनो हैजाक प्रकोप आ कठोर अत्याचार आदिसँ उत्पन्न होवए बला भयके वोध करवैत अछि। आतंकमे वाद जोडिदेलाक बाद एकर अर्थ मनुष्यकै डेरा क धमका क या त्रास सृजन क क हिंसात्मक विद्रोहक रुपमे अपन प्रभुत्व स्थापित क काज सिद्ध करवाक विचार आ सिद्धान्त बुझना जाइत अछि। दोसरके सम्पति लुटव, घरमे आगि लगाएव, पर स्त्रीसंग बलात्कार करब, समाजमे उत्पाद मचाएव एहन दुष्कर्मीकै दुराचारी कहल जाइत अछि।

तानाशाही चाहे जेकर होउक, जॉर्जबुशक हौउक वा मुसर्रफकै एकरा कौनो दृष्टिए नीक नहि मानल जायत। कानो राष्टक तानाशाही आ दादागिरीके एक न एक दिन विनाश होयबेटा करैत अछि। आव ओ युग नहि रहिगेल जे लोक बुझौक परमेश्वरक अनुकम्पासँ गर्भ धारण भेल, ई लोक मानए लेल तैयार नहि रहिगेल। ककरोलेल तोपक सलामी आ केओ लाठी,बुट आ गरमे गोली खाई, आजुक मानव समाजक चेतना एकरा सह लेल तैयार नहि अछि। विश्वक कोनो ठाम जे विद्रोह भेलैक तकर

समाधान करवाक काजक दायित्व वाहक अपना आपके विशिष्ट नहि सामान्यस्तरक खण्डमे राखय तखने ई समस्याक समाधान भ सकैत अछि। २००७ साल सँ पालीत, पोषित आ वढैत आएल सामाजिक विद्रोहक स्तरके माओवादी लगायत तथाकथित प्रजातन्त्रवादी दलसब तराई समस्याकेँ जाइन बुझि क अखनो कार्यान्वयन पक्षकेँ कमजोर बनाविक रखने अछि। पिडीत पक्ष अखनो विश्वस्त भ नहि पाविरहल अछि। नेपालक सन्दर्भमे माओवादी १० वर्षधरि हथियार उठा जनविद्रोह कएलो उपरान्त सबपक्षके समेट नहि सकल। संगहि आन पार्टी सैहो पिडीत,उत्पीडीत,राज्यक संरचना सँ दूर रहए बला वर्गक प्रति इमान्दार नहि रहल त दौसर विद्रोहक सम्भावना अवश्सम्भावी अछि।

विद्रोहक अनेक शैलीआ पद्धति मध्ये कम सँ कम जनआतंक आ जनधनक क्षति होइक एहने शैली एवं आचरण मात्र विशवमे अनादिकालसँ सामाजिक मान्यता पबैत अछि। सामाजिक रूपान्त्ररण हथियार नहि विचार सँ कएल जाइक तखने टिकाउ भ सकैत अछि। आसुरी ताल या वृति एकटा स्वाभाविक कमजोरी अछि। सहिष्णुता संस्कारक उदात्तीकरण अछि। मनोविज्ञान ओही तथ्यकेँ मान्यता दैत छैक जकर प्रशस्त प्रमाणसब छैक।

३० वर्षे पञ्चायती शासन स्वेच्छाचारी, हुकुमी, निरंकुश सामन्ती प्रवृतिक छलैक त २०४६ सालक जनआन्दोलन व्यवस्थामे परिवर्तन लौलक तथापि प्रवृतिमे कोनो परिवर्तन नहि दैखलगेल। पूर्व राजा ज्ञानेन्द्रद्धारा फेर सँ अएह शासन प्रणालीकेँ पुनरावृति कर चाहलक मुदा सफल नहि भ सकल। ज्ञानेन्द्रक महत्वाकांक्षा बढैतगेल जकर फलस्वरुप देशक जनता गणतन्त्रोन्मुख होइत आई दैशमे गणतन्त्र स्थापना भ गेल अछि। आव जौ कोनो प्रकारक वाधा व्यवधान उत्पन्न करबाक कोशिश कायलगेल त विद्रोह बढवेटा करत। संविधानसभा मूद्दा नहि समाधाने मूद्दा अछि। संविधान सभाक विर्वाचन पश्चात मधेशक साथ कोनो दल धोखा देवाक धृष्टता करत त परिणाम अनिष्टकारी होयत। राष्ट दोसर दुर्गतिकेँ आमन्त्रण करत। मधेशक जनता अखनधरि उपेक्षित, उत्पीडित रहल, समान अधिकार आ समान पहिचानकलेल लालाइत रहल मधेशक मूद्दापर यदि राजनीति करबाक धृष्टता करत त स्वाभिमानी मधेशी जनता फेर विद्रोहमे उतरत, मधेशी जनता मधेशवादी अछि, मात्र मधेशवादी गणतन्त्रवादी नहि। गणतन्त्रवादी कहि जनता भोंट नहि देलक आइ किछु नेता कहैत छथि, ''हामी गणतन्त्रवादी हौं'' हुनका ''हामी मधेशवादी'' कह मे लाज किएक ? आबक संविधान जनआन्दोलन २०६२।०६३ तथा मधेश आन्दोलनद्धारा प्राप्त जनाधिकारक सन्दर्भमे एकटा एहन संविधानक आवश्यकता छैक जाहि संविधानक माध्यम सँ नेपालक जनता सही अर्थमे समावेशी लोकतन्त्र, प्रतिस्पर्धात्मक बहुदलीय, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक स्वरुपक संगहि सम्बन्धित अधिकार सबहक उपभोग क सकय। एकरा संगहि, एहि देशमे सैकड़ो वर्ष सँ शोषित रहल मधेशी समुदाय, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी एवं जनजाती आव निर्माण होवए बला नया संविधानद्धारा एकटा कुण्ठारहित समुन्नत, समावेशी आ विकाशशील समाजक निर्माण भ सकै आ तकर यथार्थ अनुभूति अनुभव जनता कए सकय।



महेन्द्र मलंगिया

प्रकाश चन्द्र झा : मैथिली रंगकर्ममे

थ्री-इन-वन-

मैथिलीक सुपरिचित **नाटककार, रंग निर्देशक** एवं **मैलोरंग**क संस्थापक **अध्यक्ष** । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । **सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थिएटर इंस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान** आदि सँ सम्मानित । संप्रति **ज्योतिरीश्वर** लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक **वर्णरत्नाकर** पर शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलगियाक जन्म २० जनबरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षण, पटकथा लेखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि। सम्मान, उपाधि आ पुरस्कार: २००६(सीनियर फ़ेलो, मानव ससाधन विकास विभाग, भारत सरकार), २००५ ई. मे मैथिली भाषाक सर्वाधिक प्रतिष्ठित प्रबोध सम्मान, उनाप सम्मान, परवाहा (उवा नाट्य परिषद, परवाहा), भानु कला पुरस्कार (कला जानकी संस्थान, जनकपुर), २००४- पाटलिपुत्र पुरस्कार (प्रांगन थिएटर, पटना), इप्टा पुरस्कार (कटिहार इप्टा, कटिहार), २००३- गोपीनाथ आर्यल पुरस्कार (इन्टरनेशनल थिएटर इन्स्टीट्यूट, नेपाल), यात्री चेतना पुरस्कार (चेतना समिति, पटना), बैद्यनाथ सियादेवी पुरस्कार (बी.एस.डी.पी. काठमाण्डू), २०००- चेतना समिति सम्मान (चेतना समिति, पटना), जिला विकास धनुषा साहित्य पुरस्कार (जिला विकास समिति, जनकपुर), १९९९- विद्यापति सेवा संस्थान सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान सम्मान, दरभंगा), १९९८- रंग रत्न उपाधि (अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य परिषद, राँची), १९९७- सर्वोत्तम निर्देशक पुरस्कार (सांस्कृतिक संस्थान, काठमाण्डू), १९९१- भानु कला पुरस्कार, विराटनगर (भानु कला परिषद, बिराटनगर), १९९०- सर्वनाम पुरस्कार (सर्वनाम समिति, काठमाण्डू), १९८५- आरोहण सम्मान, काठमाण्डू, १९८३- वैदेही पुरस्कार (विद्यापति स्मारक समिति, राँची),

शोध कार्य: सलहेस: एकटा ऐतिहासिक अध्ययन, विरहा: मिथिलाक एकटा लोकरूप, सामा चकेबा: लोकनाट्यक एक अवलोकन, सलहेसक काल निर्धारण, विद्यापतिक उगना, शिवक गण, मधुबनी एकटा नगर अछि, हम जनकपुर छी, ई जनकपुर अछि।

हिनकर दू टा पोथी ''ओकरा आँगनक बारहमासा'' आ ''काठक लोक'' ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली पाठ्यक्रममे अछि। हिनकर दू टा पोथी त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू केर एम.ए. पाठ्यक्रममे अछि। हिनकर कैकटा आलेख आ किताब सेकेण्डरी आ हायर सेकेण्डरी पाठ्यक्रममे अछि।

प्रकाशित पोथी: नाटक: ओकरा आँगनक बारहमासा, जुआयल कंकनी, गाम नञि सुतय, काठक लोक, ओरिजनल काम, राजा सलहेस, कमला कातक राम, लक्ष्मण आ सीता, लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोरमे, पूष जाड़ कि माघ जाड़, खिच्चड़ि, छुतहा घैल, ओ खाली मुँह देखै छै। ई सभटा कैक बेर आ कैक ठाम खेलाएल गेल अछि। एकाङ्की: टूटल तागक एकटा ओर, लेवराह आन्हरमे एकटा इजोत, गोनूक गबाह, हमरो जे साम्ब भैया, ''बिरजू, बिलटू आओर बाबू'', मामा सावधान, देहपर कोठी खसा दिअ, नसबन्दी, आलूक बोरी, भूतहा घर, प्रेत चाहे असौच, फोनक करामात, एकटा बताहि आयल छलय, मालिक सभ चल गेलाह, भाषणक दोकान, फगुआ आयोजन आ भाषण, भूत, एक टुकड़ा पाप, मुहक कात, प्राण बचाबह सीता राम, ओ खाली घैल फोड़य छै। ई सभटा मंचित भऽ चुकल अछि। २५ टा चौबटिया नाटक: चक्रव्युह, लटर पटर अहाँ बन्द करू, बाढ़ि फेर औतय, एक घर कानन एक घर गीत, सेर पर सवा सेर, ई गुर खेने कान छेदेने, आब कहू मन केहेन लगैए, नव घर, हमर बौआ स्कूल जेतए, बेचना गेलए बीतमोहना गबए गीत, मोड़ पर, ककर लाल आदि। ई सभटा चौबटिया वीथीपर खेलायल गेल अछि। ११ टा रेडियो नाटक: आलूक बोरी, ई जनम हम व्यर्थ गमाओल, नाकक पूरा, फटफटिया काका आदि। ई सभटा टा पटना, दरभंगा आ नेपालक रेडियो स्टेशनसँ प्रसारित भेल अछि। सम्पादन: मैथिली एकाङ्की (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली), विदेहक नगरीसँ (कविता संग्रह), मैथिली भाषा पुस्तक (सेकेण्डरी स्कूल पोथी), लोकवेद (मैथिली पत्रिका)। कथा: प्रह्लाद जड़ि गेल, धार, एक दिनक जिनगी, बनैया सुगा, बालूक भीत, बुलबुल्ला आदि। लघुकथा: डपोरशंख, मुहचिड़ा आदि। सदस्यता: अध्यक्ष, मैथिली लोक रंग, सदस्य कार्यकारी बोर्ड, मिनाप, जनकपुर, यात्री मधुबनी, मिथिला सांस्कृतिक मंच, मधुबनी। राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार सभमे सहभागिता।**–सम्पादक**

१९७५ ई. मे हम जुआयल कनकनी नामक एकटा नाटक लिखने रही, जे ओही साल प्रकाशित भेल रहय। एहि नाटकक प्रसंगमे मैथिलीक सुप्रसिद्ध साहित्यकार जीवकांतजी अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत लिखने रहथि ___ मलंगियाजी, मिथिलांचलमे एखन ओहन अभिनेता नहि जन्म लेलक अछि, जे एकर तेजकेँ सम्हारि सकत। ई बात हम अपनहुँ महसूस कएने रही आ तहिए सँ हमर आँखि एहि बातक खोज करैत रहल, जे ओहि नाटकक अनुरूप कोनो अभिनेता भेटितए।

ओना मिथिलांचलमे अभिनेताक कमी नहि रहलैक अछि, मुदा सभक जिनगी अल्पकालीन। किएक तँ एहिठाम एकरा टाइमपासक रूपमे देखैत अछि। तँ जहाँ कतहु नोकरी भेटि गेलैक कि ओ रंगकर्म केँ तिलांजली द' दैत अछि। दोसर कोनो गार्जियन ई नहि चाहैत छैक, जे हमर बेटा रंगमंचसँ जुड़ल रहय। किएक तँ मैथिली रंगमंच केँ ओ सामर्थ्य नहि छैक जे ओकरा रोजी ___ रोटी द' सकतै। तँ रंगमंच के छोड़' बाला नाम अनगिनत अछि आ जुटल रह' बाला नाम आँगुरे पर गनल। एहन आँगुरेपर गन' बाला नाम अछि ___ अभिषेक, चन्द्रशेखर, मुकुल, संतोष (मधुबनीसँ), रवीन्द्र, ओमप्रकाश, रंजू, प्रियंका (जनकपुरसँ), संजीव, किशोर केशव, गुड़िया, स्वाति, जितेन्द्रनाथ, प्रियंका (पटनासँ), मुकेश, उत्पल, प्रकाश, ज्योति, जीतू, कमल, दुर्गेश, भास्करानंद (दिल्लीसँ) आदि।

एहि सभमे प्रकाश कहिया हमरा भेटल - स्मरण नहि अछि, मुदा एतेक धरि अवश्य स्मरण अछि, जे ओ कहने रहय-

"सर, हमर घर घोंघौर अछि आ हम आर. के. कॉलेज मधुबनी में पढैत छी"।

"कोन कक्षामे ?"

"बी.एस सी.क फर्स्ट पार्टमे "। हमरा दिससँ कोनो प्रतिक्रिया नहि अएबाक कारणें किछु कालक बाद पुन: बाजल ___

"हम नाटकसँ सेहो जुड़ल छी "।

"कोन संस्थासँ ?"

"मधुबनी इप्टासँ "

"बहुत खुशीक बात "

प्रकाश कोन अपेक्षा ल' क' हमरा लग आएल रहय से ओ ने कहि पओलक आ ने हम बूझि सकलिऐं। मुदा, एतेक अवश्य जानकारी भेटैत रहल जे नुक्कड़ नाटककेँ मधुबनी जिलामे बहुत लोकप्रिय बना देलक अछि। एक्केटा बिजुलिया भौजीक पचासटा शो कएलक अछि आ सभमे एकर अनिवार्य सहभागिता छैक। मुदा, ई हमर दुर्भाग्य रहल जे एकर एकोटा शो हम नइ देख सकलिऐं। तथापि एतेक विश्वास भैए गेल जे नाटकक प्रति एकर लगन बेजोड़ छैक।

हमहूँ रहबे कएलहुँ आ इहो नाटक करिते रहल आ तखन जँ मंच पर भेट नइ होइतए तँ इहो असंभवे बाला बात भ' जइतै। से भेलैक नहि, एकरासँ मंचपर भेट भैए गेल, मुदा कहिया से स्मरण नहि अछि। हँ, एतेक अवश्य स्मरण अछि जे प्राय: 1995 ई. मे मिथिला सांस्कृतिक पर्व समारोहक अवसर पर हमरे नाटक ओरिजनल कामक मंचन नगर भवन, मधुबनीमे होइत रहय। हमहूँ आमंत्रित रही। जाहि मे दरोगाक भूमिका प्रकाशे केने छल। ओहि नाटकमे ई प्रशंसाक पात्र बनल रहय जकर उल्लेख दैनिक जागरण आ दैनिक हिन्दुस्तान सेहो कएने रहैक। किछु दिनक बाद गाम नइ सुतैए'क मंचन देखलियैक ओहो मे गामक तीनटा बिगड़ल युवकमे सँ एकटा बिगड़ल युवकक भूमिका यैह कएने छल। ओही दुनू मे कयलगेल अभिनयक बदैलत ई हमरो मोन मे बैसि गेल। बादमे बिहार सरकार युवा मंत्रालय, पटना दिस सँ आयोजित कार्यक्रम मे एक बेर फेर हमरे लिखल नाटक हमरो जे साम भैयाक मंचन नगर भवन, मधुबनीमे होइत रहय। हमहूँ आमंत्रित रही। जाहि मे चारुवक्य के भूमिका मे प्रकाश रहै। मंचपर एकरा देखलाक बाद हमरा बड़ अपसोच भेल रहय जे जीवकांतजी एहिठाम नइ छथि। ओ जँ आइ एहिठाम रहितथि तँ एकर अभिनय देखिक' निश्चित अपन बात घुरा लितथि जे 'मिथिलांचलमे एखन ओहन अभिनेता नहि जन्म लेलक अछि'। बहुत विलक्षण आ मुग्ध कर' बाला अभिनय कएने रहएअ। तँ हमरा कह' पड़ल जे चारुवक्य के भूमिका एहन दोसर नइ क' सकैए।

एकर बाद करगिल समस्यापर आधारित नाटक दुलहा पागल भ' गैलै मे सेहो अभिनय कएलक जे हम नइ देख सकलिऐंक। हँ, मधुबनीक डिप्टी कलक्टर श्री दीपनारायण सिंह जी सँ जखन बात भेल तँ कहलनि जे खासक' प्रकाशचन्द्र बड्ड नीक अभिनय कएने छल।

ओना एहि बातक घमर्थन कखनो-कखनो उठिए जाइत अछि जे अभिनेता तँ निर्देशकक हाथक कठपुतली होइत अछि। ओकरा जेना-जेना निर्देशक कहैत छैक तेना-तेना ओ मंचपर करैत अछि। जँ इएह बात सत्य छैक तँ एक्केटा भूमिका जखन दू आदमी करैत अछि तखन किएक ककरो नीक आ ककरो बेजाए भ' जाइत छैक ? एहि आधार पर तँ सृजनात्मक प्रतिभा अपन होइत छैक से मानहिटा पड़त। आ तँ ओ ओहन चारुवक्य क सृजन कएने रहय।

फेर 2005 ई. मे रामानन्द युवा क्लब, जनकपुर धाम (नेपाल) द्वारा आयोजित नाट्य समारोह मे नेपालक अतिरिक्त कोलकाता, दिल्ली, दरभंगा आ मधुबनीक टीमसभ भाग लेने छल। मधुबनीक यात्री संस्था, दिल्लीक यात्री संस्थाक रूप मे प्रवेश पओने छल। कारण , ओहि समयमे अधिकांश यात्रीक

अभिनेतासभ दिल्लीए मे रहैत छल तैँ किछुए नवकैँ समावेश कर' पड़लै आ काश्यप कमलक नाटक गोरखधंधा तैयार भ' गेलै। एहि नाटक मे ओ सूत्रधारक भूमिका कएने रहय जे काफी चर्चित रहलै।

मैथिली रंग जगतमे नव पीढ़ीक कतेको लोक छथि, जे लगातार काज क' रहल छथि मुदा, ओहि जमातमे प्रकाश कतेको कारणे सभहक ध्यान अपना दिस खींचैत अछि। एक त' अपन रंग कालमे , प्रकाशक रंग प्रवाह बड्ड महत्वपूर्ण छैक। दोसर ई जे ___ प्रकाशक द्वारा जराओल गेल सर्वरंग अभियानक दीपक जे प्रभाव मैथिली रंग जगत पर पड़ल अछि ओ आरो बेसी प्रशंसाक पात्र छैक। प्रकाशक रंग प्रवाहक शुरुआत मिथिलाक एकटा छोट छीन गाम घोंघौर स' शुरु होइत छैक। अपन नेनपने सँ गामक रंगमंच सँ जुड़ैत, अपन जिला मधुबनीक नगर इप्टाक कार्यालय सचिव बनल आ इप्टा मे एकर पाँच सालक कार्यकाल अखन तक के ओकर स्वर्णकाल कहल जा सकैत छैक। ओत' सँ निकलिक' विश्वविद्यालय स्तर पर अभिनय मे प्रथम सम्मान सँ सम्मानित होइत राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली मे प्रवेशक चयन प्रक्रियाक अंतिम प्रक्रिया तक शामिल भेल। ओहो कोनो नामी-गिरामी निर्देशकक संग कार्य करबाक अनुभवक बिना। फेर संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रशिक्षण ल'क' ओकरे बाकी कार्यशाला मे कार्यशाला सहायकक रूप मे कतेको राज्य मे अपन ज़िम्मेदारी कैँ सफलतापूर्वक निभाबैत, साहित्य कला परिषद, दिल्लीक रंगमण्डल सँ गुजरैत, सॉग एण्ड ड्रामा डिविजन, नई दिल्ली मे कैजुअल आर्टिस्टक रूप मे चुनबैत आई राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नाई दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय स्तरक श्रेष्ठतम रंगशोध पत्रिका रंग प्रसंगक संपादन सहयोगीक रूपमे अपन महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी निभा रहल अछि। ई त' छल प्रकाशक अपन रंगपक्ष , जे कि हमरा सभ कैँ सीधे-सीधे देखाइत अछि। जे दोसर रूप छै ओ ई जे मधुबनी सन छोट जगह मे प्रकाश जे रंगदीप जरौलक अछिओकर परिणाम ई छैक जे आई एहि छोट शहर मे सात-सात टा रंगकर्मी रंगकर्म मे प्रशिक्षणक लेल राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति ल' चुकल अछि। कतेको रंगकर्मी राष्ट्रीय स्तरक रंगप्रशिक्षण संस्थान सँ प्रशिक्षण प्राप्त केलन्हि अछि।

2006 ई. मे मैथिली लोक रंग, दिल्ली (मैलोरंग) त्रिदिवसीय नाट्य सहोत्सवक आयोजन कएने रहय जाहिमे सहरसा, पटना आ दिल्लीक टीम (मैथिली लोक रंग) भाग लेने रहैक। ई तीनू टीम क्रमश: कनियाँ-पुतरा, पारिजात हरण आ काठक लोक क्रमश: उत्पल झा, कुणाल तथा प्रकाश झा क निर्देशनमे प्रस्तुत कएने रहय। उत्पल झा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली सँ उत्तीर्ण छात्र, कुणाल कैँ दस-पन्द्रह नाटकक निर्देशनक अनुभव आ प्रकाश झा कैँ अभिनय छोड़ि निर्देशनक कोनो अनुभव नहि। तैँ लागल जे एहि दुनू निर्देशकक बीचमे प्रकाश ओहिना दरड़ा जाएत जहिना जाँतक दुनू पट्टाक बीचमे दालि। मुदा से भेलैक नहि, प्रकाश झा आँकड़ जकाँ अड़ले रहि गेल। प्रेक्षक गुम्मी लाधिक' नाटक देखैत रहलाह। मुदा, जत' हँस'क अवसर छलैक ओत' हँसबो कएलाह।

नाटक समाप्त भेलाक बाद प्रकाश दू शब्द कहबाक हेतु हमरा मंच पर बजा लेलक। ओ किएक हमरा बजौलक तकर अनुमान एहि रूपमे लगौलिऐक ___ प्राय: नाटक मे कएल गेल किछु फेर-बदलक मादे किछु कहताह। मुदा ताहि प्रसंगमे हम किछु कहि नइ सकलिऐक। कारण, प्रेक्षक हमर मुँह बन्द क' देने छल। तैँ हम ई बात कहबाक लेल बाध्य भ' गेल छलहुँ जे दुलहन वही जो पिया मन भाए अर्थात नाटक वएह नीक वा निर्देशक वएह नीक जकरा प्रेक्षक गम्भीरता सँ देखलक आ बुझलक। एतेक कहलाक बाद ओ राम गोपाल बजाज जी कैँ बजा लेलकनि। हुनका मंचपर बजएबाक दूटा कारण भ' सकैत अछि ___पहिल, ओ भारतीय रंगमंचक एकटा दिग्गज रंगकर्मी छथि जे मिथिलांचलक सपूत छथि आ दोसर, पहिल बेर निर्देशनक क्षेत्रमे आयल छल तैँ हुनक आशीर्वाद प्रकाशक लेल आवश्यक छलैक। तैँ बजाजजी मंचपर अएलाह आ हमर बातक समर्थन करैत कहलथिन ___मलंगियाजी जे बात कहलनि अछि ताहिसँ हम सहमत छी। प्रकाश कैँ जखन दर्शके सर्टिफिकेट प्रदान क' देलकै तखन हम ओहिपर हस्ताक्षर नइ करिऐ से उचित नइ होएत।

एहि प्रस्तुति के देखलाक बाद हिन्दीक युवा आ संवेदनशील रंगदृष्टि रखनिहार रंग समीक्षक संगम पाण्डे जनसत्ता में लिखने रहथि –

... मंच पर ये सभी पात्र चरित्र के कई बारीक विन्यासों के साथ दिखाई देते हैं। उनके भदेस में कहीं भी कुछ बनाबटी नहीं लगता। और यही वजह है कि कथावस्तु में स्थितियाँ कई बार दोहराई जाकर भी अपनी रोचकता नहीं खोतीं। मंच पर पीछे की ओर दाएँ मंदिर का चबूतरा है। बाईं ओर एक पूरा का पूरा वृक्ष, और चबूतरा एक पूरा परिवेश बनाते हैं। इस परिवेश में साधु की पीतांबरी वेशभूषा एक दिलचस्प कंट्रास्ट बनाती है"।

संगम पाण्डेक उपर्युक्त कथन निश्चित रूपे प्रकाशक नाट्य निर्देशक संग ओकर मंच परिकल्पना आ वस्त्र विन्यासक दृष्टिक सेहो मजबूती प्रदान करैत छैक।

2005 ई. मे स्वास्ति फाउण्डेशन, दिल्ली हमरा प्रबोध साहित्य सम्मान देने छल, जे कलकत्तामे प्रदान कएल गेल। उक्त सम्मानक अवसर पर डॉ. उदय

नारायण सिंह 'नचिकेता' द्वारा रचित एक छ्ल राजा नामक नाटकक मंचन कोकिल मंच, कोलकाता द्वारा कएल गेल छल। हमरा बगलमे बैसलि हमर पत्नी जिनका साक्षर मात्र कहल जा सकैए पूछि बैसलीह

''कखन नाटक समाप्त होएतैक'' ?

एहिपर हम कहलिएनि जे एक चौथाई बाँकी अछि। अवलोकनजन्य थकान सँ ओ अपने-अपने बाजि उठलीह

''एह, तखन तँ आधा घंटा सँ बेसिए बैस' पड़त''।

आब कोनो प्रेक्षकक मुँहसँ निकलल ''बैस' पड़त'' शब्द नाटक प्रदर्शनपर एकटा पैघ प्रश्नचिन्ह लगबैत अछि।

इएह सम्मान 2007 मे मयानन्द मिश्र कें भेटलनि। ओहि सम्मानक अवसरपर डॉ. नचिकेता द्वारा रचित नायकक नाम जीवन, एक छल राजा , रामलीला, प्रत्यावर्तन आदिमे सँ कोनो एकटा नाटकक मंचन होएबाक चाही से विचार कएल गेल छल। संगहि स्थान बदलिक' दिल्ली पर मोहर लागि गेल छल। उक्त आयोजनक सम्पूर्ण अभिभारा प्रकाश चन्द्र झा कें भेटल छलैक। तँ ओ नचिकेताक सभ नाटक मंगौलक। गम्भीरता सँ पढलक आ अंतमे एक छल राजापर आबिक' केन्द्रित भ' गेल।

नचिकेताक जतेक नाटक छैक ओहिमे सँ सभसँ नीक नाटक एक छल राजा अछि जे प्राय: 1970 क दसकमे प्रकाशित भेल रहैक। एकरा जँ एना बूझी तँ कहि सकैत छी जे जहिया प्रकाश जन्मों नहि लेने होयत तहिए ई नाटक प्रकाशित भेल रहैक। तँ जतेक जे एहि नाटकक मादे प्रकाशित भेल छल होएतैक ताहिसँ ओ परिचित नहि छल। तथापि ओहिमे सँ एक छल राजा कें चूनि लेलक से ओकर निर्देशकीय दृष्टिक प्रमाण दैत छैक। कारण, निर्देशक वास्ते नाटक चयन एकटा अहम मुद्दा रखैत छैक।

जँ सत्य पुछल जाए तँ ओ नाटक प्रकाश चन्द्र झाक हेतु एकटा चुनौती भरल काज छलैक। एखन धरि जतेक निर्देशक ओकरा प्रस्तुत कएने छल ओकरा कओमा आ पूर्णविराम सहित मंचपर उतारि दैत छल तँ प्रेक्षककेँ पुछ' पड़ैत छलैक जे आब कतेक नाटक बाँकी अछि। एहन स्थिति उत्पन्न होएबाक कारणपर विचार करबासँ पहिने हमरा नाटक कथानकपर विचार सेहो कर' पड़त।

एहि नाटकमे राजा साहेब नामक एकटा जमीन्दार अछि जकर जमीन्दारी पुर्खेक समयसँ धीरे-धीरे कमल जाइत छै। राजा साहेब लग आबिक' विपन्नता पराकाष्ठापर पहुँच जाइत छै। कर्जक बोझ ततेक ने बढि जाइत छै जकरा सधाएब मश्किल भ' जाइत छैक। फजूल खर्ची आ विलासिताक कारणेँ एहि स्थितिमे पहुँचब एकटा नियति छैक। फेर ओही जमीन्दारीमे पलल राजा साहेबक पिताक अवैध संतान धनिकलाल शहर जाइत अछि। ओहिठाम अपन लगन आ परिश्रमसँ काफी धनोपार्जन करैत अछि आ राजा साहेबक हवेली कीनैत अछि। फेर ओहो वएह काजसभ कर' लगैत अछि जे राजा साहेब करैत छलाह।

आब प्रश्न ई उठैत अछि जे एकटा जमीन्दारकेँ तोड़िक' दोसर जमीन्दारकेँ ठाढ करबाक की औचित्य छैक ? जँ ठाढ भइए जाइत छैक तँ दरबारमे राजा साहेब जकाँ हवेलीमे मोजराक आयोजन करबाक की प्रयोजन छैक ? जखन ई बात स्पष्ट भ' जाइत छैक जे राजा साहेब अपन बेटी मोहिनीक विवाह आर्थिक तंगीक कारणेँ नइ करा रहल छथि तखन ओकर प्रेम प्रसंगक एतेक दृश्यसभ रखबाक कोन प्रयोजन छैक आ अंतमे ओकरा प्रेमीकेँ खलपात्र बनएबाक कोन औचित्य छैक ? कोनो नियतिक विरुद्ध बेर-बेर धनिक लालक मुँह सँ प्रतिशोध लेब कहयबाक कोन जरूरी छैक ? राजा साहेब तँ अपन करनीक फल पाबिए गेल छलाह जे हवेली बेचिक' सड़कपर आबि गेल छलाह।

उपर्युक्त सभ प्रश्नपर प्रकाश नीक जकाँ विचार कएने छल। ओकर प्रदर्शन स्क्रिप्ट देखिक' हमरा लागल जे ओकरामे नाटक प्रदर्शनक समझदारी छैक।

नाटकसँ एक दिन पहिने हमरा डेरापर एकटा कार्ड आएल रहय। ओहिपर सपरिवार लिखल रहैक। तँ हम पत्नीसँ पुछलियनि -

''नाटक देख' जएबैक'' ?

''कोन नाटक छै'' ? प्रश्नपर प्रश्न ओ रखलनि।

''एक छल राजा''

''नइ जाएब''।

''किएक''?

''कलकत्ता मे देखने छी। हमरा नइ नीक लागल रहय''।

''चलू ने, निर्देशक बदलल छै, अभिनेता बदलल छै''।

''मुदा नाटक तँ वएह रहतै ने''।

''तैयो देखि लियौ ने''।

नाटक भेलैक। नाटक समाप्त भेलाक बाद नचिकेताजी कें काफी खुश देखलियनि। एकर मतलब छलैक जे नाटक अपन ऊँचाई पाबि गेल छल। वस्तुत: हमरो बड़ड नीक लागल रहय ई प्रस्तुति। हमर मोन मानि गेल छल जे एकरा नीक निर्देशकक पाँतीमे राखल जा सकैए। जँसे बात नइ रहितै तँ नाटक एहि रूपमे नइ चमकितै। रास्तामे हम पत्नीसँ पुछलियनि –

''केहन लागल नाटक''?

''बहुत बढियाँ''

''तखन कहै छलिऐ जे नइ जाएब''।

''हमरा थोड़बे बुझल छल जे एहन नाटक हेतै''।

ई छलैक एकटा साक्षर मात्र लोकक मूल्यांकन। श्री मायानंद मिश्र, डॉ. गंगेश गुंजन, डॉ. देवशंकर नवीन,

डॉ. ओमप्रकाश भारती आदि दिग्गज विद्वान लोकनि एहि प्रस्तुतिक प्रशंसा कएलथिन। ओना दशरथ जखन भार जनकपुर पठौलथिन तँ जनकपुरबासी मेसँ क्यो बाजि ऊठल–भार तँ बहुत बढियाँ छनि, मुदा अंकुरीक अखुआ टेढ छनि। एहन अखुआ टेढबाला लोक प्रेक्षकक प्रतिक्रिया देखिक' अपनाकेँ चुप्पे राखब उचित बुझलक।

एहि ठाम एकटा बात कह' चाहब– आदमीक क्षमताक स्थानांतरण दोसर क्षेत्रमे सेहो होइत छैक। यदि हम दहिना हाथसँ 'अ' लिखैत छी तँ बामा हाथसँ 'अ' सेहो लिखि सकैत छी। कारण, दहिना हाथक क्षमता बामा हाथमे स्थानांतरित भ' जाइत छैक। एही अवधारणापर लोक कहैत छैक जे बी.ए. भ' क' घास छिलतै तँ मूर्खसँ बढिए जकाँ छिलतै किएक तँ ओ अपन पढ' लिख' बाला क्षमता घास छील' मे लगा देतैक। एहि मनोवैज्ञानिक तथ्यक सत्यापन प्रकाश चन्द्र झाक अभिनयात्मक एवं निर्देशकीय क्षमतासँ जोड़िक' संगठनात्मक क्षमताकेँ सेहो देखल जा सकैए। ओ जतबए नीक अभिनेता तथा निर्देशक अछि ओतबए एकटा सफल संगठनकर्ता सेहो। आ हम सभ कियो जनैत छी जे रंगकर्म मे संगठनात्मक क्षमताक विशेष महत्व छैक।

एहिठाम संगठनात्मक क्षमताकेँ रंगकर्मसँ जोड़िएक' देखल जा सकैत अछि कारण, भरतक नाट्यशास्त्रक पैंतिसम अध्यायमे नाट्यदलक चर्चा आएल अछि जाहिमे सूत्रधार, अभिनेता, काष्ठकार, माली (माल्यकार), स्वर्णकार (मुकुट एवं गहना बनब'बाला), सूचिकार (दर्जी), चित्रकार आदिक चर्चा अछि। हमरा जनैत एहि सभ कैँ मिलाक' राख'बाला सूत्रधार छल होएतैक। ईसभ अपन-अपन योगदान नाट्य प्रदर्शनमे दैत छलैक। जँ एकरा सभकैँ मिलाक' नहि राखल जैतैक तँ नाट्यप्रदर्शन असंभव भ' जइतैक। अत: एकटा सम्पूर्ण रंगकर्मीक हेतु संगठनात्मक क्षमता आवश्यक भ' जाइछ।

2005 ई. मे जनकपुर नाट्य महोत्सवक आयोजन कएल गेल रहैक। एहि आयोजन मे यात्री टीम भाग लिअय से हमर हार्दिक इच्छा रहय। मुदा कलाकारसभ बिखरल रहैक। सभ एकठाम जमा होएत आ नाटक करत से संभव नहि बुझाय। तथापि एकबेर जानकारी देब आवश्यक छल। एतदर्थ बीस-बाइसटा मेम्बरमे सँ प्रकाश कैँ टेलीफोन कएलिऐक। कारण, ओकर संगठनात्मक क्षमतासँ हम परिचित छलहुँ। दोसर जँ गछियो लितएअ तँ संगठनात्मक क्षमताक अभावमे जएबो करितएअ कि नहि ताहिपर हमर विश्वास नहि छल। खैर, ओ हमर इच्छाकेँ सहर्ष स्वीकार क' लेलक आ पन्द्रह-सत्रह आदमीक टीम ल' क'(दिल्ली सँ) जनकपुरधाम (नेपाल) पहुँच गेल।

सम्प्रति प्रकाश दिल्लीमे मैथिली लोक रंग (मैलोरंग) नामक संस्था चला रहल अछि। एहि संस्थाक एकटा सदस्य दिल्ली रहैत अछि तँ दोसर देवगिरी मे, माने एकटा उत्तरी दिल्ली तँ दोसर दक्षिणी दिल्ली। एहना स्थिति मे मैथिली रंगकर्म कैँ जियाक' राखब एकटा कठिन काज भ' जाइत छैक। तथापि ओ एकरा जिआए क' नहि, बल्कि जगजियार क' क' रखने अछि।

इम्हर, जहिया सँ प्रकाश रंग प्रसंग सँ जुड़ल अछि आ डॉ. ओमप्रकाश भारती, स्व. जे.एन. कौशल, महेश आनंद, देवेन्द्र राज अंकुर, प्रतिभा अग्रवाल आदि सन शोधकर्ताक सानिद्ध पौलक अछि ओकर रंग-दृष्टि आरो खुजलैक अछि। मैथिली लोकनाट्य आ रंगमंच पर ओकर शोध आलेख उल्लेखनीय होइत छैक। बाल रंगमंच पर भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय फैलोशिप प्राप्त करनिहार प्रकाश कहियो कहियो कथा सेहो लिखैत अछि। एकरा द्वारा लिखल कथा पाथर बेस चर्चा मे छल। ई कथा बुच्चीक मनोरथ नाम सँ अंतिका मे आ पाथर नाम सँ हिन्दी मे समकालीन भारतीय साहित्य मे प्रकाशित भेल रहै।

हमरा जनैत कर्मठ आ सफल व्यक्ति ओ नहि होइत अछि जे समयक पाछाँ-पाछाँ चलैत अछि, सफल व्यक्ति तँ ओ होइत अछि जे अपन कर्मठतासँ समय कैँ अपना लग खींच लैत अछि। इएह गुण हम मृदुभाषी आ मिलनसार प्रकाश मे पबैत छी। किएक तँ एकरासँ पहिने मिथिलांचल सँ कतेको मैथिलीक विद्वानलोकनि दिल्ली अएलाह, मुदा मैथिली रंगकर्मक जड़ि एना भ' क' रोपल नहि भेलनि। प्रकाशक लेल दिल्ली मे हिन्दी रंगमंच मे काज करनाइ बहुत आसान छल मुदा ओ मैथिली रंगकर्म के अपनैलक ई बेसी महत्वपूर्ण अछि। हमरा तँ ओहो दिन देखल अछि जहिया मैथिली रंगकर्म कलकत्तामे बहुत जगजियार छलैक, एकरा बाद ई जगजियारी ऊठिक' पटना आ जनकपुर अएलैक सेहो देखलहुँ आ आइ लगैत अछि जे एहि जगजियारीक एकटा प्रबल दावेदारक रूपमे दिल्ली सेहो ठाढ़ भ' गेल अछि जकर श्रेय निश्चित रूपे प्रकाश चन्द्र झा कैँ जाइत छैक। आइ पटना हो, चाहे जनकपुर, चाहे सहरसा, सभकैँ अपन-अपन क्षमता देखएबाक हेतु दिल्लीमे प्लेटफार्म मैथिली लोक रंग (मैलोरंग) प्रदान कएअलक अछि जकर संचालन प्रकाश चन्द्र झा क' रहल अछि। हम मैथिली रंगकर्मक हेतु ओकर दीर्घायु आ सफलताक कामना करैत छी।



महेश मिश्र "विभूति" (१९४३-)

पटेगना, अररिया, बिहार। पिता स्व. जलधर मिश्र, शिक्षा-स्नातक, अवकाश प्राप्त शिक्षक।

पन्थीसँ

तनिक विलमिके सुनिली पन्थी,
अविलम पहुँचब गेहे।
तरुणाईमे कथिक अपेक्षा,
जतबा कहब, बुझब सब नेहे॥

अहाँ पन्थी! पथिक बनिकेँ,
जा रहल छी बाटमे।
दृश्य अगणित देखब पन्थी,
भ्रमब नहि जग-हाटमे॥

आओत बाढ़ि जे स्नेह-सलिलकेँ,
शपथ, सबल पग राखब।
दुर्बलता जँ व्यापत किञ्चित,
कहू! कोना जल थाहब॥

बिनु जल भवसागर की नदिया,
दहब-भसब नहिं बाबू।
दृढ़-सङ्कल्प पतवार पकड़िकेँ,
राखब मन पर काबू॥

होयत हँसारति भरि जगमे,
जँ, बुड़ि जाओत नौका।
अस्तु, सोचब गृद्ध दृष्टि लऽ,
नहिं आओत फेर मौका॥

पुनः कतबा कहब बाबू?
शुभकामना अछि संगमे।
सफल होऊ , सुफल पाऊ,
शुभ रंग आनू रङ्गमे॥

अहाँ पायब सुयश जगमे,
पुलकि पुलकत गात मम्।
पूर्ण पूनम सम जँ देखब,
परम आनन्दित होयब हम॥

अछि निवेदन ईशसँ,
सद्बुद्धि दैथि सुजान कें।
बड़ आश अछि पंथी अहाँसँ,
करहु मुकलित प्राणकेँ॥
सन्तोष (०६.०२.६५)

सन्तोष सरितमे नित नहाय,
बल्कल पहिरी तँ लाज न हो।
बेदाग होय कर्तव्य करी,
हाथी नवीश सँ काज न हो॥

कहू! व्यर्थ झगड़िके धन अरजी,
सत् कर्म बिना सब काज हो।
एक दिन बिन कैंचाके जगसँ,
प्रस्थान करू, तँ लाज न हो॥

भऽ जाय फकीरी ओहिसँ की?
मस्तक ऊँचा सदिकाल रहे।
कहू? भला वो अमीरी की,
लानत जेहि पर कङ्गाल कहे॥

भऽ जाय अमीरी वोहिसँ की?
सत् कीर्ति समुज्ज्वल कर्म करू,
निशि दिन सद्भाव निबाहू जँ।
भगवान् भला करता निश्चय,
कहियौन हुनकहि, नहिं काहूसँ॥

हुनकर लीला अनदेखल अछि,
फल प्राप्त करै छथि विश्वासी।
सुनितहुँ छथि सबहक परमप्रभु,
कारण; वो छथि घट-घट वासी॥

उद् बोधन : ढाढ़स (३१.०७.६३)

मत होउ निराश एक झटका पर,
नित कर्मक ध्यान धरू मनमे।
दुनियाँमे एहिना होइतैं छै,
ई सोचि पुनः उतरू रनमे॥
बहुतोंके एहिना मेल एतऽ,
किन्तु; की साहस छोड़ि देलक।?।
साहस थीक सम्बल आशाके,
जगमे हारल पुनि लाहु लेलक॥
नभमे देखू वो चन्दाके,
जे पूर्ण विकासक क्रमपर अछि।
एक दिन पूनम परिपूरित भऽ,
पुनि ग्रास ह्रास भऽ जाइत अछि॥

नयन निहारि निरखू जगके,
के रहल समान निशि दिन जगमे।?।
उत्थान-पतन क्रम कर्मक अछि,

निर्भीक बनूँ, बिचरू महमे॥

जी तोड़ि परिश्रम करथि कोय,
फल नीक नाहिं, तँ दोष कोन।
विधना के एहिना लीला छन्हि,
तँ, एकरामे किनको दोष कोन॥?॥

बड़ आश केलहुँ शुभ आशाके,
सम्भव केलहुँ नहिं काज कोन।
फलदाता दरजल नाहिं यदि,
तँ, एकरामे किनको लाज कोन॥?॥

भेटत ओतवहि, जे लिखल अछि,
पाथर परके रेखा बुझियौ।
कर्तव्य करू नित निकक हित,
भेटत निश्चय, भागक लेखा बुझियौ॥

श्रम-साध्य मजूरी भेटतैं छै,
ई शास्त्र-पुराण, सुधि जन कहि गेल।
औकतेलासँ भट्टा पाकयऽ?
ई कथ्य युगाब्दक रहि गेल॥

वोपदेव इतिहास-पुरुष,
अमर लेख्य पाणिनी तिनकर।
धीर धैर्य धारण करियौ,
यथा भाग भावी जिनकर॥

पाण्डव के राज भेटल छीनल,
नल दमयन्तीके याद करू।
सिंहासनारुढ़ सियावर भेला,
वसुदेव कोना आजाद करू॥

मधुर स्वप्न (०७.११.६२, रवि श्री विजयादशमी)

मधुर स्वप्न की देख रहल छी,
दत्यतासँ सँदूर भऽ के।
चिरनिशा के गर्भमे,
तल्लीनतासँ निकट भऽ के॥

दुक्खसँ जँ दूर छी तँ,
कहू कोन उपचार हो।
मूक मुद्रा एना कऽ के,
अति दुःखक नैं विस्तार हो॥

या कहू अन्तर्निहित,
दुःखसँ दुःखी छी मनहि-मन,
से कहू सङ्कोच तजि के,
की स्वप्न देखब छनहि-छन॥

मौन रहला पर कोना के,
बुझि सकत पर वेदना।
वेदना के व्यक्त कऽ के,
छाड़ि दी निज कल्पना॥

मधुर स्वप्नक की महत्ता,
कहि दियऽ दू शब्दमे।
हम भ्रमित छी दशा लखिके,
किछु कहू, किछु शब्दमे॥?॥

या कहू किछु विसरि गेने छी,
अहाँ निज ख्यालसँ।
मधुर स्वप्नक ज्वलित ज्वाला,
त्यागि दी अन्तरालसँ॥

सजनि! पता दी अपन क्लेशक,
विषम वेदना मानस के।
वा बहु भाँति व्यथित छी अपने,
हृदयान्तर्गत तामस से॥

कोना वेदना उमड़ल अछि जे,
अगम-अथाह, पता नहिं आय।
अतिशय क्लेशक दुःसह भारसँ,
दबयित छी दयनीय भऽ हाय॥

कहू-कहू! मानस के ओझरी,
मधुर स्वप्न के त्यागू आय।
मधुर यदि दुःखदाई हो,
तुरत त्यागी, कथमपि नहिं खाय॥

अहाँ बेसुधि, हम ससुधि भऽ
कोना जीवन-रथ चलत।
सामंजस्यानन्दक प्रयोजन,
जीवनक रथ अथ चलत॥

सिन्दूर-दानक गीत: ''अनुरोध'' (१४.०५.६३, सोम)

''प्रिय पाहुन सिन्दूर-दान करू''

सुन्दर सरस समय शुभ सरसल, सिन्दूर हाथ धरू।
उषा निहारथि कमल हस्तके, अविलम कर्म करू॥...॥
नव निर्मित नगरीमे सिञ्चित किञ्चित ख्याल करू।
विलम छाड़ि, सिन्दुर लऽ करमे, हिय प्रभुनाम धरू॥...॥
दर्शक सब व्याकुल होय निरखय,
स्वातीक जल बरसू।
नवजीवनके सृजन करथि प्रभु कर्मक ध्यान धरू॥...॥
कबलौं प्रभु अनुरोध करायब शुभ-शुभ कर्म करू।
मनःपूत मनसाके कऽ के, भवनदमे विहरू॥...॥
शुभ शङ्कर-गौरी मैयाके शुभाशीष हिय मध्य धरू।
विनय ''विभूति''क एतवहि प्रभुसँ, युगल जगत् विचरू॥...॥

बादरीक आगमन (२६.०५.६३)

''नभमण्डलमे पवनक रथपर, कारी-कारी बादरि आयल''।
बिजुरि छटकै, ठनका ठनकै, देखि-सुनि जनमन खूब डेरायल॥
चहु दिशि उमड़ल कारी बादरी, बादरि आबिके जल बरसायल।

प्रलयनाद मेघक सुनि-सुनि, वृद्ध जनी
सब नेनहिं नुकायल॥
हकरै बालक वृद्ध जनी सब, लोक कहै
सब माल हेरायल।
बाँस-आम गीरल अनगिनती, क्यो कहै
हमरो महिंस हेरायल॥
लोक कहै बहु भाँति मनोदुःख, प्रिया
कहै मोर प्रिय नहिं आयल।
कामिनी कलपथि, प्रिय नहिं गृह छथि,
विजुरिक धुनि-सुनि जियरा डेरायल॥
रोर मचल अछि चहु दिशि जन-जन,
एतबहिमे अति जल झहरायल।
त्रिषित भूमि ''विभूति''मय भेली, तरु-तृण
वो जन-मन हरसायल॥

जगक प्रमान (०९.०६.६३)

डोली उठल बिन खोलीके दुवारसँ,
घुरि नहिं आओत, प्रमान हे।

काँच कचम्बा काटि कुढ़ावोल,
उघल सबटा सामान हे॥

श्वेत वस्त्रसँ मृतक सजाओल,
नित प्रति होत जहान हे।

अचरज के नैं बात बुझि ई,
ई थिक ध्रुवक समान हे॥

चारि जने मिलि कान्ह लगाओल
गमन करत शमशान हे।
पुत्र-प्रणय के परिचय देता,
करता अग्निक दान हे॥

सच् होय अछि ''पुत्रार्थे भार्या''
होय छथि पुत्र महान् हे।
कहथि ''विभूति'' बनब विभूति,
एहि थिक जगक प्रमान हे॥

''अपटुडेट बलिष्ठ युवकसँ''
(१५.१२.१९६२)

करू किछु काज बाबू औ,
रतन धन आय पौने छी।
धरा पर अवतरित भऽ के,
एना की मन गमौने छी॥?॥

करू उत्साह किछु मनमे,
चलू सन्मार्गपर निशि-दिन।
चुकाऊ कर्ज माताके-
जे भेटल अछि अहाँके रिन॥

बढ़ाऊ डेगके आगू,
समय तँ कटि रहल अछि औ।
पुनः ऋण बढ़ि रहल अछि जे,
सधाउ आय, नैं राखू शेष तनिको औ॥

पड़ल माता कराहति छथि,
दया के बेच देने छी।
तनिक तँ लाज राखू जे,
एना की मन गमौने छी॥?॥

सुयश पायब समाजीसँ,
धवल यश देश व्यापी औ।
पिता-माता सुकीरति लहि,
अभय वरदान देता औ॥

''अनुरोध'' (२८.०९.१९६२)

की कहू? कहलो नैं जाय अछि,
हिय व्यथित, वाणी सबल नहिं,
बुद्धि व्याकुल, व्याल चहु दिश
ज्वाल ऊरमे बढ़ि रहल अछि।
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

दशा पातर, हाल दयनीय,
आननक सुकुमारताके।
मौन शब्दातीत मुद्रा;-
से हृदयमे चुभि रहल अछि।
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

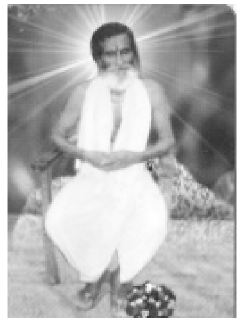
प्राण आकुल, विकल की छी,
व्यथा-ज्वालमे जरि रहल छी,
शूल बज्रक पतित नगसँ
बमरि-झहरिके खसि रहल अछि!
की कहू कहलो नैं जाय अछि॥

हृदय दारुण दुःख सहिके,
मात्र प्राणे शेष बाँचल।
एना विह्वल हाल कऽ के,
व्यथा द्विगुणित दऽ रहल छी॥
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

चन्द्रमुख-मण्डल सुलोचन,
कच-विकच बेहाल की अछि।
वेदनासँ व्यथित भऽ के,
व्यथित अनका कऽ रहल छी।।
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

बस आश एक, अनुरोध केवल,
मधु-मधुर मुस्कान के।
हेरि चानक स्वच्छ आभा,
करु मुकुल, विकसित प्राण के॥

पुनः मञ्जुल मृदुलाअ के,
हेतु अनुरोधी बनल छी।
मानिनी भऽ मान राखू,
दशा लखि के अति विकल छी॥



मैथिलीपुत्र प्रदीप

१. श्री मैथिली पुत्र प्रदीप (१९३६-)। ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर' आ 'सभक सुधि अहाँ लए छी हे अम्बे हमरा किए बिसरै छी यै" मिथिलामे लेजेंड भए गेलअछि।-सम्पादक

आध्यात्मिक निबन्ध

ॐ (मा)

एकटा प्रश्न उठि सकैछ, जे मोक्ष कामीक लेल वैदिक कर्मक प्रयोजन? एकर उत्तर ई भऽ सकैछ जे यज्ञ यागादि कर्मक फलश्रुतिमे स्वर्ग प्राप्त करबाक बात कहल गेल अछि। मुदा जे व्यक्ति स्वर्ग नहि चाहैत होथि, मोक्षेटा चाहैत होथि, हुनका लेल वैदिक कर्मक आवश्यकता, ई वृहदारण्यकोपनिषद केर वचनसँ पुष्ट होइत अछि। यथा- " तमेतं वेदानु वचनेनं ब्राह्मणाः विविदिषन्ति यज्ञेन, दानेन तपसा नाशकेन"।

अर्थात्- ब्राह्मणगण वेदाध्ययनसँ कामनारहित यज्ञ, दान एवं तपसँ ओहि ब्रह्मकेँ चिन्हबाक इच्छा करैत छथि। एहि वचनमे अनाशकेन अर्थात् कामनारहित "यज्ञ, दान, तप" विशेष महत्त्व रखैत अछि।

तात्पर्य जे वेदोक्त यज्ञादि कर्म जखन आशक्तिक संग कएल जाइत अछि, तखन ओहिसँ मात्र स्वर्गक भोग प्राप्त होइत अछि। परन्तु जखन बिना आशक्ति रखने निःस्वार्थ भावसँ कयल जाइत अछि, तखन काम-क्रोधसँ मुक्त भऽ कऽ कार्य केनिहारक चित्त शुद्ध भऽ जाइत अछि। ओऽ मोक्षक अधिकारी भऽ जाइत छथि।

श्रीमद्भगवदगीतामे भगवान् श्रीकृष्णक उक्ति अछि- अध्याय १८ (५-६)

यज्ञदान तपः कर्म न साज्यं कार्यमेव तत।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥
एतान्यापित कर्माणि संगं त्यक्त्वा फलानि च।
कार्व्यानीति मे पार्थं निश्चितं मतमुत्तमम॥

अर्थात्- यज्ञ, दान, तप आदि कर्मक त्याग नहि करबाक चाही। मुदा ई समस्त कर्म निष्काम भावसँ करबाक चाही। अतएव उपनिषदक 'अनाशकेन' एहि पदकेँ एहिठाम गीताक संगं त्यक्त्वा फलानि च पुष्ट करैत अछि।

अतएव जे मनुष्य अपन आन्तरिक कल्याण चाहैत छथि अर्थात् जन्म-मृत्युक बन्धनसँ मुक्त हेबाक इच्छा करैत छथि, हुनका वैदिक कर्मकाण्डक फलस्वरूप स्वर्गक भोग केर इच्छा नहि राखि कऽ निष्काम भावसँ भगवानक प्रसन्नताक लेल मात्र कार्य करबाक चाही। ई बात मुण्डकोपनिषदमे सेहो आयल अछि। १,२,७.

मनुष्यक चित्त अनेक प्रकारक कुकर्मसँ मलिन भऽ गेल रहैत अछि। एहि सभ मैलकँ हटेबाक लेल सत् कर्म करब आवश्यक अछि। एहि सत्कर्मकेँ करबाक उद्देश्य होइत अछि वैदिक कर्म काण्ड। वेदोक्त कर्म कएलासँ चित्त शुद्ध होइत अछि। जकर बाद ब्रह्म विद्या अथवा ज्ञानक बात सुनलासँ सुफल भेटैत छैक।

उपनयन संस्कारक बाद वेदोक्त कर्म करबाक लोक अधिकारी होइत छथि। वेदक अन्तिम लक्ष्य मोक्षे प्राप्त करब थीक। ईश्वरक उपासना योगक अभ्यास, धर्मक अनुष्ठान, विद्या प्राप्ति, ब्रह्मचर्य वृतक पालन तथा सत्संग आदि मुक्तिक साधन गानल गेल अछि। कर्मफलक प्राप्तिक हेतु पुनर्जन्मक प्रतिपादन आत्मोन्नत्तिक लेल संस्कारक निरूपण, समुचित जीवन-यापन हेतु वर्णाश्रमक व्यवस्था एवं जीवनक पवित्रता हेतु भक्ष्या-भक्ष्यक निर्णय करब वेदक मुख्य विशेषता थीक। कर्मकाण्ड, उपासना-काण्ड तथा ज्ञान-काण्ड एहि तीनूक वर्णन मुख्यतया वेदमे भेटैत अछि। यज्ञान्तर्गत देवताक पूजा, ऋषि-महर्षिक सत्संग तथा दान ई तीनू क्रिया एक संग होइत अछि। तहिना ब्रह्मचर्य पालनसँ ऋषि-ऋण, यज्ञ द्वारा देव-ऋण तथा संतानोत्पत्तिसँ पितृऋण मुक्त हेबाक आदर्श वाक्य वेदेमे प्राप्त होइत अछि।

पुत्र-वियोगक कारणेँ ई पक्का बैरागी भए गेलाह। गामसँ बाहर भए जंगले-जंगल एकान्तमे वास कए भजन-कीर्तन करए लगलाह। गामक लोकसभ बहुत दिन धरि पाछाँ कएलकनि जे अपने घुरि जाऊ, हमहु सभ अपनेक पुत्रक समान छी, अपनेकेँ कोनो कष्ट नै होएत। मुदा साहेब रामदास पर तकर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि, उनटे जतए लोकक आवागमन देखथिन्ह, स्थानकेँ बदलि पुनः निर्जनस्थानमे चलि जाइत छलाह। लोकसभ किछु दिन धरि पाछाँ तँ केलकनि, मुदा अन्तमे हरि-थाकि कए जे ई आब पक्का बैरागी भए गेल छथि, तँ हिनका आब तंग नहि कएल जाए, विचारि कए पाछाँ करब छोड़ि देलकनि।

बैरागी भेलाक बाद ई देशक बहुतो भागमे भ्रमण कएलनि। भजन-कीर्तनक संग योग-साधनामे सेहो लीन भए गेलाह। योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कएलाक पश्चात् केओटीक निवासी बलिरामदासजीसँ दीक्षा ग्रहण कएलनि। दीक्षा ग्रहण कएलाक पश्चातो ई अनेक धर्म स्थानक भ्रमण करैत रहलाह। कहल जाइत अछि जे साहेबरामदास दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। बाटमे बड़ कष्ट सहए पड़लनि, घाओ भए गेलनि, घाओमे पीब आबि गेलनि, मुदा दण्ड-प्रणाम ओऽ नहि छोड़लनि। दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। जकर प्रमाण हुनकहि एक कवितासँ भेटैत अछि-

साधुके संगत धरि गुरुक चरण धरि,

आहे सजनी हमहु जाएब जगरनाथहि रेकी।

नहि केओ अन्नदाता संग नहि सहोदर भ्राता,

आहे सजनी माँगि भीखि दिवस गमाएब रे की।

सभ जग भेल भाला गुरुआ अठारह नाला,

आहे सजनी ओहिठाम केओ नहि छोड़ाओल रे की।

सिंह दरबाजा देखि मन मोर लुबधल,

आहे सजनी ओहिठाम पंडा पंडा बेंत बजारल रे की।

साहेब जे गुनि धुनि बैसलहुँ सिर धुनि,

आहे सजनी जगत जीवन निअराएल रे की।

गुरु बलिरामदास मुरिया रामपुरक एक महात्मा शिष्य छलाह तथा अपन गाम केओटा (केओटी)क घनघोर जंगलमे योग साधना करैत छलाह। ई योग साधनामे निष्णात् छलाह। कहल जाइत अछि जे गुरुक बिना वास्तविक ज्ञान असम्भव अछि आ तँ साहेबरामदास एक योग्य गुरुसँ दीक्षा लए, योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कए लेलनि। योग क्रिया पर सिद्धि प्राप्त कए लेलाक बाद जन्म-मरणसँ छुटकारा पाबि जेबाक पूर्ण विश्वास भए गेलनि, से गुरुक प्रसादहिसँ। मोक्ष प्राप्तिमे आब कोनो सन्देह नहि रहि गेलनि, जे जीवनक चरम लक्ष्य थिक। बलिरामदास हिनक दीक्षा गुरु छलथिन, तकर प्रमाण हिनकहि एक कवितासँ भेटैछ-

"गुरु बलिराम चरण धरि माथे, साहेब हरि अपनाया है।

अब तौ जरा-मरण छुटि जैहे, संशय सकल मेटाया है"।

कृष्णक ई अनन्य भक्त छलाह। जगन्नाथपुरीक यात्राक क्रममे बाटहिमे हिनका स्वयं भगवान श्री कृष्ण दर्शन देने छलथिन। आब तँ ई कृष्णक ध्यानमे दिन-राति लागल रहैत छलाह। समाधिस्थ कालमे तँ दुनियाँक कोनो वस्तुक ध्यान नहि रहैत छलनि, ध्यान रहैत छलनि तँ एक मात्र भगवान श्री कृष्ण। जन-श्रुति तँ ईहो अछि जे भगवानक भजनक कालमे जखन ई नाच करैत छलाह तँ स्वयं भगवान श्री कृष्ण सेहो उपस्थित भए संग दैत छलथिन।

साहेब रामदास अनेक तीर्थ-स्थलक दर्शन कएलनि। सांसारिक मोह-मायाकेँ त्यागि वैरागी भए गेलाह, मुदा मिथिला भूमिकेँ नहि त्यागि सकलाह। एक पदमे ओऽ लिखैत छथि, "मिथिला नगरी तोर दान बिनु साहेब होइछ बेहाल" तथा दोसर पदमे "साहेब करुणा करए शीश धुनि मिथिला होइछ अन्धेरि"। एहि पद सभसँ मिथिलाक प्रति हुनक प्रेमक सहज अनुमान लगाओल जाए सकैत अछि। धन्य ई मिथिला भूमि ओऽ धन्य महात्मा साहेब रामदास।

पहिने कहि चुकल छी जे ई जंगलमे एकान्त वास कए भजन-कीर्तन कएल करथि। जतए-जतए ई जाथि ताहि-ताहि ठाम ई अपन खन्ती गारि कुटियाक निर्माण कए एक पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अनेक जगह पर योगमढ़ी छल आ सबहि ठाम ई पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अन्तिम योगमढ़ी दरभंगा जिलाक 'पचाढ़ी' गाममे अछि, जे पूर्वमे बूढ़वनक नामे विख्यात छल। एहू ठाम पाकड़िक गाछ रोपने छलाह, जे अद्यावधि वर्तमान अछि। पल्लवित एहि गाछक शोध मानवशास्त्री लोकनि एखनहु कए रहल छथि।

कमलाक तट पर स्थित पचाढ़ी गामक वन आ वृन्दावनक तुलना करब कठिन भए जाइत छल। वृन्दावनसँ एको रत्ती कम शोभा पचाढ़ी (बूढ़वनक) नहि छल। मोरक नाच, सुगाक गान, नाना प्रकारक वन्यजीव प्राणीक निर्भय विचरण करब, भिन्न-भिन्न लता-पुष्पसँ शोभित वनक दृश्य लोककेँ सहजहि आकृष्ट कए लैत छल। एहि स्थानक प्रशंसामे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि–

"पाकड़ि वृक्ष सएह कमला तट जएह भजन कुटी विश्राम।
चन्द्र सुकवि मन धरम परमधन धन्य पचाढ़ी ग्राम"॥

पचाढ़ी स्थानक शोभा आब नहि रहि सकल, जे पहिने एक निर्जन स्थान छल, ताहि ठाम आब ग्राम अछि, खेती-पथारी कएल जाइत अछि। वनक तँ आब निशानो नहि रहि गेल अछि, तथापि साहेब रामदासजीक समाधि-स्थलक चारूकात मन्दिर सेहो एक-दू नहि छओ-सातटा अछि। सभमे भोग-रागक व्यवस्था, पुजेगरीक संग-संग सहायकक व्यवस्था सभ मन्दिरमे फराक-फराक अछि। लगभग पाँच कट्ठा जमीनमे फुलबारी अछि। आगत-अतिथिक स्वागत यथासाध्य एखनहु कएल जाइत अछि। साहेब रामदासक नाम पर एकटा संस्कृत महाविद्यालय अछि, जाहिमे निर्धन छात्रकेँ स्थान दिससँ रहबाक व्यवस्था ओ मुफ्त भोजनक व्यवस्था कएल जाइत अछि। पचाढ़ीस्थान मिथिलाक वैभवशाली स्थानमेसँ सर्वप्रमुख अछि। एकर वैभवशालीक पाछाँ राजदरभंगाक महत्वपूर्ण योगदान अछि। तत्कालीन दरभंगा मिथिलेश नरेन्द्रसिंह निःसन्तान छलाह। हुनक पत्नी रानी पद्मावती अतिथि-सत्कार, पूजा-पाठक निमित्त ३०० (तीन सए) बीघा जमीन पचाढ़ी स्थानकेँ दानस्वरूप देने छलथिन। मुदा कहल जाइत अछि जे साहेब रामदास ओहि जमीनक दान-पत्रकेँ प्रज्वलित अग्निमे फेकि देलखिन। शिष्य लोकनिकेँ भिक्षाटन वृत्तिसँ आगत-अतिथिक सेवा सत्कार करए पड़ैत छलनि, जाहिसँ ओ लोकनि तंग आबि गेलाह आ फलस्वरूप ओऽ दान-पत्र पुनः महारानीसँ प्राप्त कए चुप-चाप राखि लेलनि, जे एखनहु धरि सम्पत्तिक रूपमे विद्यमान अछि। किछु जमीन भक्त लोकनि वेतियामे सेहो देने छथि। योग्य शिष्य सभ एहि सम्पत्तिकेँ बढ़ाए लगभग हजार बीघा बनाए देलनि। सरकार किछु जमीनपर सिलिंग लगाए देलक, मुदा व्यवस्थापक लोकनि अधिकांश जमीनकेँ वन-विभागकेँ दए गाछ-वृक्ष लगवाए देलनि। अपेक्षाकृत एखनहु ई स्थान समृद्ध अछि।

साहेबरामदास एक सिद्ध पुरुष छलाह आ तँ हिनकामे चमत्कारिक गुण स्वाभाविक अछि। चमत्कारसँ सम्बन्धित अनेक कथा हिनकासँ जुड़ल अछि, जाहिमे एक चमत्कारक उल्लेख करब हम उचित बुझैत छी, जे हिनक अन्तः साक्ष्यसँ जुड़ल अछि।

राजा नरेन्द्र सिंहक समयमे पटनाक कोनो मुसलमान नवाब मिथिलापर आक्रमण कए देलक। राजा नरेन्द्र सिंहक सेना ओ नवाबक सेनाक बीच घोर संग्राम भेल, जाहिमे अपार धन-जनक क्षति भेल छल, मुदा राजा नरेन्द्र सिंह ओहिमे स्वयं वीरतापूर्वक युद्ध कएलनि आ शत्रु सेनाकेँ पराजित कएल। ओहि समयमे महात्मा साहेब रामदास नरेन्द्र सिंहक विजयी होएबाक कामना स्वरूप श्रीकृष्णसँ प्रार्थना कएलनि-

"साहेब गिरधर हरहु नरेन्द्र दुःख,
करहु सुखित मिथिलेशहि रे की"।

एहिपर क्रुद्ध भए नवाब हिनका बन्दी बनाए पटनाक कारागारमे बन्द कए देलनि। साहेब रामदास योगबलेँ सभ दिन गंगा-स्नान, संध्या-तर्पण, पूजा-पाठ आदि गंगहि तटपर कएल करथि। कारागारमे रहितहुँ ई क्रम हिनक निरन्तर चलैत रहलनि। लोक सभ हिनका गंगा तटपर सभ दिन देखैत छलनि। नवाबकेँ कोना ने कोना एहि बातक जानकारी भेट गेलनि। नवाबकेँ तँ विश्वास नहि भेलनि तथापि हुनका अपन कर्मचारी सभपर संदेह भेलनि आ ओऽ अपनेसँ कारागारमे ताला लगाए देलनि। तथापि साहेब रामदासक गंगा-स्नानक क्रम नहि टुटलनि। अन्तमे नवाब साहेबरामदासक पएरमे बेड़ी बान्हि कारागारमे ताला लगाए देलनि। साहेबरामदास तत्क्षणहि करुणाद्र भए अपन आराध्य देव श्री कृष्णकेँ पुकारलनि-

"अब न चाहिए अति देर प्रभुजी,
अब न चाहिए अति देर।
विप्र-धेनु-महि विकल सन्त जन,
लियो है असुरगण घेरि"।

गविते छलाह की पएरक बेड़ी ओ फाटकक ताला आदि सभ टूटिकए खसि पड़ल। नवाब आश्चर्य चकित भए गेल। ओ महात्माजीक पएरपर खसि पड़ल। साहेबरामदाससँ क्षमा माँगलक आ बादमे ससम्मान स्वागत कए मिथिला पहुँचाए देल।

एहि तरहक कएक गोट चमत्कार अछि, जेना राजा राघव सिंहक समयमे राजदरभंगामे प्रेत-बाधाकेँ शान्त करब, माटिक भीतकेँ हाँकब। कृष्णाष्टमी, जन्माष्टमी आदि उत्सवक अवसरपर अधिक साधु-सन्तक भीड़ जुटलाक बादो थोड़बहु सामग्रीमे भोजनक अवसरपर भण्डारामे कोनो कमी नहि होएब आदि कतोक चमत्कारिक घटना सभ अछि, जे हिनकासँ जुड़ल अछि। एहि सिद्ध पुरुषक चमत्कारिक घटनासभसँ लोकक हिनका प्रति कतेक श्रद्धा छल से सहजहि अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

साहेबरामदास वैरागी वैष्णव-भक्त-कवि छलाह। पदक रचना करब हिनक साधन छल मुदा साध्य तँ एकमात्र छल

भगवान विष्णुक भजन-कीर्तन करब। कहल जाइत अछि जे ओऽ अपनहि पदक रचना कए सभ दिन भगवानक भजन-कीर्तन कएल करथि। ओऽ भक्तिमार्गी छलाह आ तेँ भक्ति-मार्गक सिद्धांतक अनुरूप पदक रचना कएल करथि। भक्ति मार्गक सभ रसक पदरूपमे रचना कएलनि, मुदा प्रधान रस "मधुरं" रस सएह अछि। भगवानक कोनो एक रूपक ओऽ आग्रही नहि, सगुण-निर्गुण दुनू रूपमे मानैत छलाह, जे अपन मनोगत भाव कवितामध्य व्यक्त कएने छथि।

"निर्गुण सगुण पुरुष भगवान, बुझि कहु साहेब धरइछ ध्यान"।

"धैरज धरिअ मिलत तोर कन्त, साहेब ओ प्रभु पुरुष अनन्त"।

साहेब रामदासक यद्यपि एकमात्र पदावली उपलब्ध अछि, जाहिमे ४७८ टा पद संकलित अछि। मुदा ईएह पदावली हुनक यशकेँ अक्षुण्ण बनाए रखबामे सभ तरहेँ समर्थ अछि। भक्तिक प्रायः सभ विषयपर पदक रचना कएने छथि, यथा- कृष्ण-जन्म, वात्सल्य, वंशीवादन, संयोग-श्रृंगार, रास-लीला, झुलोत्सव आदि। रासलीला परक जेहन पद सभक ई रचना कएने छथि से प्रायः मैथिलीमे आन केओ कवि नहि कएने छथि। हिनक रास-लीला परक पदक विवेचन स्वतंत्र रूपेँ कएल जाए सकैत अछि। कृष्ण-प्रेमक अनन्यता, भक्ति प्रवणता ओ प्रसाद गुण हिनक काव्यक मुख्य गुण कहल जाए सकैत अछि। ऋतुगीत, दिन-रातिक भिन्न-भिन्न समयोपयोगी पदक रचना, जेना-प्राती, सारंग, ललित, विहाग आदिक रचना कएल करथि।

मिथिला पञ्चदेवोपासक सभ दिनसँ रहल अछि। साहेब रामदासक रचनामे सेहो भक्तिक विविध-रूपक दर्शन होइत अछि। कृष्णक तँ ई अनन्य भक्त छलाह मुदा आनो-आन देवी-देवता परक पदक रचना कएने छथि। हिनक हनुमानक फागु परक कविता देखल जाए सकैत अछि। एकरा सन्त लोकनिक फागु सेहो कहल जाए सकैछ-

"प्रवल अनिल कपि कौतुक साजल लंका कएल प्रयाण।

कनक अटारी कए असवारी छाड़थि अगनिक वाण॥

जरए लंक कपि खेलए फगुआ, उड़ए गगन अंगार।

धुँआ वाढ़ि अकासहि लागल दिवसहि भेल अन्धार"।

हिनक रचित एकटा महादेवक गीत सेहो अछि, जकर उल्लेख डॉ. रामदेव झा अपन "शैव साहित्यक भूमिका" नामक ग्रन्थमे कएने छथि-

" पुछइत फिरइत गौरा वटिया हे राम।

कहु हे माइ, जाइत देखल मोर भंगिया हे राम॥

हाथ भसम केर गोला हे राम।

वरद रे चढ़ि कोन नगर गेल भोला हे राम"॥

विरहिणी व्रजाङ्गनाक मनोदशाक एक विलक्षण रूप एहि ठाम सेहो देखल जाए सकैत अछि:

"कमल नयन मनमोहन रे कहि गेल अनेक।

कतेक दिवस भए राखब रे हुनि वचनक टेक॥

के पतिआ लए जाएत रे जहँ वसु नन्दलाल।

लोचन हमर सतओलनि रे छतिआ दए शाल॥

जहँ-जहँ हरिक सिंहासन आसन जेहिठाम।

हमहु मरब हरि-हरि कै मेटि जाएत पीर॥

आदि"

मिथिलाक सन्गीत परम्परा अति प्राचीन ओ समृद्ध अछि। संगीतक रचना तँ विद्यापति ओ हुनकहुँसँ पूर्व होइत आएल अछि, मुदा रहस्यवादी संगीत-काव्य-रचना नवीन रूपमे आएल अछि, जकर प्रवर्तक साधु-सन्त लोकनि भेलाह। जाहिमे सन्त साहेब रामदासक स्थान अग्रगण्य अछि। हिनका लोकनिक रचनाक प्रभाव प्रायः सभ वर्गपर पड़ल। हिनक प्रायः सभ कवितामे रागक उल्लेख अछि। अतः एहिपर संगीत-शास्त्रक अनुकूल शोध-कार्य कएल जएबाक आवश्यकता अछि।

साहेब रामदास परम वैरागी सुच्चा साधु छलाह, भक्त छलाह आ तेँ हिनक भाषापर सधुक्क्री ओ तत्काल प्रचलित व्रजभाषाक किछु प्रभाव सेहो पड़ल अछि, तथापि हुनक जे पदावली उपलब्ध अछि से मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध बनएबामे अपन महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कएने अछि। भक्ति-भावनाक सरलता ओ सहजताक दृष्टिएँ हिनक भाषा सरल ओ सहज अछि। भक्ति-भावना परक एहन कविता मैथिली-साहित्यमे प्रायः दुर्लभ अछि। हिनक भक्ति परक गीत एखनहु मिथिलाक गाम-घरमे बुढ़-बुढ़ानुसक ठोरपर अनुवर्तमान अछि, जकर संकलन करब परम आवश्यक अछि।



मनोज मुक्ति

स्मिताक लडाई

पशुपतिनाथक देशमे होइछ व्यभिचार सब भेषमे

आन ठाम त बाते छोडू अबुह सगैत अछि अपनो देशमे।

प्रकृतिक देल ई आँखि, कान ओ बडका नाक आब दुश्मन प्रतीत होइया

सँसारमे अपन अलग छाप छोडने मिथिलावासी,डरपोकक हूलमे सरिक होइया।

अपना समस्त अधिकार सऽभसँ बन्चित होइतो,बँचल छी काइल्हुक आशामे

भ्रष्ट प्रशासन ओ नेताक लोभ सँ, जकडा रहल अछि देश, विदेशीक पाशामे।

एतेक कठीन आ दूर्लभ मनुष्यक जीवन पाओल स्वर्ग समान एही मिथिलामे

मूदा लगैछ जे जन्मजाते अभागल थिकहुँ जे दूर्दशा होइत देखैछी, मिथिलाके अपन आगामे।

सम्पूर्ण श्रृंगार सँ सुशोभित जगतक माय ओ विलक्षणा सीता आई घरसँ निकालल जाऽरहल अछि

मिथिलावासी एम्हर ओम्हरक वात सुनैत, घरक एकटा कोनामे बहादुरी देखाबि रहल अछि।

भऽरहल अछि सस्ता रँग सँ शोणीत जाहिसँ सब छथि नहाएल

कतेक दिन सऽब चुप्पे रहतै, बैसतइ एना नुकाएल?

ताहि सँ,

एहि स्मिताक लडाईमे बचने मात्र सँ काज नई चलत

सम्पूर्ण मैथिलमे नव चेतना भरैत, सबके लडहिटा पडत।



डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' (1938-)

डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' (१९३८-)- ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला-समस्तीपुर। पिता स्व. वीरेन्द्र नारायण सिँह, माता स्व. रामकली देवी। जन्मतिथि- २० जनवरी १९३८. एम.ए., डिप.एड., विद्या-वारिधि(डि.लिट)। सेवाक्रम: नेपाल आऽ भारतमे प्राध्यापन। १.म.मो.कॉलेज, विराटनगर, नेपाल, १९६३-७३ ई.। २. प्रधानाचार्य, रा.प्र. सिंह कॉलेज, महनार (वैशाली), १९७३-९१ ई.। ३. महाविद्यालय निरीक्षक, बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, १९९१-९८.मैथिलीक अतिरिक्त नेपाली अंग्रेजी आऽ हिन्दीक ज्ञाता। मैथिलीमे १.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ई.), २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा १९७२ ई.), ३.'मैथिली' त्रैमासिकक सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नेनागीत (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशमे (महनार, २००५ ई.)।प्रकाशनाधीन: ''विदापत'' (लोकधर्मी नाट्य) एवं ''मिथिलाक लोकसंस्कृति''।भूमिका लेखन: १. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत (डॉ रामदेव झा), २.धर्मराज युधिष्ठिर (महाकाव्य प्रो. लक्ष्मण शास्त्री), ३.अनंग कुसुमा (महाकाव्य डॉ मणिपद्म), ४.जट-जटिन/ सामा-चकेबा/ अनिल पतंग), ५.जट-जटिन (रामभरोस कापड़ि भ्रमर)।अकादमिक अवदान: परामर्शी, साहित्य अकादमी, दिल्ली। कार्यकारिणी सदस्य, भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना। सदस्य, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर। भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली। कार्यकारिणी सदस्य, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुरधाम, नेपाल।सम्मान: मौन जीकेँ साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार, २००४ ई., मिथिला विभूति सम्मान, दरभंगा, रेणु सम्मान, विराटनगर, नेपाल, मैथिली इतिहास सम्मान, वीरगंज, नेपाल, लोक-संस्कृति सम्मान, जनकपुरधाम,नेपाल, सलहेस शिखर सम्मान, सिरहा नेपाल, पूर्वोत्तर मैथिल सम्मान, गौहाटी, सरहपाद शिखर सम्मान, रानी, बेगूसराय आऽ चेतना समिति, पटनाक सम्मान भेटल छन्हि।राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता- इम्फाल (मणिपुर), गोहाटी (असम), कोलकाता (प. बंगाल), भोपाल (मध्यप्रदेश), आगरा (उ.प्र.), भागलपुर, हजारीबाग, (झारखण्ड), सहरसा, मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, वैशाली, पटना, काठमाण्डू (नेपाल), जनकपुर (नेपाल)।मीडिया: भारत एवं नेपालक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे सहस्त्राधिक रचना प्रकाशित। आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रायः साठ-सत्तर वार्तादि प्रसारित।अप्रकाशित कृति सभ: १. मिथिलाक लोकसंस्कृति, २. बिहरैत बनजारा मन (रिपोर्ताज), ३.मैथिलीक गाथा-नायक, ४.कथा-लघु-कथा, ५.शोध-बोध (अनुसन्धान परक आलेख)।व्यक्तित्व-कृतित्व मूल्यांकन: प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन: साधना और साहित्य, सम्पादक डॉ.रामप्रवेश सिंह, डॉ. शेखर शंकर (मुजफ्फरपुर, १९९८ई.)।चर्चित हिन्दी पुस्तक सभ: थारू लोकगीत (१९६८ ई.), सुनसरी (रिपोर्ताज, १९७७), बिहार के बौद्ध संदर्भ (१९९२), हमारे लोक देवी-देवता (१९९९ ई.), बिहार की जैन संस्कृति (२००४ ई.), मेरे रेडियो नाटक (१९९१ ई.), सम्पादित- बुद्ध, विदेह और मिथिला (१९८५), बुद्ध और विहार (१९८४ ई.), बुद्ध और अम्बपाली (१९८७ ई.), राजा सलहेस: साहित्य और संस्कृति (२००२ ई.), मिथिला की लोक संस्कृति (२००६ ई.)।वर्तमानमे मौनजी अपन गाममे साहित्य शोध आ रचनामेलीनछथि।-सम्पादक।

पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

हिमालयक पादप्रदेशमे गंगासँ उत्तर, कोशीसँ पश्चिम एवं गण्डकसँ पूर्वक भूभाग सांस्कृतिक मिथिलांचलक नामे ख्यात अछि। मिथिलांचलक ई सीमा लोकमान्य, शास्त्रसम्मत ओऽ परम्परित अछि। सत्पथब्राह्मणक अंतःसाक्ष्यक अनुसारे आर्यलोकनिक एक पूर्वाभिमुखी शाखा विदेह माथवक नेतृत्वमे सदानीरा (गण्डक) पार कऽ एहि भूमिक अग्नि संस्कार कऽ बसिवास कएलनि, जे विदेहक नामे प्रतिष्ठित भेल। कालान्तरमे एकर विस्तार सुविदेह, पूर्व विदेह, ओऽ अपर विदेहक रूपँ अभिज्ञात अछि। विदेहक ओ प्राथमिक स्थलक रूपमे पश्चिम चम्पारणक लौरियानन्दनगढ़क पहिचान सुनिश्चित भेल अछि। आजुक लौरियानन्दनगढ़ प्राचीन आर्य राजा लोकनि एवं बौद्धलोकनिक स्तूपाकार समाधिस्थल सभक संगम बनल अछि। कालक्रमे अहि इक्ष्वाकु आर्यवंशक निमि

पुत्र मिथि मिथिलापुत्रक स्थापना कयलनि। प्राचीन बौद्धसाहित्यमे विदेहकँ राष्ट्र (देश) ओऽ मिथिलाकँ राजधानीनगर कहल गेल अछि। अर्थात् मिथिला विदेहक राजधानी छल। मुदा ओहि भव्य मिथिलापुरीक अभिज्ञान एखन धरि सुनिश्चित नहि भेल अछि। तथापि प्राचीन विदेहक सम्पूर्ण जनपदकँ आइ मिथिलांचल कहल जाइछ।

ओऽ मिथिलांचलक भूमि महान अछि, जकर माथेपर तपस्वी हिमालयक सतत वरदहस्त हो, पादप्रदेशमे पुण्यतोया गंगा, पार्श्ववाहिनी अमृत कलश धारिणी गंडक ओऽ कलकल निनादिनी कौशिकीक धारसँ प्रक्षालित हो। एहि नदी मातृक जनपदकँ पूर्व मध्यकालीन ऐतिहासिक परिवेशमे तीरभुक्ति अर्थात् तिरहुत कहल गेल, जकर सांस्कितिक मूलमे धर्म ओऽ दर्शनक गांभीर्य, कलासभक रागात्मक उत्कर्ष, ज्ञान-विज्ञानक गरिमा ओऽ भाषा-साहित्यक समृद्ध परम्पराक अंतः सलिला अंतर्प्रवाहित अछि। एहि सभक साक्षात् मिथिलाक शैव-शाक्त, वैष्णव, गाणपत्य, सौर (सूर्य) ओऽ बौद्ध-जैनक आस्था केन्द्र एवं ऋषि-मुनिक साधना परम्परामे उपलभ्य अछि। प्रकारान्तरसँ ओहि स्थल सभकँ सांस्कृतिक चेतनाक ऐतिहासिक स्थलक संज्ञा देल जाऽ सकैछ, जकर आइ-काल्हि पर्यटनक दृष्टिसँ महत्व बढ़ि गेल अछि।

मिथिलाक प्रसिद्धि ओकर पाण्डित्य परम्परा, दार्शनिक-नैयायिक चिन्तन, साहित्य-संगीतक रागात्मक परिवेश, लोकचित्रक बहुआयामी विस्तार, धार्मिक आस्थाक स्थल, ऐतिहासिक धरोहर आदिक कारणे विशेष अनुशीलनीय अछि। जनक-याज्ञवल्क्य, कपिल, गौतम, कणाद, मंडन, उदयन, वाचस्पति, कुमारिल आदि सदृष विभूति, गार्गी, मैत्रेयी, भारती, लखिमा आदि सन आदर्श नारी चरित, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, विनयश्री, चन्दा झा, लाल दास आदि सन आलोकवाही साधक लोकनिक प्रसादे एहि ठामक जीवन-जगतमे आध्यात्मिक सुखानुभूति ओऽ सारस्वत चेतनादिक मणिकांचन संयोग देखना जाइछ। मिथिला आध्यात्म विद्याक केन्द्र मानल जाइछ।

आजुक मिथिलांचलक संस्कृति उत्तर बिहारमे अवस्थित वाल्मीकिनगर (भैँसालोटन, पश्चिम चम्पारण) सँ मंदार (बाँका, भागलपुर) धरि, चतरा-वाराह क्षेत्र (कोशी-अंचल, नेपाल) सँ जनकपुर-धनुषा (नेपाल) धरि ओ कटरा (चामुण्डा, मुजफ्फरपुर), वनगाँव-महिषी, जयमंगला (बेगूसराय), वारी-बसुदेवा (समस्तीपुर), कपिलेश्वर-कुशेश्वर-तिलकेश्वर (दरभंगा), अहियारी-अकौर-कोर्थु(मधुबनी), आमी(अम्बिकास्थान, सारण), हरिहरक्षेत्र (सोनपुर, सारण) वैशाली आदि धरि सूत्रबद्ध अछि। एहि सभ धार्मिक तीर्थस्थल सभक परिवेक्षणसँ प्रमाणित होइछ जे मिथिलांचल पंचदेवोपासक क्षेत्र अछि। कालान्तरमे एहिसँ बौद्ध ओऽ जैन स्थल सभ सेहो अंतर्मुक्त भऽ आलोच्य भूभागकँ गौर्वान्वित कयलनि।

पंचदेवोपासक क्षेत्रक अर्थ भेल- गणेश, विष्णु, सूर्य, शिव ओऽ भगवतीक क्षेत्र। एहिमे सूर्य सर्वप्राचीन देव छथि एवं शिव सर्वप्राचीन ऐतिहासिक देवता छथि। विघ्नांतक गणेशक पूजन प्राथमिक रूपेँ कयल जाइछ एवं मातृपूजनक संदर्भमे भगवती अपन तीनू रूपमे लोकपूजित छथि अर्थात् दुर्गा, काली, महालक्ष्मी एवं सरस्वती। भगवती शक्तिक आदि स्रोत छथि, जनिकामे सृष्टि, पोषण ओ संहार (लय) तीनू शक्ति निहित अछि। मुदा लोकक लेल ओऽ कल्याणकारिणी छथि। धनदेवी लक्ष्मीक परिकल्पना वैष्णव धर्मक उत्कर्ष कालमे भेल छल एवं ओ विष्णुक सेविका (अनंतशायी विष्णु), विष्णुक शक्ति (लक्ष्मी नारायण) एवं देवाभिषिक्त (गजलक्ष्मी) भगवतीक रूपमे अपन स्वरूपक विस्तार कयलनि। ओना तँ लक्ष्मी ओऽ सरस्वतीकँ विष्णुक पर्श्वदेवीक रूपमे परिकल्पना सर्वव्यापक अछि। लक्ष्मी ओऽ गणेशक पूजन सुख-समृद्धिक लेल कयल जाइछ। प्राचीन राजकीय स्थापत्यक सोहावटीमे प्रायः गणेश अथवा लक्ष्मीक मूर्ति उत्कीर्ण अछि।

पंचदेवोपासना वस्तुतः धार्मिक सद्भावक प्रतीक अछि। मिथिलांचलमे एहि पाँचो देवी-देवताक स्वतंत्र विग्रह सेहो प्राप्त होइछ। भारतीय देवभावनाक विस्तारक मूलमे भगवती छथि, जे कतहु सप्तमातृकाक रूपमे पूजित छथि तँ कतहु दशमहाविद्याक रूपमे। सप्तमातृका वस्तुतः सात देवता सभक शक्ति छथि- ब्रह्माणी (ब्रह्मा), वैष्णवी (विष्णु), माहेश्वरी (महेश), इन्द्राणी (इन्द्र), कौमारी (कुमार कार्तिकेय), वाराही (विष्णु-वाराह) ओऽ चामुण्डा (शिव)। एहि सप्तमातृकाक अवधारणा दानव-संहारक लेल संयुक्त शक्तिक रूपमे कयल गेल छल, जे आइ धरि पिण्ड रूपेँ लोकपूजित छथि। मुदा एक फलक पर सप्तमातृकाक शिल्पांकनक आरम्भ कुषाणकालमे भऽ गेल छल। चामुण्डाकँ छोड़ि सभटा देवी द्विभुजी छथि। सभक एक हाथमे अम्तकलश एवं दोसर अभयमुद्रामे उत्कीर्ण अछि। मिथिलांचलक लोकजीवनमे जनपदीय अवधारणाक अनुसार सप्त मातृकाक नामावली भिन्न अछि। मुदा बिढ़िक्षया माइ (ज्येष्ठा, आदिमाता, मातृब्रह्म) सभमे समान रूपेँ प्रतिष्ठित छथि। यद्य सप्तमातृकाक ऐतिहासिक प्रस्तर शिल्पांकन एहि भूभागसँ अप्राप्य अछि, मुदा दशमहाविद्याक ऐतिहासिक मूर्ति सभ भीठभगवानपुर (मधुबनी) एवं गढ़-बरुआरी (सहरसा)मे उपलभ्य अछि।

मायानन्द मिश्र

अहाँ की छी

अहाँ प्रलोभनक नाक काट'बला मर्यादा नञि छी

नग्नताकेँ आवरण दैबला नञि छी

सँतुलन राख'बला

ट्रैफिक गाइड जकाँ चौबटियापर ठाढ

दुनू हाथ उठौने अहिँसा नञि छी।

अहाँ छी

कोडोपैरीन खा खा कऽ तत्काल अपन मथदुखी केँ दबबऽ बला क्षुब्ध हिमालय।

अहाँ छी अपन खण्डित रसनाकेँ दाबि

चुपचाप कान'बला सिन्धु।

वस्तुतः अहाँ छी एकटा बिन्दु

जाहिठामसँ अनेक रेखा तँ खीचल जा सकैछ

किन्तु ओ सबटा दुर्जेय चट्टानक

कोनो विराट अन्हार गुफाक अंतहीन घाटीमे

जा क' समाप्त भ' जाइत अछि

सरिपहुँ ई प्रश्न अछि जे अहाँ की छी?